॥ॐनमःसिद्धेभ्यः॥अथश्रीनन्दीश्वरद्वीपपूजाविधानप्रारभ्यते॥पंडितजिनेश्वरदासजैनकृत॥दोहा॥
अरहंतमहंतपदसिद्धस्वहितकरतार॥सिद्धदेवनिरग्रंथगुरुभवजलतारकसार॥१॥निजपदपदके
भेजयोत्रियोगसम्हार॥कृत्याकृत्यजिनेशकीप्रतिमास्तुतिकरतार॥२॥नंदीश्वरवरद्वीपमेंवा
आगार॥स्वपरहेतपूजनरची॥सर्वसिद्धिदातार॥३॥जिनराजस्तुति॥चालकुसुमलताछन्द॥जैजैजैजिनव
रजगत्राताजनमअसातादूरिकरो॥जैजैजैभवतापनिकंदनभवातापममदूरिकरो॥जैजैजैजगशरण
सहायकममसहायभरपूरकरो॥जैजैजैसुखकंदचंद्रप्रभुममउरवासजरूरकरो॥१॥जैजैकरम
करूरघातिचककचूरकूरबलदूरिकरो॥जैजैजैवरवीरवृत्तिकरनिजशरीरवलपूरकरो॥जैजैकेवलज्ञा
नभानप्रभुमोहमहातमदूरिकरो॥जैजैजैवरशक्तिप्रशाममउरप्रकाशभरपूरकरो॥२॥आननचंद्र
वचनअमृतसेकुबुधितापतमदूरिकरो॥वसुविधिहरनेकरनअनुपमसुखसुबुधिप्रकाशजरूर
करो॥जगहितकरउपदेशकवानीदिव्यस्वरूपवरुरूपकरो॥सुरनरपशुगणसभानिवासीस्वयंस
पूरकरो॥३॥जिनवरचरननखावलिउपमाकहतशक्रअकुलायेहो॥गणधररूषिमुनिभक्ति
श्कटकनेत्रलगायेहो॥जिनकीप्रभाशचीपतिशिरकेमुकुटरत्नचिमकायेहो॥जिनवरचरनस
जनखावलिकेशरममउरआयेहो॥अज्ञडताभ्रमतमकुबुधिविनाशीसुबुधिप्रकाशीसुखदाता॥

22618

पुण्यसेंयाजगमांहीकदाकालकोईभविपाता॥४॥आजकाजसुखसाजमिलोजिनराजसुयशयातेंगा
ताख्यातलाभकीचाहनमेरेआतमलाभममउरभाता॥५॥दोहा॥दीजैनिजकीऋद्धिकोंकीजेयहउ
पगार॥चाहनहीपरद्रव्यकीयहअरजीचितधार॥१॥पुष्पांजलि॥अथढाईद्वीपसंबंधीअकृत्रिमजि
नालयपूजामाह॥दोहा॥सार्द्धद्वयवरद्वीपमेंअकृत्रिमजिनधाम॥जिनवरविंवजजौंसदादायकदिव
शिवधाम॥१॥ॐह्रींढाईद्वीपसंबंधीअकृत्रिमजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥सोरठा॥उज्जल
जलशुचिसारकंचनझारीमेंभरो॥ढाईद्वीपमझार॥जिनवरपदपूजारचूं॥१॥ॐह्रींढाईद्वीपसंबंधीअकृ
त्रिमजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनगंधजुसारकेशरसंगघसाईये॥ढाईद्वीपमझार०॥ॐह्रींचंद
नं॥२॥अक्षतशशिउनहारकंचनथालविषेंभरो॥ढाईद्वी०॥ॐह्रींअक्षतं॥३॥कुसुमअनेकप्रकारकु
सुमवानमदहननकों॥ढाईद्वीप०॥ॐह्रींपुष्पं॥४॥षटरसपूरितसारचरुउत्तमवनवाईये॥ढाईद्वीप०॥
ॐह्रींचरुं॥५॥तमहरजोतिअपाररतनदीपसुरलावही॥ढाईद्वीप०॥ॐह्रींदीपं॥६॥फैलीगंधअपार
उत्तमधूपवनायके॥ढाईद्वी०॥ॐह्रींधूपं॥७॥फलबहुविधिकेसारउत्तमथालभरोसुधी॥ढाई०॥ॐह्रीं
फलं॥८॥जलफलद्रव्यमिलायअर्घवनाऊंभावसों॥ढाईद्वी०॥ॐह्रींअर्घं॥९॥दोहा॥शतमुखशतसे
वैसदाजिनवरकमलअनूप॥सोममउरमेंवासकरकरौसिद्धिनिजरूप॥१॥छंदमोतियादाम॥जयोजग

मेंअरहंतमहंत॥सुरासुरध्यानधरैंसतसंत॥अकृत्तिमश्री जिनबिंबमहान॥नमूंहृय अर्घ्य अरीयप्रमान
॥१॥असीपणमेरुविषैंजिनधाम॥असीवखारकहेसुललाम॥कुलाचलतीसकहेजगदीश॥तथागजदंतजि
नालयवीश॥२॥कहेशतसत्तरिश्रीजिनधाम॥सबैविजयारधकेअभिराम॥सुशालमलीजंबूतरुडार॥क
हेदशश्रीजिनमंदिरसार॥३॥कहेचहुंपर्वतइक्षुआकार॥तहांजिनमंदिरच्यारनिहार॥महागिरमानवउत्त
रजोर॥जिनालयच्यारकहेचहुंओर॥४॥जोशतचारसुदोयविहीन॥अकृत्तिमसर्वजिनालयचीन्ह॥अ
ढाईद्वीपविषैंभविजीव॥करैंजिनपूजनदेवसदीव॥५॥कहेशतआठसुबिंबमहान॥सबैप्रतिहारजअ
ष्टप्रमान॥कहोरचनासमवस्रुतिसार॥अनादिबनीप्रतिहीसुखकार॥६॥सुरासुरपूजतहैंत्रयकाल॥क
रैंबहुभक्तिनवायसुभाल॥तुम्हीउपदेशकह्योरषदेव॥तुम्हीजगमेंअघघायकदेव॥७॥तुम्हीजगमेंशि
वदायकदेव॥प्रभूहितकारकवायकदेव॥तुम्हीप्रभुजीगुणदायकदेव॥सदाभविकोंसुखदायकदेव॥८॥दो
हा॥ढाईद्वीपविषैंजिते॥अकृत्तिमजिनधाम॥तिनकोंमनवचकायकें॥कुनिध्यकरोंप्रणाम॥९॥ॐह्रीं
अर्घं॥सोरठा॥वंदोंमनवचकायपरमेष्टीपदकमलकों॥तुमहीनिजनिधिदाययहीजिनेश्वरउरभ
रो॥१०॥इत्याशीर्वादः॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपअंजनगिरिकेशिखरजिनमंदिरपूजामाह॥कुसुमलताछंद
नंदीश्वरवरद्वीपआठमोंवाकीपूरवदिशामहान॥सहस्त्रचोरासीयोजनऊंचोस्यामवरनअंजनगिरि

जान॥ ढोलसमानगोल तिहऊपर जिनमंदिर उत्कृष्ट महान॥ इकशतवसु अधिकी जिनप्रतिमा तिन
पद पूजौं उरधरिध्यान॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपकी पूर्वदिशा अंजनगिरकेशिखरस्थो जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ अ
न०॥ मंत्र०॥ मंत्र०॥ पुष्पं॥ सुंदरी छंद॥ द्रहतिगंधसुनीरसुहावनो॥ शुचिसुभाजनमें धरिपावनो॥ जलजि
नेश्वरचरनचढावनो॥ शिवमहीहरमूलवढावनो॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशा अंजनगिरकेशिखर
जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ मलयचंदनपावनलायकै॥ कुसुमकेशरसंगघसायकै॥ जजतश्रीजिनहर्ष
बढायकै॥ लहतभविदुखतापनशायकै॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ सरसनिर्मलशालिसुहावनी॥ अनुपमानमयंक
प्रभावनी॥ लाय अक्षतश्रीजिनपूजिये॥ पाय अक्षयपदशिवहूजिये॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ अतिसुगंधसुव
र्णसुहावने॥ कुसुमविधिके अतिही पावने॥ जिनपदांबुजपूजरचाईये॥ अतनतापहि आपवचाईये॥४॥
ॐ ह्रीं पुष्पं॥ चरु अनूपपवित्रवनायकै॥ अतिप्रमोदहृदयमें लायकै॥ चरणचारुजजौं जिनराजके॥ करण
तारसवेसुखसाजके॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ शुचिअनूपप्रकाशमहानहै॥ रतनदीपमनौं दुतिवानहै॥ चरणपूजक
रौं जिनराजजी॥ प्रगटरूद्धिकरौं हितसाजजी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ अतिसुगंधसुद्रव्यमिलायकै॥ चरनपूजित
श्रीजिनपायकै॥ असुभकरमनिवारनहेतहैं॥ सुखसमाजसवैनितदेतहैं॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ सरसमिष्टविशि
ष्टसुहावने॥ निजसुयोगमहाफलपावने॥ चरनभेटधरौं जिनराजकी॥ नरुहे रुद्धिसवै शिवसाजकी॥ ॐ ह्रीं

लं ॥८॥ जलफलादिकद्रव्यमिलाइये अर्घश्री जिनचरन चढाइये ॥ महतसो जगमेंसवरुद्धिकों
कर्त्तेशतसिद्धिकों ॥ ॐह्रीं अर्घं ॥ ८ ॥ घत्ता ॥ जयजयसुखसागरजगतउजागर रवबरलोगमविश्व
मेंपूजरचाऊं तुमगुणगाऊं निजनिधिपाऊं रूपापती ॥ १ ॥ जयमाल ॥ छंदमोतियादाम ॥ जयो
गमें अरहंतमहंत जयौंतुमध्यानधरेमुनिसंत ॥ जयोगर्भागममंगलमाहि शचीपतिआयप्र
कराहि ॥ १ ॥ जयोप्रभुदायकसम्यकज्ञान जयोत्रयज्ञानसमेतमहान जयोजगमेंजवजन्मतदे
यशब्दकरैसुरसेव ॥ सुराधिपआयसवेजगशीश ॥ वसुगोदलयेवसुधापतिईश ॥ महा
मस्तकपांडुकनाम महावनजायकियो विशराम ॥ तहां अविशेषशिलामणिरूप महांत्रय
दिव्यअनूप सुमध्यसिंहासनपेजिनभूप विराजितज्योंनभचंद्रसरूप ॥ सुवर्णसुरत्नजडे
न महाकलशसुरहाथन आन ॥ भरेजलपंचमसागरतान ॥ सुहाथहिहाथनलायमहान ॥ ५ ॥
त्सवन्हावनकाल ॥ बजेसुरदुंदुभिदिव्यरसाल ॥ नचेसुरनारिनवावतभाल ॥ वने
विशाल ॥ ६ ॥ महारसभक्तिभरीसुरनार सुजन्ममहोछवके अनुसार ॥ सुगावतगान
समवान ॥ बजेंपगनेवरतानसमान ॥ अरुनाकननेवरकीरुनकार करैवहुरूपगमेंघनका
तनताननतानसरूप ॥ घनाघनघोरमृदंगअनूप ॥ ८ ॥ सुवीनकजायसुरीपरवीन ॥ वीर

भावभईरुचलीन॥तिसीअनुसारकरैजयकार॥सुरासुरहर्षहियेअनिवार॥१॥सुरा॥धिपन्हौनक
रोजिनिवार॥सबैमिलिशब्दकरैंजयकार॥हैनासुरहर्षहियेअनिवार॥ बजैनभमेंसुरदुंदुभिघोर॥सुष
यरहोदशहूंदिशिसोर॥२॥निरंतरनित्यप्रसन्नशरीर॥असंख्यसुरीगुणगानगहीर॥करैंबहुभक्ति
भरीसतभाव॥धरैंजिनदर्शनकोंउरचाव॥३॥रहोचिरजीवजिनेश्वरआप॥रहोजगमेंजयवंतप्रता
प॥करोहमकोंभवसागरपार॥वरोप्रभुजीशिवसुंदरनार॥४॥सरोजगजीवनकोहितकाज॥भरोसु
खसंपतिश्रीमहाराज॥करोहमरोभववेदनआज॥करोममकाजगरीबनवाज॥५॥प्रभुयहजन्म
होत्सवसार॥हमैंकरियोभवसागरपार॥सुरासुरसर्वनवायजुशीश॥गयेनिजथानकदेयअशीश॥६॥ध
प्रभूकरराजधरोतपसार॥हरोअरिमोहवलीअनिवार॥लयोवरकेवलज्ञानअनूप॥कह्योसततत्त्वरा
वरूप॥७॥वहीछविसुंदरहैअविकार॥महात्यजिनालयमेंअनिवार॥करैसुरसेवसबैसुखकार॥
जिनेश्वरकोंभवसागरतार॥८॥प्रभूकरराजधरोतपसार॥हरोअरिमोहवलीअनिवार॥लयोवरकेवल
ज्ञानअनूप॥कह्योसततत्त्वरूपसरूप॥९॥दोहा॥नंदीश्वरपूरवदिशा॥अंजनगिरिकेशीश॥जिनमंदि
रजिनबिंबकूंवंदूनयनिजशीश॥१०॥ॐह्रींअर्घं॥नंदीश्वरवरद्वीपआठमोजानियें॥ताकीचहुंदिशबा
वनजिनगृहमानियें॥पूरवअंजनशिखरजिनालयकोंनमों॥याप्रशादजगमांहिमिलेवरअनुपमों

२८॥इत्याशीर्वाद॥ ॥१॥ ॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपकेपूर्वदिशमध्यअंजनगिरकेपूर्वदधिमुखपर्व
परजिनालयपूजामाह॥चालजोगीरासा॥नंदीश्वरवरद्वीपआठमौंपूरवदिशसुखदाई॥अंजनगि
ताकीपूरवदिशनंदवापिकाभाई॥तिहिंवीचदधिमुखउज्जलदधिसमगिरवरगोलसुहाई॥तापरश्री
नमंदिरसोहैपूजतहर्षवढाई॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूरवदिशअंजनगिरकेपूरवदधिमुखजिना
लयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥चालजोगीरासा॥जन्मजराअरुमरणमहादुखका॰
नादिसह्योसो॥औरवहुतदुखजातिजगतमैंवाकीनाहिरह्योसो॥तिहिंदुखहरणकरणसुखसाताजल
सोंजिनवरपूजो॥परमवीतरागीनिजनिधिकेईशजिनेश्वरहूजो॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूरवदिश
नगिरकेपूर्वदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥भवआतापतपतयहप्राणीशांतिकभीनहिंआवै
रनारकनरपशुगतिमाहीविषयदाहदुखपावै॥सीतलशुद्धसुगंधितचंदनलेजिनमंदिरआवै
श्रीजिनवरपदपंकजशांतिसुधासुखपावै॥२॥ॐह्रींचंदनं॥जोकुछउपजतजगमेंदीसेसवक्षय
ताई॥अथिरपदारथअपनेमानेयेभ्रमदुखदाई॥येभ्रमवुद्धिहरणकेकारणअक्षतसोंजिनपूजोअ
पदकीप्रापतिकारणसुवुधिसतीवरहूजे॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥याजगमेंवलवंतसंतनरब्रह्माविष्णुमहेश॥श
क्रचक्रपतिमकरध्वजनेवशकीनेसुरशेष॥ताअशरीरपीरनिरवारनकारणसुमनमगावो॥देशकाल

जशक्तिसमाना॥ जिनपदकुसुमचढावौं॥४॥ ॐह्रींपुष्पं॥ सकलचराचरकौंदुखदातादोषक्षुधाविख्याता
ताकेवशबिललातजीवसबछिननहिपावैसाता॥ वहदुखदूरकरणकेकारणचरुसौंजिनवरपूजौं॥ क्षु
धादोषनिरवारजगतजननिजलक्ष्मीपतिहूजौ॥५॥ ॐह्रींचरुं॥ मिथ्यामोहमहातमभारीजगजीव
नकेछायो॥ तावशभावसपावसकीज्यौंज्ञानशशीनलखायो॥ ताकेदूरकरणकेकारणदीपकसौंप्र
भुपूजौं॥ ज्ञानप्रकाशविषैनिजनिधिकौंपायभविकसुखहूजौ॥६॥ ॐह्रींदीपं॥ कर्मगहनवनमाहि
भयानकविषयचोरदुखकारी॥ प्रबलकषायसिंहसर्पादिकरहतसदाअतिभारी॥ भोवनगहनदह
नकेकारणधूपदशांगीलावौ॥ परमपूज्यअरहंतदेवकेचरननअग्रचढावौ॥७॥ ॐह्रींधूपं॥ जाफलकौं
ऋषिमुनिसबचाहेंइंद्रादिकललचावें॥ श्रीअरहंतचरणविनजगमेंअंतकहींनहिआवैं॥ ताफलप्राप
तिकारणशुभफलगनउत्तमलीजे॥ श्रीअरहंतचरणयुगआगैंभेटमनोहरदीजे॥८॥ ॐह्रींफलं॥ जलफ
लद्रव्यमिलायमनोहरअर्घबनावौभाई॥ बहुविधिहर्षसहितउच्छवकरिनित्यकरोसुखदाई॥ भवभ्रमणनि
वारनकारनअर्घजिनेश्वरआगैं॥ भक्तिबढायचढायगायगुणअनुभउसील्हणभागैं॥९॥ ॐह्रींअर्घं॥ ध
त्ता॥ जैजैत्रिपुरारीजगसुखकारीतुमस्वामीत्रैलोकपती॥ जिनकेपदपूजेंशिवसुखहूजेतत्क्षणपावैज्ञा
नअती॥१॥ जयमाल॥ छंदमोतियादाम॥ जयवंतजगतपतिदेवतुम्हीं॥ सुखदायकनायकएवतुम्हीं॥

अघघायकदायकदानमहा॥ रषत्तायकसमकज्ञानकहा॥ ॥ समवश्रुतिमेप्रभुराजतहै॥ शशिसूरजकोद
कलाजतहैं॥ चतुराननआपविराजतहै॥ धुनिदिव्यमनोघनगाजतहैं॥ ॥ हरिआसनऊपरपद्ममहाप
आसनआसनआपगहा॥ सुरचामरचोसठिढारतहैं॥ अघपुंजमनोसबटारतहैं॥ ॥ त्रयछत्रमहेश्वर
शीशफिरे॥ त्रयलोकसुरासुरसेवकरे॥ जहांरत्नअशोकविराजतहै॥ फलफूलमहाछविछाजतहै॥ ॥
नभमेंसुरदुंदुभिगाजतहैं॥ मधुरीमधुरीध्वनिवाजतहै॥ तनदेहप्रभावहुफेलिरही॥ भवसातनिहारतस
वेमही॥ ॥ वरषावतहैसुरपुष्पसही॥ तिनकीमहिमानहिजायकही॥ प्रतिहारजआठविराजतहै॥ जिन
कोनिरखेंअघभाजतहैं॥ प्रभुतत्वप्रकाशकसेसबही॥ तवजीवअजीवकहेसवही॥ उपयोगमईपर
जीवकह्यो॥ तिहदर्शनज्ञानदुभेदभह्यो॥ ॥ चउदर्शनचक्षुअचक्षुमहा॥ अवधीअरुकेवलदर्शजया॥ वसुभेद
मतिश्रुतिओधिकही॥ मनपर्ययकेवलज्ञानसही॥ कुमतिकुश्रुतिकुविभंगमहा॥ इमआठप्रकारसुज्ञान
कहा॥ त्रसथावरभेदविषैलहियो॥ सवजीवअनंतप्रभाकहियो॥ ॥ त्रसचारहिइंद्रियआदिकहे॥ पणथाव
इंद्रियएकलहे॥ पृथिवीजलतेजसमीरअवो॥ अरुजानिवनस्पतिभेदसवो॥ ॥ इकइंद्रियसूक्षमवादर
है॥ विकलत्रयतीनसवीपरहै॥ पणइंद्रियदोयप्रकारकहे॥ समनाअमनाइमसातभये॥ ॥ पर्याप्तअपर्या
प्तकजुकही॥ इमचोदहजीवसमासभई॥ इनआदिअनेकजुभेदकहे॥ भविजीवननेंसतरूपगहे॥ ॥ महश्री॥ ॥५॥

जिनकी छवि छाजत है। जिन मंदिर माहि विराजत है। जिन पूजन कों सुर आवत हैं। हिरदे बहु भक्ति बढ़ा
वत हैं ॥ ३ ॥ जिन राज गरीबनवाज सुनों। हमरी अरजी प्रभु आज सुनों। भवपार करौ जगतार सुनों ॥ शिवका
मिनिके भरतार सुनो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अंजनगिरसें पूर्व दिशि दधिमुख गिर जिनधाम ॥ जिनप्रतिबिंब विचा
रिके बहुविधि करूं प्रणाम ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ सोरठा ॥ सुनों स्वपर हितकार त्रत्तिपती महराजजी ॥ मेरो का
रज सार यही कृपाकर दीजिये ॥ ६ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ ५ ॥ ॥ अथ नंदीश्वर द्वीपके पूर्व दिशि अंजनगि
रि ताके दक्षिण दिशि दधिमुख जिनालय पूजा माह ॥ कवित्त ॥ नंदीश्वर पूरब अंजनगिर ताको दक्षिण दिश
सुखकार। नंदवती वापिका मध्य है दधिसरूप दधिमुख गिरसार। दश हजार योजन उन्नत गिर ढोल सम
मान गोल आकार। ता पर श्री जिनमंदिर प्रतिमा अकृत्रिम वंदूं निरधार ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपके पूर्व अंज
नगिरके दक्षिण दधिमुख पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः अत्र अत्र अत्र० ॥ पुष्पं ॥ छंद जोगी
रासा ॥ सहज शांत संतोष रसायन ज्ञान विना दुख पायो। त्रसना तृषा बहुत दुखदाई काल अनंत गमायो। तिहि
दुखके निरवारन कारन सीतल जल ले आयो। शांति सुधासागर जिनवरके चरनन माहि चढायो ॥ ॐ ह्रीं नं
दीश्वर द्वीप पूरब दिशि अंजनगिरके दक्षिण दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ १ ॥ बिति चउ इंद्री विक
लत्रय मैं भटकि भटकि दुख पायो। विषय चाहकी दाह दह्यो जग कबहुन निज सुख पायो ॥ भवातापनिवा

क्ति भरे सुरवृंद सार ॥ प्रभु चरण कमल मैं वार वार ॥ निज शीश नाय उर हर्ष धार ॥ सुर देह सकल
जु सार ॥ ॥ हम शरणागत आये जिनेश ॥ सब दोष माफ करिजे महेश ॥ हम रंक चाकरी चू
प्रभुजी करुणा कीजे हमेश ॥ ॥ मति मेरी कृति निरखो हजूर ॥ विरदा अपनो करो पूर ॥ विन कारण
जगबंधव जिनेश ॥ यह नाम निवाह करो हमेश ॥ ॥ भव भव में मिलियो तुम्ही देव ॥ भव भव में मि
गुरु सेव ॥ भव भव जिन बानी प्रगट देव ॥ हे देव जिनेश्वर सुयश लेव ॥ २ ॥ दोहा ॥ श्री अरहंत मह
जो पूजे मन लाय ॥ रिद्धि सिद्धि जग में मिले सुख पावे शिव जाय ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ सोरठा ॥
वृद्धतार सिद्ध देव मम उर वसो ॥ करो कर्म परिहार यह वांछा मेरी फुरो ॥ ४ ॥ पुष्पं ॥ ॥ ३ ॥ ॥
अथ नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अंजन गिर के पश्चिम दधिमुख जिनालय पूजा माह ॥ कुसुमलता छंद ॥ नंदीश्व
व अंजन गिर ता की पश्चिम दिशा में जान नंदोत्तर वापिका मध्य में दधिमुख गिर दधि वर्ण समान ॥
शीश जिनेश्वर मंदिर रत्नमई उत्कृष्ट महान ॥ तामें जिनवर बिंब विराजे तिनके पद पूजे गुण खान ॥ १
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशि अंजनगिर के पश्चिम दधिमुख पर्वत पर सिद्धकूटेभ्यो नमः ॥ अत्र अवतर अवतर
पुष्पं ॥ चाल चौपाई ॥ जन्म जरा मरणो दुखदाई ॥ याते रहित तुम्ही जगराई ॥ जल सों जिनवर पूज रचावे
न्म मरण याते न हिपावे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशि अंजन गिर के पश्चिम दधिमुख जिनाल

नमः॥जलं॥१॥कर्मउदयदुखदाहअपार॥सोतुमनैंकीनौंपरिहार॥सीतलचंदनआनिचढाऊं॥यातैंशा
तसुधासुखपाऊं॥२॥ॐह्रींचंदनं॥अक्षतपुंजमनोहरदीजे॥श्रीजिनवरकीभेंटकरीजे॥अक्षयपदकेपा
वनकाजे॥पूजतभविजनश्रीजिनराजे॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥कामवानदाहनकेकाजे॥कामवानदाहकजि
नराजे॥पूजतजन्मसफलहोजावै॥प्रगटस्वभावज्ञानदरशावै॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥दोषदहनगुणगहनअपा
रा॥श्रीअरहंतचरणसुखकारा॥दोषक्षुधानिरवारनकाजे॥चरुसौंपूजतश्रीजिनराजे॥५॥ॐह्रींचरुं॥
ज्ञानविनानरअंधसमाना॥आपापरकोभेदनजाना॥तमअज्ञाननशावनकाजे॥दीपकसौंपूजौंजि
नराजै॥६॥ॐह्रींदीपं॥कर्मकलंकरहितजगनामी॥नंतचतुष्टयमंडितस्वामी॥कर्मकलंकविनाशनकाजे
खेवौंधूपजिनेश्वरआगैं॥७॥ॐह्रींधूपं॥मोक्षमहापुरउत्तमभारी॥जामेंहैलोकिकशिरदारी॥तिहिंपुरका
जरहणकेकाजै॥फलसौंपूजतश्रीजिनराजै॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलद्रव्यमिलायबनाये॥उत्तमअर्घप
वित्रसुहाये॥जिनवरपदपूजतसुखपायौ॥जन्मजन्मकोअशुभनशायौ॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दो
हा॥श्रीजिनवरपदपूजिकैहिरदेबहुतकुशाल॥भक्तिसहितजिनराजकीअबबरनौंजयमाल॥१॥चाल
अहोगुरुदेवकी॥जैजैजैजिनराजतुमजगदीश्वरस्वामी॥मेरीअरजीआजसुनियेअंतरजामी॥थ्यामभ
ववनकेमाहिकालअनंतगमायो॥सुखकोनामहुनाहिदुखहीदुखबहुपायो॥२॥इकइंद्रियतनमाहिमैं

लअगनिसमीरा॥वनस्पतीकीकायपाईबहुविधिपीरा॥४॥फोरेतोरेदेरुखोदकुचरेबहुमारी॥ढोरेवो
खअनिवारी॥५॥उदयभयोदुर्भागदमरीहूकविकायो॥नहुरिपचायो॥आगसागरु
॥पाईत्रसपरजायविकलचतुष्कशरीरा॥सन्मूर्छनतनपायवहुतसहीअतिपीरा॥६॥सैनीपशुन
विषैंदुखपायो॥तनधनसौंकरनेहविछुरतबहुघवरायो॥७॥विधिवशनर्कमझारअथवास्वर्ग
॥ज्ञानविनाअविचारयोंहीजन्मगमायो॥८॥इमच्यारौंगतिमाहिफिरांफरथिरनरहायो॥निजहित
एउपावसम्यकज्ञाननपायो॥९॥अवआयोयहदावतुमजिनदेवनिहारे॥धनियहदिवससुभा
धनिभागहमारे॥१०॥पायेजिनवरदेवश्रीगुरुपरमविरागी॥धर्मदयामयएवसम्यक्बुधिउरधारी॥११॥
अपनौंसुगुणविशालविद्याअतहितकारी॥दीजेदेवकृपालळीजियशजगतारी॥१२॥मेरेउरयहचाह
नहूजीस्वामी॥पूरनकरजगनाहतुमसमरथसुखदामी॥१३॥ज्यौंआगेंजिनदेवजगजीवनसुख
त्यौंअजहूंस्वयमेवममहितकरनिजचीनौं॥१४॥दोहा॥गणधरपारनपावहीं॥हारेसुरपतिशेष
समरथहैजगतमेंनोकहिसकैविशेष॥१५॥ॐह्रीं अर्घं॥सोरठा॥नाममात्रआधारअविवेकीप
सोजिनवरउरधारक्योंनलहैसुखसंपरा॥१५॥इत्याशीर्वाद॥ ॥५॥ ॥अथनंदी
पपूरवदिशिअंजनगिरकेउत्तरदधिमुखजिनालयपूजामाह॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरवरद्वीपआठ

मों ताकी पूरब दिश अविकार॥ स्याम वरण अंजन भूधर के उत्तर दिशि दधिमुखगिर सार॥ नंदिषेण वापी
मधि राजै स्वेत वर्ण मन हरन अपार॥ ता पर जिनमंदिर की प्रतिमा तिन परजजौं विनय उरधार॥१॥ ॐ ह्रीं नं
दीश्वरद्वीपपूर्वदिशचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ कुसुमलताछंद॥ पद्म द्र
समउज्जल जल लै सुविशीतल उरभक्ति बढाय॥ जन्म जरा दुख दूर करण कौं जिनचरणां कुं देय चढाय॥ नंदी
श्वर के पूरब दिश मैं अंजनगिर सो है सुखकार॥ ताकी उत्तर दिश दधिमुखगिर तापर पूजूं जिनगृह सार
१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशिचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ बांवन चंदन दाह निकंदन कुं
कुम अरु करपूर मिलाय॥ पूरन सुखी जगतपति पद कों सुखकारण पूजौं हरषाय॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ शशि
सम स्वेत किरण मोती सम उज्जल अक्षत धाय बनाय॥ अक्षय निधिपति परमेश्वर के चरणकमल पूजौं ह
रषाय॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ कुसुमादधि सर रोग निवारन कुसुमायुध विजयी जिनराज॥ कुसुम पूजि निर्दोष मि
लाकर जिनवर नन मैं देत चढाय॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ फैनी गुंजा मोदक खाजा ताजा तुरत हि लेत बनाय॥ क्षुधा ह
रण जिनचरणकमल भवि भक्ति सहित जिन देत चढाय॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ शशिसम उज्जल विविध वरण के
अथवा दीपक अन्य प्रकार॥ शक्ति समान शुद्ध दीपक सों जिनवरपद पूजौं हितकार॥ नं॥६॥ ॐ ह्रीं नंदी
दश विधि धूप सुगंध बनाकर हर्ष सहित जिनमंदिर जाय॥ कर्म दहन कारण जिनवर के चरण अग्र खेवो

चितलायनं॥ ॐ ह्रीं धूपं॥७॥सरससिष्टफलसुचिफललेकैवीतरागकेपदउरध्याय॥वीतरागपर
काजसुधीनरजिनचरणांवुजदेतचढाय॥नं॥८॥ॐ ह्रीं फलं॥जलफलवसुविधिद्रव्यमिलाकरअर्घव
नावतमनहर्षाय॥वसुविधिहतनजतनजिनपूजनकरतजिनेश्वरकेपदपाय॥नं॥ॐ ह्रीं अर्घं॥जयमा
ल॥दोहा॥वसुविधिजिनपदपूजिकैवसुविधिअंगनवाय॥सुविधिवढावणवुधिपणीगुण
रवाय॥१॥पद्धडीछंद॥जैजैजगदीश्वरतुमकृपाल॥सुभक्तिकरैसुरनायभाल॥प्रभुसमवशरणके
जान॥उपदेशकरतकरुणानिधान॥२॥सतधर्मदेशनाकरैंदेव॥मुनिश्रावकधर्मदुभेदएव॥मुनिधर्म
नागारीमहान॥गृहवासीधर्मद्वितीयजान॥३॥सवधर्मस्वरूपसरधानजान॥सम्यग्दर्शनआगमप्रमान
ताकेसवभेदकहेपुराण॥सोसुणेभव्यसुरुचीमहान॥४॥जीवादिसप्ततत्वार्थजान॥तिनकीप्रतीत
कुप्रमान॥नहिसंशयादिइनमेंलगार॥पच्चीसदोषकररहितसार॥५॥अरहंतदिगंवरसुगुरुदेव॥छन
नीआगमलखेवाइनकीप्रतीतदृढसतसरूप॥सोसम्यकहैव्यवहाररूप॥६॥यौंनिश्चयनिजआतम
शाल॥सवजानप्रवर्त्तैगुनरवान॥अवआगेंदोषपचीसजान॥जिनकौंत्यागेंसमकितमहान॥७॥सं
दिकआठोंदोषत्याग॥मदआठरहित रषयंथलाग॥ ॥जिषटअनायतनपंथरूप॥त्रयषटतात
गुरुरूप॥९॥याविनसंसारसमुद्रपार॥कवहूनहिपावैभव्यपार॥जयतपव्रतपाविनविफलजान॥

कविनविंदीमहान॥९॥ श्रीजिनवरनेंयेप्रथमसार॥ उपदेशकियोजगहितविचार॥ ताहीक्रमकहतम
णगणेश॥ सबपरमेदिगंबरगुरुअशेष॥२॥ यहजिनवरआज्ञासमरुवीर॥ समकितगुणहिरदैधारधी
र॥ यहदुर्लभनरभवपायवीर॥ वरस्वहितकाजमनलायवीर॥३॥ जयजयजगवंधवदेवसार॥ जिन
नेंजिनधर्मकियोप्रचार॥ जयजयविनकारणहितसरूप॥ जगजीवनकोंकल्याणरूप॥४॥ जिहिंमग
जगजीवअनंतवार॥ शिवपुरपहुंचेपहुंचेंअपार॥ जिहिंमगकीमहिमांअगमजान॥ कहसकेनहींसुर
पतिवखान॥३॥ मैंहाथजोडिमेंशीशनाय॥ नवकारकरूंमनवचनकाय॥ मेरेउरतिष्टोवेस्वभाव॥ जो
मोहिवनावेमुक्तिराय॥४॥ हेकरुणानिधियहअरजसार॥ अर्हंतजिनेश्वरसुणिअवार॥ अवढील
करोमतदेवएव॥ ममकारजसबकीजोस्वमेव॥५॥ दोहा॥ श्रीअरहंतअपारगुणकोकहिसकेवखा
न॥ नाममात्रउरधारिकैंपावेशिवकल्यान॥६॥ अर्द्धं॥ सोरठा॥ सुनोजगतपतिदेव॥ शिवमगसाज
कसाजदेहुतनेयशप्रभुलेव तुमदाताशिरताजहो॥७॥ इत्याशीर्वादः॥ ॥८॥ ॥अथनं
दीश्वरद्वीपपूर्वदिशवापिकाप्रथमरतिकरपूजामाह॥ गीताछंद॥ वरद्वीपनंदीश्वरमनोहरदिशापूरव
जानिये॥ अंजनमहागिरनंदवापीवहिरकोनप्रमानिये॥ तिहंथानरतिकरजानपर्वतकनकवर्णसुहा
वनो॥ तापरजिनेश्वरभवनसोहैसुरासुरमनमोहनो॥१॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशप्रथमरतिकरपर्वतप

रजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥प्राणी श्रीजिनवरपदपूजिये जाके पूजत पातक जाय प्रा
॥उज्जलजल शुचि शीयरो भरि कनक कटोरी सार॥प्राणी श्रीजिनचरण चढाय॥सब जन्मजरा निरवार॥प्रा
नंदीश्वर पूरव दिशा रतिकरगिर पहिलो जान॥प्राणी तापर श्रीजिन पूजिये जिनवर बिंब अकृत्तिम जाण
२॥ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पूरवदिश प्रथम रतिकर जिनालयेभ्योनमः॥जलं॥प्राणी केशर चंदन डारिकैं करपूर
गंध मिलाय॥प्राणी कर्म निवारण कारणैं जिनचरणन जजो मन लाय॥प्राणी॥नंदी॥२॥ॐ ह्रीं गंधं॥प्राणी
मसमान सुहावनैं मुक्ताफल की उनहार॥प्राणी अक्षत पुंज चढायके पद पावौं अक्षय सार॥प्राणी॥नंदी॥३॥
ॐ ह्रीं अक्षतं॥प्राणी उत्तम कुसुम सुहावने शुचि गंध मनोहर सार॥अथवा सुवरण आदिके जिनचरण ज
जों अनिवार॥प्राणी॥नंदी॥४॥ॐ ह्रीं पुष्पं॥प्राणी घेवर मोदक आदि ले नानाविधि पकवान॥प्राशुक
रि लीजिये पद पूजौं श्री भगवान॥प्राणी॥नंदी॥५॥ॐ ह्रीं चरुं॥प्राणी दीप मनोहर लीजिये निर्दोष शक्ति
मान॥प्राणी श्रीजिनवरपद पूजिये यातैं पावौं केवलज्ञान॥प्राणी॥नंदी॥६॥ॐ ह्रीं दीपं॥प्राणी चं
रकरपूर ले दशविधि की धूप बनाय॥प्राणी खेवौं जिनगृह जाइकै यातैं कर्म बली जरि जाय॥प्राणी॥नंदी
७॥ॐ ह्रीं धूपं॥प्राणी फल बहुविधि के लेयकै श्रीफल आम्र लौंग बदाम॥प्राणी श्रीजिनवर पूजा क
रौं शिव अभिराम॥प्राणी॥नंदी॥८॥प्राणी जल फल द्रव्य मिलायकै करि अर्घ महा अभिराम॥प्राणी

॥ॐ ह्रीं फलं॥

श्री जिनवरपदपूजाकरौं यातैं पावौं अविचलधाम॥ आली नंदी॥२८॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ पूरब अं
जनगिरतणों रतिकर प्रथम विशाल॥ अकृत्तिम जिनगृह जहां ताकी सुनि जयमाल॥१॥ पद्धडी छंद॥ जैनंदी
श्वर दिशपूर्व जान॥ जे अंजनगिरपर्वत महान॥ जयताकी पूरब दिश अनूप॥ जे नंदा वापी जल सरूप॥२॥ जे
ताकी बाहर कोंन मध्य॥ जे रतिकर पर्वत स्वयंसिद्ध॥ ऊंचो योजन इक सहस जान॥ जे ता पर जिनगृह शो
भमान॥ लंबाई शत योजन प्रमाण॥ चौडाई है पचास जान॥ ये पचहत्तर योजन ऊंच जास॥ सब समोशरण
शोभा प्रकाश॥ शत आठ रत्नमय जिनसरूप॥ पद्मासन राजत हैं अनूप॥ बत्तीस जुगल सुर चमर हाथ
ढोरें नों फस बाडे खडे साथ॥ जय छत्र तीन अतिजगमगाय॥ जिनकी महिमा वरणी न जाय॥ बसु मंगल
द्रव्य धरे अनूप॥ बसु प्रातिहार्य मंगलसरूप॥ जिनबिंब विराजे अंतरिक्ष॥ वैराग्य भाव बाढे सुभित्त
जिनकी महिमा कहुं कहि न जाय॥ मनु अबी हस बोले सुभाव॥ जय लाल बरण नख मुख महान॥ जे
नयन स्याम श्वेत अरुन जान॥ जय भौंह और शिर केश स्याम॥ बाकी शरीर सब स्वर्ण धाम॥ जे जे जिन दे
खत बढत मोद॥ भवि जीव लहे समकित प्रबोध॥ जे बर्षवर्ष में तीन बार॥ जे कातिक फागुण साढ मास॥
जे अंत आठ दिन हर्षधार॥ सब देव करें पूजन अपार॥ बहु गीत नृत्य बाजे कजाय॥ दिन राति जिनेश्वर भ
क्ति भाय॥ हम शक्ति हीन पहुंचो न जाय॥ यातें अपने घर भक्ति लाय॥ जिनराज आपको करें ध्यान

जिनवर पूजे आगम प्रमाण॥१॥ तुम चरणकमल कल्याणरूप। मम हृदय विराजो हितसरू
प। हम शरणागत आये कृपाल। जगबंधव की जे हू पाहाल॥२॥ निज दर्शन चारित ज्ञानरूप। दी
जे प्रभुजी जगमें प्रसिद्ध। संसार वारतें करो पार। यह अरज जिनेश्वर सुनो सार॥३॥ दोहा॥ पहिले
रतिकर जिनभवन। पूरण यह जयमाल। मन वच काय लगायकें भव्य नवावत भाल॥४॥ ॐ ह्रीं अ
र्घं॥ सोरठा॥ सुखदाता जिनराय। जगत विषें साता करो। यह अरजी शिरताज। आश जिनेश्वर की
भरो॥५॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥७॥ ॥अथ नंदीश्वरद्वीप पूर्वदिशा पूजा द्वितीय रतिकर माह॥ क
वित्त॥ पूरब अंजनगिरि ताकी पूरब दिशि मंदिर सुखकार। नंदावापी बाहिर कोनमें रतिकर पर्वत
सूं जो सार॥ स्वर्णवर्ण गोल तल ऊपर ऊंचो योजन एक हजार। तापर जिनगृह जिनवर प्रतिमा जिन
पूजूं नमि त्रय वार॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पूरबदिशि द्वितीय रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥
चंदन सरस सुगंध कपूर मिलाईए। स्वर्ण रतन कटोरी में धरि लाईए। भवाताप निवारण कारण पूजिये
श्री जिनवर के चरण सुखी नित हूजिये॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ वासमती सुखदास कमोद अनूप हो। चंदकिरण
सम तंदुल स्वच्छ सरूप हो। अक्षयपद के काज भक्ति उर लायकें। जजों जिनेश्वर चरण जिनालय जायकें॥३॥
ॐ ह्रीं अक्षतं॥ वरण वरण के कुसुम सुहावने। सुन्दर अनूप मशक्ति समान बनावने। कामबाण के दाहक

जिनपदपूजिये॥कामदाहनदिव्यायेनिर्भयहूजिये॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥व्यंजनवहुतप्रकार अनूपवनाई
ये॥षटरसमयसुखकार जिनालयजाईये॥क्षुधाहरणकेकाज भक्तिउरलायकें॥जजौंक्षुधाहरदेव
चरणचितलायकें॥५॥ॐह्रींचरुं॥दीपरतनमयसारतथाशुचिघ्रतमई॥तथाआपनारूपऔरवहु
विधिसही॥मोहअज्ञाननिवारज्ञानपतिहूजिये॥६॥ॐह्रींदीपं॥दशविधिधूपवनायसुगंधअपारहै
खेवौजिनपदअग्रभक्तिउरधारहे॥धूपधूमभिसदुष्टकर्मअरिजरतहै॥यहीभावउरधारपूजभवि
करतहै॥७॥ॐह्रींधूपं॥एलालौंगविदामछुहारेसारहै॥औरविविधिकेशुचिफलसुवरणथारहै॥भ
क्तिभावउरलायजिनागममैंसजो॥मुक्तिमहाफलकाजजिनेश्वरपदजजो॥८॥ॐह्रींफलं॥वहुविधिकी
शुचिद्रव्यमिलायेसर्वही॥पूजजिनवरचरणकमलत्रयपर्वही॥नंदीश्वरजिनधामहृदयमेंलायकें॥पू
जश्रीजिनचरणसुहर्षवढायकें॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥त्रिभंगीछंद॥जयजयस्वामीत्रिभुवननां
मीशिवसुखधामीधर्ममयी॥मैंतुमपदध्याऊंसुगुणमनाऊंअचलरूद्धिघोरूपापती॥१॥पद्धडीछंद
जेतीर्थकरत्रिभुवनदयाल॥शतइंद्रजजैनितनायभाल॥तुमचरणकमलकीद्युतिप्रवाह॥सुरमुकट
प्रभादूनीलखाव॥२॥जयजयमुखचंद्रप्रभाअनूप॥जयजयजिनवचनसुधासरूप॥भविजीवनकेदुख
जन्मरोग॥जयश्रवणकरतसबजायसोग॥३॥गतिच्यारचौरासीलाखयोनि॥वहुवारभ्रमोंदुखजियस

मोन॥ ये दुर्लभ नरपरजाय पाय॥ मति भूति गमावो सुक कम्राय॥ ३॥ नित इतर निगोद दुभेद जान॥ भूतेज
वायु पाणी प्रमाण॥ सव सात सात सव जोनि भेद॥ दश लाख वनस्पति योनि खेद॥ ४॥ विकलेंद्रिय दो दो
लख जान॥ पंचेंद्रिय पशु चउ लाख मान॥ सुरनारक चउ चउ लाख सार॥ नर जोनि चतुर्दश लाख जान॥ ५॥
म लाख चौरासी जान भेद॥ इन माहि भ्रमत बहुल हत खेद॥ हे दीनबंधु जगपति दयाल॥ तुम इन सव से
रे रुपाल॥ ६॥ संसार भ्रमणतें दूर होय॥ सो किरिया करि सुख द मोय॥ सो सर्व प्रकाशी हे जिनेश॥ इन ज
उपगार कियो अशेष॥ ७॥ जिहि के प्रभाव ऋषि मुनि महंत॥ निज ऋद्धि लहै जग पुण्यवंत॥ अ जहू
करै प्रकाश॥ भवि शिवपद पावै जिहिं उजास॥ ८॥ हे पुण्यवंत अरहंत देव॥ जिनकी नित करत सुरेश से
व॥ मशी शन वांवत वार वार॥ तुम गुण हिरदे में धार धार॥ ९॥ यह अरज करत बहुविधि पुकार॥ संसार
र तें करो पार॥ तुमही जगमें वरदाय देव॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥ १०॥ घत्ता॥ जय जय सुख
क जगपति नायक अघघायक त्रैलोक्यपती॥ तुमही सव लायक हो वरदायक दो गुणसायक सर्वप
ती॥ अर्घं॥ सोरठा॥ तारण तिरण जिहाज इस असार संसार में॥ दीनबंधु महाराज॥ मम उर वास क
सरा॥ २॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥७॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरद्वीप पूर्वदिशा तृतीय रतिकर पूजा माह॥
कवित्त॥ नंदीश्वर पूरव अंजनगिर ताकी दक्षिण दिश में जान॥ नंदवती वापिका वहिर कोन मध्य मेर

तिकरमान॥एकसहसयोजनउन्नततनकंचनवरनगोलपहिचान॥तापरजिनमंदिरजिनप्रतिमातिन्हपरपू
जूउरधरिध्यान॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूरवदिशाअंजनगिरकेदक्षिणदिशवाहिरकोंनमेंद्वतीयजिनालये
भ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र॥पुष्पं॥अथाष्टकं॥चालछंद॥जलउज्जलचंद्रसमाना॥शुचिकंचनभंगभ
राना॥जिनवरकेचरणचढावे॥तसुजन्ममरणदुखजावे॥नंदीश्वरपूरवजानो॥अंजनगिरदक्षिणमानो॥
रतिकरपरजिनगृहसोहे॥सुरअसुरजेमनमोहे॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशअंजनगिरकेदक्षिणदि
शद्वतीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥शुचिचंदनकेशरलावे॥जिनवरपदअग्रचढावे॥भवता
पसवैनशिजावे॥कछुजन्मलेयशिवपावे॥नंदी०॥२॥ॐह्रींचंदनं॥सितस्वच्छसरलशुचिसार॥अक्षतकेपुंज
अपार॥श्रीजिनवरअग्रधरीजे॥अक्षयपदसंपतिलीजे॥नंदी०॥३॥ॐह्रीं अक्षतं॥बहुविविधवरणसुखकारी॥
दशदिशसुगंधविस्तारी॥शुचिपुष्पजिनेश्वरआगे॥धरमदनमोहअरिभागे॥नंदी०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥चरु
विविधप्रकारवनावे॥शुचिश्रीजिनमंदिरलावे॥श्रीजिनपदअग्रचढावे॥सवपापकर्मनशिजावे॥नंदी०॥५
ॐह्रींचरुं॥दीपकनिजशक्तिसमाना॥अरुशक्तिप्रमाणकलाना॥श्रीजिनवरअग्रचढावे॥क्रमक्रमकेव
लपदपावे॥नंदी०॥६॥ॐह्रींदीपं॥दशगंधहुताशनमाहीं॥खेवोबहुभक्तिवढाई॥तसुकिंचितभवकेमाहीं
वसुकर्मअरीजरजांई॥नंदी०॥७॥ॐह्रींधूपम्॥फलपरमसुगंधअपार॥शुचिशोभितकंचनथार॥जि

नवरकीभेटकरीजेक्रमक्रमशिवनारिवरिजिनंदी॥८॥ॐह्रीं फलं॥जलफलवसुद्रव्यमिलाईशुभ
अर्घवनाईश्रीजिनपदपूजरचायो॥निजजन्मसफलकरपायोनंदी॥९॥ॐह्रींअर्घं॥रतिकरजिन
भवनकीपूजाकरूंविशाल॥अवजयमालावरनउंभक्तिसहितनयभाल॥१॥पद्धडीछंद॥जयज
नराजमहानदेव॥त्रैलोक्यसुरासुरकरतसेव॥जयसमवशरणकेमध्यसार॥चतुराननराजेनिराधार॥२
वसुप्रातिहार्यमंगलसुदर्व॥इत्यादिअतुलमहिमासुसर्व॥लोकोत्तरलक्ष्मीदेखशेष॥सवविस्मयवंतभये
सुरेश॥३॥धुनिदिव्यअनक्षरघनसमान॥अतिश्रवणसुखदगरजैमहान॥नहिंहोटतालवालगैसोय॥
नहिंजीभकंठतनहलैजोय॥४॥अरुअतिशयवंतअवाजसार॥सभविश्रवणमाहिंअक्षराकार॥जयसुरन
सुजोजनरजूसोहोवेतिनकेसंदेहदूर॥५॥त्रिजातिआदिवहुभेदसार॥इत्यादिप्रभुनैवहुप्रकार॥जह
जातिभेदजिनराजभूप॥द्रव्यवैतैचोपणअत्तरूप॥६॥इन्द्रीजोआत्माकोसुचिन्ह॥सोइंद्रीजानोअवि
भिन्न॥अहमिंद्रदेवस्वाधीनजैम॥निजविषयअत्तस्वाधीनतेम॥७॥सोद्रव्यभावकरिद्वैयभेद॥इनकेभीदोदो
वेदभावेंद्री॥आतमअंशजान॥द्रव्येंद्रीतसुउपकरणमान॥८॥भावेंद्रीज्ञानस्वभावसार॥द्रव्येंद्रीजडपुद्
गलचार॥भावेंद्रीलब्ध्युपयोगरूप॥द्रव्येंद्रीनिर्वृत्युपकरणरूप॥९॥विधिकेक्षयोपशमज्ञानअद्धि॥सोजानो
भावेंद्रियलब्धि॥ज्ञानप्रवर्त्तिजोतदनुसार॥सोभावेंद्रीउपयोगसार॥१०॥कार्माणवर्गणाजीवसंगनिर्वृत्ति

जानौं अभंग॥ सित स्याम अरुण इत्यादि रंग॥ इस पलक आदि सब जन उमंग॥ ४॥ ये सब उपगार अभेद जान
जिनवर नें कीनौं श्रुत बखान॥ तत धन्य देव उपदेश दाय॥ हम कौं भव भव हू जो सहाय॥ ५॥ तुम वच जग माहि कि
रो प्रकाश॥ या तैं भवि पावें मुक्ति वास॥ तिन कारण जग हित करण जास॥ निज रूप जिनेश्वर यह ही आश॥ ६॥
दोहा॥ जिनवर चरण सरोज रज रहो सदा हम शीश॥ अरज जिनेश्वर की यही पूरण कर जगदीश॥ ७॥ अर्घं॥
सोरठा॥ रतिकर जिनगृह सार पूजा सुखदायक सदा॥ ये नर मन वच धार करत पूजा जिनराज की॥ ८॥ इत्याशीर्वा
द॥ ॥ ६॥ ॥ अथ नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर जिनालय पूजा माह॥ ॥ कुसुमलता छंद॥
नंदीश्वर पूरव अंजनगिर ताकी दक्षिण दिशा अनूप॥ वापी बाहिर कोन बीच में चौथो रतिकर स्वर्ण सरूप॥ एक
सहस योजन को ऊंचो ढोल समान गोल सम रूप॥ ता पर जिनगृह प्रतिमा वंदौं सुखदायक जो शांत सरूप॥ १॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर पर्वत पर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ चाल
अष्टान्हिका की पूजा की॥ गंगा सम निर्मल नीर प्राशुक शुद्ध महा॥ भर सुवरण गंध गहीर हरि देह पलहा॥ नंदी
श्वर पूरव कोन अंजनगिरि सोहै॥ दक्षिण रतिकर जिन भौन पूजत मन मोहै॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिशा च
तुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ १॥ केशर करपूर मिलाय चंदन गंध मला॥ पूजूं जिनवर पद पाय शांत
स्वभाव गहा॥ नंदी॥ २॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तंदुल सित चंद समान सरल सुगंध भरे॥ कर पूज जिनेश्वर थान सब अ

घपुंजहरै॥ नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ वरसुमनसुमनसुखदायघ्राणदृगनप्यारे॥ जिनवरपदपूजरचायकाम
आटारे॥ नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ चरुसरस अनेकप्रकार उत्तमवनवावे॥ जिनवरपदभक्तिसुधारपूजतसु
वो॥ नंदी॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ अतिउज्जलदीपवनाय॥ जिनपदपूजतसो सो भविजनकेवलपायशिवपतिहू
नसो॥ नंदी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कृष्णागरमलयकपूरधूपसुगंधकरो॥ विधिदहनगहनेगुणपूर॥ जिनपदअग्रधं
नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ फलउत्तमबहुपरकार सरससुगंधभरे॥ भविपूजतजिनपदसार॥ वसुविधिनाश
रे॥ नंदी॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलवसुद्रव्यमिलाय जिनगुणगावतहो॥ भविपूजतश्री जिनपायसो
पावतहो॥ नंदी॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ नंदीश्वरपूरवदिशा रतिकरचोथोजान॥ पूजनकरजि
भवनकी विनयकरूं हितमान॥१॥ पद्धडीछंद॥ जैजैजिनराजदयानिधान॥ गुणसागरआगरधर्म
न॥ तुमचरणकमलकोशचीईश॥ नितनवनकरतनितनायशीश॥२॥ जयदयाधर्मकोसदुपदेश
दयादृजीअशेष॥ निजआतमकीरक्षाकरंत॥ अघमूलमहामिथ्याहरंत॥३॥ करशक्तिसमानकषा
तीनपरमेष्टिभक्तिमेंसदालीन॥ निजशक्तिमानव्रतकरेभाव॥ यहस्वदयाजानोहितउपाव॥४॥
सकलपरजीवराशि॥ तापरकरुनामनवचप्रकाश॥ षटकायजीवआगमप्रमाण॥ प्रत्यक्षकेवली
केजान॥ भूतेजनीरतरुपवनरूप॥ येपंचकहेथावरसरूप॥ त्रयकालएकतसुकालभेव

वउपंचेंद्रीकहेदेव॥७॥इम छहौंकायरक्षकमहान॥सोपरमदिगंबरसुगुरुजान॥नितइतरनिगोद दु
भेदजान॥नरवरविनथावरचारमान॥८॥यहछहसूक्षम अरु थूलरूप॥इमवारहभेदभये अनूप
दोभेदवनस्पतिकेमिलाय॥विकलत्रयमिलिसतरामिलाय॥९॥मनसहितरहितदोभेदजान
पंचेंद्रीऔरकरोमिलान॥इमउगनिशजीवसमासहोय॥इनकीरक्षापरदयासोय॥१०॥येदयाभे
दगभितअनूप॥सवजीवभेदगुरुकियोरूप॥गोमट्टसारआगमप्रमान॥तामेंदेखोहेवुद्धिमान॥११॥
इत्यादिदयावरनीमहंत॥जोधारेनिजसोगुणहेसंत॥हेदेवदयानिधिकर्मजीति॥तुमभयेसुखीस
वदानिचीत॥१२॥नवभवतुमहीहुजोसहाय॥भवभवममफिरदेवसोआय॥भवभवसतसंगतिसु
गुणदाय॥भवभवमैमे सुगुरुसहाय॥संसारसारकेपारहोन॥जगमैंनहिंकोईऔरमौन॥इसका
रणअरजकरूं जिनेश॥करहुपाजिनेश्वरपें अशेष॥१२॥दोहा॥दीनवंधुमहाराजतुमसदासुधारोका
जायहअरजीचितधारियेकृपाकरोशिरताज॥१३॥अर्घं॥सोरठा॥अशरनशरनसहायइससंसा
रअसारमैंतुमदेखेजिनराययातेममअरजीसुनौ॥१४॥इत्याशीर्वाद॥ ॥६॥ ॥
अथनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशपंचमरतिकरजिनालयपूजासांह॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरपूरव
अंजनगिरताकीपश्चिमदिशाविशाल॥सजलवापिकावहिरकोनमेंजिनरहरतिकरगरुकेभाल

बावनपू.
॥२५॥

कंचनमयपर्वतछविराजेजिनगृहशिखरसुरंगप्रवाल॥पूजनकरतमिटतभवफेरीमैंपूजूंत्रययोग
म्हाल॥॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशापंचमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पु
थाष्टकं॥चालपंचमेरुपूजाकी॥दयानिधिहोदयानिधिहो॥जयजगबंधुदयानिधिहो॥टेर॥
तजनीरसुगंधअपार॥कंचनमणिमयभरभृंगार॥दया॥जन्मादिकदुखहरणअनूपपूजैजिनवर
गभूप॥दया॥नंदीश्वरपूरवदिशजान॥पंचमरतिकरजिनगृहमान॥दया॥ सकलसुरासुरपू
हमजिनगृहपूजतहरषाय॥दया॥॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशपंचमरतिकरपर्वतपरजिनाल
जलं॥१॥बावनचंदनपावनलाय॥तासुगंधसैंदिशमहकाय॥दया॥पूजतजिनवरभक्तिवढाय॥मा
भवआतापनशाय॥दया॥नंदी॥ॐह्रीं चंदनं॥ चंदकिरणसमस्वेतअनूप॥तंदुलसारसुगंधसरूप
या॥अक्षतसुचिजिनउचितचढाय॥यातैंअक्षयपदमिलजाय॥दया॥नंदी॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥वरण
णकेकुसुमअनूप॥रतनहेमनिजशक्तिसरूप॥दया॥समरसूलनिरवारनकाज॥पूजोंसमरजईमहा
ज॥दया॥नंदी॥ॐह्रींपुष्पं॥४॥षटरसव्यंजनविविधप्रकार॥मनइंद्रियकोसुखदातार॥दया॥तु
णजिनचरणमहान॥पूजतपावैनिधिशतज्ञान॥दया॥नंदी॥५॥ॐह्रींचरुं॥दीपअनूपयथाविधि
भक्तिभावउरहर्षभरेय॥दया॥केवलज्ञानपतीमहाराज॥पूजूंनिजनिधिपूजनकाज॥दया॥नं ॥२५॥

द॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ अगर तगर कर पूर मिलाय॥ दश विधि धूप सुगंध बनाय॥ दया॥ कर्म रहित जिनवर के पाय॥ पूजत सब विधि सुख लहाय॥ दया॥ नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ बहु विधि उत्तम फल मगवाय॥ कंचन थाल भरौं सुख दाय॥ दया॥ मुक्ति महाफल पावन काज॥ पूजौं मुक्तिपती महाराज॥ दया॥ नंदी॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल आठौं दर्व मिलाय॥ गीत नृत्य वाजित्र बजाय॥ दया॥ अष्ट कर्म के नाशन काज॥ पूजौं मुक्तिपती महाराज॥ दया॥ नंदी॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ मन वच काय त्रियोग कर॥ पूजि जिनेश्वर देव॥ निज हित कारण कहत मैं॥ सहायक सब गुण एव॥१॥ पद्धडी छंद॥ जय जय जगबंधव देव सार॥ जय परम ज्ञान धारी अपार॥ जय जय दर्शन गुण नंत धार॥ जय सुख अनंत बल नंत सार॥१॥ जय छियालीस गुण युक्त देव॥ दश जन्मत अरु दश ज्ञान भेव॥ सुर कृत चौदह अतिशय महान॥ वसु प्रातिहार्य अतिशोभमान॥२॥ अरु नंत चतुष्टय गुण प्रकाश॥ कीनौं भवि को अम मोह नाश॥ जग मांहि कर्म तें बंधो जीव॥ मन वचन काय तें वंदनी व॥३॥ इन जोगन मैं मिथ्या कषाय॥ मिलि कर्म बंध को देव दाय॥ पुद्गल विपाकि तन उदय सोय॥ मन वचन काय संयुक्त होय॥४॥ कर्मागम कारण शक्ति धार॥ आत्मोपयोग है जोग सार॥ तिहि भेद कहे पंद्रह जिनेश॥ मन वचन काय त्रय मूल देश॥५॥ सत अ सत उभय अनुभय सु जान॥ इन च्यार च्यार मन वचन मान॥ जय काय जोग के सात भेद॥ जय जीवन कूं बहु देत खेद॥६॥ औदारिक अरु

बांवनपू
२६

जान॥ वैक्रियिक मिश्र वैक्रियक प्रमान॥ आहार मिश्र आहार रूप॥ कार्माण सातवौं सार्वभूप॥७॥
यथायोग जग जीव संग॥ चेतन कों करते बहुत रंग॥ कबहू नर नारक पशु मझार॥ कबहू निगोद मैं
॥ कबहू सुरगति मैं सुख दिखाय॥ हां तैं इक इंद्री पशु बनाय॥ बहु विधि भटकावै भव मझार॥ ताके दु
न दिलहै पार॥ हे दीनबंधु करुणानिधान॥ बल वीर पराक्रम अप्रमाण॥ तुम नैं सब रोग निरोध
॥ शिव संपति निज आधीन कीन॥ ॥ मैं निज सरूप लखि मुदित गात॥ ता अति हर्ष बढोन
नंद अश्रु मिस नयन॥ [illegible]॥ आह्र बरषै मनु सुधाधार॥ ॥ अथवा जल कौं मिस हृदय ताप॥ सब दू
यो सब जन्म पाप॥ अथवा जिन मूरति उर मझार॥ है विद्यमान वसु चिन्ह सार॥ २॥ अथवा जिन देखत पु
र॥ उर बढै विशेष तरंग सीर॥ सो सर्व पूज्य सर्वज्ञ देव॥ गणधर मुनीश नित करत सेव॥ ३॥ जय जय ज
लौं मम जग मैं वास॥ जब लौं विधि दुश्मन दे त्रास॥ तब लौं सहाय मम करो खास॥ जगदी नेश्वर
भरो आस॥ ४॥ दोहा॥ जो गुण धारि कै जोग सब॥ टारे दुख दातार॥ सो अरहंत महंत पद॥ सब र
सार॥ ५॥ सोरठा॥ दीनबंधु महाराज॥ हौं लखि [illegible] वंदना॥ वसुविधि कृत जिनराय॥ सुविधि श
जी॥ ६॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥१०॥ ॥ अथ नंदीश्वर द्वीप पूर्व दीप स्मरतिकर जिनालय
॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वर द्वीप आठमो ताकी पूर्व [illegible] भाग मैं जान॥ अंजनगिरि पर्व

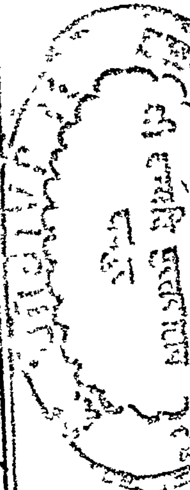
२६

मर्सौं जलवापिका सोभ महान ॥ ताके वाहिर कोन मैं वसु रतिकर गिर है हेम समान ॥ ताके ऊपर श्री जिन मं
दिर वसु विधि ताहि जजौं उर ध्यान ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूरव दिश अंजन गिर के पश्चिम दिशा वसु रतिकर
जिनालय पूजा माहा ॥ कुसुमलताछंद ॥ नंदीश्वर वर दीप आठमो ताकी पूरव भाग में जान ॥ अंजन गिरि पर्वत
के पश्चिम सो जलवापिका शोभ महान ॥ ताके वाहिर कोन में वसु रतिकर गिर है हेम समान ॥ ताके ऊपर श्री
जिनमंदिर वसु विधि ताहि जजौं उर ध्यान ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिश अंजन गिर के पश्चिम दिशा वसु रतिक
र जिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र ० अत्र ० अत्र ० ॥ पुष्पं ॥ गीता छंद ॥ मंदाकिनी को नीर उज्जल उठत तेज तरंग है ॥
शुभ जलज केर आनंदकारी तासमाहि अभंग है ॥ सो नीर कंचन भृंग भरि कै श्री जिनालय जाईये ॥ अर्हंत प
द को ध्यान करिकै विनय सहित चढाईये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पूर्व दिश अंजन गिर के पश्चिम दिशा वसु रत
तिकर पर्वत पर जिनालयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ अति मधु भ्रमर अवाज गुंजे सर्व दिश महकाय के घनसा
र अरु गोसीर मलिया गिर सु चंदन लायकै ॥ भरि रत्न झारी हर्ष धारी श्री जिनालय जाय कै ॥ अर्हंत ॥ ॐ ह्रीं
चंदनं ॥ हिमकर किरण हिम हीर कण का मनो कुंद अमंद सो ॥ जनु फटिकमणि मुक्ता विराजे मनो दामिन
दंड सो ॥ ऐसे अखंडित शालि अक्षत तला इ जिन गृह जाईये ॥ अर्हंत ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ जसु गंध लुब्ध अनेक षट्प
द दूरि दिशतै आय कै ॥ कलरव करत मद गुंज भारी वहु प्रमोद वढाय कै ॥ ऐसे कुसुम वर सुरगंधित लेय जि

गहजाइये॥अर्घं॥४॥ॐ ह्रीं पुष्पं॥सुविसुरभिघृतसुंदरमनोहरमिष्टरसपूरितमहा॥हगमनप्रफुल्लि
करतारोंसूपरूतउत्तममहा॥सोचरुअनूपमथालभरिकैश्रीजिनालयजायकैअर्चै॥५॥ॐ ह्रीं चरुं॥
वर्तिसनेहदीपकजोतिजगमगहोतहो॥अथवाअनेकप्रकारदीपकरत्नस्तुउद्योतहो॥सुवरणरके
रकरिकैंश्रीजिनालयजायकैंअर्चत॥६॥ॐ ह्रीं दीपं॥ निर्दोषपरिमलसुरुचिकारीगंधद्रव्यमहा
सर्वकरणकनचूरणसरसधूपप्रधानहो॥वरलेयअतिउमगेयमनमैंश्रीजिनालयजाय
॥७॥ॐ ह्रीं धूपं॥जिहिगंधनाशारंध्रजाकरलुब्धरसनाकोकरो॥हगलखेमनविलखेउपमाकरलत
हाधरेसोशुद्धफलबहुलायताजेंश्रीजिनालयजायकैंअर्हतभ॥८॥ॐ ह्रीं फलं॥जलगंधअक्षतकुसुम
चरदीपधूपमहानहो॥फलललितमिश्रितअर्घकीजेशक्तिकेअनुसारहो॥प्रतिहर्षसहितव
जिनालयजायकैंअर्हत॥९॥ॐ ह्रीं अर्घं॥जयमाल॥दोहा॥नामथापनाद्रव्यअरु॥भावरूपभगवान
हतदायकपूजोंसदा॥करोंसकलकल्यान॥१॥पद्धडीछंद॥जयजयपसर्वदर्शीप्रभुदयाल॥जयजय
गर्भेतुमरूपाल॥करिकृपादियोउपदेशसार॥यातेंभवजलभविलहैंपार॥२॥प्रभुसदुपदेशहैसुधा
विसुनिकरतृषिभयेअपार॥कोईकुंजीवतरुअर्कमान॥नहिरुचैसोयहजनभागजान॥३॥ज्योंसूरज
तिप्रकाशहोय॥मेदिनीसर्वसुखलहैसोय॥अरुचमगादड़अरुपशुअलूक॥दुखपावैरविकीनाहि

चूक॥३॥ जै जै जिनराज महान देव॥ सब वस्तु प्रगट करि कहै भेव॥ निक्षेप चार करि ज्ञान होय॥ इन बि
न नहि जानै वस्तु कोय॥४॥ जय नाम थापना द्रव्य भाव॥ निक्षेप च्यार आगम उखाव॥ सत मात्र वस्तु
का नाम कोय॥ निज इच्छा को किछु धरो होय॥५॥ सो प्रथम नाम निक्षेप जान॥ वाको विशेष आगम
प्रमाण॥ जो और वस्तु को और माहि॥ थापै सो थापन भेद जांहि॥६॥ ताके दो भेद कहे पुराण॥ अतदा
कृति आकृति भेद मान॥ बहिरंग वस्तु सम जो सरूप॥ सो तदाकार जानै अनूप॥७॥ जो बाहिर आ
कृति मिलै नाहि॥ जड चेतन को कछु भेद नाहि॥ सो अतदाकार कह्यो सरूप॥ यों वरणौ श्री जिन
राज भूप॥८॥ यह वर्णन श्री गोमटसार॥ तत्त्वार्थसूत्र वार्त्तिक मझार॥ सब श्री गुरुनै कीनौ बखान
भविजन भ्रम भंजन अतुलमान॥९॥ अरहंत बिंब पूजनीक॥ निक्षेप यही उर जानि ठीक॥ जिन वचन
थापना शास्त्र जान॥ जिन ही सैं पावै भविक ल्यान॥१०॥ जिन पूजन मैं कल्यान काल॥ अरु पुण्य क्षेत्र
बहुविधि विशाल॥ तिनकी पूजै थापना रूप॥ यह आज्ञा श्री जिनराज भूप॥११॥ जो मंडल माडै रंग धा
रा वह जान थापना को प्रचार॥ अथवा वसु द्रव्य मझार सोय॥ कुसुमादिक की थापना होय॥१२॥ ऐसे सब
श्री जिन आज्ञा प्रमाण॥ है मित्र अन्यथा मती मान॥ यदि भर्म होय तो शास्त्र देख॥ यानै उर ज्ञान बढै वि
शेष॥१३॥ जो होनहार जिस रूप होय॥ ताकी तिस रूप कह्यो जु सोय॥ सो जान द्रव्य निक्षेप सार॥ जो न प

सुतकोनपकरैसार॥४॥जिहरूपजासमैंवहीनाम॥सोकहो भावनिद्तपमान॥आगमनसमय
नाम नहिं अन्यसमयनिक्षेपताम॥५॥इत्यादिबहुतविधिवस्तुभाव॥दरशायोप्रभुजीसुखउपाव
देवजगतपतिसदाकाल॥उरवसोजिनेश्वरकेविशाल॥६॥दोहा॥जयवंतोजगमेंरहो॥जिनवरगि
महान॥याप्रशादकलिकालमें॥पावेधर्मप्रमान॥७॥अर्घं॥सोरठा॥सुन विनतीभगवानज्ञानदानम
दीजिये॥यहीसर्वकल्यान॥करोकृपामुझदीनपे॥८॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२१॥ ॥अथप्रथ
मरतिकरपर्वतपरजिनालयपूजामाह॥कुसुमलता छंद॥नंदीश्वरपूरवअंजनगिरताकीउत्तरदिश
मेंजान॥नंदोत्तरवापिकाग हरीइकलखजारयोजनजलधार॥रथीकायुजकंजकरिशोभितफैलीगंध
विस्तार॥ताकेवहिरकोनमेंरतिकरगिरतापरपूजूंजिनसार॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूरवदिशअंजन
गिरकीउत्तरदिशरतिकरसतमजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥अथाऽष्टकं॥गीता
छंद॥भवभ्रमतकालअनादिखोयो॥शरनढूंढतमैंफिरो॥कोईनपायोनिजसहायकमोहवशअंध
धिरो॥परमोपकारीसुगुरुमुखसेंसुजसप्रभुसुनपाईयो॥जलल्यायतुमपरतंबढायो॥जन्म
गमाईयो॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशासप्तमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥भवतापदाहो
योमोहज्वरतेजोचढी॥निजवलगमायोदुखलहायोअतीतृषातृष्णावढी॥प्रभुराज्यवेद्यमहा



मुनिकैचरनशरनेआईयो ॥ शुचिगंध चंदनलायकेसरपूज्यशीशनवाईयो ॥ २ ॥ उँह्रीं चंदनं ॥ जववस्तुगो
कछुश्रवणगोचरतथाहृष्टिप्रतत्तसैपर्यायरूपविनाशिसवकोलखतदुष्टमतहरौ ॥ इसहेतसुरनर
सर्वपदवीउरविनाशकधारने ॥ तुमचरनअक्षतसौजजौंमैअक्षयपदकेपावने ॥ ३ ॥ उँह्रीं अक्षतं ॥ नरनार
संहिसुभाववेदीसर्वहीदुखमैफसे ॥ सतज्ञाननिजविनपरमसूरैकर्मवंधनमैंकसे ॥ विधिवंधफंदनिकं
रकारणतुम्हेसुनिकरिआईयो ॥ वरपुष्पलेमैकरूंपूजाआपवासवसाईयो ॥ ४ ॥ उँह्रीं पुष्पं ॥ चउओ
रजाकोजोरघायोसुरअसुरसवथरहरे ॥ वहुज्ञानअतुलपदयाहिमैंइसीसेशंकाकरे ॥ तिहिंक्षुधापीडि
तचतुर्गतिमेवहुतवारदुखीभयो ॥ जिनराजवल्लचरुवरचढावतशांतसुखसहजैंलयो ॥ ५ ॥ उँह्रीं चरुं ॥ जि
समोहतममेंजगतघूमतस्वहितमगनहिपावही ॥ विधिज्ञानअंधसमानवहुविधिकुपथपथमेंधावि
यो ॥ प्रभुसर्वज्ञायकशानदाताज्ञानदीपकलाईयो ॥ पदअर्चश्रीअरहंतप्रभुकेमोहअरिविनशाई
यो ॥ ६ ॥ उँह्रीं दीपं ॥ वज्राग्निवडवानलभयानकतथाचपलाचंडसे ॥ नारकतनीविषमाग्निअथवाभ्रौ
रअग्निअखंडसे ॥ विधिअशुभीनहिजरसकैसोकर्मतुमसवदाहियो ॥ यहजानिनिजअरिदहनकारन
धूपअग्निचढाईयो ॥ ७ ॥ उँह्रीं धूपं ॥ नररायचक्रीयक्षनायकउरगपतिधरनेशजी ॥ शशिसूरकल्पसुरेश
कोईदशमकोनहिशेषजी ॥ सोफलअनूपमआपपायेआपहीदातावडे ॥ तिहिंफलसुआपतिहितफ

लसें पूजि पद आगें खडे ॥८॥ ऊँ ह्रीं फलं ॥ जलगंध अक्षत पुष्प चरु वर दीप धूप सुहावना ॥ फल ललित
आठों द्रव्य मिश्रित अर्घ कीजे पावना ॥ वरु हावभाव प्रभावना करि चरण जिनवर के जजों ॥ संसार संत
ति छेदिके शिवमहल की सामा सजो ॥९॥ ऊँ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ हे जिनवर कल्याणकर तुम क
ल्याण सरूप ॥ मम भव भामा मेटकै द्यो कल्याण अनूप ॥१॥ पद्धडी छंद ॥ जय श्रीपति गुणसागर मह
न ॥ जय महिमा को करि सके आन ॥ जे शुद्ध सरूपी शुद्ध भाव ॥ जय शुद्ध शरीरी शुचि प्रभाव ॥ जय अछ
दति निर्दोष ज्ञान ॥ जे मुक्ति पंथ निर्दोष मान ॥ जे सदुपदेश निर्दोष ठान ॥ जय इस प्रवाह निर्दोष देन ॥ सो रत्न
त्रय गुण अतुल जान ॥ संक्षेप रूप सुनियो वयान ॥ शुचि सम्यक् दर्शन ज्ञान सार ॥ अरु सम्यक् चारित म
म कार ॥३॥ कल्पेंद्र शची दिव लोकपाल ॥ इस विन नहि ते वे कोटि काल ॥ दिव पंचम देव ऋषी महान
रु दक्षिण दिश सब इंद्र मान ॥४॥ पार त्रय विन मुक्ति नाहि ॥ सो भासी जिन आगम सु माहि ॥ अहमिंद्र
क अनुत्तर विमान ॥ सर्वार्थसिद्धि नहि मिलै थान ॥५॥ मनपर्यय केवलज्ञान सिद्धि ॥ आहार आदि उत्क
ष्ट ऋद्धि ॥ विन रत्नत्रय के मिलै नाहि ॥ चाहे कोइ कोटि करो उपाय ॥६॥ श्री तीर्थंकर त्रय लोक ईश ॥ सो जा
य विराजे जगत शीश ॥ सो पूरव रत्नत्रय अराधि ॥ पावे सुख पारथ पूर्ण साधि ॥७॥ इस भव
सुख लहाय ॥ यह रत्नत्रय जानो सहाय ॥ याकूं बहु रूषि मुनि करमहंत ॥ उरधा

याके प्रभाव नर अस्तुचिकाय॥ तिसकौं शिर नावै देव राय॥ याके प्रताप यह काय सोय॥ प्रतिजोति बंतो छियै
ण माहि होय॥४॥ याके प्रभाव अतिशय अनेक॥ नरआपति होवैं स्वहित टेक॥ याके प्रभाव नर पशू क्रूर स
व शांत होय कर रहै दूर॥५॥ वहु दुष्ट यक्ष व्यंतर पिशाच॥ शिर नाय करै पद अग्र जाच॥ शशि सूर जोतिषी कू
र और॥ इनकी न चलै वहु भांति दोर॥६॥ सब निधि मैं रत्नत्रय महान॥ रत्नन मैं सबकी खान जानि॥ सुखदा
यक जित नी वस्तु भाय॥ तिन सबकी जानौं इसे माय॥७॥ जिनजननी सम यह पूज्य धाम॥ कर आरती जु तनि
तप्रति प्रमाण॥ तिहुं लोक और तिहु काल मान॥ सुखदायक रत्नत्रय प्रमाण॥८॥ यह जिनवर को उपदेश जा
नाय ह जानैं हितकर सोभ्य मान॥ परमोपदेश दाता जिनेश॥ तुम चरण कमल मम उर महेश॥९॥ प्रभु दास क
रो दाता महान॥ कर कृपा देहु प्रभु ज्ञान दान॥ हे करुणानिधि ये काज साज॥ जयवंत जिनेश्वर देहु आज॥१०
दोहा॥ तुम दाता दातानि के॥ दायक सर्व समाज॥ वही कृपा मोपै करो॥ दीनवंधु महाराज॥११॥ अर्घ॥ सो
रठा॥ सरव संग सुख साज॥ दायक तुम त्रैलोक्य मैं॥ करो क्षमा महाराज॥ निज पर हित कारक सही॥१२॥
पुष्पं॥ ॥१२॥ ॥अथ श्रीनंदीश्वरद्वीप पूर्वदिश अष्टम रतिकर पूजा माह॥ ॥कुसुमल
ता छंद॥ नंदीश्वर के पूर्व भाग मैं अंजनगिरि के पूरब भाग॥ नीर भरी बावरी मनोहर देवी देव करै अनुराग॥ ता
के बाहिर कौन मैं सोहै रतिकर गिर शोभा बड भाग॥ श्री जिनमंदिर ता के ऊपर मैं पूजूं निज हित मैं लाग॥१

वीवनपू. ॥२८॥

ह्रीं नंदीश्वर पूर्व दिश अष्टम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ अर्घं॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ चाल छंद॥ जगमा
ह्व कुत दुख पायो॥ तसु अंत अज हुन हि आयो॥ प्रभु चरनन नीर चढायो॥ उपशांत सुधा सुख पायो॥ नंदीश्व
र वजानैं॥ तहां अष्टम रतिकर मानैं॥ तापर जिनमंदिर सोहै॥ सुर असुर जजत मन मोहै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदी
श्वर द्वीप पूर्व दिश अष्टम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ भवदाह बडी हि सतावै॥ कबहूं न हि सातताप
ति हि दाह मिटावन काजै॥ चंदन सों पूजौं आजै॥ नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ शुचि सरल शालि सितली जे भासुक्ता
हत की जे॥ अक्षय पद पावन काजे॥ नित चरण जजौं जिनराजे॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ अशरीर अरी
ख दाई॥ जीते हरिहर सुरराई॥ तिहि मारण काज नवीना॥ कुसुमावलि जिनपद दीना॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं
पुष्पं॥ चरु नव्य गव्य रस भीने॥ बहु मिष्ट तुरत के कीने॥ जिन पूजत करि अनुरागे॥ दुखदोष क्षुधा दुख भागे
॥०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ शुभ दीप अनोपम ल्यावै॥ निजयोग पवित्र बनावै॥ श्री जिनवर चरन चढावो॥
[illegible] भ्रम मोह अज्ञान नशावो॥ नंदी०॥६॥ ॐ ह्रीं दी
ताशन माहीं खेवै बहु भक्ति बढाई॥ विधि दहन उपावन ल्यायो॥ जिनवर के शरणैं आयो॥ नंदी०॥७॥
ॐ धूपं॥ नाना विधि उत्तम ल्यावो॥ फल श्री जिनचरण चढावो॥ बहु भक्ति सहित गुण गावो॥ त्यां
व फल पावो॥ नंदी०॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल वसु द्रव्य मिलाई॥ करि अर्घ हर्ष हरषाई॥ जिनवर पद ॥२८॥

स्वा यो तस जन्म तनौं फल पायो नंदी ॥ ५६ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ तुम जिनंद जगमैं वडे परम रूप हि
तकार ॥ यह अरजी सुणिली जिये करो भवोदधि पार ॥ १ ॥ पद्धडी छंद ॥ जै जै जिनराज दयानिधान ॥ भ
व कानन दाहन देव प्रमान ॥ जय मोह तिमिर कों रवि स्वरूप ॥ मिथ्यात दाह कों चंद्र रूप ॥ १ ॥ जे दव कषाय
कों मेघ धार ॥ जय विषय जहर कों सुधा धार ॥ जे कुलय सर्प कों मंत्र रूप ॥ जय जय तुम कव अनंत तम स्वरूप ॥ २
संसार महावन विकट रूप ॥ तामें कुमार्ग बहु अंध कूप ॥ अज्ञान प्रबल बल चहूं ओर ॥ बहु छाय रह्यो तिं
चलो जोर ॥ ३ ॥ प्रभु तुमने प्रगट कियो अनूप ॥ सुखकारक रषक रूष स्वरूप ॥ अजहूं वह मारग विध म
नायें सु गुरु दिगंबर रूप ॥ जान ॥ ४ ॥ इन पंचम काल कराल बीच ॥ कुल वान चलै बहु चाल नीच ॥ निर्मल जिन
मत कों दोष देय ॥ ऐसे कुजीव शिर पाप लेय ॥ ५ ॥ यह काल प्रभाव वडो कराल ॥ मिथ्यात उदय विपरी
त चाल ॥ बहु चलै जीव निर्भय महान ॥ निव होय तिन्हों के ज्ञान हान ॥ ६ ॥ भक्त अनंत में भाग मात्र ॥ ल्जा
य ज्ञान पर्याय मात्र ॥ यह भाव निगोद महा रजान ॥ मिथ्यात तनौं यह फल निधान ॥ ७ ॥ हे कृपा सिंधु यह
सर्व हाल ॥ दरशायो तुमने हे कृपाल ॥ यातें मिथ्यात सु तजन योग ॥ सत मारग श्रद्धा ग्रहण योग ॥ ८ ॥ स
व गेय हेय सव उपादेय ॥ सत भेद प्रमाण तथा प्रमेय ॥ नय भेद और अनुयोग द्वार ॥ सत वस्तु प्रकाशन
हार सार ॥ ९ ॥ तुमने वरनन कीनों जिनेश ॥ यह रूप तुमारी अतुल वेश ॥ उपगार भार कर सुर सुरेश ॥

षिमुनिध्यावेंनितनाथधीश॥१०॥ हेदेवकृपालममपैकरेहु निजज्ञानशक्तिमभुहमेंदेहु॥तु
हो अनंतगुणधारदेव॥तुमअक्षयनिधिशिरदारदेव॥११॥जोजीवअनंतेकरेथारगुणअव
गुननहिंकीनविचार॥तुममेरीवारस्यानिधानमतढीलकरोजगपतिमहान॥१२॥दोहा॥ता
नतरनसुनेप्रभूयासंसारमझारपारजिनेश्वरकोंकरोभवसागरअनिवार॥१३॥अर्घ॥सोरठ
हअरजीउरधारमेरीसुधप्रभुलीजियेकीजेभवदधिपारऔरकछूइछानहीं॥१४॥इत्याशीर्वा
॥ ॥२३॥ ॥अथसमुच्चयअर्घ॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरपूरवदिशमांहीस्यामवरनअं
जनगिरिजान॥ताकेचहुंदिशदधिमुखपर्वतस्वेतवरनमनहरनअमान॥रतिकरसुवरणवर्ण
येएकच्यारवसुसंख्याजान॥सवपर्वततेरहजिनऊपरतेरहजिनगृहजजोंमहान॥१॥ॐह्रींनं
दीश्वरद्वीपकेपूर्वदिशसंवंधीएकअंजनगिरच्यारदधिमुखअष्टरतिकरत्रयोदशपर्वतपरजिनमं
दिरवर्तीएकहजारच्यारसैच्यारश्रीजिनविंवेभ्योनमः॥अर्घ॥नंदीश्वरपूरवजिनमंदिरसमो
रणशोभाअनिवारमानसथंभप्रतिमासुखदाईचैत्यवृक्षउप्रतिमाहितकार॥अथव्यंतरंभुव
दिकजहांजहांजिनप्रतिमासारतिनसवकेमनवचनकायकरअर्घचढायकरूंमैंध्यान॥२॥ॐ
ह्रींनंदीश्वरद्वीपपूर्वदिशसंवंधीवर्त्तमानचैत्यवृक्षादिविषैंजिनविंवतथाव्यंतरभवनादिकनकेनगर

व नादिक विषैं जिनप्रतिमा महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अथ दक्षिणदिशसंबंधीपूजा ॥ अथ नंदी
श्वरद्वीपदक्षिणदिश अंजनगिरपर्वतपर जिनालयपूजा भाषा ॥ जोगीरासा ॥ नंदीश्वरवरद्वीपतासके
दक्षिणभागमझार ॥ सहससचौरासीयोजनऊंचो अंजनसम अतिकार ॥ ढोलसमानगोल अंजनगि
रतापरजिनसार ॥ शीशनमायजजूं जिनप्रतिमाहर्षहृदय अतिधार ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिण
दिश अंजनगिरजिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र अवतर ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ पुष्पं ॥ अथाष्टक ॥ सुंदरी छंद ॥ सुरनदीजल
निर्मल लीजिये ॥ कनकभाजनमें भरि लीजिये ॥ जिनपदांबुज अग्र वढाईये ॥ सुगुणरत्नमहानवढा
ईए ॥ दीपनंदीश्वरदक्षिणदिशा ॥ गिरसुअंजनपर जिनग्रहलसा ॥ बिंबशस्त अरु आठमहानहै ॥ जजत सु
रपतिसुरहितदानहै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिश अंजनगिरजिनमंदिरेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ १ ॥
मलयचंदनबावनपावनो ॥ घिसिकपूरसुगंधसुहावनो ॥ वृषपतीपदपूजन कीजिये ॥ विषयभोग
नयांतजदीजिये ॥ दीप० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ शशिमरीचितुषारसमानहै ॥ सरलसितशुचिरूपमहान
होमर॥स [illegible] अक्षतलेजिनराजके ॥ चरणपूजकरूं हितसाजके ॥ दीपनं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अ
क्षतं ॥ कल्पवृक्षनकी कुसुमावली ॥ अतिसुगंधलियेसुर आवली ॥ हृदय भक्तिधारनायके ॥ करतपू
जजिनालयजायके ॥ दीपनं० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ देवतरुकेचरुवरलेयके ॥ थोकजिनवरपदकोंदेयके

सुरसमूह जजैं वहां जाय कै ॥ हम जजै जिन गेह हरषाय कैं दीपनं ॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ सुरमही रुहतैं सुर ला
रतन दीप जिनंद चढाव ही हम स्वशक्ति समान बनाय कै जजत देव जिनालय जाय कै दीपनं दीह
दीपं ॥ अति सुगंध दशौं दिश मैं भरी जिन पराग सुराधिप नैं धरी जगतपति जिन चरण सरोज कों
तसुरपति धारप्रमोद कैं दीपनं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ विविध भूरुहके फल ल्याय कैं सुरसमूह जजैं नित
माय कैं करत नर्त्य सुभक्ति बढाय कैं फल जिनेश्वर चरण चढाय कैं दीपनं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफ
ल्व्य मिलाइये अर्घकर जिनपूजन आइये अष्टकर्म विनाशन हेत है भव्यकों शिवसंपति देत है
दीपनं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ वर्द्धमान महाराज तुम मान गये सुनेमहान बुद्धि विवर्द्धित
मैं धरूं तुमारो ध्यान ॥ १ ॥ तोटक छंद ॥ जय वंत जगतपति राजत हो समवस्रति मैं छवि छाजत हो म
हाज आठ विराजत हो जिनवानि सुधा सम गाजत हो ॥ २ ॥ सततत्व प्रकाश कियो प्रभु जी सर्वज्ञ पद स्थ
यो प्रभु जी वृषकों उपदेश दियो प्रभुजी उपगार कियो प्रभुजी ॥ ३ ॥ इक धर्म दयामय सार कह्यो ति
नेक प्रकार कह्यो मुनि श्रावक रूप दु भेद गिनो अथवा निश्चय व्यवहार भनो ॥ ४ ॥ रतनत्रय रूप त्रि
दकहो मुनिचार अराधन भेद भयो अथ पंच महाव्रत रूप भयो छह काय दयामय भेद भयो ॥ ५ ॥ सत
प्रतीति प्रभेद महा बहु कर्म विनाशक धर्म कहा नय जोग हवादिक संगु गिणियो मव भेद यही

विशेष

सुनियेभाइ दशलक्षणरूप अनूपकह्यो॥ इहभांति अनेकप्रकारभयो॥ सबमें इकभाव विकाशितहै॥ इक
सम्यकज्ञानप्रकाशतहै॥ ६॥ मिथ्या अज्ञानकुचारितसें निजमूलतदूरिरहो हितसें॥ अरहंतसुपंथसुल
वतनागुरुदेवदिगंबरभावतना॥ ७॥ जिनशाशनकोंनहिमानतहै मनकल्पितबातबनावतहै॥ मतवात
इहैनरहावतहै विपरीतकुरीतिसुहावतहै॥ ८॥ मतधर्मकुधर्मविचारविना॥ आचरनेसबीदुखकारणिना॥
सबभोजनज्यों इकघृतकेविना॥ अथवागृहमंदिरनीवविना॥ ९॥ जिममूलविनानहिरुंखरहै॥ कबहूनहि
लफलादिफलै॥ तिनसम्यकके विनधर्मनही॥ विनधर्मकभीफलपर्मनही॥ १०॥ यहीजिनआगमज्ञान
लखो॥ परमागमअम्रतपानचखो॥ सबमोहमिथ्यातकुबुद्धिनखो॥ निजभावकुभावसबीपरखो॥ ११॥ य
हमारगश्रीजिनराजलियो॥ वहहीजिननेउपदेशदियो॥ भविजीवननेउरधारलियो॥ तिननें अपनोहित
सारलियो॥ १२॥ तिनकेपदकोंशिरनावतहो॥ वहहीजगधन्यकहावतहै॥ हमहूंउनकोंशिरनावतहै॥ उरमा
हिजिनेश्वरध्यावतहैं॥ १३॥ दोहा॥ गणधरदेवमहानऋषिच्यारज्ञानबलधार॥ सोभीकछुनहिकरिसकेमुअनंतगुणधार॥ १४॥ अर्घ॥ सोरठा॥ विनतीसुनियेदेव शरणतुम्हारीआइयो॥ प्रभुइतनोंयशलेव जन्ममरण
निरवारिये॥ १५॥ पुष्पं॥ ॥२५॥ ॥ अथनंदीश्वरकेपूर्वदक्षिणदिशाअंजनगिरकेपूर्वदिशावापिकामुख
नंदोत्तरजिनालयपूजाप्रारंभ॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वरकेदक्षिणपूरबदिशमेंअंजनगिरसुखदाई ताकीपूरब

बांवनपू॰
॥२३॥

शोभैं राजें दधिमुखपर्वत भाई ॥ दश हजार योजन कौ ऊंचो उज्वल वर्ण सुहाई ॥ वापी वीच ढोल सम ताप रजि
नगृह पूजो भाई ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिण दिशा प्रथम दधिमुख पर्वत पर जिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र ॥ अत्र ॥
अत्र ॥ पुष्पं ॥ भवि श्री जिनवर के पाय सुकारण पूजन रे भाई ॥ टेर ॥ सुरसरिता के उज्वल जल ले कंचन भृं
भराय ॥ जन्म जरा निरवारन कारण श्री जिन चरण चढाय ॥ सु॰ नंदीश्वर दक्षिण अंजनगिर ता की पूर
दधिमुख पर जिनमंदिर सोहे नजत सुरासुर आई ॥ सु॰ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिण दिशा प्रथम द/
लयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ मलियागिर को बावन चंदन पावन गंध प्रचार ॥ श्री जिनवर के चरण चढाव
पावत सुख भ्रम निवारी ॥ सु॰ नंदी॰ ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ शशि सम उज्वल स्वेत मनोहर सूरल सुगंध अपा
र देत जिन चरनन आगे जन्म जरा निरवार ॥ सु॰ नंदी॰ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ अति निर्दोष सुरंग सुगंधी फूल म
गावो श्री जिनवर की पूजा कर के हर्ष हर्ष गुण गावो ॥ सु॰ नंदी॰ ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ षटरस व्यंजन ताजे पूरित
द्विनावो ॥ मलि बलि जाय जिनेश्वर पद की पूजन करि गुण गावो ॥ सु॰ नंदी॰ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ जगमग
तिहोत दीपक की अति पवित्र वनवावो ॥ मोह अज्ञान विनाशन कारण श्री जिन चरण चढावो ॥ सु॰
॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ कृष्णागर कर्पूर तगर अरु चंदन गंध मिलावो ॥ खेवत धूप जिनेश्वर आगे मनवां
वो ॥ सु॰ नंदी॰ ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ एलालौंग विदाम छुहारे पिस्ता किसमिस लावो ॥ श्री फलदायक कर्म ॥२३॥

जिनवरके चरनन माहि चढावो॥ सुनंदी०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलद्रव्य मिलाय गाय गुण जिनव
गुणन चित लावो॥ भावभक्तिसें श्री जिनवरकी पूजाकर सुखपावो॥ सुनंदी०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल
घत्ता॥ जय जय जिनचंदा जो तिअमंदा आनंदकंद जगत्राता॥ तुम शिवसुखदानी त्रिभुवननामीस
वकस्वामी हितदाता॥१॥ तोटकछंद॥ जय जय जिनराज कृपासदनं सुखकंद अमंद चतुर्वदनं प्रभुरल
सिंहासन राजत है प्रतिहारज आठ विराजत है॥ चहुओर सभा दश दोय करी॥ परदक्षिण रूप अनूप
मही॥ मुनिराज सुरी स्विलोकतनी॥ अजिया पुनि जोतिषनारि गनी॥ भुवनाधिप व्यंतरनारि खरा भु
वनत्रिक देव सु कल्पसुरा॥ नरनारि सबै इक ठौर सही॥ गिरअंतविषैं पशुराशि कही॥३॥ इम जीव सबै उप
देश सुनै॥ विधि माफिक धर्म सुरूप तनै॥ पशु जाति विरोध सबै तजि कैं॥ थिरभाव रहै समता सजिकें॥ ध
सुरभी सुत सिंह खिलावत है॥ तिहि सिंह निदूध पिलावत है॥ मृगके हरि बाल विहार करै॥ बहु आपसमें उर
प्रीति धरै॥५॥ अहि न्योल किलोल करै मिलिकें॥ अरु मूस बिलाव रहै हिलिकें॥ यह अतिशय श्री जिनराजत
नौं॥ गणराजकुपैन कह्यो जायमनौं॥६॥ धनि है धनि है तुमरे तपकों॥ धनि है जगमें तुमरे जपकों॥ धनि है तुम वा
रितपावनकों॥ धनि है जिहिंके मग ध्यावनकों॥७॥ तुम जो कछु धर्म प्रकाश कियो॥ अरु केवलज्ञान उजास
कियो॥ अजहू वह ही चलि आवत है॥ अनि पुण्य उदै नर पावत है॥८॥ जय श्री गुरुदेव दयाल भये॥ सतमा

रगकेसबभेदकहे॥जिनशाशनमेंसबपावतहे॥हितकारकजीवबतावतहै॥९॥यहश्रीगुरुदेवसदाज
गमें॥जयवंतरहोशिवमारगमें॥शिरनावतहूंतुमरेपगमैं॥निजसंपतिसिद्धकरोजगमें॥१०॥प्रभुमो
हियवासकरोजबलौं॥विधिकौंनहिनाशकरौंतबलौं॥यहअर्जप्रभूचितमैंधरिये॥भवपारजिनेश्व
रकौंकरिये॥११॥दोहा॥तुमहीस्वामीजगतपति॥तुमहीदीनदयाल॥कृपाजिनेश्वरपैकरो॥हरोच
तुर्गतिजाल॥१२॥ॐह्रीं अर्घं॥सोरठा॥साचेप्रभुशिरताज॥आजकाजमेरोकरो॥अरजसुनोंशिरता
ज॥भवबाधामेरीहरो॥१३॥पुष्पं॥ ॥२५॥ ॥अथनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाछितीयदधि
मुखपर्वतपरजिनालयपूजामाह॥जोगीरासा॥नंदीश्वरदक्षिणअंजनगिरताकेदक्षिणजानो॥बापी
बीचकक्षोदधिमुखगिरतापरजिनगृहजानौं॥अकृत्तिमउत्कृष्टप्रमाणिकारत्नसुवर्णसुहानौं॥
तिहिमधिएकशतकवसुप्रतिमापूजतपुण्यमहानौं॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाअंजनगि
रकेदक्षिणदधिमुखपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥चाल-- ॥यहउत्तमन
रभवपायकैजिनपूजोंहोभाई॥२॥इहतिगिंछनिर्मलसरिताकोजलसीतलसुखदाईजन्ममर
णदुखदाहनिवारणपूजोंजिनहितदाईभला॥नंदीश्वरदक्षिणअंजनगिरदक्षिणदिशाबताई॥
दधिमुखगिरपरश्रीजिनमंदिरजजेउरासुरआईभला०॥२॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाअंज

न गिरके दक्षिण दधिमुखपर्वतपर जिनालये भ्योनमः ॥ जलं ॥ बावनचंदन दाहनिकंदन कुंकर घसाई
भवातापनिवारणकारण जजों जिनेश्वर पाई ॥ भला आनंदी ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ सुंदर शालिमहाउज्वल मनोहर
कंचनथाल भराई ॥ अक्षयपद पावन शुभ भावन जिनपर पूज कराई ॥ भला आनंदी ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥
वरण वरण के पुष्प मनोहर शुचि सुगंध अधिकाई ॥ कामदाह निरवारन कारन पूजों जिन सुखदाई
भला आनंदी ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ पावन मनभावन बहु व्यंजन मोदक आदि बनाई ॥ क्षुधाहरण विधि अरि वि
जयी के चरनन देत चढाई ॥ भला आनंदी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ जोतिवंत अनुपम रत्ननके दीप सुगुण सु
र लावो पूरणज्ञानपती जिनवरके चरणन माहि चढावो ॥ भला आनंदी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ अगर तगर
चंदन बहु केशर धूप सुगंध बनावो ॥ जगदीश्वर पद पावन कारण जिनवर चरण चढावो ॥ भला आनंदी
ॐ ह्रीं धूपं ॥ सरस सुगंध समूह भरे बहु मिष्ट महाफल भाई ॥ शिवफल पावन शिवरमनीपति चरनन
देत चढाई ॥ भला आनंदी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफल द्रव्य मिलाय गाय गुण उत्तम अर्घ बनाई कर्म
दय दुखहूरकरणकों श्री जिन चरनन देत चढाई ॥ भला आनंदी ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल दोहा ॥ शांतिक
रण भवभ्रांतिहर परम दिगंबर देव मनवचकाय लगायके करूं सदा में सेव ॥ १ ॥ भव दुख दुखिया
जानके करो कृपा महाराज तुमही या संसार में तारन तरन जिहाज ॥ २ ॥ छंद मोतियादाम ॥ सुखी

चौवन पू.
॥२५॥

तुमहीजगमैंजिनराय॥सुनेपरमागममैंहितदाय॥कहूंकछुभेदअनूपकनाय॥सुथानकपुण्यतनौ
हजाय॥१॥सुगर्भहिसैंषटमासअगार॥नपांगणमैंवरषैमणिधार॥सुरीवहुसेवकरैजिनमात॥
नेकप्रकारसम्हारतगात॥२॥सुगर्भविषैजवआवतदेव॥सुरासुरआयकरैवहुसेव॥सुरत्नसिंहास
पैपितुमात॥सुराधिपन्हौनकरैवहुभांति॥३॥अमोलमणीयुतमोतियदाम॥करैवहुभेदशचीअ
राम॥नवायजिनेश्वरकौंनिजभाल॥करैवहुसंचयपुण्यविशाल॥४॥धनवौमहिमासवनग्रमझार॥
मणिवर्षतहैत्रयवार॥सुजन्मलयौत्रयज्ञानसमेत॥भयेतवचिन्हसवीसुखहेत॥५॥करौसुरसाज
रावतवीर॥सुराचलन्हौनकियोहरिधीर॥सुरासुरनृत्यकियोवहुभांति॥वढौअतिहर्षहियेन
घनियोगसवैकरिजन्मकल्यान॥गयेनिजथानकदेवमहान॥प्रभूतनजोतिवढैदिनरात॥सु
तहीभ्रममोहविलात॥६॥हजारदृगांजुलिस्यैंसुरनाथ॥सरूपसुधारसपीवतसाथ॥निमेषन
तरैवहुभांति॥निहारतपैनहितृप्तिलगात॥७॥जयौजिनरैवअलौकिकरूप॥निहारतहीसुख
होतअनूप॥कहागिनतीनरजीवनसार॥पशूगणमोहितहोतअपार॥८॥गृहाश्रममैंवहुवस्तुअ
नूप॥महामणिभूषणवस्त्रस्वरूप॥सवैसुरलोकतनौसवसाज॥वडेरहतेसुरसाजसमाज॥९॥अ
रतनौवहुवस्तुअनेक॥रहैसुरलोकतनीपरटेक॥अनेकसुरासुरभृत्यरहाय॥अनूपमनृत्यरुगान

कराय॥१२॥महासुखमाहि विताकतकाल॥कष्टलरिवजोगविरागनहाल॥तभीसुरदेवरूषीसु रश्रापा॥विरागवढावनवैनकहाया॥१३॥धरेसमुजोगधरेसुभध्यान॥लहैतवपंचमज्ञानमहान समस्तनदेववनावतश्राय॥सुभव्यनकौंशिवगेललगाय॥१४॥मनुनिरवानमहासुखधाम॥सुजा यविराजतहैं श्रभिराम॥तहाँथिररूपश्रनंतहिकाल॥रहै।श्रविविसुसुखीगुणमाल॥१५॥प्रभुतुम रपदकौंनयभाल॥करैं श्ररजीसुनियेप्रतिपाल॥महादुरवदाभवसिंधुलरवाय॥जिनेश्वरकेजियश्रा पसहाय॥१६॥दोहा॥तुमस्वामीत्रैलोक्यमैंविनकारनप्रतिपाल॥ममसहायकरकेप्रभूयहीविर दमतिभाल॥१७॥श्रर्घं॥सोरठा॥तुमहीशरणसहाय॥तुनेमुख्यसंसारमैं॥मेरीकरोसहाय॥बारम्बा रजीकरूं॥१८॥इत्याशीर्वाद॥ ॥६॥ ॥श्रथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशातृतीयदधिमुखपू जाप्रारंभ॥जोगीरासा॥नंदीश्वरदक्षिणश्रंजनगिरपश्चिमदिशिविख्याता॥ढोलसमानगोलगिरदधि मुखदधिसमस्वेतसुहाता॥ताकेशीशजिनेश्वरमंदिरश्रकृत्तिमसुखदाता॥शीशनवायकरूं जिनपू जनयातेंशिवसुखपाता॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाश्रंजनगिरकेपश्चिमतृतीयदधिमुखजि नालयेभ्योनमः॥श्रत्र०॥श्रत्र०॥श्रत्र०॥पुष्पं॥छंदगीतिकाचाली॥महागंगापानीशुचिकनकभृंगभरके जजौंजिनपदनामीहृदयश्रदासुकरके॥सबैभविदुखहानी॥भाजेजन्ममरणादिजगके॥लहैंयोंसुख

री विविधिसुरसुक्तिमग के॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासंबंधित्रयोदशजिनालयेभ्यो नमः॥१

लें॥ असाता या जग माही दवानलसे अधिक तापी॥ सुरसुख शाकीने नतो भी यों हृदय धापी॥ इसके खारन चरन के जिनके स्वहित पूजों॥ मता चंदन लेके स्वहित कर पूछ घसि दूजो॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अमों में भारी चतुरगति मैं न सुख पायो॥ महारस हितकारी कुबुधिवस तैन कर आयो॥ शुभोदयसें भा अक्षतरुचि आई॥ जजों जिनराज अक्षतसों इसी विधिसें स्वनिधि पाई॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुरासुरस जीते प्रबल अशरीर विधिवैरी॥ रहे ना इस आगै प्रबल नरकू पशु जहरी॥ करो वश में याको कुसुम ण जिनको जजों निज हित काजै स्वनिधि आवै सही तिनि को॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ सुनो स्वामी मेरी राता जगत माही इसीसें दुख पावै जगत के जीव सुख नाही॥ महा चरु भवि थारी सु जिन आ क्षुधा के दुखभारी इसी विधि सें सर्व हरि यो॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ महा भ्रमतम छायो कुबुधि मिथ्या सेती॥ नहीं सत मग सूझै स्वपर स्वगुरा स्व विधि जती॥ स्वपर दीपक लेकै चरण जिनराज जो तो के सुखी भवि जो वनित हूजो॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ सुगंधी वनि वाजे रुचिर दशधा धूप अ रे भक्ती भर के जिन पूज विधि अधिकी॥ सही शिव सुख पावैन आवै बो जगत वन में॥ यही अ खो सही सुखदा सुखी मन मैं॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ सफल द्रुम...

२

नपतिपद आगे सुबुधिधारी भेट शिववरलो यही वसुविधि पूजा जिनागम में बताई हो ॥ कहश्री
जिनवर ने परम गुरु सों सुनाई हो ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जलादिक सब लै वे दरव वसु धामिला करके अ
रघ यह भरि थारी चढावे चरण जिनवर के ॥ सही शिवसुख पावे न फिर आवे वही जग में ॥ कही यह
जिनवर ने गही भविजी शिवमग में ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ कल्याणक नायक नमूं सर्व
सिद्धि दातार ॥ मम अरजी सुनिलो जिये रहु रूद्धि अनिवार ॥१॥ पद्धडी छंद ॥ जै जै जिनराज दया
निधान ॥ भवसागर तारण पोत जान ॥ जै जै करुणा निधि देव ईश ॥ नय वार नमौं मैं नाय शीश ॥२॥
जयधन्य देव अवतार सार ॥ भवपार करे भविजन अपार ॥ जे दियो धर्म उपदेश सोय ॥ जिह धारत
भवि भव पार होय ॥३॥ वरु धर्म सदा वर्ती महान ॥ जय दिशि वसुख दायक प्रमान ॥ जै सम्यक दर्शन मू
ल सार ॥ डाहला ज्ञान जानो अधार ॥ बहु विधि चारित तरु पात फूल ॥ दिव शिवसुख जिहि के रहे
फूल ॥ जो भविजन सेवे मन लगाय ॥ जिह हैं तिहि के सब दुख पलाय ॥४॥ दो भेद धर्म के जग प्रसिद्ध
मुनिवर अरु श्रावक स्वयं सिद्ध ॥ श्रावक के ग्यारह भेद जान ॥ दर्शन प्रतिमा पहिली प्रमाण ॥५॥ जव
दूजी व्रत प्रतिमा अनूप ॥ वारह व्रत धारण तिह सरूप ॥ जय सामायक तीजी महान ॥ प्रोषध चतुर्थ
गुणखान जान ॥६॥ जय सचित त्याग पंचम सुजान ॥ दिन ब्रह्मचर्य षष्ठम महान ॥ सप्तम हे पूरण अ

वांवनपू.
॥२७॥

चर्य॥ आरंभत्याग अष्टमसुवर्य॥ ७॥ जयपरिग्रहत्यागीनवमजान॥ अनुमतत्यागीदशमें
नो उद्दिष्टत्याग ग्यारमपवित्र॥ यह उत्तमश्रावक जानिमित्र॥ ८॥ जब पहिलीप्रतिमापूर्णहोय
दूजीको तव आरंभहोय॥ जब दूजीपूरणसधैसोय॥ तवतीजीको आरंभहोय॥ ९॥
तिमाभेदजान॥ पूरवसाधै उत्तमप्रमाण॥ पहलीप्रतिमाविननाहिकोय॥ वाहेतपसीमुनिकों
नहोय॥ १०॥ यहजानिसुधीहिरदैविचारि॥ पहलेसमकितकोहृदयधारि॥ समकितविनको
हिसमकितविनशुभगतिपर्मनाहि॥ ११॥ यहजिनवरआज्ञामानवी॥ हिरदैविचारहृषधारि ॥ १
कदेखकरउरविचार॥ जिनवरकीआज्ञाहृदयधार॥ २॥ जगधन्यदेवअरहंतसेव॥ जिहिसेंभ
वैसर्वभेव॥ ममउरमेंनिश्चोदेवसार॥ धोखवलबुद्धिअहमेवसार॥ ३॥ हेदेवअरजममवारवार
रुनाकरभवदधितारतार॥ अवविघ्नभयंकरजारजार॥ निजस्वहितऋद्धिकरलारलार॥ ४॥ हेती
र्थकरत्रिभुवनधनी॥ तुमगुणअगमअपार॥ कृपाकरोमुजदीनपेकरोभवोदधिपार॥ ५॥ अ
रठा॥ सिद्धशिरोमणिसार॥ सिद्धकरोपुरुषार्थकी॥ मेरीबुद्धिविस्तार॥ सिद्धकरोसतस्वारथी॥ १
त्याशीर्वाद॥ ॥९७॥ ॥ अथनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाउत्तरदधिमुखजिनालय
ह॥ चालजोगीरासा॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशामाही अंजनपर्वतसोहै॥ वापीवीचशोकावापीमेंदी

॥२७॥

गिरमनमोहे॥तापरश्रीजिनभवनअकृत्रिमसुरपपूजनआवे॥शक्तिहीनहमनिजगृहमाहीजि
नपदकोंशिरनावे॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॥
अत्र॥अत्र॥पुष्पं॥सोरठा॥पद्मद्रहजलसार॥कंचनभाजनमेंभरों॥जिनपदतरत्रयवारधा
रदेयसबदुखहरों॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिक्चतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१
केशरचंदनसारकर्पूरादिमिलाईए॥जिनवरपदसुखकारपूजतभवितातलहो॥२॥ॐह्रींचंदनं
देवजीरसुखदास॥अक्षतस्वक्षसुहावने॥पूजतशिवपदखासमुक्तिवासनिश्चैलहे॥३॥ॐह्रींअक्ष
तं॥पारिजातमंदारसुंदरकुसुमअनूपले॥भक्तिभावउरधारजिनपदपूजतशिवलहे॥४॥ॐह्रीं
पुष्पं॥नानाविधिपकवान॥ताजेशुद्धसुहावने॥जोपूजतभगवानक्षुधादोषसोसबहरो॥५॥ॐह्रीं
चरुं॥दीपकजोतिप्रकाशशुद्धवस्तुसंजोगमें॥पूजूंजिनसुखराशिज्ञानजोतिप्रगटैसही॥६॥
ॐह्रींदीपं॥कृष्णागरकरपूरचंदनधूपबनाईये॥भक्तिभावभरपूरजिनवरचरनखेइये॥७॥ॐ
ह्रींधूपं॥एलाकेलाआदिफलउत्तमबहुरसभरे॥करकेमनअह्लादजिनवरकीपूजाकरो॥८॥ॐह्रींफ
लं॥जलफलवस्तुमिलायअर्घबनावेभव्यजन॥पूजोंश्रीजिनपायमुक्तिमहलनिश्चैमिलैं॥९॥ॐह्रींअ
र्घं॥जयमाल॥दोहा॥तुमस्वामीत्रैलोककेअशरनशरनअधार॥इसअसारसंसारमेंमेरीसुनोपुकार

वीनवपू॰
॥२८॥

॥१॥ पद्धडीछंद॥ जेजेजिनराजदयानिधान॥ भवदुखमेटनसमरथमहान॥ जेजेमैंयासंसारमां
दुखसहेबहुतसोछिपेनाहि॥ बहुकालनिगोदकुवासकीन॥ इकश्वासअठारजन्मइकसासली
जीवअठारउसाससार॥ अरुजन्ममरणइकसातधार॥ क्रमक्रमसेतासैनिकसदेव॥ थावरग
तिपाईपचभेव॥ तहांकालअसंख्यविनाशहोय॥ बहुवारजन्ममरणादिहोय॥२॥ द्वयइंद्रिय
कविकलदेहाधरिसहेदुक्खताकोनछेह॥ पहांलकसन्मूर्छनलहीदेह॥ मनविनातदपितनसें
धापचइंद्रीतनदोभेदसार॥ मनरहितजीवनहिंगर्भधार॥ मनसहितगर्भमेंवसेआय॥ बाहरनि
कसपायभूअपेजंतीतारकरेबुनार॥ ऐसोजीवगर्भमेंहोयपार॥ नवजन्मसमयअतिदुक्ख
नवरजानेकैसहेसोय॥ पशुजोनिमहादुखखानिजानि॥ हिमउसक्षुधाअरुतसावान॥
रधारफिरपरैमार॥ पशुगतिकेदुखकीकहासम्हार॥ असंक्लेशभावसेंनर्कजाय॥ तहांती
णदुखपावेअघाय॥ फिरनिकसितहांतेबहुभ्रमंत॥ ताकोनहिपावेकहीअंत॥३॥ कोईपुण्यउ
रदेहपायतहांविषयलोलपीहुएजाय॥ बिनधर्मध्यानआयूगमाय॥ [illegible]थाकरत फि
वितम्रतिसममनुषदेहलास॥ तवबुद्धिऊंचकुलधर्मनेहअतिदुर्लभपावेजगतवीचमानरम्न
ऊपररहेमीच॥४॥ हेदेवजोगयहमिलोसार॥ यातेप्रभुसुनियेममपुकार॥ प्रभुदेहुहमेंनिजरू

ना॥अरुप्रगटकरीउरसत्यज्ञान॥११॥ममद्रव्यक्षेत्रअरुकालभाव॥नासमरीजेचारित्रभाव॥यहरत्नत्रय
शिवमगउपाव॥ताकेसाधकगुरुदेवभाव॥१२॥भवभवमेंमिलियोजोगएव॥भवभवमेंमिलियोतुम
चरणसेव॥भवभवगुरुमिलियोअनागार॥भवभवसतधर्मरहोप्रचार॥१३॥यहअरजहमारीसुनो
देव॥हतनौंवरदेप्रभुसुयशलेव॥प्रभुतुमसवलायककहदेव॥करजोरिजिनेश्वरकरतसेव॥१४॥री
ना॥जवतकरविशशिगगनमें॥तवतकथिरगिरराज॥तवतकयासंसारमैंधर्मरहोजिनराज
१५॥अर्थदोहा॥शिववासीप्रभुशिवसुखी॥सुखदायकभरपूर॥मेरेहिरदेमेंवसो॥तुमजयवंत
नूर॥१६॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२०॥ ॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनाल
यपूजाप्रारंभ॥जोगीरासा॥नंदीश्वरदक्षिणअंजनगिरअरजापूरववापी॥ताकेवाहिरकोनप्रथममें
रतिकरगिरआलापी॥एकसहस्रयोजनकोऊंचोगोलढोलसमसोहै॥तापरश्रीजिनगेहअकृत्रिम
सुरनरकेमनमोहै॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र
पुष्पं॥चौपाई॥रूपकेदेवदीर्घकोउज्वललीजे॥वीतरागकीपूजनकीजे॥यातेजन्मजरानशिजावे॥क
मकमसोशिवमंदिरपावे॥नंदीश्वरदक्षिणदिशजानो॥अरजावापीकेपरमानो॥रतिकरगिरजिनगृह
सुखदाई॥सर्वसुरासुरपूजतआई॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥

जलं॥ शशिसम सीत सुगंध अपारा॥ बावन चंदन अरु घनसारा॥ जिनवरचरण जजंत हितकारा॥ शांति सुधा प्रगटै तिहि बारा॥ नंदी॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षत स्वच्छ सरल शुचि सारा॥ भरि कर ले सुवरणके थारा॥ पूजत जिनवर भक्ति सुधारा॥ सो पावत अक्षय पद सारा॥ नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ पावन फूल सुगंध अनूपा॥ अपवासु वरणके शुचि रूपा॥ तिनसों जिनवर पद भवि पूजे॥ काम दाह दहि शीतल हूजे॥ नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ षटरसमय चरु सद्य बनाई॥ घ्राण नैन मन कों सुखदाई॥ ले कर श्री जिनमंदिर जावे॥ जिनपद चरनन भेट चढावे॥ नंदी॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ कनकरतनमय जोति सुहाती॥ शुचि कपूर सुरभि घृत बाती॥ दीपक कर जिनवर पद पूजे॥ केवल पाय अमर पद हूजे॥ नंदी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कर्पूरादि सुगंध अपारा॥ द्रव्य मिलाय धूप शुचि सारा॥ जिनवरचरण जजै मन लाई॥ तिन नैं नित शिव संपति पाई॥ नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ फल उत्कृष्ट अनेक प्रकारा॥ लावत भवि जन हर्ष अपारा॥ जिनवरचरण जजत भवि प्राणी॥ ते पावे दिव शिव सुखदानी॥ नंदी॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल द्रव्य मिलाय बनावे॥ अर्घ कनकमय थार भरावे॥ जो भवि श्री जिनचरण चढावे॥ सो निश्चै उत्तम गति पावे॥ नंदी॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ देव रूप सुरपति सबै॥ जिसे नवावै शीश॥ जिनके चरण सरोज रज॥ रहो सदा मम शीश॥१॥ पद्धडी छंद॥ जय श्री धर श्रीकर श्री जिनेश॥ जय ब्रह्म शिव शंकर महेश॥ जय चतुरानन सर्वज्ञ देव॥ तुम चरण

सुरासुरकरतसेवा॥ मुनयमुनिमहंततुमध्यानधार॥ तेहोयअगमभवसिंधुपार॥ प्रभुतुमगुणमहिमा
अतिअपार॥ गणधरसुरेशनहिलहैपार॥ तौअल्पमतीनरऔरकौन॥ प्रभुवर्णसकेगुणरतनभौन
प्रभुतुमगुणनिर्मलगगनमाहि॥ मुनिविद्यानिधिनहिपारजाहि॥ अतोहमसमाननरकीटसोय
किहिविधिगुणअंबरपारहोय॥ पैभक्तिभावहमशक्तिहीन॥ तुमगुणवर्णनआरंभकीन॥ ४॥ ज्योंनिजसु
तपालनहिरणआप॥ हरिसन्मुखजायकरैकलाप॥ ज्योंबालकशशिप्रतिबिंबदेखि॥ लिहिग्रहणकरै
पौरुषविशेष॥ ५॥ त्यौंतुमगुणकथनमझारसार॥ मुनिईशकहतयाहीप्रकार॥ प्रभुहमकछुजानत
नाहिदेव॥ क्याकहिकैंप्रभुपदकरैसेव॥ ६॥ प्रभुतुमसवकेरक्षपालहोय॥ जगमाहिसुनेवहुवारसोय
तातैंयहनिश्चयउरमधार॥ हमरोभीवेडाकरोपार॥ ७॥ ज्योंन्यायवंतभूपतिमहान॥ इकग्रामतणा
शिरदारजान॥ वहभीनिर्वलकोदयाआनि॥ प्रतिपालकरैसुनियेसुजान॥ तौआपदेवत्रैलोक्यनाथ
सुरईशनवावैंतुमैंमाथ॥ ऋषिमुनिमहंतसवकरैंआश॥ प्रभुदेहुतिन्हैंनिजऋद्धिवास॥ ८॥ क्योंमेरीवा
रअवारकीन॥ मोकूंजानूंअत्यंतदीन॥ तुमपदतरमेरोसदावास॥ यहमेरीपूरणकरोआस॥ ९॥ बहुकू
रकरूपअनेक॥ तिनकौराखौप्रभुतुमहिटेक॥ नरअधमवहुतनिस्तारदीन॥ षटहृदयसुवुधि
विस्तारकीन॥ १०॥ ज्योंखड्गकुसुमकीकरीमाल॥ ज्योंवालभुजंगिनफूलमाल॥ ज्योंसेवविपतिसव

करी दूर॥ त्यों मेरो संकट करो दूर॥ २॥ ज्यों विकट अग्नि थल भयो नीर॥ अरु मानव दो ज्यों सती चीर॥
ज्यों जहर सुधा सम कियो देव॥ त्यों मेरो संकट हरो देव॥ ३॥ काहू कौं स्वर्ग विमान देहु॥ काहू कौं ऋद्धि
निधान देहु॥ काहू कौं छत्रपती करेहु॥ मम पास वास द्यो सुयश लेहु॥ ४॥ निज सुत के तुतले वचन पे
उर हर्ष करै माता विशेष॥ तुम तात मात सें अधिक देव॥ मेरे सुनि वचन कृपा करेव॥ ५॥ जय
तो जग में तुम दया जु नय वंतो तुम नामी विशाल॥ जे वंतो तुम मग चलन हार॥ प्रभु मो हि करो
सार पार॥ ६॥ दोहा॥ तुम स्वामी शिव महल के वासी सुखी अनूप॥ करो जिनेश्वर कौं प्रभू उसी
पनैं रूप॥ ७॥ अर्घ॥ सोरठा॥ दुस्तर पारावार खार नीर संसार है॥ प्रभु तुम अधम उधार मो कूं पा
रिये॥ ८॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥ ९॥ ॥ अथ नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिश द्वितीय पूजा भाष
ा॥ नंदीश्वर की दक्षिण दिश में अंजन गिर है भाई॥ ताके पूरव अरजा वापी॥ ताके कोन
दूजो रतिकर पर्वत सो है कंचन वर्ण विशाल॥ ता पर जिन गृह कौं नित पूजौं मन वच का
ल॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा द्वितीय रतिकरेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पु
ष्पांजली॥ पाईरूपक॥ निर्मल गुण धारक जग नामी॥ परम पूज्य तीर्थंकर स्वामी॥ तिन गुण प्रा
रण सोय॥ जिन पद जल सौं जजि भवि लोया॥ अष्टम द्वीप दिशा दक्षिणाई॥ अंजन गिर के पूर

भाअरतिकरद्वितियजिनालयसोहेसकलसुरासुरकेमनमोहे॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिण
दिशद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥ ॥ दुष्टकषायनापदुखकारी॥तातेरहितसर्वहि
तकारी॥श्री अर्हंतपरमपदकाजे॥चंदनसोंपूजौंजिनराजे॥अष्टम॥२॥ॐह्रींचंदनं॥अक्षयपदमें
आपविराजे॥सिद्धसरूपअनूपमछाजे॥तिहिपदजापतिकाजसुरेशा॥अक्षतसोंजिनजजतअ
गेशा॥अष्टमरतिक॥३॥ॐह्रींअक्ष॥कामदारुजगमेंदुखकारी॥जिनजीतोतिनकीबलिहारी॥ब्रह्म
स्वभावज्ञानबलधारी॥पुष्पचढायकरूंनवकारी॥अष्ट॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥भूखप्यासआदिकदुख
कारी॥दोषअंगरहेजिनपरिहारी॥जिनपदमेंनैवेद्यचढाऊं॥भक्तिभावसेंजिनगुणगाऊं॥अष्ट
५॥ॐह्रींचरूं॥प्रभुअनंतगुणधामविकाशी॥ज्ञानजोतिअनुपमपरकाशी॥तिनकेचरणकम
लनितध्याऊं॥भक्तिसहितनितदीपचढाऊं॥अष्टम॥६॥ॐह्रींदीपं॥कर्मरहितभगवंतकृपाला॥
अनुपमज्ञानदरशगुणमाला॥अक्षयज्ञानदर्शबलकाजे॥जजतधूपसोंश्रीजिनराजे॥अष्टम॥
७॥ॐह्रींधूपं॥परमसुगुनफलसंपतिभारी॥जोभविजनताकेअधिकारी॥सोजिनवरपदको
चितल्यावे॥वेउत्तमफललेपूजरचावे॥अष्टम॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलआठोंदरवमिलावे
भक्तिसहितजिनमंदिरजावे॥श्रीजिनवरकोपूजरचावे॥सोदिवलोकसंपदापावे॥अष्टम॥९

॥ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ दू जो रतिकर जिनभवन पूजा सुखदातार॥ भक्ति सहित जो नर कू
रे ते पावै भव पार॥१॥ पद्धडी छंद॥ जे द्वीप आठमो है प्रधान नंदीश्वर ताको नाम जान॥ ये सम
समुद्र के और पास गोलाकृति सो है अति उजास॥ इक शतक तरेसठि कोरि जान॥ अरु ला
ख चोरासी अधिक मान॥ इतने योजन सरस्वत जान प्रति दिश मैं चौडाई प्रमान॥ रत्नाकी द
ण दिश कही सार॥ अंजनगिरि अंजन वर्ण धार॥ अर जावापी तिहु पूर्व जान॥ तसु कोन वीच र
कर महान॥ तिहि पर जिन मंदिर शोभमान॥ शत आठ अधिक प्रतिमा प्रमाण॥ सव धनुष पां
से तुंग जान॥ पद्मासन ध्यान विराजी पुराण॥ जिन दंत वज्र मणिमय मझार॥ अर अधर पद्म
ण लाल यार॥ दृग कंज अरुण सित स्याम सार॥ सुर सुरी थकित जिन छवि निहार॥ भ्रू लता
र शिर केश स्याम॥ पग पै रत्न पुंज लसु धाम॥ नख लाल मनो उत्तम प्रवाल॥ मुनि पद्म कमल की
कली वाल॥ धवा की शरीर की दुति अपार॥ ताये सुवरण समछवि निहार॥ तुलसाय मान अ
जवंत॥ लखि सुर सुरेश अति हर्षवंत॥ वैराग्य भाव फल के अपार॥ निरखत विनाव सवन शेसार
सुर सम्यक दर्शन लहै सो य॥ धनि जन्म तिन्है तुम दर्श होय॥ हम पुण्य हीन पहुंचो न जाय॥ वस भ
क्ति यहां वसु मोद लाय॥ तुम चरण कमल को शीश नाय॥ उर ध्यान धरै शिव सुख उपाय॥ ८

तनीवहुद्रव्यलायासुरपूजतहेतुमचर्णजाय॥ हमशक्तिहीनउरभक्तिलायतुमचरणजजैजिन
भवनजाय॥१०॥ यहभक्तिहमैभवन्सहाय॥ हजोयहअर्जसुनौजिनाय॥ संसारखारदुखकारसोय
यामैंदूजोनहिशरणकोय॥११॥ यातैंयहअर्जबारबार॥ हमकरतसुनौजगपतिउदार॥ तुमदर्श
आजपायोअनूप॥ सवश्रेयआजआयोअनूप॥१२॥ ममविघ्नमूलनिरवारदेव॥ निधिदेउहमैंनि
तकारदेव॥ यहअर्जहमारीसुनौदेव॥ करजोरिजिनेश्वरकरतसेव॥१३॥ दोहा॥ रतिकरगिरजिनभ
वनकीपूरणयहजयमाल॥ जोवांचैसतभावसोंताकेभागविशाल॥१४॥ अर्घं॥ सोरठा॥ दीनबंधुम
हाराजदीनजानकरुणाकरो॥ सेवगहीवनवाजतुम्हीसुनेसंसारमैं॥१५॥ ॥इत्याशीर्वादः॥ २०॥
अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशातृतीयरतिकरजिनालयपूजामाला॥ ॥जोगीरासा॥ अष्टमद्वी
पदिशादक्षिणमेंअरजावापीसोहै॥ ताकेबीचकौंनरतिकरगिरकनकवर्णमनमोहै॥ तापरश्रीजिन
भवनअकृत्तिमसुरपतिपूजनआवै॥ हमतिनकोआह्वाननकरकैअपनेघरगुणगावै॥ ॐ ह्रीं दक्षिण
दिशातृतीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ दोहा॥ जन्ममरणकेदुखसहेहेजि
नेशजगमांहि॥ हिमकरसमजलल्यायकैरचूंपूजजिनपांहि॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशारतिकरतृतिय
महान॥ जिनगृहसुरपतिजजतहैंनमूर्तिन्हैधरिध्यान॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशातृतीयर

करजिनालये॥ ॐ नमः॥ जलं॥१॥ कर्मतापनापितफिरौं ज्यौ रोगतिके मारि॥ शीतल जिनपद
शीतल चंदन ल्याय नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ विनाशीक जगसंपदा मिली अनेकन वार॥ अक्ष
दातार पद पूजौं अक्षत धार नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ मीनकेतु दुखदेत है ताके नाशन हेतु॥ प्रभुम
न विजयी जजौं ले प्रसून करसेत नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ क्षुधा हरण निजबल करण चरु वण
ति॥ भक्ति भाव उर लायके जजौं क्षुधा हर देव नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ कनकरतनमय दी
नवर परसु खदाय॥ पूजौं भविजन भावसौं ज्यों निजनिधि दातार नंदी०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कर्म
के कारणै कर्म दहन पति देव॥ धूप अनूप बणायके पूजौं जिन अरु मेव नंदी०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥
नेक परकारके पक्क सरस सशुचि रूप॥ दिवशिव फलके कारणै जजौं जिनेश्वर भूप नंदी०॥८॥ ॐ ह्रीं फ
लं॥ जल फल आठौ द्रव्य लै अर्घ बनावै सार॥ मुक्तिरमाके कारणै पूजौं जिन अविकार नंदी०॥९॥
अर्घं॥ जयमाला॥ घत्ता॥ जय जय हितकारी संपति सारी॥ जो को तरतु मपाई है॥ सबकौं सुख
गिरा तुमारी रुषि मुनिवर सब गाई है॥१॥ पद्धडी छंद॥ जे जे असहाय महान वीर॥ पुरुषा
गुण गहीर॥ जे मोहबली जगमैं विख्यात॥ ता कौं तुम कीनौं प्रथम घात॥२॥ दर्शनत्रय सम रु
मिथ्यात मिश्र सम्यक सुजान॥ इनकौं तुम कीनौं मूलनाश॥ क्षायक सम्यक्त किया प्रकाश॥३॥

रित्रमोहवारहमैंथानप्रभुनाशकियोपहिलेंमहान॥फिरज्ञानदर्शनावरणहोय॥अरुअंतरायत्रय
घातहोय॥३॥इमच्यारघातियाकर्महान॥प्रगटयोकेवलप्रभुज्ञानभान॥जयजयनवक्षायकलब्धि
पाय॥वहुसुखीभयेत्रैलोकराय॥४॥जेक्षायकसम्यकगुणप्रथमजान॥क्षायकचारितदूजोमहा
न॥जयतीजोक्षायकदर्शहोय॥अरुचौथोक्षायकज्ञानसोय॥५॥भोगोपभोगक्षायकजुदोय
अरुदानलाभक्षायकजुहोय॥बलनंतक्षायकीनवमिलब्धि॥ऐसीनवलब्धिअनंतऋद्धि॥६॥नि
जआत्मरमणयहभोगजान॥अविभिन्नवृत्तिउपभोगमान॥परवस्तुत्यागयहदानधीर॥बाध
उपदेशीवननवीर॥७॥निजगुणप्रापतियहलाभजान॥बलअनंतअगटवीरजमहान॥सबवस्तुत्रि
कालिकलखनहार॥सोकेवलदर्शनहैउदार॥त्रयकालद्रव्यपर्यायसर्व॥इनकोंयुगपतजानोंजुस
र्व॥सोकेवलज्ञानकह्योजिनेश॥अक्षयअनंतउद्योतवेश॥९॥इत्यादिअतुलसंपतिमहान॥स्वाधीन
अंतरंगीसुजान॥अरुसमवशरणरचनाअपार॥नाहिंजलथिनीकोनहिंपार॥१०॥जिहिदेखतहरि
अविरजकरंत॥शिरनायध्याननिहिदेधरंत॥हेरूपासिंधुप्रभुवीतराग॥तुमदर्शभयोममजग्योभाग
॥११॥ममजन्मसफलअबभयोसार॥जबदेखप्रभुतुमनयनद्वार॥करिरूपादेवममवासखासउर
यहीजिनेश्वरकरतआस॥१२॥छन्द॥जयजयजगतारीशिवमगचारीअर्जहमारीसुनिलीजो नि

जनिधिहितकारी संपतिसारी धर्मप्रचारी प्रभुदीजे ॥२३॥ अर्घ्यं ॥ सोरठा ॥ दानेश्वर महाराज ज्ञानदा
न मम दीजिये ॥ निजपरहितव्रतसाज शिवमगदेयशली जिये ॥२४॥ इत्याशीर्वादः ॥ ॥२१॥
अथ श्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशचतुर्थरतिकरपूजा भाई ॥ जोगीरासा ॥ नंदीश्वरके दक्षिण
अंजन पर्वत सोहै ताके दक्षिण विरजावापी सुरपतिके मनमोहै ताके कोन विषैं शुभ राजे चौथो रति
कर भाई तापरश्री जिनमंदिर जानौं सुरपतिपूजन आई ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाचतुर्थरति
करजिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ पुष्पं ॥ सोरठा ॥ हिमशिलसम शुचि सार हेमाच-
रले जन्मत्रिदोषनिवार जिनपदकी पूजा करो ॥ दक्षिणदिशसुखकार नंदीश्वरकी जानिये र
ग्रहसार सुरपति जिन पूजा करैं ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशसुखकार नंदीश्वरकी जा
तिकरजिनालयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ चंदन गंध मिलाय होत सुवास दशों दिशा पूजों जिन
भवाताप यासों मिटै दक्षिण ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ निर्मलशरद अनूप शशिकरसम अक्षत महा पूजों
जगभूप अक्षयपद यासों मिले दक्षिण ॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ कुसुम सुगंधित सार सुवरणथाल विषैं भ
पूजों मदनविदार भवबाधा यातें मिटै दक्षिण ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ नेवज जाति अनूप शुचि सुगंध ष
पूजों षट्पति भूप यातें शिवसुख पाईये दक्षिण ॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ दीपक विविधि प्रकार रत्न

थायोगसुचि लीजिये॥ भाव भक्ति उर धार॥ जिनवर की पूजा करो॥ दक्षिण॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कृष्णागर कर पू
र॥ और सुगंधित द्रव्य ले॥ सुचि रंगकों चूर॥ धूप खेय जिन पद जजों॥ दक्षिण॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ पिस्ता और
चिरांमा लौंग छुहारे आदि ले॥ सुहित जिनेश्वर धाम॥ जिनवर की पूजा करो॥ दक्षिण॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ ज
लफल द्रव्य मिलाय॥ अर्घ करौं अति चाव सों॥ पूजों श्री जिनराय॥ विनय सहित बहु भाव सों॥ दक्षिण॥९॥
ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ तीन लोकपति तुम धनी॥ पूरण ब्रह्म पुराण॥ परम ब्रह्म परकार सो॥ धरैं मन
मुनि ध्यान॥१॥ सुरपति निति प्रति थुति करैं॥ धरे हृदय में ध्यान॥ ऐसे श्री अर्हंत पद॥ जजों सदा गुण खान
॥२॥ पद्धरी छंद॥ जयद्वीप आठमें मध्य जान॥ दक्षिण दिश अंजनगिर महान॥ तिह गिर की दक्षिण दि
श विचार॥ विरजा वापी गंभीर सार॥३॥ योजन इक लाख वनो प्रमाण॥ चौडी लांबी इकसार जान॥ म
णि रत्न जडित जानों सिवान॥ जल सहस एक योजन प्रमान॥४॥ चहुं ओर वेदिका द्वार सोय॥ आगें वन
च्यारों दिशा जोय॥ योजन पचास सार॥ बहु वन की चौडाई निहार॥५॥ लंबे वापी सम जान वीर॥ मणिमई को
टि गोपुर गहीर॥ तिसमाहि महल बहु शोभमान॥ सुर व्यंतर भवन रहे सुजान॥६॥ तिह वापी वीच कह्यो
जिनेश॥ दधिमुख गिर जानों स्वेत भेष॥ ऊंचो है योजन दश हजार॥ चहुं फेर ढोल सम गोल सार॥७॥ ता वा
पी के बाहिरी कोन॥ रतिकर गिर ता पर जैन भौन॥ सब समवशरण रचना महान॥ जाके देखत सब पाप हा

वींवनपू॰ ॥३५॥

नाचत हैं शक्र शची मिलि भक्तिभाव बहु नृत्य करैं आनंद चाव ॥ सब साज बाज अद्भुत अपार ॥ कवि न लहैं ताको जु पार ॥ ७ ॥ अरहंत बिंब जहां सवाइ शत अरु नृत्य करैं सुर नाय शीश ॥ जहां देवन कृत शुभ गा होय ॥ अरु देव दुंदुभी बजै सोय ॥ ८ ॥ सब नृत्य भेद नवरस प्रचार ॥ सुर सुरी दिखावै भक्ति पार ॥ यह वर्ण न किहि मुख करै कोय ॥ जो लखै तिसैं धन जन्म होय ॥ ९ ॥ जे जे जिनराज दया निधान ॥ प्रभु पुण्य रूप जगमैं प्रधान ॥ जय तीर्थंकर पद पाय देव ॥ तप धरो स्वपर सुखदाय देव ॥ १० ॥ लहि केवल लक्ष्य उपमा री नो भवसागर करन पार ॥ जय अतुल कीर्त्ति जग रही छाय ॥ नहिं गणधर पावै कृत पार ॥ ११ ॥ तुम अशरन शरन सहाय देव ॥ तुम सब जग को सुखदाय देव ॥ निज ऋद्धि देहु वरदाय देव ॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव ॥ १२ ॥ दोहा ॥ बार न तरन जिहाज है या भवसागर माहिं ॥ मोको पार करो सही संशय नाहिं ॥ १३ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ कर्म कलंक निवारि नये शुद्ध परमातमा ॥ सो प्रभु हमको तार ॥ यासं र असार सें ॥ १४ ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ ॥ २४ ॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरद्वीप दक्षिण दिशा रपूजा माह ॥ जोगीरासा ॥ नंदीश्वर के दक्षिण दिशमें अंजनगिर है भाई ॥ ताके पश्चिम नाम अशोका वापी नीर सुहाई ॥ ताके प्रथम कोन में सो है पंचम रतिकर जानौं ॥ ताके ऊपर श्रीजिनमंदिर रत्नमय दानौं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप दक्षिणदिश पंचमरतिकर जिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ पु

र्घ्यं॥ गीता छंद॥ पंचमपयो निधिनीरतासम रतनभाजनमें भरौं जलसों जिनेश्वरपदकमलकी भ
क्तियुत पूजा करौं॥ वरदीप अष्टम दिशा दक्षिण पंचमेरु तिकर जहां॥ जिनराज गृह सुर असुर मि
लि के जिनचरणपूज ततहां॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप दक्षिण दिशा पंचमेरु तिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ ज
लं॥१॥ शुचि गंध कदली करम लिया गिरि सुचंदन लाईये॥ भवदाह दाहन काज श्री जिनचरण अ
ग्र चढाईये॥ वर०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ चोखे अनोखे सरल धोखे स्वच्छ अक्षत लीजिये॥ अक्षयमहानिधि
पति जिनेश्वर अग्र पुंज सु दीजिये॥ वर०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ वर कुसुम शुद्ध सुगंध रंगित अतन नंदन ह
रनकों मन लाय भक्ति चढाय भविजन जजों जिनवर चरण कों॥ वर०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ शुचि शाघ सु
गंधता जे सुरभि घृत के सोहने॥ अति मिष्ट रस नैवेद्य लेकर पद जजों जिनवर तने॥ वर०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥
बाती कपूर सुधार उज्वल जो तिजगम गहोत है॥ तसु दीप सों जिनचरण पूजों ज्ञान जोति उद्योत है॥
वर०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ घनसार कृष्णागर तगर चंदन सुगंध अपार है॥ तिह धूप सें जिनचरण पूजों यही
पुण्य प्रचार है॥ वर०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ फलसार बहु विधि थाल भरकर भक्तिभाव बढायके॥ पूजा करौं
जिनराज पद की भवि जिनालय जायके॥ वर०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर दीप धूप
फलावली॥ करि अर्घ जिनवर चरण पूजो पारहो उभवावली॥ वर०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥

हिमकरमुक्ताहारमरुचंद्रकांतिवलधारइनसवसैंशीतलप्रभूतुमवचनामृतसाराभूज
दाहदुखहरनकैं॥और कोनहेउपाय॥सुधाधारतुमवचहियेत्रसात्रषानशाय॥२॥भुजंगप्र
यातछंद॥जयोदेवजगमैंतुम्हीहोविधाता॥जयोदेवजगमेंतुम्हीहोविख्याता॥वताईतु
मवधर्मनीती॥जताईतुम्हीनेंशुभाशुभप्रतीती॥३॥महापापकेभेदजगत्यागरूपा॥तुम्ही
तायेजिन्हौंकेसरूपा॥प्रथमपापहिंसामहापापघाती॥इसैंजोगिनेंजोपुण्यसोपरूपा
चनमूठवोलेयहीपापदूजो॥नमूटेमनुष्यकूकभीपापसूजो॥महापापचोरीगिनोतीस
रीकोवजेसैंजीवनकैंपरोहो॥महापापचौथोपरदारसेवा॥लहैदुक्खभारीकरेजोपरेवा
सीजन्ममैंराजकोदंडपावे॥कुधीआपअरवापकोकुललजावे॥महाव्याधित्रभ्रापरि
धावे॥यहीपंचमोपापश्रीगुरुवतावे॥महालोभकेजोरमेघोरधूमे॥हाहोयगाफिलदिनरा
भूमे॥महादुष्टइंद्रीविषयभोगभारे॥बडेदुक्खदातामनोंनागकारे॥इन्हीकीवजे
सारे॥वोपुरुषनामीनर्कमैंसिधारे॥६॥इंद्रीपापकोंतजेसत्यज्ञानी॥व्रतीवोकहावेकही
नी॥तजेपापकिंचितअणुव्रतकहावे॥सवीपापत्यागीमहाव्रतलहावे॥७॥अहिंसाविषैं
तगनामी॥व्रतीसत्यधनदेवनामीअकामी॥अचौर्यव्रतीमैंकुमरवारिसेण॥महाशीलमैंनी

ली प्रवीण ॥ अपरिग्रह प्रमाणी वडो नाम धारी ॥ भयो है जगत माहि जय भूप भारी ॥ ईकी प्रशंसा गु
ह देव कीनी ॥ कही श्रावकाचार मैं देख लीनी ॥ ७ ॥ व्रतो की वजह से गृही को अगारी ॥ नमें देव आके
करें भेट भारी ॥ महा घोर उपसर्ग में सेव चावे ॥ सती जीव के चरण को शीश नावे ॥ ८ ॥ महा स्वर्ग अप
वर्ग के सुक्ख सारे ॥ सवी जीव पावें व्रतों के सहारे ॥ अहो वीर स्वामी तुम्ही सुक्ख दाता ॥ सुधर्म प्रदे
शी तुम्ही हो विख्याता ॥ ९ ॥ प्रभू जी तुम्हारे चरण हे चंद्र रेखा ॥ बसे उर उसी ने स्वपर भेद देखा ॥ प्रभू ए
क मेरी यही अर्ज मानो ॥ स्वपर भेद विज्ञान दीजो प्रमाणो ॥ १० ॥ दोहा ॥ निज पर ज्ञायक भावना ज
यवंतो त्रय काल ॥ या प्रशाद संसार मैं भवि पावै शिव वाल ॥ ११ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ सप्तती ति अरु ज्ञा
ना सत्र अरु तिय सौंल त्रय ॥ दीजे श्री भगवान ॥ तुम दानी जग में वडे ॥ १ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ २३ ॥
अथ षष्टम रतिकर जिनालय पूजा माह ॥ जोगीरासा ॥ नंदीश्वर वर द्वीप आठ में ता के दक्षिण भागे
षष्टम रतिकर पर्वत सो है जिन मंदिर तिहिं जागे ॥ शक्र शची मिलि पूज रचावें हिरदे हर्ष अपारा
अकृत्यम जिन बिंब जिन्हों को बारबार नवकारा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्टम रतिकर जि
नालये भ्यो नमः ॥ आह्वाननं ॥ स्थापनं ॥ सन्निधानं ॥ पुष्पं ॥ सुंदरी छंद ॥ सुरनदी जल उज्वल लाईये ॥ जिन पदांबु
ज मांहि चढाईये ॥ अमत कर्म उदै दुख नाशिये ॥ सहज शांत स्वरूप प्रकाशिये ॥ दीप नंदीश्वर दक्षि

ण॥ हिरण॥ गिरिसुपष्टम रतिकरतहीं लसा॥ तासपर जिनभवनसुहावनों॥ करतपूजसुरा
॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ जलं॥ १॥ मलयचंदनकुंकु
अंबघसिकपूरकदलीदलआश्रितं॥ जिनपदांवुजपूजनकोजिये॥ मनुषजन्मतनौफललो
दीप०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तोरहीररजतसमजानिये॥ सितसरलअक्षतशुचिआनिये॥
चंद्रजिनेशकेसजतभविसुखलहतसुरेशके॥ दीप०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ कमलआदिअनूपम॰
कुसुमचारुचरणचितदीजिये॥ जिनपदांवुजपूजरचाईये॥ अतनमारिअभयपदपाईये
प०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ सरसषटरसमिश्रितव्यंजनं॥ बहुवनायसुधीमनरंजनं॥ चरणश्री
मुकतिमारगसंमलकोंसजो॥ दीप०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ तमनिवारकदीपमहानहो॥ जग
विवानहो॥ जिनपदांवुजअग्रचढाईयो॥ परमज्ञानमहानिधिपाईयो॥ दीप०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥
कारसुगंधअनूपहो॥ मलयचंदनकोबहुधूपहो॥ करतपूजनश्रीजिनराजकी॥ हरतमू
वसाजकी॥ दीप०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ बहुफलावलिपावनलाईये॥ चरनश्रीजिनराजचढाईये
रमापतिसंपतिलहनकों॥ यहउपावसुधीमविगहनकों॥ दीप०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफला
द्रव्यमिलाईये॥ अरघलेजिनमंदिरजाईये॥ करतपूजनभक्तिवढायके॥ लहतसुखशिवा॰

जायकेदीप ॥८॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ करुनानिधित्रिभुवनधनी ॥ अशरनशरनअधा
राकरुनाविधिकरगुरुदीनपे दीनवंधुगुणधार ॥१॥ तोटकछंद ॥ जयश्रीधरश्रीकरश्रीपतिहो
अघघायकदायकसंपतिहो ॥ वरकेवलज्ञानप्रकाशकियो ॥ भविजीवनकोभ्रममेटदियो ॥ स
वजीवअजीवअभावतजो ॥ गुणपर्ययरूपप्रभेदमनो ॥ जहाजीवसुतत्वसुभावमहा ॥ पणभेद
सुजीवप्रभावकहा ॥२॥ पहलोउपशमकितभावकह्यो ॥ दृगचारितरूपदुभेदभयो ॥ पुनिक्षायकभा
वदुतीयगिनो ॥ तिहकेनवभेदसुप्रेमभनो ॥३॥ शुचिसम्यकचारितज्ञानमहा ॥ अरकेवलदर्शनद
नकहा ॥ उपभोगसुभोगअनेकवली ॥ अरुलाभनवोइमलब्धिवली ॥४॥ तियोगनिभावक्षयोप
शमं ॥ तिहभेदअठारहजानिगमं ॥ वउज्ञानकुज्ञानकुदर्शत्रयं ॥ पणिलब्धिसुपंद्रहभेदअयं ॥५
अरुसम्यकचारितभावयुगं ॥ इकसंयमासंयमभावभहं ॥ इमभेदअठारहजानिसवे ॥ उदईकअकी
समुनोजोअवै ॥६॥ गतिचारकषायजुचारकही ॥ त्रयलिंगछलेस्यविभावयही ॥ कुदृष्टिअज्ञानअ
संजमहै ॥ असिद्धमिलेइकईशयहै ॥७॥ परिनामकपंचमभावकह्यो ॥ भविजीवअभव्यत्रिभेदल
ह्योमणभावतरेपनभेदभयो ॥ सवश्रीजिनआगममाहिकह्यो ॥८॥ इनमेंकोईत्यागनजोगगिने
कईआदरयोगजिनेशभने ॥ कोईअरहंतभयेप्रगटे ॥ तिहिमापविकोंगणराजरटे ॥९॥ वहश्रीगु

चौवनपू॰ ॥३७॥

हमोउरवासकरो॥हितकाजसवैउरआसभरो॥मनसंजमसंपतिसिद्धकरो॥निजस्वाश्रितश्रीपति
द्धभरो॥१०॥जवलौंजगमेंममवासरहे॥जवलौंअरिकोउरत्रासरहे॥तवलौंतुमदेवसहायकरो॥
धिवंडअरीदुखदाहहरो॥११॥जगमाहिगरीवनवाजतुम्ही॥शिवदायकहोशिववासतुम्ही॥प
अर्जसुनोजिनराजतुम्ही॥वुधिरिद्धिकरोप्रभुसाजतुम्ही॥१२॥दोहा॥जगतारणकारणप्रवलएक
नेश्वरदेव॥यातेंमनवचकायकें करूंसदामेंसेव॥१३॥अर्घं॥सोरठा॥उरमेंधीरजधार॥श्रीजिन
रपदजोजजे॥सोहोवैभवपार॥यहजिनवरवचनप्रमाणहै॥१४॥ ॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२४॥
अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशासमरतिकरपूजाप्रारंभः॥जोगीरासा॥अष्टमद्वीपतणीदक्षिणदिश
रतिकरसोहे॥वापीभीतरशोभाकेपहिलेंकोनविषेंमनमोहे॥तापरश्रीजिनमंदिरसोहे॥अक
री॥तिहमेंश्रीजिनविंवविराजेजिनपदधोकहमारी॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशास
मरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥अथाष्टकं॥चाल ॥दयानिधि
जगवंधुदयानिधिहो॥टेर॥चंद्रकिरणसमशीतलसार॥उज्जलनीरभरोभंगार॥दया॰॥भक्ति
हितजिनचरनचढाय॥जन्मजरातनोंदुखजाय॥दया॰॥नंदीश्वरदक्षिणदिशजान॥समरतिकर
सुखदान॥दया॰॥तापरश्रीजिनमंदिरसार॥शक्रशचीपूजेहितधार॥दया॰॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीप ॥३७॥

दक्षिण दिशा सम्मरतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ चंदन केसर गंध अनूप। शीतल सुखकारण शुचि रूप॥ दया॥ पूजौं जिनवर चरण विशाल। भव आताप मिटै ततकाल॥ दया॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अमल अखंडित तंदुल सार। देव आदिक जी रहित कार॥ दया॥ शुचि अक्षत लै जिन गृह जाय। पूजौं जिनवर पद हरषाय॥ दया॥ नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ पावन पुष्प सुगंध अपार। कंचन थाल भरो हित कार॥ दया॥ कुसुमायुध अरि जीतन काज। पूजौं चरण कमल जिनराज॥ दया॥ नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ नेवज सद्य पवित्र अनूप। घ्राण नैन मन मोहन रूप॥ दया॥ पूजौं श्री जिन चरण महान। परम शांति दायक कल्यान॥ दया॥ नंदी॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ उज्ज्वल दीपक रत्न बनाय। मोह महातम हरन उपाय॥ दया॥ ज्ञान जोति परकाशन काज। पूजौं चरण जगत शिरताज॥ दया॥ नंदी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कृष्णागर चंदन कर्पूर। धूप सुगंधी कर वर चूर॥ दया॥ आठों करम जलावन काज। पूजौं श्री जिनवर हितसाज॥ दया॥ नंदी॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ लौंग लाइची और बदाम। पिस्ता औ सफल अभिराम॥ दया॥ नंदी॥ मुक्ति महाफलदायक देव। पूजौं श्री जिनवर कर सेव॥ दया॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल आठों द्रव्य मिलाय। उत्तम आठों द्रव्य मिलाय॥ दया॥ श्री जिनराय चरण सुखदाय। पूजत जन्म जरा ज्वर जाय॥ दया॥ नंदी॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥९॥

जयमाला॥ दोहा॥ भव भंजन भगवान भजि। सजि साहस शिवरूप॥ कर हृदया ठगहि ध्यान की मा खि[illegible]

हदुखरूप ॥२०॥ भुयंगप्रयातछंद ॥ जयोरवेंद्रश्री देवस्वामी महा मोहजीते वडे वीरनामी ॥ बनायो विजे
वाने अकंपा तिसे देखकै मोह चहुं ओर कंपा ॥ वली वीरगजराजतपकी सवारी धरों शी शयेसंज
पभारी महावीतरागी कवचदेहधारी प्रभू आपनो आपयोरूपसम्हारो ॥ सुचारित्रनामी
त्रिपुरकी वहाभूमिजानो प्रभूके समरकी ॥ नही ध्यानतलवारतीक्षण प्रहारी दयो मोहके शीश
भारी ॥ गिरो मोहवैरी तबै कर्म घाती हने शेषतीनों फिरप्रतापातीनजे जीवके देववाजा
भयोसार त्रैलोकमें घोररूपा ॥ सवीदेव आयेमहाभक्ति धारे चहूं ओरन भमें जेजेपुकारे
थमाथेवहुनम्ररूपा करें देवकी वंदना विम्बुभूपा ॥ महाभक्तिसेमिष्टवायक उचारे
हीसहायकहमारे जयो देवतुम एक त्रैलोकस्वामी ॥ निशानी महाशीशत्रयछत्रना
सुलक्ष्मीपतिहोतुमी एकदेवा ॥ अलौकी कलक्ष्मी करे आपसेवा ॥ वलीवीर जगमें तु
मधानी विनाशस्त्रधारे हत्योमोहनामी ॥ तुमी होसुखी एक स्वाधीनस्वामी हत्योदुःखको
हिमकामी ॥ तुम्ही श्रेष्ठस्वामी जगमें वताये सुध्यावै तुम्हे श्रेष्ठ वह भी कहाये ॥ तुमी इष्टदा
प्रभू इष्टरूपा महाइष्टकल्यानके आपभूपा तुम्हें जो हृदे माहि निश्चिंत्य ध्यावे वही स्वर्ग
के सुक्खपावे ॥ सवी देव इंद्रा खगेंद्रा मुनीशा तुम्हारे चरणकों जजै नायशीशा करे आशप

महाऋद्धिधारी॥ इसीसें प्रभू एक अरजी हमारी॥२०॥ महा त्रास संसार के वास माहीं॥ यहां तो किसी कों क
भी सुक्ख नाहीं॥ हे मुझे आपके वासको वास दीजे॥ प्रभूजी मुझे यह एक लीजे॥२१॥ नहीं और चिंता
हृदय माहिं मेरे॥ नहीं और ईच्छा सुनों देव मेरे॥ यही एक चिंता सुइच्छा यही है॥ जिनेश्वर कृपा आज
कीजे सही है॥२२॥ दोहा॥ जिनवर दीनदयाल तुम शरनागतप्रतिपाल॥ दीनबंधु मोपर प्रभू कीजे
कृपा कृपाल॥२३॥ अर्घं॥ सोरठा॥ या भवके वन माहिं इकलो जिय भरमत फिरे॥ यह निश्चे मन
माहिं अन्य शरन कोई नहीं॥२४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥२५॥ ॥अथ श्री नंदीश्वरद्वीपद
क्षिणदिशा अष्टरतिकरजिनालयपूजा माहा॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वरकी दक्षिण दिशमें अंजनगि
रवरनों को॥ ताकी उत्तर दिशमें राजै रतिकर एह जिनजी को॥ देवदनुज नित पूज रचावें गावें जिनगु
णभारी॥ ऐसे श्री जिनके चरननकों नित प्रति धोक हमारी॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशा अष्टरति
करजिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पां॥ चाल छंद॥ ह्रद पद्म समान सुजानों॥ अति निर्मल
नीर प्रमानों॥ जिनवर पद पूजा कीजे॥ निज जन्म सफल कर लीजे॥ शुभ द्वीप नंदीश्वर जानों॥ दक्षिण
दिशमें पहिचानों॥ अष्टम रतिकर गिर सोहे॥ जिन मंदिर तहां मन मोहे॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिश
अष्टरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ चंदन कर्पूर मिलावे॥ तामें केशर घसि लावे॥ भवताप वि

नाशनकाजे॥ पदपूजें श्रीजिनराजे॥ शुभ०॥१॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥२॥ सुखदासकमोदअनूप॥ शशि
रसमखंडतसरूपा॥ पावनअक्षतभरथारी॥ जिनचरनजजोंसुखकारी॥ शुभ०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥
नाविधिवर्णसरूपा॥ अरुसारसुगंधअनूपा॥ ऐसेवरकुसुममगावे॥ जिनवर[illegible]सुख
पूजरचावे॥ शुभ०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ नेवजमनमोहनहारा॥ शुचिभरकंचनकाथारा॥ जिनवरके
णचढावे॥ सबदोषक्षुधानशिजावे॥ शुभ०॥५॥ ॐ ह्रीं चरु॥ तमहरद्युतिउज्वलसोहे॥
जिनवरपदआगेजोवे॥ निजज्ञानपतीभविहोवे॥ शुभ०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशगंधअनूपमि
अतिपावनधूपबनावे॥ वसुकर्मजलावनकाजे॥ पूजोंपदश्रीजिनराजे॥ शुभ०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं
बरुतुकेफलशुचिसारा॥ पिस्ताबादामअपारा॥ निजलक्ष्मीपापतिकाजे॥ पूजोंपदश्रीजिन
शुभ०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलवसुद्रव्यमिलावे॥ सुवरणकेथालभरावे॥ श्रीजिनवरचर
सोभविशिवलक्ष्मीपावे॥ शुभ०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ हेजिनेंद्रजयवंतजग॥ काहर
अपार॥ सुरपाराजेखिसुरपती॥ लहैनतुमगुणपार॥१॥ तोअबकोनरकहिसके॥ तुमगुणआग
तामैंतुमभक्तिप्रभावकर॥ करतलहतभवपार॥२॥ छंदमोतियादाम॥ जयोजिनदेवदयासु
जयोतुमसेवकहैंसुरआन॥ जयोतुमध्यानधरेंऋषिराज॥ जयोभवसागरमाहिजिहाज

वलीश्रुतपारगइंद्रमहान वलीवुधधारिमुनीश्वरजान प्रभूतुमरेगुणकोंनहिपार लहेकवहूंव
हकालमझार २ अनोपमरूरूपितीमहाराज सदासवकोंसुखदायकसाज प्रभूहसिंहासनपै
अनिवार विराजतहेपद्मासनसार ३ फिरेशिरछत्रसुतीनअनूप मनोंशशिआपभयोत्रयरू
प महामुकाफलझालरसार मनोंशशिसूरजजोतिअपार ४ मनोहरचोसठिचामरदेव सुढा
रतनित्यकरेसुरसेव दशोंदिशिदुंदुभिकोवहुसार करेउंभक्तिभरेसुरजोर ५ सदावरसावतहेसु
रसार सुकल्पतरोवरफूलअपार करेचहुंओरहिसंजयकार धरेवहुभक्तिहदेअनिवार ६ करे
वहुवृष्टिसुगंधितनीर महासुरमेघकुमारगहीर चलावतगंधसुगंधप्रचार धरेउरभक्तिसुवात
कुमार ७ वडेदिवइंद्रजहांदरवान वलेवलरूह्निपतीगुणखान तहांभुवनत्रिककोंनमहान
रहेपशुमानुषजोतिहिथान ८ प्रभूतनदिव्यप्रभाअनिवार अनोपमचक्रसमाननिहार लखेभ
विजीवभवांतरसात प्रभूअतिसेयहजानिविख्यात ९ तहांवटवृक्षअशोकदिपंतप्रभाजिहिं
कीशशिसूरछिपंत हरेभविजीवनकेसवशोक धरेगुणयेहिविख्यातअशोक १० अनंतचतुष्ट
यमंडितदेवप्रभूत्रयलोकपतीस्वयमेव करोसवकोंउपदेशअनूप करोमविकोंसुखश्रेयसरू
प ११ प्रसिद्धयहीसुनकेतुमनाम लयोशरनोंमुनियेगुणधाम भयोहमरेउरसत्यविचारतुम्हीं

चौबनपू॰
॥५०॥

गमैंहितदायकसार॥१॥करोहमरोमनवांछितकाज॥हरोहमरोदुखसाजसमाज॥भरीमनुजी
शअनूप॥धरीयहअर्ज हदैजगभूप॥२३॥दोहा॥प्रभूपतितपावनतुम्हीमैंअतिपतितअपा
वलदीजियेसम्यक्ज्ञानमहान॥२४॥अर्घ॥सोरठा॥करुनानिधिमहाराजसरनस
भवजलमाहिजिहाजमोकौंपारकरोसही॥२५॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२६॥ ॥
प्रथप कार्घ॥नंदीश्वरदक्षिणविषैजोप्रतिमातिहथानतिनसबकोत्रययोगकरिपूजोनिज
दान॥१॥ ॥इतिनं॰ दक्षि॰ पूर्णार्घं॥ ॥इतिदक्षिणदिशसंबंधीपूजासंपूर्णम्॥
अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशअंजनगिरजिनालयपूजामाह॥गीताछंद॥वरदीपअष्टमदिशापश्चि
मछ्विगिरढोलहेतसुनामअंजनतासऊपरजिनागारअमोलहेतहांएकशतवसुअ
नविंवमहानहैतिनकेचरनमनलायपूजोदेतशिवकल्यानहो॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिम
अंजनगिरपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पम॥चालद्यानतरायजीकृतपू
की॥समभावमहाशुचिनीरमानभंगभरो॥अरहंतचरनधरिधीरपूजनध्यानधरो॥नंदीश्वरद्वी
पानपश्चिमदिशसोहैतापरजिनमंदिरजानसुरपतिमनमोहै॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपप
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥वसुकर्मविनाशनहारपरनतिआतमकीम ॥५५॥

दनगंध अपार। शिवपद पूजनकी। नंदी० ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ अति निर्मल शुद्ध स्वभाव अक्षत स्वच्छ
कहा। श्री सिद्धचरन चितलाय पूजत सुक्ख लहा। नंदी० ॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ शुचि ब्रह्म स्वभाव सुगंध
कुसुमावलि जानो। पूजत जिनचरन अमंद निर्भयपद पानो। नंदी० ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ निजज्ञान देह
वलधार। परनति चरु सो है। शत इंद्र पूज्य पदसार पूजत शिव मोहै। नंदी० ॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ सतज्ञान जो
ति अविकार दीपक तेज करो। धरि ध्यान स्वरूप विचार प्रभुपद पूज करो। नंदी० ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ सित
ध्यान दहन सहचार आतम भाव महा। यह धूप सुगंध अपार पूजत सुक्ख लहा। नंदी० ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
विधि भंजन भाव अनूप उत्तम फल सो है। पूजत भवि सित चिद्रूप सो शिवपति होवे। नंदी० ॥८॥ ॐ
ह्रीं फलं ॥ वसु कर्म विनाशक वीर वसु गुण धारक है। वसु द्रव्य लाय भवि धीर पूजत सुक्ख लहै। नंदी० ॥९॥ ॐ
ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ नंदीश्वर पश्चिम दिशा अंजनगिरि सु विशाल। ता पर जिनगृह पूजिये अ
ब वरनूं जयमाल ॥१॥ पद्धड़ी छंद ॥ जय नंदीश्वर वर द्वीप जान। ताकी पश्चिम दिशमें महान। तहां अंज
न गिरिवर श्याम रंग। चौफेर गोल सम ढोल रंग। योजन चौरासी सहस जान। उन्नत चौगिरद शोभ
मान। चारों दिश वापी चार जान। वर्गाकृति लख योजन प्रमान। जल जो जन गहरा इक हजार। प्र
भ्रमान ... अति श्वेत वर्ण महिमा अपार। युग
ति निर्मल नंदोत्तरा नाम। तिहिं बीच परो दधिमुख पहार।

कोनमांहि रतिकर लसंत॥ तिनसबपर जिनगृह ही शिवंत॥ अब अंजनगिरकोंसु निवखान॥ ऊपर जि
नमंदिर शोभमान॥४॥ सब समवशरन रचना अनूप॥ तिहिंमध्य विराजे जिनसरूप॥ पद्मासन छबि ब
नीन जाय॥ सुर असुराधीश नित नमें आय॥५॥ अति भक्ति भरें पूजा रचाय॥ बहु नृत्य करें बाजे बजाय॥
तहां देवी देवन के जु संग॥ नवरस परकाश करें अभंग॥६॥ बहु बजें दुंदुभी गगन जोर॥ दिशि छाय रहो ज
य शब्द सोर॥ जै जै जिनसागर जगजिहाज॥ जै जै जिन सुखदायक समाज॥७॥ आनंद जलधि कों शशि
स्व प भवि मनकमलनकों रविसरूप॥ जय जन्मरोग कों सुधाधार॥ जय क्लेश दहन कों मेघधार॥८॥
सर्प कों वैनतेय॥ जय मोहजहर कों अमी पेय॥ जय अंतक कों अंतक समान॥ जय विषयवनी
दव मदन॥ जय ज्ञानसंपदा के अधीश॥ तातइंद्रन में नित नाय शीश॥ प्रभु ध्यान धार मम हृदय
किरवास ओर कछु चाहना हि॥ अय यह करो कृपा सर्वज्ञदेव॥ करतार आप यह विरद लेव॥ निजनि
त त्रय परम देव॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥११॥ दोहा॥ तुम दाता साता जगतमें सुखसाता कर
दाता मम ऊपर करो कृपा सहित हितकार॥१२॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ सोरठा॥ केवलज्ञानप्रकाश स्वपर प्र
ज्ञायक सरा॥ भक्त जिनेश्वर दास आस भरो सेवक तनी॥१३॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥२७॥ ॥
प्रथम श्री नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशि प्रथम दधिमुख पूजा माह॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वर की पश्चिम

दिशामेंस्यामवरनअंजनगिरजान॥ताकेपूरववीचवापिका॥स्वेतवरनदधिमुखगिरमान॥दशहजा
रयोजनउन्नतअरुढोलसमानगोलअभिराम॥ताकेऊपरजिनग्रहप्रतिमाअकृत्तिमसोहैगुणधाम
॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाप्रथमदधिमुखपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥
चालहोलीकी॥जजोंजिनवरसुखदाईमुनिहोभविभाईजजो०॥टेर॥पद्मद्रहकोउज्जलजललेकं
चनभृंगभराईमनवचकायलगायविनयसूंपूजोंश्रीजिनराईजन्मत्रिदोषनशाईमुनियोभविभाई
जजोंजिनपदसुखदाई॥नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकेपूरवभाईदधिमुखगिरपरजिनग्रहसोहै
पूजतसुरपतिआईदेववहुभक्तिवढाईजजो०॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाप्रथमदधिमुखजि
नालयेभ्योनमः॥जलं॥केशरअगरकपूरसंगमैंचंदनगंधमिलाईत्रिभुवनपतिपदपूजरचायोभव
आतापनशाई॥लहोनिजशीतलताईजजों॥२॥ॐह्रींचंदनं॥ मुक्ताफलकेपुंजमनोहरसुरपतिचरण
चढावेहमनिजशक्तिसमानशालिलेजिनजजिपुण्यवढावेमहीमनवांछितपावेनंदी० ज
जो०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥वरनवरनकेपुष्पसुगंधितकंचनथालभराईकामकरूरगरूरहननकोंचर
णजजोंजिनराईसहीजयसंपतिपाईमुनिहो०नंदी०जजों०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥फेनीगोंजामोदकखा
जेसातेतुरतवनाईरोषक्षुधादुखदूरकरनकोंचरननरेतचढाईजिनेश्वरभक्तिवढाईमुनिहो०

नंदी॥जजों॥५॥ॐ ह्रीं चरुं॥ परमागम अनुकूल दीप ले श्री जिन मंदिर जाई। चरण जजत
के मोह तिमिर विनशाई। लहै त्रिभुवन प्रभुताई। सुनिहो०॥नंदी०॥जजौं०॥६॥ॐ ह्रीं दीपं॥ दशविधि
द्रव्य शुचि ले के उत्तम धूप बनाई। पूजत श्री अरहंत चरण कों वसुविधि कर्म नशाई। वरै शिवनारि सु
हाई। सुनिहो०॥नंदी०॥जजों०॥७॥ॐ ह्रीं धूपं॥ एला लौंग बदाम छुहारे पिस्ता आदि मिठाई। शिवफ
लदायक देव जिनेश्वर पूजत सुक्ख लहाई। यही उर निश्चलताई। सुनिहो०॥नंदी०॥जजौं०॥८॥ॐ ह्रीं फलं॥
जल चंदन अक्षत प्रसून ले नेवज सद्य बनाई। दीप धूप फल द्रव्य मिलाकर अर्घ बनावै भाई।
श्वर चरन चढाई। सुनिहो०॥नंदी०॥जजो०॥९॥ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ शतमुख शत सेवै
शारदशी शनवाय॥ शारद जनक जिनेश पद वंदों मनवचकाय॥१॥ पद्धडीछंद॥ जयदीप अ
नाकी पश्चिम दिश शोभमान। तहां अंजनगिरि पर्वत उतंग। अति गोल ढोल स
त्ताकी पूरब दिश में सु जान। दधिमुख गिर वापी वीच जान। योजन हजार दश है उतंग। अ
ल गोल दधि रंग जरंग। ता ऊपर जिनवर गेह जान। सो योजन जानो लंब मान।
ऊंचो पचहत्तर उर विचार। ति हि वीच नीर रचना अनूप। सब समवशरण शोभा सरूप।
आठ विंव अतिशोभमान। वसु प्रातिहार्य शोभा समान। पद्मासन छवि वरणी न जाय।

करै सुर शीश नाय॥ हरि शची सहित पूजा रचाय॥ बहु भक्ति सहित जिन गुण सुगाय॥ ५॥ निज ज
न्म सफल सुर करै सोय॥ तुम चरण जजत अति मुदित होय॥ धनि जीवन जिनको जग मझार
जो प्रभुको देखत नयन द्वार॥ ६॥ तुम धन्य देव अद्भुत सरूप॥ छवि निरखत तृप्ति न त्रिदश भूप
तब हरि ने कीनी सहस आंख॥ कर जीभ सहस वच विनय भाख॥ ७॥ बहु स्तुती करी निज शीश ना
य॥ जानो निज कों धनि देवराय॥ निज भक्ति सहित जिन जपै नाम॥ सो निश्चै पावै सुकल धाम॥ ८॥ प्र
भु वीतराग छवि निर्विकार॥ अरु प्रगट अचेतन अंग सार॥ तो भी भविजन कों सहज रूप दाय
क दिव शिव संपति अनूप॥ ९॥ जिम चिंतामणि नर रतन पाय सार॥ निर्जीव वस्तु जग के मझार॥ म
न कल्पित सुख दातार सोय॥ त्यों सुख दायक जिन बिंब होय॥ १०॥ यह आगम वचन प्रमाण जान॥ भ
वि जीव लख्यो पारस पुराण॥ यह निर्णय तहां कीनौ मुनीश॥ हम तिन कौं नमत नमाय शीश॥ ११॥
वह सुगुरु वचन जिन छवि अनूप॥ वरदाता साधक तान रूप॥ भव भव मेरी कीज्यो सहाय॥ ज्यों सु
खी जिनेश्वर नित रहाय॥ १२॥ दोहा॥ दधिमुख जिनमंदिर तनी पूरन यह जयमाल॥ जो बांचै मन
लाय के ताके भाग विशाल॥ १३॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ सोरठा॥ जन्म रोग अनिवार ताकों दूर करो प्रभू आ
यो तुम दरबार॥ तुम सहाय सब जग विषै॥ १४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥८३॥ ॥अथ श्रीनंदी

श्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयरतिकरपूजा मादह॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकी
दिशामेजान॥ वापीवीचविराजेदधिमुखमेदधिमुखगिरशुभगोलमहान॥ ताकेऊपरश्री
मंदिररत्नमईअकृत्तिमथान॥ श्रीजिनविंबअठोत्तरइकसोमनवचक्रमवंदोसुखदान॥१॥ ॐ ह्रीं
श्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयरतिकरदधिमुखजिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥
त्रिभंगीछंद॥ शुचिसागरक्षीरंसीतगहीरंनिर्मलनीरंसुरलावे॥ भरिकंचनझारीतृषानिवारी
रनाके नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरकेदक्षिणदधिमुखगिरसोहै॥ तापरजिनमंदिर
मंतपुरंदरजिनप्रतिमाअतिमनमोहै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयदधिमुखप
जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ मलियागिरचंदनदाहनिकंदनकदलीनंदनसहितघसौं॥ भवताप
वारनशिवसुखकारनजिनपदजजिजिनपासवसों॥ नंदी॰॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ शशिकिरणसमा
तमहानामुक्ताफलसुरलावतहो॥ हमशक्तिसमानाशालिप्रधानाअक्षततपुंजचढाव
अक्षतं॥ दृगमनकोप्यारेगंधपसारेसुवरनवारेपुष्पमहा॥ जिनचरनचढावेभक्तिवढा
चावेसुक्खगहा॥ नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ कंचनकीथारीभरिसुखकारीविविधप्रकारीचरुलावे॥
एचढावें [illegible] वढावेप्रभुगुणगावेशिवपावे॥ नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ वहुउज्जलजोतंतमछय

नंदीपकसोंजिनपदपूजै॥अरिमोहनशावैजिनदरसावैकेवलज्ञानंयतीहूजे॥नंदी०॥६॥ॐह्रींदीपं
कृस्नागरधूपंगंधअनूपंतिहुंजगभूपंपूजकरौं॥वसुकर्मजलावैजिनपदपावैज्ञानजोतिशिवना
रिवरो॥नंदी०॥७॥ॐह्रींधूपं॥फलसरसनवीनेपावनलीनेत्रिभुवनपतिपदभेटकरौ॥उत्कृतिनशि
जावेपुण्यवढावैक्रमक्रमसोंशिवनारिवरो॥नंदी०॥८॥ॐह्रींफलं॥वसुद्रव्यमिलावेजिनगुणगावे
अर्घवनावेभरिथारी॥जिनचरणचढावेभक्तिवढावैदिवसुखपावेभविभारी॥नंदी०॥९॥ॐह्रींअर्घं॥
जयमाल॥दोहा॥मुनिमहंतऋषिराजसवेध्यानधरैमनलाय॥सुरपतिनरपतिनागपतिचरण
जजोंमनल्याय॥१॥सर्वआसपूरणकरो॥हरोसर्वहितसाज॥हरोहमारीवेदनावीतरागमहाराज
२॥त्रोटकछंद॥जयवंततुम्हीशिवलायकहो॥सतसंतनकोंशिवदायकहो॥अघकर्मअरीगणघाय
कहो॥निजसंपतिज्ञायकदायकहो॥१॥विषयादिकमेंनहिरागभयो॥भरजोवनमांहिविरागलयो॥प्रभु
अंतरजोतिप्रकाशरही॥तजिनेहदिगंवरवृत्तिगही॥२॥षटखंडरमाछ्रणमेंतजिके॥निर्ग्रंथदशावनमें
सजिके॥निजरूपसुधीमनमेंभजिके॥अरिमोहहनौंरनमेंपजिके॥३॥त्रिकघातिमरेछिनमेंलजि
के॥प्रभुजीतलहीतवहीसजिके॥नभमेंसुरवाहनआवतहैं॥वहुदुंदुभिघोरवजावतहैं॥४॥जय
कारनकीधुनिछायरही॥रजनीतधुजाफहरायरही॥दशहूंदिशसेंसुरआवतहैं॥वहुदूरहितें

रनावत है॥ ५ ॥ उर हर्ष भरे गुण गावत है॥ सुर कामिनि वीन वजावत है॥ नव हू रस भाव दिखा
मुनि भक्ति प्रचारि सिखावत है॥ ६ ॥ सुर शक्र शची मिलि नृत्य करै॥ सव साज सजावत नृत्य भरै॥
मान हि जात कही तिनकी॥ अनिमेष लखै छवि श्री जिनकी॥ ७ ॥ फिर की जव लेत महा छवि वि
पमा न हि जाय कही कवि सों॥ नल याकृति की इम भाद रसों॥ मनु दामिनि गोल महा परसों॥ ८ ॥
छण सूक्ष्म रूप महान धरे॥ छण थूल शरीर प्रकाश भरे॥ छण मैं गति मंद प्रकाश करै॥ छ
ण प्रकाश करै॥ ९ ॥ हरि अद्भुत नाटक आप करै॥ जिनकी महिमा कहि ना हि परै॥ यवन्त
र देव सही॥ जिन की महिमा न हि जाय कही॥ १० ॥ प्रभु मो उर माहि वसो नित ही॥
सो नित ही मम विघ्न समूह नशो॥ नित ही उर सम्यक ज्ञान लसो॥ नित ही॥ ११ ॥ सव सें नि स्नेह
त हो॥ नव राग विरोध न लावत हो॥ सव की सुनि मौन रहावत हो॥ न दि दीन दया उकहावत हो॥ १२ ॥
यह अद्भुत वात वडी प्रभु जी॥ जस वेल त्रिलोक वडी प्रभु जी॥ भवि के उर भक्ति वडी प्रभु जी॥ सुख
क जडी प्रभु जी॥ १३ ॥ यह भक्ति महानिधि देहु हमैं॥ सत ज्ञान दयानिधि देहु हमैं॥ जग
देव तुम्ही भव पार उतारन देव तुम्ही॥ १४ ॥ दोहा॥ करुनाकर जिनराज जी॥ अशरन
सहाय॥ अरज जिनेश्वर की सुनो॥ तुम त्रिभुवन के साय॥ १५ ॥ अर्घं॥ सोरठा॥ देहु स्वरू

नूप यही रूपा प्रभु कीजिये। फिर न परूं भव कूप साम्राज्य अब दीजिये॥ २६॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ इत्या
शीर्वाद॥ ॥ २९॥ ॥ अथ श्री नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा तृतीय दधिमुख पूजा माह॥ ॥
कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वर पश्चिम दिश राजे स्यामवरन अंजनगिर नाम। ताके पश्चिम दधिमुख सो
है वापी वीच खेत अभिराम। ताके ऊपर श्री जिनमंदिर प्रतिमा इक शत आठ ललाम। जिनके चरण
कमल सुर पूजै हम पूजत निज घर वसनाम॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा तृतीय दधिमुख
पर्वत पर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ चाल होली की॥ सुधी जिन पूज रचावे
यातैं निज संपति पावै॥ टेर॥ कंचन झारी में जल उत्तम भरि जिनमंदिर जावे जन्म जरा दुख दूर क
रन कौं श्री जिन चरन चढावे हर्ष अति हिरदे लावे॥ यातै०॥ नंदीश्वर की पश्चिम दिश में अंजनगि
रि सुभ राजे ताके पश्चिम दधिमुख गिर पर जिनमंदिर छवि छाजे तहां निज भाव लखावे यावै०
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा तृतीय दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ १॥ चंदन अरु कर पूर
मिला के केशर संग घसावे जिनवर चरन जजत भवि जन जो भव आताप नशावे यही निश्च
य उर ल्यावो॥ यातैं०॥ नंदी०॥ २॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ देवजीर सुखदास कमोदक अक्षत धोय बनावे
त्रिभुवन तिलक दिगंबर प्रभु के चरनन पुंज चढावैं हृदय में जिनगुण गावैं यातैं०॥ नंदी०॥ ३॥ ॐ

ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ वरनवरनके पुष्प मनोहर सुद्ध सुगंध सुहावै ॥ कामदाह निरवारन कारन श्रीजि
नचरन चढावै ॥ भक्तिमय नृत्य करावै ॥ यातें आनंदी ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ फैनी गुंजा मोदक खाजे ताजे तुर
त बनावो ॥ क्षुधारोग निरवारन कारन श्री जिनचरन चढावो ॥ सही निश्चय पद पावो ॥ यातें आनंदी ॥
५ ॥ कंचनमणिमय दीप अनोपम सुरसुरपति बहु लावै ॥ हम निज शक्ति समान दीप
जिनपूज रचावै ॥ स्वहितकर गुण गावै ॥ यातें आनंदी ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ दशविधि धूप सुगंध बना
य बहुवादित्र बजावो ॥ कर्मदहन के काज दहनमें जिनपद धूप चढावो ॥ आठविधि कर्म नशावै
या आनंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ लोंग बदाम छुहारा पिस्ता एला आदि मगावो ॥ शिवफल का
क्ति भाव सों फल जिनचरन चढावो ॥ मुक्तिफल क्रमसें पावो ॥ यातें आनंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
द्रव्य मिलाय गाय गुण उत्तम अर्घ बनावो ॥ मुक्ति महा अभिराम धाम को कारण वरण
सदा थिर रूप रहावो ॥ यातें आनंदी ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ घातिकर्म घाता प्रभू पायो
केवलज्ञान ॥ जिनके चरण सरोज रज हृदय बसो दिनरान ॥१॥ पूजन कर जिनराजकी ॥ उरमें भक्ति
विशाल ॥ बारह निकसे सिद्धमिस बहु सुनिये जयमाल ॥२॥ तोटकछंद ॥ जयश्री जिनराज विरा
जित हो ॥ समवसृत में छवि छाजत हो ॥ करि विष्टर रत्नजडाव महा ॥ सुरपूजत श्री जिनराज कहा ॥१॥

रऊपर श्री जिनपद्मधरे प्रभु राजत चौसठ चमर ढरे ॥ शिर छत्र फिरै त्रय जोतिमई ॥ शशिसूरजजो
तिछिपावलई ॥ नभमें सुर दुंदुभि घोर बजै ॥ बरसै बहु पुष्प सुगंध फबै ॥ धुनि दिव्य अनक्षर गाजर
ही ॥ जिहि की उपमान हि जाय कही ॥२॥ सब जीव अजीव अभेद गनौं ॥ अरु धर्म अधर्म सरूप भनौं ॥
सब काल अकाल प्रकाश कियो ॥ षट द्रव्य इहां भवि जानि लियो ॥३॥ जीव अकाश त्रिलोक तनौं ॥ अ
रु धर्म अधर्म जु द्रव्य गनौं ॥ इनि च्यारिनि के परदेश सही ॥ सम मध्य असंख प्रदेश सही ॥४॥ नभ सर्व
अनंत परेदश कियो ॥ अरु पुद्गल द्रव्य त्रिभेद भयो ॥ महसंख असंख्य अनंत कहा ॥ भवि जीवन
नैं सत भाव गहा ॥५॥ पुनि काल अणू सब भिन्न कही ॥ तिस ते इसकौं नहि काय कही ॥ सब जानि अ
संख्य प्रमाण अणू ॥ यह निश्चय काल जिनंद भनौं ॥६॥ व्यवहार त्रिकाल अनंत प्रभा ॥ वरताव भवि
ष्यत और गना ॥ षट द्रव्य पसार त्रिलोक विषै ॥ यह वर्णन आप जिनंद अखै ॥७॥ दशहूं दिश और
अलोक सही ॥ नहि दूसर द्रव्य जिनेश कही ॥ इनकी सरधा भवि जीव करै ॥ दृढ सम्यक सो उर मा
हि धरै ॥८॥ जिनराज कृपाल कृपा करिये ॥ दुख जन्म जरा मरणों हरिये ॥ जयवंत जिनेश्वर धर्म सदा ॥
उर माहि रहै सत मर्म सदा ॥१०॥ दोहा ॥ अशरन शरन सहाय तुम ॥ शरनागत सुखदाय ॥ दीन जानि
कीजे दया ॥ तुम दयाल जिनराय ॥११॥ अर्घं ॥ दोहा ॥ हरो सर्व अघ साज ॥ करो रहु निज भावकी

सरोह्मारोकाज॥यहविनतीसुनिलीजिये॥१२॥इत्याशीर्वाद॥ ॥३०॥ ॥अथनंदीश्वरद्वी
पपश्चिमदिशचतुर्थदधिमुखपर्वतपरजिनालयपूजामाह॥ ॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरकीपश्चि
दिशमेंअंजनगिरअतिस्यामसरूप॥ताकीउत्तरदिशमेंराजेदधिमुखदधिसमस्वेतसरूप॥दशह
रयोजनकोऊंचोगोलडोलसमशोभअनूप॥तापरअकृत्तिमजिनमंदिरजजतसुरासुरतिहुंज
॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशचतुर्थरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं
चालछंद॥जलउज्जलशीतललीजे॥जिनवरकेचरणजजीजे॥सबजन्मजरादुखनाशे॥निजशांतसु
नपरकाशे॥नंदीश्वरपश्चिमजानो॥अंजनकीउत्तरमानो॥दधिमुखपरजिनगृहसोहे॥सुरअसुर
वैमनमोहे॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥चंदन
लियागरसार॥घनसारसुगंधअपार॥भवातापविनाशनकाजे॥पूजोभविजनजिनराजे॥नंदी०॥२॥
ॐह्रींचंदनं॥सिततंदुलधोयधरीजे॥अतिउत्तमथालभरीजे॥अक्षतसोंजिनपदपूजो॥अक्षयपदको
पतिहूजे॥नंदी०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥अशरीरअरीदुखकारी॥त्रयलोककियेवशभारी॥तिहिअरिके
जीतनकाजे॥फूलनसोंजजोजिनराजे॥नंदी०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥यहकर्मअसाताभारी॥सबजीवनको
खकारी॥ताकेनिरवारनकाजे॥चरुसोंजजिहोंजिनराजे॥नंदी०॥५॥ॐह्रींचरुं॥यहमोहमहातमभारी

जगमाहि छयो अनिवारी ॥ तिहि दूर करण के काजे ॥ दीपक सौं जजि जिनराजै नंदी॰ ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥
कर्म वडे दुखकारी ॥ सव जीव करै भयभारी ॥ विधि गर्व जलावन काजै ॥ धरि धूप जजौं जिनराजै नंदी॰ ॥७॥
ॐ ह्रीं धूपं ॥ फल उत्तम जे जगसारी ॥ भरि सुवरण भाजन माही ॥ जिनवरके चरण चढावे ॥ सो भव्य महा
फल पावे नंदी॰ ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जल फल वसु द्रव्य मिलावै ॥ करि अर्घ प्रभू गुण गावै ॥ जिनवरपद
पूज रचावो ॥ यातें पंचमगति पावो ॥ नंदी॰ ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ नंत चतुष्टय धारि जिन पर
मोहारि करेह ॥ जिनके पदपंकज जजे ॥ उरमैं धारि सनेह ॥१॥ दोहा ॥ नंदीश्वर उत्तर दिशा ॥ दधिमुख गि
रके भाल ॥ जिन मंदिर पूजा भई ॥ अव वसु निये जयमाल ॥२॥ जयो जगमैं जिनराज महान ॥ जयो प्रगट्यो
जव केवलज्ञान ॥ जयो सव इंद्र सुरासुर संग ॥ जयो जयकार करंत अभंग ॥२॥ वजै वहु दुंदुभि जोर अका
शा दशों दिश छाय रह्यो वहु सोर ॥ अनेक सुवा जिनको वहु सोर ॥ तथा जयकार महा चहुं ओर ॥३॥ सु
चारितरूप महीरन रंग मभू ॥ असहाय अरी वहु संग महा ॥ महा अरि च्यार हने वलजोर ॥ उसी जयपा
पति कोय हथोर ॥३॥ सभा दश दोय विषैं जिनराज ॥ करै उपदेश महा वृषकाज ॥ सवी जगजंतु के हि
तकाज ॥ खिरै जिनकी धुनि दिव्य अवाज ॥४॥ सुनैं भविजीव लहैं सतज्ञान ॥ जगै उरमाहि सुभेद विज्ञान
धरे वृषभाव सुधी लघु भेष ॥ करै व्रत संजम वृत्ति विशेष ॥५॥ तजे भविजीव परिग्रहभार ॥ सजै जिनरूप

करावै मन अनंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ कल्पवृक्षके उत्तम फल लेउत्तम पूज रचावै नवरस भाव प्रगट
करकेसुरपतिनृत्य करावै । हृदैवहु भक्ति वढावै मन अनंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफल द्रव्य मि
लाय भावसों पूजन मैं मन लावै सुरसुरपतिजिनपतिपदपूजे दुंदुभि देववजावै कुसुमवरषा
रषावै मन अनंदी ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ सुरपतिनरपतिनागपतिखगपतिपुरुषप्र
णपूजे जिनवरचरणकों निजहितआनंदमान ॥१॥ पद्धडीछंद ॥ जय जय जिनराजदयानिधा
भवसागरतारणपोत जान ॥ जय आपतरे भविजीवतार ॥ तारणतरणजिनेशसार ॥२॥
जीवनकों कल्याणरूप शिवमगकोंवतलायो अनूप याहीसें करुनानिधिजिनेश ॥ जिनकेपद
नसुरसुरेश ॥३॥ भवकूप पडे जे जगत जीव दुखसहितकालवीत्यो अतीव तिनकोंसु
शोष्यो पतितउधारकसो जिनेश ॥४॥ यादुखदायक भवसिंधुमाहि जियकोंकोई न शरन
से अशरनकों शरनरूप तुमहीसहायहोजगतभूप ॥५॥ अतिदीन रंकजे जगतमाहि त्रि
नकोंकोई शरन नाहि तिनके विनकारनसुखदमात ॥ प्रभु दीनबंधु तुमही विख्यात ॥६॥ ज
प्रिकर्मवेशकंपे तिन्हिमेंसुर असुरशोषासोतुमनेंजीत्यो हेजिनेश ॥ यातैं हो अतुलवली
॥ दुखहेतुअसाताअंतराय ॥ तिनकोसहचारकमोहराय ॥ तिनसवकोंजीत्योतुमरूपाल ॥ यों

व अनंत भोग्यो विशाल ॥ ७ ॥ सब द्रव्यन की परजाय सार ॥ होगई तथा जो होनहार ॥ तिन सब कों जानों
समय माहि ॥ यौं ज्ञान अनंतो तुम्ही माहि ॥ त्रय काल तने सब द्रव्य रूप ॥ इक समय माहि देखो अनू
प ॥ यों दर्शन देव अनंत धार ॥ जिन के पद वंदौं वार वार ॥ ९ ॥ सब जीवन के गुण दर्श ज्ञान ॥ क्रमवर्ती प्रगटै
सत्य ज्ञान ॥ तुम युगपत जानों लखो सार ॥ यह लोकोत्तर महिमा अपार ॥ १० ॥ प्रभु तुम गुण महिमा अ
गम सोय ॥ हम पर कैसें निरवाह होय ॥ यौं करत वडे रिषिराज देव ॥ भविजन कौं सुख देवे स्वमेव ॥ ११ ॥ जो
वडे वीर नहि लहें पार ॥ तो रंक जीव की क्या सम्हार ॥ पै तुम समरथ दाता दयाल ॥ सब को फल द्यौ तिहिं
यो गहाल ॥ १२ ॥ तुम पद सरोज की सेव देव ॥ भविजन कौं सुख देवे स्वमेव ॥ यह अद्भुत शक्ति अनंत रूप ॥
तुम विन नहि अंत लहै अनूप ॥ १३ ॥ तुम पद कौं वंदौं वार वार ॥ संसार जलधि से करो पार ॥ तुम सब दे
वन के देव देव ॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सुरपति नरपति नागपति ॥ तुम सब के पति
देव ॥ अरज जिनेश्वर की सुनों देहु सुगुन सब भेव ॥ १५ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ तुम भव जलधि जहाज ॥ तारन त
रन सही प्रभू ॥ अरज सुनों महाराज ॥ मोकूं भवदधि तारिये ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ अथ
श्री नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा द्वितीय रतिकर पूजा माहि ॥ कुसुमलता छंद ॥ अष्टम द्वीप दिशा पश्चि
म में अंजन गिर के पूरव सार ॥ दूजे कोन वापिका माहि रतिकर पर्वत तन आकार ॥ ढोल समान गोल

तरफं जोजन सहस ऊर्ध्व तासार तापर श्री जिनमंदिर सोहै। नजत सुरासुर अष्ट प्रकार॥ ॐ ह्रीं नं
दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशा द्वितीयरतिकरपर्वतपर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ गीता
॥ शुचिगंध मिष्ट महान उज्जल नीर मनिझारी भरो। सुरलोकपति अरु असुरपति जिनराजके
यन परे। वरद्वीप अष्टम दिशा पश्चिम द्वितिय रतिकर राजही। जिनभवन तापर देव पूजे
जहीं॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशा द्वितीयरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ १॥ घनशालक
लीशाल मिश्रित दशों दिश महकावही। भवताप नाशन हेत सुरपति जजत जिन सुख पावही॥ वर०
॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ सुखदास अरु कमोद तंदुल सरस उज्जल धोइये। जिनचरनपूजनकाज अक्षत
लस जोइये॥ वर०॥ ३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुरलोकके शुचि गंध पूरित कुसुम सुरपति लावही। त्रैलो
विजयी पंचसर सूं करत पूज स्वावही॥ वर०॥ ४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ पकवान नाना भांति ताजे मोदकादिक
इये। दुखक्षुधा नाशक सुर असुर नित चरनमाहिं चढाइये॥ वर०॥ ५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ वरदीप मणिमय
विनाशक सुर असुर नित लावही। त्रैलोकपति श्री अरहंत प्रभुके चरनमाहिं चढावही॥ वर०॥ ॐ
पं॥ ६॥ दशगंध सार सुगंध दशदिश होय धूप महान है। जिनचरन पूजित असुर सुरपति
खहित दान है॥ वर०॥ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ फल सार मिष्ट विशाल शुचि हित स्वाद मिष्ट सुल्यावही

रवानकारणभव्यजनजिनराजचरणचढावही॥वरअ०॥ उँ ह्रीं फलं॥ जलगंधअक्षतपुष्पनेव
जदीपधूपफलावली॥जिनराजचरणचढायपावै॥भव्यजिनगुणआवली॥वर०॥९॥ उँ ह्रीं अर्घं॥ज
यमाल॥दोहा॥ अंतरवाहरकेसवे जाहरशत्रुअनेक॥तिनसवमैंजिनराजजी॥राखोनिजहित
टेक॥१॥पासवासकीआसउ॥वासयहीअरदास॥परमजिनेश्वरदेवतुम॥मैंहूंजिनवरदास॥
पद्धडीछंद॥जयजयअरहंतमहंतदेव॥जयचरननकीसुरकरतसेव॥तुमनामजपतसुरलोकपा
म॥अविवेकीपशुभीलहेनाम॥१॥तोभक्तिवंतनभव्यजीव॥क्योंनहीलहेशिवसुखअतीव॥अरहं
तनामकोअर्थसार॥याकेविवरणसुखदायसार॥२॥इसअर्हधातुकोपूज्यअर्थ॥याकेअरहं
पदनहीव्यर्थ॥जगपूज्यपुरुषकीविनयसेव॥सुखदायकसेवककोस्वमेव॥३॥अंतरअरिहरि
करिलईरुचि॥अरहंतनामयातैंप्रसिद्ध॥निश्चयसुदृष्टिकरिकर्मरुक॥परमागममैंयहकियोभेव
॥५॥ज्योहोयआपशिवसुखसरूप॥औरनकोंदिवशिवसुखअनूप॥तुमसर्वसुखीसुखदेवदान॥
यातैंतुमसुखदायकप्रमाण॥६॥जोआपयाचनाकरैकोय॥सोऔरनकोंक्यादेयसोय॥तुमअजा
चीकपथपतिअनूप॥याहीतैंतुमदातारभूप॥७॥लोकीकसंपदानशेसोय॥ताकोननिरंतरदान
होय॥प्रभुतुमसेपतिअंतयअनंत॥याहीतैंतुमदानीमहंत॥७॥लोकीकराजसवविनशिजाय॥या

बांवनपू॰
॥५०॥

जीवकौंईअघायतुमअलोकीकराजाधिराजजगमाहिधन्यप्रभुतुमसमाज ॥ ७ ॥ बहिरंगर
कौंनहीपार ॥ तोअंतरंगकोकहेसार ॥ तिसपरभीतुमप्रभुनिरविकार ॥ जगधन्यवीतरागीअपार
८ ॥ बिनक्रोधमोहअरिलयोमार ॥ विनलोभसंपदाग्रहीसार ॥ विनद्वेषदुष्टनरनर्कडार ॥ विनरागउ
देयतार ॥ ९ ॥ यहअद्भुतमहिमाअकथदेव ॥ कहिकोनसकैजगमाहिभेव ॥ इत्यादि
न प्रभुपरउपगारीवचप्रमाण ॥ ११ ॥ जिनराजहितिनरसुखदतार ॥ जिहधारिभव्यजनभयेपार ॥
आगेंभीभविधरैसोय ॥ सोसवनिश्चैभवपारहोय ॥ १२ ॥ यातेंमैंआयोराजद्वार ॥ हे कृपासिंधुसं
रतार ॥ मनवचनकायसूंकरूंसेव ॥ भवपारजिनेश्वरदेहुदेव ॥ १३ ॥ दोहा ॥ वसुविधि
सुविधिभविजनकाज ॥ वसुविधिविजयीदेवको ॥ चरनजजूंहितसाज ॥ १४ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ वीतरा
गमहाराज ॥ वीतरागताकाजमें ॥ शिवसुखपावनआज ॥ पूजूंपदमनलायकें ॥ १५ ॥ पुष्पं ॥ ॥३३॥
अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशातृतीयरतिकरपूजामाह ॥ कुसुमलताछंद ॥ नंदीश्वरवरद्वीपअ्रा
ताकीपश्चिमदिशमेजान ॥ अंजनगिरपर्वतहैताकीदक्षिणवापीकौंनप्रमाण ॥ सुरसुरेशावहां
चावेहमनिजगरहपूजैंहितदान ॥ रतिकरगिरकेऊपरजिनगृहजिनवरबिंबअकृत्तिमजान ॥ १
ह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशातृतीयरतिकरगिरपर्वतपरशिवकूटजिनमंदिरेभ्योनमः ॥ अत्र ॥ ॥५०॥

22618

व०॥ अथ० ॥ पुष्पं ॥ चाल रेखता ॥ जिनंद तेरे पूज वासुरेश आवते ॥ असंख्य देव भक्ति भरे शीश नावते ॥ दे
व ॥ जलउज्जल सुरलोकको मणिमय भाजन धार ॥ जिनपद आगें धारदे ता पर जिनमंदिर जजो दायक शि
वकल्यान ॥ नंदीश्वर पश्चिम दिशा ॥ रतिकर तृतिय महान ॥ ता पर जिनमंदिर जजो दायक शिवकल्यानजी
जिनंद०॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिमदिशा रतीयरतिकर जिनालयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥१॥ चंदनगंध दशों
दिशा महकेलि रहो भरपूर ॥ तासों जिनवरपद जजें सुरगण रहत जरूर जी ॥ जि०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ मोती नि
र्जर लोकको सुरलावै भरि थार ॥ जिनवरपद पूजा करै वहु रिनवा वैभालजी ॥ जि०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ पा
रिजात मंदारके पुष्प सुगंध अपार ॥ कामदहनके कारणे पूजों जिनपर सारजी ॥ जि०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥
सुरयादवके चरु महा षटरस पूरित सार ॥ देव जिनेश्वर चरनकों पूजे हर्ष अपार जी ॥ जि०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं
जोतिवंत मणिदीप ले करै आरती देव ॥ मोहमहातम हननकों जजे जिनेश्वर देवजी ॥ जि०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ अ
तिसुगंध नभ विस्तरै रही दिशा प्रतिछाय ॥ पूजे देव जिनेशकों ऐसी धूप चढायजी ॥ जि०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं
उत्तम फल सुर रहतके मिष्ट महारस पूर ॥ देक चढावै भक्तिसों ॥ जिनवर चरन हजूरजी ॥ जि० नंदी०॥८॥
ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफल आठों द्रव्य ले अर्घ बनाय अनूप ॥ चरन जिनेश्वरके जजे सबै असुर सुर भूप ॥ जि०
नंदी०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ अथ जयमाला ॥ दोहा ॥ विद्याधर असि चक्रधर अरु त्रिशूलधर देव ॥ सर्व स्वगणधर देव

वौंवनप्र:
॥५२॥

कीकरैसुरासुरसेव॥१॥पद्धडीछंद॥जयवीरधीरजयवंतदेव॥विधिअरिकरालकोकालएव॥जयसं
तमहतनकोंकृपाल॥जयदुष्टमोहकोहननकाल॥२॥जयचारितकीरणधरावीच॥सन्मुखदेखो
रिमोहनीच॥ततकालवीरवरभेषधार॥जिहिदेखतमोहेमुक्तिनार॥३॥तनधारदिगंवरकवचसार॥अ
रुवीतरागतामुकटधार॥सतसंजमचापअनूपज्ञान॥संवरचितपूरणसंवरमहान॥४॥करध्यानकृपा
णअशोकधार॥अथगुप्तिरूपतिरसूलधार॥अरुउपशमरूपअनीकराल॥विधिउर
ननभाल॥५॥दशधर्मचक्रकीधारदेख॥सवकर्मशत्रुभागेविशेष॥नयरत्नशक्तिसहमालशोय॥
हतपगजपरहसवारहोय॥६॥सहायआपअरिगणमकार॥अरिमोहवलीजीनोंहकार॥७॥हुअ
रिसमूहकेमध्यसार॥जीनोंतुमनेंअरिमोहमार॥८॥फिरदूजाक्षणमेंलगातार॥असिशुक्लध्यानको
रिमहार॥अरितीनघातियालयेवीन॥नवओरकर्मभागेअदीन॥९॥जयपायजिनेश्वरदेवसोय॥त्रैलो
पतीनृपएवहोय॥सवचतुरनिकाईदेवआय॥तुमपदकोंपूजैशीशनाय॥१०॥प्रभुसमोश
सारचतुराननआसनपद्मधार॥मणिसिंहपीठपरअंतरीक्ष॥राजेसुरमुनिकंपतिप्रत्यक्ष॥११॥त्रयछ
त्रअतितेजवंतशशि॥सूरप्रभाकोटिकलजंत॥अरुशोकतनांप्यारोंप्रसंग॥सुरदुंदुभिनभमेंजोर
होय॥अरुकुसुमवृष्टिसुरकरैसोय॥१२॥जिनकीधुनिदिव्यखिरैअगाध॥सवतत्वप्रकाश ॥५२॥

× अरुचौसठचामरदिव्यसार सुरढारतहर्षहरैअपार १० जहाँरत्नअशोकदिपेउतंग ×

धा जिनराजशरीरप्रभा अनूप॥ प्रतिबिंब आकार दिपै सरूप॥१॥ इत्यादि अतुल संपति महान॥ जिं हदेख
त भविजन पाप हान॥ तुम पद सरोजकौं बार बार॥ हम नमत शीश कर धार धार॥२॥ विधि विघ्न मूलतरु
जार जार॥ चिर संचित विधि वलटार टार॥३॥ उर अज जिनेश्वर धार धार॥ दुख कार भवोदधि तार तार॥४॥ दे
हा॥ इस असार संसार में शरन तुमारी देव॥ सो प्रभु हमकौं दीजिये करो कृपा यह देव॥५॥ ॐ ह्रीं अर्घं
सोरठा॥ तुम अनाथ के नाथ मैं अनाथ चिरकालतें॥ हित न माऊं नाथ मम उर आस भरो प्रभू॥६॥ पुष्प
इति॥ ॥३४॥ ॥अथ पश्चिम दिशा चतुर्थ रतिकर पूजा माहि॥ कुसुमलता छंद॥ अष्टम द्वीप दि
शा पश्चिम में अंजनगिरिके दक्षिण भाग॥ वापी छिति य कोन में चौथो रतिकर पर्वत अतुल सुभाग
सुवरण वर्ण सहस योजनको उन्नत गोल ढोल सम लाग॥ ता पर श्री जिन मंदिर प्रतिमा पूजत उ
र सुरेश बड भाग॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा चतुर्थ रतिकर पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरे
भ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ जोगी रासा॥ गंगाजल सम नीर अनोपम कंचन झारी भरि
ये॥ जन्म जरा दुख हरत जिनेश्वर पद तर धारा करिये॥ अष्टम द्वीप दिशा पश्चिम में चौथो रतिकर
भाई॥ ता पर श्री जिन भवन अकृत्रिम सुरपति पूजत आई॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा चतुर्थ
रतिकर पर्वत पर सिद्धकूट जिन मंदिरेभ्यो नमः॥ जलं॥ मलियागिर घनसार सुचंदन केशर रंग मि

लावे॥भवआतापरहितजिनवरकेचरननपूजरचावे॥अष्टम०॥२॥ॐह्रींगंधं॥देवजीरसुखदा
कमोदकअक्षतस्वक्षतकरीजे॥अक्षयपदकेईशाजिनेश्वरचरननपुंजधरीजे॥अ०॥ॐह्रींअक्षतं
रन॥केफूलमनोहरनिरदोषसुरलावैकामराहदाहकजिनवरकेचरणपूजगुणगावे॥अ०
॥ॐह्रींपुष्पं॥फेंनीगोंजामोदकखाजेलाडूआदिवनावेदोषअठारहरहितप्रभूकेचरनन
अग्रचढावे॥अष्ट०॥५॥ॐह्रींचरुं॥तमहरजोतिप्रकाशीदीपकरत्नमईसुरलावैकेवलज्ञानध
जिनपतिकेचरणपूजहर्षावे॥अष्ट०॥६॥ॐह्रींदीपं॥दशविधिधूपसुगंधमईकरलेजिनमंदि
आवैपरमशुक्लध्यानीजिनवरकेचरननमांहिचढावे॥अष्टम०॥७॥ॐह्रींधूपं॥लौंगलायची
स्ताकिसमिसखारिकलावैमुक्तिमहाफलदायकप्रभुकेचरणपूजिगुणगावे॥अष्ट०॥ॐह्रीं
फलं॥जलचंदनअक्षतकुसुमावलिनेवजदीपकसारेधूपफलावलिअर्घवनाकरजिनवरपद
तरधारो॥अष्टम०॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दोहा॥अरिरजरहसिनिवारिकेभवदसिलियोनिज
थान॥भ्रमउरवासकरोप्रभूवरदायकभगवान॥१॥पध्दडीछंद॥जयकेवलज्ञानधनीजिनेशतु
रणकमलसेवैंसुरेश॥जयसमवशरणकेमध्यसार॥उपदेशदियोवृषसुधाधार॥२॥जयजी
अजीवसुनित्यभेद॥दरसायोचउसवअनुयोगवेद॥जयपुरुषशलाकासाठतीन॥तिनकोसवभेद

होयप्रवीन॥५॥चौवीशतीर्थंकरप्रथमजान॥दशचक्रवर्तीदूजेमहान॥प्रतिहरिबलिहरिनवप्रमाण॥स
बत्रेसठपुरुषकहेपुरान॥इकसोउनहत्तरजीवसोय॥सोमुक्तिपात्रजगमाहिहोय॥जिनमाततात
अरुकामदेव॥हरकुलकरनार॥जोडिएवाधायेसर्वमुक्तिकेपात्रजान॥कछुतद्भवकछुभवधरम
हान॥मेंमुक्तिरूपवंदोत्रिकाल॥प्रभुमेरोकाटोजगतजाल॥दिवदत्तिणइंद्रशचीमहान॥तिनलो
कपाललोकांतजान॥अरुसरवारथसिद्धदेवसार॥एकाभवतारीउरविचार॥६॥जिनमाततातजिन
राजआय॥हलिहरिचक्रीपूरनप्रताप॥अरुभोगभूमियाजीवजान॥इनकेमलमूत्रनहीप्रमान॥७
जयशंकरजिनतपकरैसार॥दशपूर्वइकादशअंगधार॥लखिअवलोगएकोभ्रष्टहोय॥चिरका
लभ्रमणजगकरैसोय॥नवनारदब्रह्मचारीअपार॥उरक्रोधमानमायासुसार॥शंकरनारदकेमा
ततातकूं॥इनकीउरधगतिजगदिखात॥अचक्रीनरऊरधअधोलोक॥निजकृतिअनुसारफलेजु
योक॥इत्यादिकवहुतवर्णनअनूप॥उपदेशकियात्रैलोकभूप॥११॥मोमनमैंतिष्ठोसदाकाल॥जबलों
नलहोत्रैलोकभाल॥मनवचनकायकरकरूंसेव॥यहलाभजिनेश्वरदेवदेय॥१२॥दोहा॥चौथार
तिकरगिरतनी॥पूरनयहजयमाल॥जोनरवांचैभावसौं॥ताकेभागविशाल॥१३॥अर्घ॥सोरठा॥
जिनवरबिंवमहान॥कृत्तिमअकृत्तिमसवै॥देहुहमैंकल्यान॥मैंदूमनवचकायकै॥१४॥इति॥३४

…कहौभ्रात ८ हरिप्रतिहरिनारदमहादेव पहुंजाय अधोगति नियम एह वलिअतनजुगुलकुलमाततात ×

अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशपंचमरतिकरपूजामाह॥ कुसुमलताछंद॥ नंदीश्वरवरद्वीपआठमों॥ प
श्चिमदिशअंजनगिरजानमाकेपश्चिमवापीराजेताकेप्रथमकोंनमैमानरतिकरगिरपंचमकंचनम
यऊंचोयोजनसहस्रप्रमाण॥तापरजिनमंदिरजिनप्रतिमाअर्घचढायकरूंमैंध्यान॥ ॐह्रींनंदी
श्वरद्वीपपश्चिमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ सुंदरीछंद॥ सुरनदीजलनि
र्मलायकैकनककुंभअनूपभरायकैजनमदाहनिवारनदेतहोधारजिनपदअग्रसुदेतहो॥सरस
अष्टमद्वीपसुहावनो॥ सपश्चिमदिशमनभावनो॥सरस॥ जिनजलचरणा ॥गिरसुपंचम
रसोदही॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशपंचमरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥ जलं
मलयचंदनकेसरडारिकै॥भक्तिभावत्रियोगसम्हारिकै॥कर्मबंधनिवारनकाजजी॥भव्यपूजतप
जिनराजजी॥सरस०॥२॥ ॐह्रीं चंदनं॥ कठिनशुचिसमस्वेतसुहावनो॥अमलअक्षतसदृशभावनो॥

वरपुण्यबढावनहेतहो॥जिनचरनवसुंदेतहो॥सरस०॥३॥ ॐह्रीं अक्षतं॥ सुरमहीसुहकीकुसुमावलि
तिहिसुगंधभ्रमैभ्रमरावली॥जिनचरनलखिहगहरषातहो॥जजतमन्मथजरजरजातहो॥४॥ ॐह्रीं
पुष्पं॥सरसमोदिकआदिबनाइएं॥बरुकनकमयथालभराइए॥जायजिनग्रहजिनवरपूजिये
भगतिवंतमुदितउरहूजिये॥सरस०॥५॥ ॐह्रीं चरुं॥ कनकमणिमयसुंदरजोइये॥दीपअतिदुति ॥५३॥

वंतसुजोईयो॥ विकटमोहमहातमनाशने॥ पूजि जिनपद ज्ञानप्रकाशने॥ सर०॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ अति
सुगंधसुधूपवनाईयो॥ मुदितमन जिनमंदिर जाईयो॥ चरणपूजित भविजिनराजके॥ हृदय भक्ति भरेसु
रसाजके॥ सरस०॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ परमपावन फल भरियार हो॥ अमरपति सुरसंग अपार है॥ चरणपूज
त श्री जिनराजके॥ तरणभवदधि साजसमाजके॥ सरस०॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलादिक द्रव्य मिलाइ
के॥ रतनसुवरनथालभरायके॥ अतिशचीपति भक्तिवढायके॥ जजत जिनपद अर्घ चढायके॥ सरस०॥
ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ विधि अरिभंजन परम विधि विविध प्रकार बताय॥ सो जिनराज जयो स
दा मम उर वसियो आय॥१॥ छंद मोतियादाम॥ जयो जगमें जिनदेव महान॥ जयो जिनको उपगार म
हान॥ शचीपति पाय परै निति आय॥ सदा प्रभु जी मम होहु सहाय॥२॥ दयो सतधर्म दया उपदेश॥ जयो जग
जीव सुथान विशेष॥ चतुर्दश भेद कहे जिन भूप॥ कहो तिनको सब भेद अनूप॥३॥ मिथ्यात ससादन मिश्र व
तीय॥ सु अव्रत सम्यगदृष्टि तुरीय॥ इकादश व्रतिक श्रावक रीति॥ सु ऊपर है मुनिधर्म अतीत॥४॥ प्रमत्त छ
ठो गुणथान अनूप॥ सु सप्तम है अप्रमत्त सरूप॥ अपूरवकर्ण सु अष्टम जान॥ तथा अनिवृत्ति नवों पर
वान॥५॥ सु है दशमो गुण सूक्षम लोभ॥ इकादशमो उपशांत अछोभ॥ सु छीन कषाय दुवादश भाव॥ य
हां तक तौ छद्मस्थ प्रवाह॥६॥ सुतेरम जान सुजोग जिनेश॥ यहां तक जोग तथा सित लेश॥ अजोग चतुर्दशमें

गुणथान। महीभवकारणकीसवहान।२। मिथ्यातविषैंगतिइंद्रियकाय। सवेजिनराजदईसुवताय। स
थूरातिएकासुकायकहीत्रसएकविशेष।।३।। सशारनआदिसुजोगभजंत। सवेमनत्रस
चतुर्थकऊगतिमैंगुणथान। सुपंचमहैपसुमानुषमान।४। प्रमत्तहितैसवहीगुणथान।
सजवान। त्रतीयदुवादशतेरमथान। कह्योमरनोंनहिश्रीभगवान।५। मिथ्यातमरेगतिचारहुजा
ननर्कविनात्रयभायसुपूरवआयुवंधैजिजिजीव। चतुर्थचऊंगतिजायसदीव।।६।। सुपंचम
ताछैगतिएकसुदेवमहन्ता। अजोगजिनेश्वरमुक्तिलहाय। कह्योयहवर्णनश्रीजिनराय।।७।।
जगदीश्वरज्ञानमवाहवराचरवस्तुप्रत्यक्षलखाय। त्रिलोकत्रिकालस्वभावविभाव। सवेरु
भाव।।८।। सुनोंप्रभुजीइसवारपुकारकरोहमकोंभवसागरपार। करोयहएकवडोउपगा
ईदुखभार।।९।। दोहा।। जिनवरज्ञाताजगवडेविपतिनिवारनहार।। इसअसारसंसारसैंकरोमो
र।।१०।। अर्घ।। सोरठा।। दीनवंधुभगवानकरौकृपामुझदीनपै। करुणानिधिगुणजानआयोतुमदरवा
र।। इति।। ।।२६।। ।। अथनंदीश्वरद्वीपषष्टमरतिकरजिनपूजामाह।। कुसुमलताछंद।। नंदी
रपश्चिमअंजनगिरतांकीपश्चिमदिशमैंजान। वापीकोनदूसरेमाहींरतिकरकंचनवर्णमहान। ताके
रश्रीजिनमंदिरअकर्तमसोहैअमलान। तामैंश्रीजिनप्रतिमाराजेतिनकौंवंदोउरधरिध्यान।१।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वरतिकरपर्वतपर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ अर्घ्यं०॥ अर्घ्यं०॥ अर्घ्यं०॥ पुष्पं॥ जोगी
रासा॥ गंगाजलसमउज्वलजललेसुवरणभृंगभरावै॥ जन्मजरादुखदूरकरणकों श्रीजिनचरणचढा
वै॥ नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकेपश्चिमसोहै॥ रतिकरऊपर श्रीजिनमंदिर॥ निरखिशचीपति
मोहै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरपश्चिमदिशासंबंधिरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ केशरअरुकरपूरमिल
के चंदनसंगघसीजे॥ परमपूज्यअरहंतदेवके चरणनपूजकरीजे॥ नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ मुक्ताफल
समउज्वलअक्षतसुंदरधोयबनावै॥ अक्षयपदकेपावनकारण श्रीजिनचरनचढावै॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं
अक्षतं॥ सुरतरुकेवरफूलमनोहरहर्षसहितसुरलावै॥ समरशूलनिर्मूलकरनकों श्रीजिनचरन
चढावै॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ लाडूघेवरमोदकखाजेताजेसरसबनावै॥ दोषक्षुधादुखदूरकरन
कों श्रीजिनचरनचढावै॥ नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ मणिमयदीपप्रजालमनोहररतनरकेवीधारे॥ मोहतम
हातमनाशनकारण श्रीजिनपरतरवारो॥ नंदी०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशविधिगंधमनोहरलेके श्रीजिन
मंदिरआवै॥ भव्यजीवभवतापविनाशन श्रीजिनचरणचढावै॥ नंदी०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ पिस्तालौंग
सुपारीएलाआदिकफलसुखकारी॥ भव्यजीवशिवफलकेकारण जिनवरपूजप्रचारी॥ नंदी०॥८॥
ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलअर्घबनायगायगुणभक्तिसहितशिरनावै॥ सुरसुरेशसब श्रीजिनवरकेअर

कमलकौं ध्यावो नंदी ॥ ८ ॥ ऊँ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ जगदीश्वर महाराज को वरनन शीशन
मरण ॥ जयमाला अवै प्रभुजी हो सुसहाय ॥ १ ॥ छंद मोतियादाम ॥ जयो जग में जिनराज महा
मुनिराज धरै तुम ध्यान ॥ रटै सुरशेष महेश अशेष ॥ कटै सब कर्म प्रबंध विशेष ॥ २ ॥ सुजन्मत देव
वै भवि आय ॥ करै प्रभु सेव सु मस्तक नाय ॥ गयंद ऐरापत पै असवार ॥ सु गोद लिये हरि श्री जगतार
सुर छत्र ईशान सुरेश ॥ सु चामर ढारत दोय सुरेश ॥ करै जयकार सवी सुर शेष ॥ सु भक्ति वढा
य अशेष ॥ ३ ॥ महागिरि पांडुक कानन वीच ॥ सनान शिला मनु चंद्र मरीच ॥ महा तरविष्टर रत्न
नरेख   हकौं नर हेत भूख ॥ ४ ॥ सु आसन पश्च विराजित देव ॥ सवै विधि न्होन करै हरि सेव ॥ सु पेद
हि आठ प्रमान ॥ भरै जल क्षीर हि सागर आन ॥ ५ ॥ प्रभू असनान करै हरि आय ॥ सु धन्य जिने
पुण्य प्रताप ॥ सुरासुर सर्व करै जयकार ॥ बजै वहु साज समाज अपार ॥ ६ ॥ सुरी वहु नृत्य क
रि सम तान वो रसभाव ॥ सु आनंद नाटक होत अनूप ॥ सुजन्म कल्याणक पुण्य सरूप ॥ ७ ॥ अरा
धि रसाधि नियोग ॥ गये सुर आपने थान मनोग ॥ प्रभू रह वास विषै करराज ॥ धरो फिर भेष
साज ॥ ८ ॥ हने चउघातिलयो वर ज्ञान ॥ चराचर वस्तु प्रकाशक भान ॥ करै उपदेश महासुख दान
दधि तारक पोत महान ॥ ९ ॥ जयो जग में वह देव अनूप ॥ हने वसु कर्म भये शिवभूप ॥ सवी सु

पतिदायअनूप॥करोहमकोंप्रभुआपसरूप॥१०॥दोहा॥वृषभरिषभकेदाताप्रभूरिषभेश्वरप्रभुदेव
करोकृपाममदीनपै॥तुमशिवदायकदेव॥११॥अर्घं॥सोरठा॥भवदधितारनहारकारणतुमय
जगतमें॥औरनदूजोसार॥निमितबलीइसलोकमें॥१२॥इति॥ ॥३७॥ ॥अथपश्चिम
दिशासप्तमरतिकरपूजाप्रारंभ॥कुसुमलताछंद॥अष्टमद्वीपदिशापश्चिममैंअंजनगिरकेउत्त
रसार॥वापीप्रथमकोनमेंसोहै॥रतिकरपर्वतगोलाकार॥तापरश्रीजिनमंदिरसोहै॥जाकीमहि
माअगमअपार॥ताकीआह्वाननविधिकरिकैपुष्पचढावतहमत्रयबार॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वी
पपश्चिमदिशासप्तमरतिकरेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र॥पुष्पं॥चालछंद॥जलसारसुधासम
लीजे॥सुवरनकेभृंगभरीजे॥जिनअग्रधारत्रयदीजे॥बहुपुण्यभंडारभरीजे॥नंदीश्वरपश्चिमदि
शाओरा॥सप्तमरतिकरगिरजोई॥तापरजिनगृहसुखकारी॥सुरपूजतभक्तिसुधारी॥२॥ॐह्रींनंदी
श्वरद्वीपपश्चिमदिशासप्तमरतिकरजिनमंदिरेभ्योनमः॥जलं॥१॥बरबावनचंदनलावो॥केशरकेसं
गघसावो॥भवदाहनिवारणकाजे॥भविपूजतश्रीजिनराजे॥नंदी०॥२॥ॐह्रीं॥चंदनं॥सुखदासप्रमोदम
हाना॥तंदुलसितउत्तमलाना॥जिनवरपदअग्रचढाना॥निश्चयअक्षयपदपाना॥नंदी०॥३॥ॐह्रीं
अक्षतं॥मंदारनमेरुअनूपा॥इत्यादिकुसुमबहुरूपा॥जिनवरपदअग्रचढावै॥सबकामव्यथानशि

बावन पू॰

॥५६॥

वो नंदी० ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ षटरस पकवान्न बीनो तुरत हि के पावन कीनो ॥ जिनवर पद माहि चढा
दुख दोष क्षुधान शि जावे नंदी० ॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ दशहूं दिश जोति प्रकाशे ॥ एसें दीपक तम नाशे
जिनवर पद अग्र चढावे भवि केवल लक्ष्मी पावे नंदी० ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ वर धूप दशांग बनावे तसु
गन आवे सो धूप धनंजय खेवे ॥ विधि नाशि निजातम वेवे नंदी० ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ फल उत्तम बहु
धल्यावे ॥ जिनवरके चरण चढावे ॥ भवि विधि अरि वंध नशावे ॥ निश्चय शिवलक्ष्मी पावो ॥ नंदी० ॥८॥
ह्रीं फलं ॥ वसु द्रव्य मिलाय बनावे ॥ कनथार विषें भर ल्यावे ॥ जिनवर पद अग्र चढावे ॥ सो भवि दिव
सुख पावे नंदी० ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ आठों द्रव्य मिलाय के ॥ आठों अंग नवाय ॥ जिनवर
कहूं जयमाला सुखदाय ॥१॥ छंद मोतियादाम ॥ जयो जिनराज भवार्णव तार ॥ जयो जिनराज शि
पधार ॥ जयो जिनराज सुधर्म जिहाज ॥ नमो जिनराज लियो शिवसाज ॥ सुनों भव कानन माहि जिनेश
नों हम नें दुख घोर कलेश ॥ न अंत लह्यो अज हूं नहि देव ॥ करूं तुम री इह कारण सेव ॥ करो विवि
सव फंद अभरो सुख संपति आनंद कंद ॥ हरो हम रोय इह काज जिनंद ॥ करो करुनाकर ना बुधि चंद ॥ अस
नें दुख घोर कलूं वार हे नित ही शिवसंपति दूर ॥ रहे अब तो तुम चर्ण जरूर ॥ न हे सुख धोय भुजी भ
र्ष्य प्रभु तुम रूप अनूप अपार ॥ रवी शशि कोटि लजंत अगार ॥ विचार तहीं भवि कीं सु

॥२८॥

के सुखकों कहि कोय॥१॥ अनंतबली अरु वज्रशरीर॥ महा छवि सुंदर गंध समीर॥ अखेद अस्वेद नहीं म
ल कोय॥ महा वच अमृत कोमल होय॥२॥ प्रभू त्रय ज्ञान विराजित एव॥ सुजन्मतही अतिशे जिनदेव॥ लहे
जव केवलज्ञान महान॥ लहे अतिशे दश और सुजान॥३॥ अनंत चतुष्टय चारि वखानि॥ धरे गुण छ्यालि
स श्री भगवान॥४॥ समोसृत मध्य विराजित देव॥ सुरासुर सर्व करें प्रभु सेव॥ महाधुनि दिव्य खिरंत अगाध
अनक्षर सर्व प्रकाश अवाध॥५॥ चतुर्दश मार्गणा गुणथान॥ छहे द्रव्य सबै गुण पर्यय वान॥ सुतत्व कहे प्रभु
सात प्रकार॥ प्रतीति भवार्णव तारणहार॥६॥ कह्यो सतज्ञान प्रमाण सरूप॥ नथा नव भेद अभेद अनूप॥
कह्यो शुभ चारित शुद्ध पयोग॥ यही रत्नत्रय जानि प्रयोग॥७॥ तथा दशलक्षण धर्म अनूप॥ द्वादश भावन सत्य
सरूप॥ कहे प्रभु षोडश कारन सार॥ सु तीर्थपतीपद के करतार॥८॥ इत्यादि अनेक दिये उपदेश॥ वसो हम
रे उर माहि हमेश॥ करो हमरी बुधि रिद्धि विशाल॥ भरो प्रभु जी शिवसंपति हाल॥९॥ दोहा॥ जन्म मरण
दुखनाशि कें करो ज्ञान परकाश॥ अरज जिनेश्वर की सुनों तुम दाता गुणराश॥१०॥ अर्घं॥ सोरठा॥ जग
में शरण सहाय नाम आपको मैं सुन्यो॥ करो कृपा जिनराज निपट अधम मम जानिकें॥११॥ इति॥ ३०
अथ नंदीश्वर दीप अष्टम रतिकर पूजा प्रा॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वर पश्चिम अष्टम गिरि॥ रतिकर कंच
न वर्ण सुहाग॥ एक सहस्र योजन को ऊंचो॥ इंद्र दिशा वापी वहिभाग॥ छितिय कोंनमें पर्वत राजे गोलाकार

ढोलसमलाग॥ताकेऊपरश्री जिनमंदिर पूजतसुरपतिकरअनुराग॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिम दि
शअष्टमरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र॥चाल दोहा॥ पूजनकरले
जिनवरदेवकीजीकोई द्विवशिवसुखदातार॥टेर॥ गंगाजलसमनीरलेजीकोई भरसुवरणभृंगा
जिनवरपदतरभावसोंजीकोई करधारात्रयधार॥पूज॥नंदीश्वरपश्चिमदिशाजीकोई अष्टम
तिकरसार॥सुरसुरेश पूजेंसदाजी॥तापरजिनआगार॥पूज॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशअष्टम
तिकरजिनमंदिरेभ्योनमः॥जलं॥१॥ केशरसंगघसायकैजी॥चंदनगंधअनूप॥भक्तिभावउरलायकै
जी॥पूजूं जिनवरभूप॥पूज॥नंदी॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षतनसरससुहावनेजी॥देवजीसुखदासअक्षयपद
कारणेजी॥पुंजकरोजिनपास॥पूज॥नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुरतरुकेवहुफूललेजी॥मस्केगंधअपार
मदहनकेकारणेजी॥पूजोंजिनआगार॥पू॥नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ मिष्टसरसनेवजमहाजी॥शुद्धतरुतव
वाय॥क्षुधाहरनकेकारणेजी॥जिनवरभेदकहाय॥पू॥नंदी॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ कनकरतनमयदीपलेजग
जोतिप्रकाश॥मोहतिमरकेनाशनेजी॥करहुआरतीपास॥पू॥नंदी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशविधिगंध
नायकैजी॥धूपकरोभविजीव॥जिनवरपदकूंपूजिकेजी॥पावोसौख्यअतीव॥पू॥नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥
तमफलसुरलोककेजी॥लावतसुरमतिआय॥करपूजनजिनराजकीजी॥नाशतभवसंताप॥पू॥नंदी॥८॥

ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफलअर्घवनायकेजी अर्घकरोगुणगाय ॥ अष्टकरमकेनाशनेजी पूजोंजिनवरपाय ॥ पू
ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ त्रेसठिप्रकृतिखिपायकेपायोकेवलज्ञान ॥ तिनपदवंदोंभावसें
नंदी ॥ ४२ ॥
रायकशिवकल्यान ॥ १ ॥ छंदमोतियादाम ॥ जयोजगमेंजिनचंदजिनेश ॥ हनेजिनने चउघातिअशेष
लहोपहिलैविधिमोहपछार ॥ तदंतरतीनकरैविधिछार ॥ २ ॥ हनेपहिलेअरिसातकरूर ॥ चतुर्थमथान
लयोगुणभूर ॥ नमेंगुणथानअरीछत्तीस ॥ दशोगुणमेंअरिलोभगरीश ॥ ३ ॥ दुवादशमेंगुणथानसुअं
ता ॥ अशेषअरीक्षणमाहिनशंत ॥ तहांगुरुदेवदिगंबररूप ॥ लखावतसर्वप्रकारअनूप ॥ ३ ॥ सुकेवलज्ञान
धनीजिनराज ॥ सुतेरमथानसमोश्रतसाज ॥ करेउपदेशमहाभविकाज ॥ भवोदधितारनपरमजहाज ॥
॥ असंख्यसुरासुरच्यारप्रकार ॥ तथापशुजातिअनेकप्रकार ॥ महामुनिराजतथानरराज ॥ चतुर्विधिस
घसुनेजिनराज ॥ ॥ कईभविसम्यकवंतसुजीव ॥ धरेव्रतसंजमभावअतीव ॥ करेव्रतदेशधरेदृढभेष ॥ करे
उरचाहदिगंबरभेष ॥ ६ ॥ कईभविसम्यकदर्शनपाय ॥ मिथ्यातवमेंअतिहीदुखदाय ॥ कईजिनपूजनको
व्रतधार ॥ करैजिनभक्तिअनेकप्रकार ॥ ७ ॥ कईवरदानपणोंव्रतलेय ॥ कईनिशभोजनत्यागकरेय ॥ कईव्रत
व्रतधरैदृढस्या ॥ सवेदुभावतजेदुखकूप ॥ ॥ धरेव्रतभावसुशक्तिसमान ॥ करेदृषमेंपुरुषारथध्यान ॥ क
रोविधिपूरवसंचितकूर ॥ धरेपगमुक्तिसुमारगभूर ॥ ८ ॥ तुम्हीप्रभुजीभवतारनहार ॥ तुम्हीप्रभुजीकरुनानि

बावनपू॰
॥५८॥

॥तुम्हीप्रभुजीजगमेंसुखकार॥जिनेश्वरकोंभवसागरतार॥१०॥दोहा॥कर्मबंधकोंनाशकर
सेमुक्तिआगार॥सोप्रभुमेरेउरवसो करोभवोदधिपार॥११॥अर्घं॥सोरठा॥अशरनशरनसहाय
असाररसंसारमें॥जोसदासहायतुमदाताजगमेंवडो॥१२॥इति॥ ॥५७॥ ॥कुसुमलता
॥नंदीश्वरपश्चिमदिशमाही जिनमंदिरतोसुनोंअधिकार॥जहांजहांजिनप्रतिमाराजेअतु
मईसुखकार॥वहांवहांवहुभक्तिभावकरपूजोजिनवरविंवविचार॥सर्वसिद्धिदायकअघघा
रोसहायअनेकप्रकार॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशसंवंधीत्रयोसर्गतरचनाविंबो
जिनविंबेभ्योनमः॥अर्घं॥पश्चिमदिशवर्तीव्यंतरभवनपतीसुरसार॥अथवाज्योतिषदेव
जेतिनकेचरणकमलकोंवहुविधिअर्घचढायजपूंनवकार॥२॥ॐह्रींश्रीनंदीश्वरद्वी
दिशसंवंधीव्यंतरभवनवासीज्योतिषीदेवोंकेजिनमंदिरजिनविंबेभ्योअर्घं॥पश्चिमदिशपूर्ण
थउत्तरदिशसंवंधीपूजामाहा॥५८॥अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशसंवंधीअंजनगिरिजिन
रपूजामाह॥जोगीरासा॥नंदीश्वरकीउत्तरदिशमेंअंजनगिरवरसोहे॥जोजनसहसचो
ऊंचोस्यामवरनमनमोहै॥ढोलसमानगोलतहांऊपरश्रीजिनमंदिरजानों॥आठअधिकइक
जिनप्रतिमापूजतसुखअधिकानों॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशअंजनगिरजिनमं

नमः॥ अत्र॰ अत्र॰ अत्र॰ ॥ पुष्पं॥ चाल होली॥ जिनपद की पूज रचाऊं हदै तिनके गुण गाऊं॥ टेर॥ नि
र्मल नीर कनक की झारी भर जिन मंदिर जाऊं श्री अरहंत चरण के आगे धार देय शिरनाऊं नंदीश्व
र उत्तर दिश सोहै अंजनगिर दरशाऊं मन वच काय लगाय गाय गुण जिनपद शीशनवाऊं॥ हदै॥ १
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप उत्तरदिशा अंजनगिरके शिखर जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ जलं॥ चंदन केशर गंध मिला
कर रतनकटोरी धारै सुरसुरपति जिनराज चरण की पूजा विधि विस्तारै॥ हदै॥ नंदी॰ २॥ ॐ ह्रीं चंदनं
उज्जल अक्षत धोय मनोहर कंचन थाल भरावै भव्य जीव बहु भाव भक्ति सों जिनवर चरन चढावै
हदै॰ नंदी॰ ३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ पारिजात मंदार आदिके पुष्प विविध गुण लावै श्री जिनमंदिर जाय
शचीपति जिनपद अग्र चढावै यह ही मैं शीशनवाऊं हदै॰॥ ४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ षटरसमय पकवान ब
नाकर हर्ष सहित सुर लावै श्री जिन चरण पूज कर सुरगण पुण्य प्रकृति उपजावै यह ही मैं निश दि
न चाऊं हदै॰ नंदी॰ ५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ वरन वरन के रतन मनोहर सुरसुरपति मिल लावै श्री अरहंत देव की
पूजा करत ज्ञान निधि पावै यह ही मैं आस लगाऊं॥ हदै॰ नंदी॰ ६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कृष्णागर वर धूप दशां
गी भव्य मनोहर लावै वसुविधि कर्म दहन के कारण श्री जिन चरन चढावै वक्त एमैं भी पाऊं हदै॰
नंदी॰ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ षट ऋतु के फल उत्तम लेके श्री जिन पूज रचावै भव्य जीव अति हर्षित मनमैं ज

वाँवनपू० ॥५४॥

सफलकरयावे॥यहीमैंमनमैंचाहूं॥हदे०॥नंदी॥७॥ॐह्रीं फलं॥जलफलअर्घवनायगायगु
ण॥जिनचरणाचितल्याऊं॥श्रीसर्वज्ञजिनेश्वरआगेअर्घअनूपचढाऊं॥कर्मविधिवंधमिटाऊं
दे॥नंदी॥८॥ॐह्रीं अर्घं॥जयमाल॥दोहा॥सुरपतिनरपतिनागपति॥खगपतिपूजतपाय॥निसे
निर्ग्रंथमुनिजनभीवंदैआय॥१॥ऐसाहीअरहंतपद॥परमदिगंबरदेव॥जिनगुणचरणसरोजकी॥करूं
दामैंसेव॥२॥चालविदेहजाकी॥समवशरणकेबीचमैं जगसारलो॥जैश्री जिनराज॥सुरनरखग
सराज॥अवननमैंशिरनाय॥अमिरनायचतुरनिकायसुरखगनरपशुसेवाकरी॥मनलायअवनन
नेखगज्येदेश॥आनंदविस्तरो॥नयकालजिनधुनिसदावरषै॥रपतिभविचातकभये॥भवदाहकोदुख
विनश्यो॥सहितसुखसहजैलयो॥श्रीअरहंतमतापसैंजग॥जातिविरोधनशाय॥अतिशय
जिनराजका॥जग॥जयवंतोहितदाय॥हितलायसिंहनिमृगचुखावै॥गायनाहरखेलकौ॥अहि
खा॥जकपोतखेलै॥सहितकागमरालकौ॥उंदरविलावकलापकरकर॥रमतइकठाहरविषै॥गज
अरुमृगराजमिलकरनेह॥आपसमैंलखैं॥जिनवरकीवानीवरै॥सुधाधारधरराज॥भविजन
तीफलेजग॥सुभअंकूरसमाज॥अवसाजसुखकोलहैभविजनहृदयअतिसंतोषिया॥म
जनदरिद्रअधीशसोकरलषितअमृतरसपिया॥बहुनकिंकरसुरअकनाचैतालदेतसुहावनी॥सव ॥५४॥

साजवाजसमाज अद्भुत धन्य जन त्रिभुवन धनी॥ गणधर पार न पावही॥ जग०॥ इंद्र रहै शिर नाय मुनि
जन ध्यान धरै सदा॥ जग०॥ तुम त्रिभुवन के राय॥ जगराय जगहित राय तुम गुण वेल की रति विस्तरी
त्रैलोक्य मंडप सर्व छायो शीशपर सुख फल फरी॥ वह फल अनोपम अविच्छिन्न अशोक अमित स्वभाय
है। दीजे जिनेश्वर देव हमकों वह सुफल सुखरूप है॥४॥ दोहा॥ तातमात भ्राता तुम्ही मालिक परम दया
ल। यह निश्चय मन जानि कोली नी आस रूपाल॥५॥ अर्घं॥ दोहा॥ वडो गरीव निवाज मैं गरीव जग मैं वडो
दीजो सर्व समाज जो जैसो जह चाहिए॥६॥ इति॥ ॥ ॥ अथ नंदीश्वर द्वीप उत्तर दि
शा मैं पूर्व दिश प्रथम दधिमुख पूजा माह॥ दोहा॥ दधिसम दधिमुख श्वेत है दश योजन दश हजार
उन्नतता पर जिन भवन पूजे सुरपति सार॥ ताकी बहु विधि भक्ति करि आह्वानन विधि सार॥ अपने घ
र पूजन करो बांछित अर्थ दातार॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिशा द्वितीय दधिमुख पर्वत पर सिद्ध कू
ट जिन मंदिरेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि॥ पद्म द्रह जल उज्जल लीजे जिन चरणां
बुज धार सु दीजे॥ जन्म जरा दुख दाह निवारै भव्य जीव समकित उर धारै॥ नंदीश्वर उत्तर दिश जानो अंजन
गिर की पूरब मानो॥ दधिमुख गिरि पर जिन गृह सोहै सुर नर पूजित सब मन मोहै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप
उत्तर दिश प्रथम दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ केशर अरु करपूर मिलाय बावन चंदन

गंधसाय॥जिनपदपूजितभक्तिपचारी॥भवआतापमिटावतभारी॥नंदी॥२॥ ॐह्रींचंदनं॥उज्वलअ
तधोयधरीजे॥उज्वलसुवरनथालभरीजे॥उज्वलजिनपदपूजरचावै॥उज्वलभावभविकफल
३॥ ॐह्रींअक्षतं॥कुसुमअनेकप्रकारमंगावो॥कुसुमायुधविजयीगुणगावो॥कुसुमजिनेश्वर
चढावो॥कुसुमवाणवाधाविनशावो॥नंदी॥४॥ ॐह्रींपुष्पं॥उत्तमनेवजविविधवनावो॥उत्तमभाज
मेंधरिल्यावो॥उत्तमभावभविकउरलावो॥उत्तमदेवपूजिसुखपावो॥नंदी॥५॥ ॐह्रींचरुं॥जो
तदीपकसुचिलीजे॥जोतिवंतजिनपदपूजीजे॥जोतिज्ञानहरतमकोंनाशे॥जोतिवंतनिजभावप्र
शे॥नंदी॥६॥ ॐह्रींदीपं॥दहनकर्मअरिधूपवनावो॥दहनशुक्लध्यानीपदध्यावो॥दहनमाहिंभ
प्रजरावो॥दहनकर्महनिशिवपुरपावो॥नंदी॥७॥ ॐह्रींधूपं॥सुफलअनेकप्रकारथालभरीजे॥सु
कामनामनमेंकीजे॥सुफलदाताजीपदपूजो॥सुफलपायमुक्तिपतिहूजो॥नंदी॥८॥ ॐह्रीं
उदरवमयअर्घवनावो॥आठोंअंगनायगुणगावो॥अष्टमक्षितिपतिपूजरचावो॥अ
पतिकहलावो॥नंदी॥९॥ ॐह्रींअर्घं॥जयमाला॥दोहा॥नंदीश्वरजिनधाम॥उत्तमदधिमुखप्र
मुनिमुनिकरुसणाम॥गाऊंगुणमालाअवे॥१॥पद्धडीछंद॥जयनंदीश्वरवरद्वीपजान॥
जयताकीउत्तरदिशमहान॥जयअंजनगिरसोहैउतंग॥जयगोलढोलसमस्यामरंग॥

रासीसहससार ऊंचो तिहि ऊपर जिनागार ।। जयता की पूरव दिश मझार ।। जयसजलवापिका भरीसा
रा २ ।। तिहि वीच जानि दधिमुख पहार ।। उन्नत है योजन दश हजार ।। अतिस्वेत वरन दधिसम अनूप न
हुं और ढोल सम गोल रूप ।। अति हिं ऊपर श्री जिनभवन सार ।। सब समवशरण शोभा अपार ।। जिन अंत
री तराजे सदीव ।। नित पूज करत तहां भव्य जीव ।। शत पंच धनुष जिन तन प्रमान ।। पद्मासन सोहै दी
प्तिवान ।। वसु प्रातिहार्य मंगल सुदर्व इत्यादि और महिमा जु सर्व ।। जिन छवि निरखत मन मुदि
त होय ।। चिरकाल पाप मल पुंज धोय ।। कोई आपति सम कित रतन सार ।। संसार खार तें करो पार ।। ६
अति तेज वंत जिन दिव्य रूप ।। जे परम वीतरागी सरूप ।। मनु सुवरन माहि सुगंध सार ।। अरु शशिकर
मिलि भग टी अपार ।। जग करमदाह करि दुखित जीव ।। तिनकी सुखदायक सकुसदीव ।। सुर असुर
वे बहु भक्ति लाय ।। तुम चरन कमल सेवें वनाय ।। ऋषि मुनि महंत तुम ध्यान धार ।। संसार उदधि तें हो
य पार ।। मैं शरणागत आयो अवार ।। हे करुणानिधि भव उदधि तार ।। ८ ।। जग जीति कर्म अरि करो चू
र ।। बहु जीवन कों दुख करो दूर ।। मुनि अर्ज जिनेश्वर की हजूर ।। निज सुख संपति दीजे जरूर ।। ९ ।। दोहा
करुनानिधि जिनराज तुम तारण तरण महेश ।। तुम पद पंकज कों नमों सकल सुरासुर शेष ।। १ ।। अ
र्घ ।। सोरठा ।। नमों अगवसु आठ भक्ति भाव हिरदे धरूं ।। भव भव भ्रमण नशाय अरज सुनो प्रभु दीन की ।।

१२॥ पुष्पं॥ ॥४१॥ ॥ अथ श्री नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूट
जिनमंदिरपूजाप्रारंभ॥ ॥दोहा॥ ॥ नंदीश्वरउत्तरदिशा अंजनगिरवरजोर। ताकीदक्षिण
पिका शोभनी कजलधार॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजि
दिरेभ्यो नमः॥ अत्र॰ अत्र॰ अत्र॰॥ पुष्पं॥ कुसुमलताछंद॥ पुंडरीकद्रहसमउजलजलजलज
घमिश्रितसुखकार। धारदेतश्रीजिनवरआगेजन्मजरादुखनाशनहार। नंदीश्वरदक्षिणअंजन
रताकीदक्षिणवापीसार। ताकेबीचविराजेदधिमुखतापरवंदौजिनआगार॥२॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप
८ दक्षिणदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो नमः॥ जलं॥ धं॰॥ मंत्र॥ पुष्पं॥
९ दा॥ पुंडरीकद्रह बावनचंदनकदलीनंदनसारतनिकंदनहैसुखदाय। पूजतश्री
लभविभवतातापदुखदेतनशाय॥ नंदी॰॥३॥ ॐ ह्रीं गंधं॥ श्रीसुखदासकमोदवासमतिसरलशा
विविधप्रकार। अक्षतपुंजजिनेश्वरआगेकरतभव्यपावेभवपार। नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ श्रीगु
दकेतकीबेलाकमलचमेलीलाय। कामदाहनिरवारनकारनजिनचरणांवुजदेतचढाय।
पुष्पं॥ लाडूघेवरमोदकफेनीषटरसव्यंजनतुरतबनाय। क्षुधारोगकेदूरकरनकोजिनवरपद
भविआय। नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ दीपरतनमयसुरपतिलावेभक्तिभावहिरदेउमगाय। केवलज्ञा ॥६१॥

निधानप्राप्तिकेहेतजिनेश्वरपूजेंआयानंदी ॥६॥ ॐ ह्रीं दी पं ॥ चंदनअगरतगरकृष्णागरधूपसुगंध
मईवनवाय॥ भविजनकर्मदहनकेकाजे जिनपदकमलजजेंमनलायानंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ लोंगलाय
चीपिस्ता किसमिसएलाकेलादाखमगाय॥ श्रीफलआदिमुक्तिफलकारणभविजनपूजतजिनव
पायानंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जलफलद्रव्यमिलायगायगुणअर्घवनायभक्तिउरलाय॥ अष्टमक्षिति
पतिपदपावनकोंसुरपतिजिनपतिपूजनआयानंदी ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ गीताछंद ॥ संसा
रकाननअतिभयानकविषयविषधरजोरहो॥ अतिप्रबलचारकषायतस्करत्रासतिनकीघोरहैजि
गजीवपथिकभ्रमेंनिरंतरदुःखबहुविधिपावही॥ मेंचरणपूजूंदेवजिनकेसुमगजोदरशावही॥ पद्ध
डीछंद॥ जयजयजिनराजसुखानिधान॥ दरशायोजगमेंमगमहान॥ जयसमवशरणकेमध्यसारउप
देशदियोआनंदकार॥१॥ सवतत्त्वप्रकाशकियोअशेष॥ आश्रवकोवर्णनयहविशेष॥ आश्रवसत्ता
वनभेदसार॥ तिनमूलभेदजानोंजुचार॥२॥ मिथ्याअव्रतजुकषाययोग॥ इनहीवससुखदुखसर्वभोग
मिथ्यातभेदहैपंचजान॥ अविरतकेवारहभेदमान॥३॥ पच्चीसकषायकहीजिनेश॥ अरुजोगजानपं
द्रहविशेष॥ इनसबकोंजोडेंहोयसर्व॥ सत्तावनआश्रवभेदपर्व॥४॥ मिथ्यातविषैंपचपनवखान॥ अ
हारादिकविनसर्वमान॥ पच्चासदूसरेथानजान॥ मिथ्यातपांचविनयहप्रमाण॥५॥ अरुतीजेचौथेकेमझार

बांवनपू
॥८२॥

त्यालीसऔरछ्यालीसधार॥गुणपंचममेंसेंवीसभेद॥चौवीसकरेंषष्टमअवेद॥६॥जयसप्तमअ
गुणमझार॥वावीसभेदआस्रवउदार॥जयनवमथानकेसातभाग॥प्रतिभागएकइकतनिलाभ॥७॥
तहांप्रथमभागसोलहप्रमाण॥अरुअंतभागदशभेदजान॥मंद्रहसैंएकादशप्रजंत॥जयमध्यभा
गपांचोलसंत॥८॥जयदशमेंदशगुणभेदजान॥ग्यारमवारमनोनोप्रमाण॥जयतेरमगुणमेंसा
त॥चौदसस्वामीजिनहैअजोग॥९॥यहआस्रवभेदकह्योजिनेश॥मोहीसिद्धांतचक्रीविशेषगोमट
सारमेंकह्योदेव॥आस्रवअधिकारविषैंजुभेव॥१०॥भवतत्वभेददरसीजिनेश॥सतज्ञानदानदायक
हमेश॥हरुपासिंधुकरहुपासार॥संसारखारतेंकरौपार॥११॥दोहा॥तुमपदतरनिजशीशधराकर
विनयसुरराय॥सोजगपतिपाजगतमेंभवभवहोहुसहाय॥१२॥अर्घं॥सोरठा॥तुमदेवनकेदेव
गणधरादिसेवैचरन॥छिपोनकोईभेव॥ममपनसापूरीकरो॥१३॥इति॥ ॥५२॥ ॥अथउत्त
दिशातृतीयदधिमुखपूजा॥अडिल्लछंद॥नंदीश्वरवरद्वीपआठमोंजानिये॥ताकीदिशागिरउत्तरअं
जनमानिये॥ताकेपश्चिमवापीमध्यविराजही॥दधिमुखगिरजिनभवनमहाछविछाज
ही॥ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशातृतीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥
अत्र०॥पुष्पं॥जोगीरासा॥चारोंगतिकेजीवजगतमेंजन्ममरणदुखपावैं॥तिहिदुखदूरकरणकोंजं०

लेश्री जिनचरनचढावै॥ नंदीश्वर उत्तर अंजनगिर ताकी पश्चिम सो है॥ दधिमुखगिरपर श्री जिन
सुरसुरपतिमनमोहै॥ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा तृतीय दधिमुख पर्वत पर सिद्धकूटेभ्यो नमः॥ जलं॥ चा
हरा हृदा है जीवनकौ विधिवश मिलतन चायो॥ तिहि दुखदूरकरणकौं जिनपति चं
नंदी॥ २॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ सुरपतिनरपतिखगपतिचक्री सबपद अथिर लखायो॥ अक्षयपद पाव
जन अक्षत चरन चढायो॥ नंदी॥ ३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ ब्रह्मा हरिहर शक्र चक्रपति जीते काम सवीनें॥ पुष्पच
य जिनेश्वर आगें भव्य मदन शर जीते॥ नंदी॥ ४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ दानव देव मनुष विद्याधर शूर सवी वश जाके॥
ता दुख दोष क्षुधा हर प्रभुके चरन जजत चरु जाके॥ नंदी॥ ५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ शंकर सूर शशी हर ब्र
जालमें आये॥ ता अरि मोह महातम नाशन जिनपद दीप चढाये॥ नंदी॥ ६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ ज्ञान दर्श आव
रा महा अरि इनके दाहन काजे॥ भवि जन धूप दहन तैं खेवैं सन्मुख श्री महाराजे॥ नंदी॥ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥
तराय दुखदाय जगतमें या सम दूजो नाहीं॥ ताहि निवारण काज सुफल ले भविजन भेट कराए
नंदी॥ ८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल अर्घ बनाय मनोहर सुरपति भक्ति बढाके॥ सुरपद सुफल
सुरनायक जिनपद अर्घ चढाके॥ नंदी॥ ९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ सुर नर पशु नारक विषे
न धारै यह जीव॥ देह रहित सिद्धानिकौं तिनपद नमूं सदीव॥ १॥ ॐ ह्रीं अर्हं॥ जय श्रीपति श्री अ

॥जय लखत चराचर वस्तु भेव॥ जय चारघातिया कर्म हानि जे केवलज्ञान लयो महान॥४॥ सर्वज्ञ सर्वद
श्रीजिनेश॥ जय ब्रह्मा विस्नु तुम्ही महेश॥ जे समवशरण के मध्य सार॥ चतुरानन राजे निराधार॥५॥ जे स
तलषट्द्रव्यसार॥ सब वर्णन कीनों सब प्रकार॥ तहां जीव देह के भेद मांहि॥ तन भेद कह्यो मैं कहूं
हि॥६॥ औदारिक वैक्रिय देहधार॥ आहारक तैजस कर्म धार॥ यह पांच प्रकार शरीर जान॥ नर
पशु कौ औदारिक प्रमाण॥ वैक्रियिक देह नारक शरीर॥ सब आहारक विधि सुनौ वीर॥ मुनि दशम
रसें प्रगट होय॥ आहारशरीरक ह्यो जु सोय॥ आगम प्रमाण मय अर्थ कोय॥ काहू मुनि के संदेह
य॥ असित फटिक वरण इक हस्त मान॥ नहिं चक्षुगम्य नहिं धातु जानि॥ केवलि निकट आप फि
आय सु गुरु तन मैं समाय॥ केवलि जिन को है तन अनूप॥ सो परम उदारिक दिव्य रूप॥ नहिं दे
तु उपधातु कोय॥ दधि फटिक समान शरीर होय॥७॥ जे तैजस दोय प्रकार जान॥ शुभ अशुभ भेद सु
नो॥ कार्माण वर्गणा बंध रूप॥ कार्माण देह का पोत स्वरूप॥ तैजस कार्माण अनादि संग॥ इक
मय होय जिन चार अंग॥ जय विग्रहगति विन सर्व काल॥ तन तीन तथा च्यारौ विशाल॥८॥ इक वि
ग्रहगति में दोय देह॥ तैजस कार्माण कही सुगेह॥ जे वैक्रियिक आहारक वताय॥ यह पंचेंद्रिय के त
काय॥९॥ औदारिक एकेंद्रिय लगाय॥ पंचेंद्रिय तक जानूं सुभाय॥ इत्यादि अनेक शरीर भेद वर्ण

कीनौं जिनवर अखे दा॥११॥ सो जगदीश्वर मम उर मका॥ क रवारवार संसार पारायण॥ अरज जिनेश्व
देवसा॥ सुनिले हु जिनेश्वर की पुकार॥१२॥ दोहा॥ जगतारी जगदीश जिन॥ जे वंतोत्र यकाल॥ जे
द्मी ममदी जिये॥ परिसमूह मे हाल॥१३॥ अर्घं॥ सोरठा॥ सुनो स्वपरहित कारण वचवादी पतिचं
समा वचन सुधा उनहार मम उर वास करो प्रभू॥१४॥ इति॥ ॥ ॥ ॥ अथ उत्तर दि
वंधी चतुर्थ दधिमुख पूजा मा ह॥ चाल जोगी रासा॥ नंदीश्वर वरद्वीप दिशा उत्तर कही॥ चौथे दधि
खगिर पर जिनगृह मणिमई॥ सकल सुरासुर आय भक्ति मन लायके॥ पूजत जिनवर चरण
ईशिर नायकै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिश चतुर्थ दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र
मन्॥ पुष्पं॥ गीता छंद॥ सुरनदी को जल अनूपम मिष्ट शीतल लीजिये॥ भव तृषा दाघ निकंद कारन
र जिनपद दीजिये॥ वरद्वीप नंदीश्वर मनोहर तास उत्तर सजहो॥ दधिमुख चतुर्थ महान तायर
नभवन सुरजजत है॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं
सीर और कपूर केशर गंधद्रव्य सुहावनी॥ भव ताप नाशन हेत भवि जिनराज चरन चढावनी
र॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ सुखदास और कमोद तंदुल स्वेत वर्ण सुहावने॥ जिनराज चरण अगार भवि जन
जधारत पावने॥ वर॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ मंदार सुंदर पारिजातन मेरु कुसुम समूह लै॥ जिनराज अग्र च

ढायभविजनमीनकेतमसादलै॥वर॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥मनमोदकारनमोदकादिकविविधनेवज
जही॥जिनपदचढावतभव्यजनकेक्षुधादुखसबभाजही॥वर॥५॥ॐह्रींनैवेद्यं॥दुतिवंतरतनअ
मलेकरदेवनंदीश्वरविषैं॥जिनराजचरणचढायदीपकलहततनिजसंपतिअवै॥वर॥६॥ॐह्रीं
दीपं॥घनसारकृष्णागरसुगंधितद्रव्यउत्तमलाईये॥वसुविधिदहनजिनचरनआगेंभक्तिसहि
ईये॥वर॥७॥ॐह्रींधूपं॥फलललितमिष्टमहंतमनहरकनकथालभरायके॥वरमुक्तिफलभ
जनलहेंजिनराजचरनचढायके॥वर॥८॥ॐह्रींफलं॥जलगंधअक्षतपुष्पचरुवरदीपधूपफलअ
ली॥यहअर्घलायचढायजिनपदसुखलहेविवुधावली॥वर॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दोहा॥दश
विधिधर्मसम्हारिके॥दशविधिबंधविदार॥बसेजायशिवमहलमें॥सोप्रभुहमकोंतार॥१॥पद्धडीछंद
जयश्रीसर्वज्ञमहंतदेव॥भयचतुरनिकाईकरतसेव॥जिनसप्ततत्वकीमेंप्रकाश॥दरशायोशिवपद
खास॥१॥संसारतत्वमेंबंधभेद॥दरशायोश्रीजिनवरुअखेद॥जहांबंधचारपरकारजान॥थिति
तिप्रदेशनुभागमानि॥२॥जहांप्रकृतिकर्मकोनामजान॥योंज्ञानावरणादिकपिछान॥पुद्गलगि
जानैंप्रदेशअयहदोयबंधहैजोगलेश॥३॥जबतककविधिसंगरहैजुसोय॥थितिबंधतासकोनामहोय॥
जैसेंसुखदुखमेंफलविशाल॥अनुभागबंधवहकह्योहाल॥४॥चारोंकेचउचउभेदमानि॥उत्कृष्टअ

श्रीपिछान ॥ अवधन्य जघन्य चतुर्थ भेद ॥ इम सोलह भेद दिखै नौं अखेद ॥ ७ ॥ यह सोलह भी व उच उपमा
ण ॥ सादि अनादि ध्रुव अध्रुव जानि ॥ इन सबके गुण लक्षण महान ॥ गोमट्टसार तै लेहु जान ॥ ८ ॥ अब बंध
तत्व फिर दश प्रकार ॥ तिनको वर्णन जानौं अपार ॥ संक्षेप नाम कछु कहूं सोय ॥ गुरु परम दिगंबर कह्यो जो
य ॥ ७ ॥ जय बंध उदय अरु उदीरणाय ॥ अरु सत्ता उत्कर्षण कहाय ॥ अपकर्षण संक्रम उपशमेय ॥ नवनि
धित हौ छे महिना सुनेय ॥ ९ ॥ विधि जीव मिले बल बंध जानि ॥ ताको फल उदय कियो पुरान ॥ विन काल उ
दय आवे जु सोय ॥ उदीरन जानै भव्य लोय ॥ १० ॥ विधि द्रव्य रहै सो सत्व सार ॥ उत्कर्षण तिथि वदनी विचार ॥ थि
ति घटने को अपकर्षन नाम ॥ जो श्रेणिक भी नर्कायु धाम ॥ ११ ॥ पररूप संक्रमण नान सार ॥ उपशम जिन काल उ
दय प्रचार ॥ संक्रम उदय विन निधित जान ॥ उदय विन निकाछित बंधमान ॥ १२ ॥ संक्रमण विना नव करण ध
रा ॥ इक आयु कर्म के होय सार ॥ ताकी सातौं विधि के मझार ॥ दश करण होय यह उदय सार ॥ १३ ॥ इन आदि
अनेक विधान जान ॥ सब बंध भेद वरनौं पुरान ॥ सो देव जिनेश्वर जगमझार ॥ दे ॥ ...
१३ ॥ दोहा ॥ दश विधि बंध विदारिकै बसे मुक्ति में जाय ॥ सो सिद्धेश हमेश मम हूजो शरन सहाय ॥ १४ ॥ अ
र्ध ॥ सोरठा ॥ कर्म परिहारा धारि स्वगुण मम उर विषै ॥ हे प्रभु जगतै तार तुम स्वामी त्रैलोक्य के ॥ १५ ॥ इति
श्री नंदीश्वरद्वीप उत्तर दिशा पश्चिम रतिकर पर्वत पूजा ॥ ६ ॥ गीताछंद ॥ शुभ दीप नंदीश्वर मनो

जेवंत रहो कीरति अपार

करो

दरतासउत्तरमैंसही॥अतिस्यामअंजननामपर्वतखासपूरबदिशकही॥जलसहितवापीजासपहिली
मेंरतिकरकह॥तापरजिनेश्वरभवन जिसकोंसुरअसुरपूजैमहा॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपप्रथमरतिकर
जिनेंद्रेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र॥पुष्पं॥दोहा॥जल उत्तम भृंगारभरिकर उज्वल निजभाव॥जोभवि
नवरपदजजैसोनिजरूपलखाव॥नंदीश्वर उत्तरदिशा॥पहिलेरति करएव॥तापरजिनगृहजजतसोसु
पतिवसुभेव॥२॥ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशप्रथमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनचंदमरी
समसीतलगुणकरतार॥जिनवरपदभविपूजिकैपावतहैभवपार॥नंदी०॥ॐह्रींचंदनं॥हीरनीरनी
जशशीतासमअक्षतस्वेत॥पुंजदेयजिनअग्रभवि॥अजरअमरपद॥ता॥नंदी०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥दृगमन
कोंकरोमोहितसुमन अनूप॥जिनवरचरन चढायभवि॥होतब्रह्मपदभूप॥नंदी०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥ नेवज
धप्रकारकेकंचनथालभराय॥क्षुधारोगनिरवारतोभविजिनचरनचढाय॥नंदी०॥५॥ॐह्रींचरुं॥तमहरजो
जगायकैहर्षहृदयमेंधार॥सुरसुरपतिजिनचरनकोंपूजतखहितविचार॥नंदी०॥६॥ॐह्रींदीपं॥ दशविधि
मिलायकेधूपबनावेखेय॥कर्मदहनकेकारणेपूजोंश्रीजिनदेव॥नंदी०॥७॥ॐह्रींधूपं॥उत्तमफलसुचि
पूजोंश्रीजिनराय॥भक्तिभावउरमेंधरो॥पावेनिजपदराज॥नंदी०॥८॥ॐह्रींफलं॥ जलफलद्रव्यमि
यकैअर्घबनावोएव॥शिवसंपतिकेलाभकोपूजोंश्रीजिनदेव॥नंदी०॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाला॥अडिल्ल॥

सकलसुरासुरपूजितजिनवरचरनकों॥ ऋषिमुनिनितप्रतिध्यावेंभवदधितरनकों॥ चक्रपतीमहाराज
जजें अघहरनकों॥ जिनकोंमेंनितजजोंसुमंगलकरनकों॥ ४॥ भुयंगप्रयातछंद॥ जयोदेवदेवेंद्रतुमचरन
ध्यावें॥ जयोदेवनागेंद्रनितशीशनावें॥ जयोदेवइंद्रादिसेवकरहावें॥ जयोदेवतारेंद्रपूजारचावें॥ १॥ जयोदे
वनागेंद्रचक्रीखगेशा॥ जयोदेवतुमचर्णपूजेंमहेशा॥ जयोदेवतुमचर्णपूजेंमृगेंद्रा॥ जयोदेवतुमशर्णआवें
मृगेंद्रा॥ २॥ जयोदेवजगमेंतुम्हीसुक्खकारी॥ जयोदेवतुमहीसुधर्माधिकारी॥ जयोदेवतुमसर्वआनंदकर्त्ता
जयोदेवतुमहीमहामोहहर्त्ता॥ ३॥ जयोदेवतुमएकचिद्रूपधारी॥ जयोदेवदृगज्ञानगुणदायभारी॥ जयोदे
वत्रयरत्नकेआपस्वामी॥ जयोदेवतुमअनंतगुणधारयामी॥ ४॥ जयोदेवतुमपंचकल्याणईशा॥ जयोदेव
षट्खंडचक्रीमहीशा॥ जयोदेवतुमसप्ततत्त्वप्रकाशी॥ जयोदेवतुमअष्टमीक्षितिनिवासी॥ ५॥ जयोदेवतु
महीवसुकर्मनाशी॥ जयोदेवतुमअष्टऋद्धिप्रकाशी॥ जयोदेवनवलब्धिकेआपस्वामी॥ जयोदेवदशधर्म
धारोप्रकामी॥ ६॥ जयोदेवमहिमातुमारीअनंता॥ नहीचारज्ञानीलहेंनहीतासअंता॥ जयोदेवजगमेंतु
म्हीहोसहाई॥ प्रभूसत्यमैंनेयहीजानिपाई॥ ७॥ अनेकोंसतीकातुमसत्तवचाया॥ अनेकोंदुखीकोंदिया
चित्तचाया॥ अनेकोंअधमजीवतुमनेउवारे॥ करेकौनशंकागणीआपहारे॥ प्रभूमेंतुमारेचर्णकोसुचेरो
मतामोहलेकर्मचिरकालघेरो॥ सुदृढचित्तहमनेंलखोशर्नतेरो॥ तुम्हीदेवन्यायीकरोन्यावमेरो॥ मनमेंनै

कछू काज विधि को विगारो॥ न मैंने कछू राज इन को विगारो॥ विना काज मोकों दिये दुःख भारी॥ कृपासिंधु
मेरी सुनौं यह पुकारी॥१०॥ जिसे जास को दोष सो ताहि दीजे॥ तुम्ही न्याय स्वामी तुम्ही न्याय कीजे॥ हमें तो
प्रभू एक आसा तुम्हारी॥ सुनो देव यह एक अर्जी हमारी॥११॥ दोहा॥ निधिपति निज निधि दीजिए॥ लीजे
विरद निवाह॥ आस जिनेश्वर की भरो॥ तुम हो त्रिभुवन राय॥१२॥ अर्घं॥ सोरठा॥ करो कृपा जिनराज॥ आ
ज काज यह कीजिये॥ दीजे मुक्ति समाज॥ आये का यश लीजिये॥१३॥ इत्याशीर्वादः॥ ७४॥ अथ नंदीश्वर
द्वीप उत्तर दिशा द्वितीय रतिकर जिन पूजा माह॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वर वर द्वीप आठमों ताकी उत्तर जानौ
अंजन गिर ताकी पूरव दिश वापी कौंन मैं मानौ॥ ता मैं दूजो रतिकर पर्वत ता पर जिन गृह मानो॥ सकल सु
रासुर ताहि जजत है भक्ति भाव अधिकानौ॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिशा द्वितीय रतिकर पर्वतेभ्यो न
मः॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ पुष्पं॥ सोरठा॥ उज्जल नीर अनूप कंचन झारी मैं भरो॥ पूजों श्री जिन भूप जन्म
जरा दुख कों हरों॥ नंदीश्वर जिनधाम उत्तर अंजन पूर्व दिश॥ दूजो रतिकर नाम सुर सुरेश पूजें सदा॥२॥ ॐ
ह्रीं नंदीश्वर उत्तर पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥२॥ बावन चंदन सार केशर गंध मि
लाय के॥ जजि जिनपद हित कार अविनाशी पद पाईये॥ नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ स्वत्त सुगंधित स्वेत अ
क्षत कंचन थाल भरि पूजों जिन निज हेत भविजन अक्षय पद मिलै॥ नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुवरन वर

नअनेकपुष्पमनोहरलीजिये॥ जिनपूजाकीटेकहरैअतनवलछनकमें॥ नंदी॥४॥ ॐह्रींपुष्पं॥ नेव
जविविधप्रकार॥ षटरससमयमनमोहने॥ पूजौंजिनपदसार॥ क्षुधारोगउरभागही॥ नंदी॥५॥ ॐ
ह्रींचरु॥ दीपकजोतिप्रकाश॥ तमहरउज्जलचंद्रसम॥ पूजौंजिनपदसार॥ वासलहोशिवमह
लको॥ नंदी॥६॥ ॐह्रींदीपं॥ कृष्णागरकरपूर॥ चंदनधूपसुगंधहै॥ दुखदकर्मकेदूर॥ पूजौंश्री
जिनचरनकौं॥ नंदी॥७॥ ॐह्रींधूपं॥ श्रीफललौंगवदाम॥ पिस्ताकिसमिसआदिले॥ पूजौंजिन
अभिराम॥ मनवांछितयातेमिलै॥ नंदी॥८॥ ॐह्रींफलं॥ जलफलद्रव्यमिलाय॥ अर्घबनावौंभाव
सौं॥ पूजौंश्रीजिनराज॥ कर्मबंधदुखदामिटै॥ नंदी॥९॥ ॐह्रींअर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ कर्मबंधकौंनाशि
कै॥ भयेशुद्धनिजरूप॥ सोपरमातमसिद्धप्रभु॥ मोकौंकरशिवभूप॥१॥ पद्धडीछंद॥ जेशुद्धद्रव्यआ
तमसरूप॥ जेवीतरागत्रैलोक्यभूप॥ त्रैलोक्यशिखरपरविद्यमान॥ कछुदीरघसबनिजगुणस
मान॥२॥ जेचिनमूरतिचैतन्यरूप॥ जेनिराकारआकृतिअनूप॥ जेअमलअचलअक्षयअनंत॥ जे
अविनाशीसुखमयमहंत॥ जेअवगाहनउत्कृष्टसार॥ शतपंचधनुषपच्चीससार॥ जेधन्यधन्य
करअर्धतीन॥ मध्यमतिनमाहिं॥ अनेकचिन्हअखडगासनआसनपद्मधार॥ अथवाअनेकआस
नप्रकार॥ सबजलथलढाईद्वीपमाहिं॥ तिहिंऊपरसिद्धसदारहाहिं॥ सबबंधरहितप्रभुनिर्विकार

ज

अशरनशरनांगू निराधार ॥ त्रैलोक्यशिखरके अंतमाहि तनवातवलयमैंथिररहाहि ॥५॥ जेसम्य
क्दर्शनज्ञानसार वलवीरजसुक्खअनंतधार ॥ जेजन्ममरणकरिरहितदेव ॥ जेसर्वगुणाकरसहित
देव ॥६॥ जेकायविवर्जितनिस्कषाय ॥ जेक्रोधमानविनलोभमाय निर्विषयसर्वज्ञायकमहेश ॥ रिषि
मुनिजनध्यानधरैंहमेश ॥७॥ तुमचरणकमलकोंशीशनाय सुरअसुरध्यानधारेंबनाय ॥ जेनरपति
खगपतिनागईश ॥ पदभक्तिकरवनितनायशीश ॥८॥ जेजैत्रिकालत्रैलोक्यमाहि ॥ जोवस्तुचराचरलखे
ताहिप्रभुपूरणअसमरूपदेव ॥ हमशीशनायनितकरतसेव ॥९॥ हेसर्वशिरोमणिसिद्धदेव ॥ तुमतकनहि
महुवेशब्दभेव ॥ नदिभक्तिभावफलदायसोय ॥ भवभवकेमाहिसहायहोय ॥१०॥ यातेंमेंअर्जकरूंपुका
र ॥ हेकृपासिंधुसंसारतार ॥ हमअर्जजिनेश्वरकरैदेव ॥ जेशिवफलदेकरसुयशलेव ॥११॥ दोहा ॥ नंदीश्व
रउत्तरदिशा ॥ जिनगृहरतिकरमाल ॥ मनवचकायलगायकें ॥ वरनीयहजयमाल ॥१२॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ म
नवकायलगाय ॥ वंदोंसिद्धमहेशकों ॥ जिनपदहिरदेध्याय ॥ चाहेसिद्धशिवथानकों ॥१३॥ इति ॥ ६६ ॥
अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशात्रतीयरतिकरपूजामा ॥६७॥ गीताछंद ॥ वरदीपअष्टमदिशाउत्तरत्रति
रतिकरराजही ॥ तिहिशीशजिनवरभवनसोहेवहुरतनमयछाजही ॥ जिनराजविंबअकृत्यसोहैंको
विशशिलाजही ॥ इकवरसमैंत्रयवारसुरपतितहांपूजरचावही ॥१॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशा

तृतीयरतिकरेभ्यो नमः॥ अर्घ०॥ अर्घ०॥ अर्घ०॥ पुष्पं॥ गीता छंद॥ मुनिराजमनसमनीरनिर्मलरतनभृंगभ
राई ए॥ जिनराजचरणसरोज आगैं भविकनीरचढाई ए॥ वरदीप अष्टम इंद्रदिशमें तृतियरतिकरगिरक
ह्यो॥ तापरजिनेश्वरभवनसुरपतिजजतभविजनशिरदह्यो॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशातृतियरति
करजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ गोशीरपावनगंधपावनमहकदशादिशमें भरी॥ जिनराजपदतरधारदेक
रउमता विधिकृतहरी॥ वर०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अतिसरलशशितसुचिसारअक्षतथालभरकरलीजिये॥ जिन
राजचरनचढाय भविजनअखयपदकों लीजिये॥ वर०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ बहुवरनसुवरनगंधपूरितकुसुम
वरकरलेयकें॥ भविअतनशरकी विपतिनाशैंपुंजजिनपददेयकें॥ वर०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ पकवाननाना
विधिवनाकरकनकथालसजाइये॥ जिनराजचरनचढाय भविजनक्षुधारोगनशाइए॥ वर०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥
वरदीपजोतिप्रकाशतमहररतनसुवरनकेकरो॥ भविजीवभ्रमतमहरनकारणजिनचरणआगेंधरो॥ व
र०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशगंधप्रसरितदशादिशामेंधूपउत्तमलीजिये॥ जिनराजचरनचढायभविजनविघ
नकर्मदहीजिये॥ वर०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ श्रीफलसुपारीलौंगपिस्तादाखखारिकलीजिये॥ भविजनमहाफ
लमुक्तिकारनभेटजिनवरकीजिये॥ वर०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलआदिफलपर्यंतवसुविधिद्रव्यअर्घवनाइ
ये॥ वसुकर्मनाशकशिववनिवाशिकदेवचरनचढाइए॥ वर०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ श्री अरहंतजि

नेशकेचरननशीशनवाय॥ जिनजयमालावरनहूं जोशमसहाय॥२॥ पद्धडीछंद॥ जैवीतराग
ज्ञानईश॥ जैनिजलक्ष्मीनिधिदानईश॥ जैअनुपमउज्जलध्यानईश॥ जैतुमजगमाहिमहानईश॥ वि
क्रोधलोभअरिलयोमार॥ विनमानअजाचिकवृत्तिधार॥ विनमायामायासर्वडार॥ विनलोभगही
मतिअपार॥ विनद्वेषदुष्टकोदुखअपार॥ विनरागसंतजनदियेतार॥ यहवृत्तिअलौकिकदेखिदेवा सुर
सुरकरैतुमचरणसेव॥ जयनिजसंपतिनहिकरौंदान॥ जयपरसंपतिकोनहीध्यान॥ जैतोभीसबकों
वसमाज॥ जैदेहुधन्यदातारराज॥ जैजाचकतुमदरवारआय॥ नहिलेयकछूइच्छाफलाय॥ ज
तुम्हीदातारदेव॥ शिरनायजिनेश्वरकरतसेव॥ जैजाचकआवैतुमअगार॥ सबयुगफलमागै
गातार॥ सबइच्छुतफलपावैअनूप॥ धनितुमलक्ष्मीअक्षयस्वरूप॥ जैइंद्रजाचनाकरैसोयसु
रूपिभीजाचकरूपहोय॥ तुमचरणकमलकीभक्तिसार॥ मागैअद्भुतमहिमाअपार॥ जयवाहिजल
अतिअघाय॥ जोअंतरंगकोकरैसाफ॥ जैनमिलैतरसनापविश्व॥ सुरध्यावतहैप्रभुएकचित्त॥
शरनशरनसहायदेव॥ तुमविनकारनसुखदायदेव॥ तुमभवसागरसेंपारदेव॥ हमकरतसदातुमचरनसे
जैजवतकमेरोजगतवास॥ जवतककरैकर्मनाश॥ जैजवतकतुमपदकमलआस॥ ममहृदय
आयखास॥ ९॥ दोहा॥ भवनाशनभगवानकेचरणनशीशनवाय॥ अरजकरतहूंएकमैंभवभवहोहु

य॥११॥ अर्घं॥ सोरठा॥ तारणतरण जिनेश यह अरजी सुनि लीजिये॥ काटो सर्व कलेश॥ मम इच्छा पूरी
करो॥१२॥ इति॥ ॥४७॥ ॥अथ नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशा चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः पूजा मांह
चौपाई॥ नंदीश्वर उत्तरदिश जानो॥ चौथो रतिकर जिनगृह मानो॥ सुरपति नित प्रति पूजा चावे॥ जिनपद को हम
पुष्प चढावे॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशा चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥
पद्म द्रह जल उज्वल लाये॥ सुरपति जिनपद अग्र चढाये॥ भक्ति सहित प्रभु के गुण गावै॥ जन्म मरण दु
ख मूल नशावे॥ नंदीश्वर उत्तरदिश जानो॥ चौथो रतिकर गिर तहां मानो॥ ता पर जिन मंदिर सुखदाई॥
पूजत सुर नैन हरषाई॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशा चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ मलियाग
र चंदन घसि लीजे॥ तामधि केशर गंध धरीजे॥ भक्ति सहित जिनवर पद पूजो॥ भव आताप रहित भवि हूजो॥
नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षत कंचन थाल भरावो॥ जिनवर चरनन पुंज चढावो॥ मोद सहित जिन के गुण
गावो॥ इह विधि अक्षय पद को पावो॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ दशदिश गंध रही महकाय॥ ऐसे फूल सुगंधि
त लाय॥ मकरध्वज भंजन के काज॥ भव्यजीव पूजे जिनराज॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ फेनी गोंजा मोदक खा
जे॥ शुद्ध सरस बनवावत ताजे॥ दोष क्षुधा निरवारन काजे॥ चरन जजत भवि श्री जिनराजे॥ नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवे
उत्तम दीप बना कर लीजे॥ जिनपद को भवि पूजन कीजे॥ याते मोह महातम भागे॥ ज्ञान प्रकाश अनोपम जागे॥

दीपं ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ गंध अनूप दशों दिश सोहै भविजीवन के मन कों मोहै ऐसा धूप धनंजय खे
वी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ श्रीफल लौंग बिदाम छुहारे नारियेल पिस्ता अधिकारे श्रीजिनवर के भेंट
॥ भव्यजीव शिवफल कौं पावै नंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय चढावै जिनपद भ
के हृदै में लावै सो निश्चै निजपुण्य वढावै क्रम क्रम सों शिवमंदिर जावै नंदी ॥९॥ ॥ अर्घं ॥ जयमाल
हा ॥ श्रीजिनचरण प्रणाम करि धरि सिद्धन को ध्यान जयमाला वरणन करूं जिन आज्ञा पर
१ ॥ छंद ॥ जय दीनबंधु करुणानिधान जय अशरन शरन सहाय मान जय भवजल तारन तर
वा जय जय कर सुरपति करत सेव जय प्रथम दिगंवर धर्म धार जय जीते दूजे घाति चार जय
य धर्म उपदेश देन जय जय जय विधि सम भनेय जय परपदार्थ सव त्याग दीन जय आतम स्वार्थ
रि नमन कीन जय पुरुषारथ करि सिद्ध चार जय जय जय जय त्रय विधि सम उचार जय
प्रथम धार जय फिर लीनों चारित्र सार जय भगटो केवलज्ञान भान जय जय त्रय विधि सम महान ॥ ४
कि जीव सुख लहै सार जय दुष्ट अविनयी दुख पसार जय परम वीतरागी अनूप जय जय
य जगत भूप जय नाम जपे सो सुख लहंत जय ध्यान धरै सो दिव वसंत जय निस्पृही निर्वाण
य ऊर्ध्व मत्रय विधि महान जय ऊर्ध्व मध्य पाताल वास जय तुम चरणांबुज जपे खास त्रैलोक्य

तुमहीजिनेश॥ ९ ॥ जयजयजयत्रयवारवेश॥ ७ ॥ जयतिहुंकालमेंएकरूप॥ जयश्रुतनयार्पितवचसरूप
जयउत्पात॥ जयउत्पातव्ययध्रौव्यरूप॥ ऐसेभीजयजयत्रयअनूप॥ ८ ॥ जयतुमजिनेशनिर्मलमहान
जोसमलरहैसोकूरजान॥ जोहगरोगीलखिशंखलेत॥ पीतादिकहैसोनरअचेत॥ ९ ॥ प्रभुतुमशरीरकी
ज्योतिपाय॥ प्राकाररत्नमयभयोआय॥ प्रभुतुमस्वभावअतिस्वच्छजान॥ प्राकारभयोस्फाटिकसमा
न॥ १० ॥ जय२तुममहिमाअगमसार॥ गणपतिनहिपावेकहनपार॥ जयतुमप्रभावसेमानथंभ॥ जगमा
नहरैअद्भुतअचंभ॥ ११ ॥ जयजयजिनराजदयानिधान॥ करदयाजिनेश्वरपैमहान॥ संसारखारतेंकरोपार
जगवंधवयेसुनियेपुकार॥ १२ ॥ दोहा॥ दयाधुरंधरदेवतुम॥ गुणसागरभरपूर॥ करोजिनेश्वरपैकृपा॥ हिर
देवसोहजूर॥ १३ ॥ अर्घं॥ सोरठा॥ याजगविपतमझार॥ विनहितबंधवतुमसुने॥ मेरीसुनोंपुकार॥ तारतारअ
जीकरूं॥ १४ ॥ इति॥ ॥इति॥ ॥ ॥ अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशापंचमरतिकरपूजाभाषा॥
गीताछंद॥ वरद्वीपअष्टमइंद्रदिशमेंपांचमोरतिकरकह्यो॥ तापरअकृत्तिमश्रीजिनालयसुरअसुरदर्श
नलह्यो॥ तहांविंवजिनवरकेअनूपमसुरासुरमनमोहिया॥ उरदेवसमसर्वज्ञजिनकोरत्नमयछविसोहि
या॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशायांपंचमेरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ पुष्पं॥ जोगी
रासा॥ अंतररहितरहेजगप्राणीगतिगतिमेंदुखपावे॥ तादुखदूरकरणकेकारण॥ जलजिनचरणचढावे॥

नंदीश्वरकी उत्तर दिशामें पंचमरतिकर सोहै। तापर श्री जिन भवन अकृत्रिम सकल सुरासुर मोहै॥ ॐ
नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशायां पंच मरतिकर जिनालयेभ्यो नमः। जलं॥१॥ जन्म मरण दुख ताप तपै नर भव वनमें दु
वे शांतसुधा सुख पावन भविजन चंदन चरन चढावै नंदी॰॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ चनन नन धरत भरत विपता अतिज
गमें थिर न रहावो॥ अक्षयपदके काज चतुर नर अक्षत चरन चढावो॥ नंदी॰॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ नरनारी
इ वेदके खेद सहे कुतेरे नादु खहरन चरन जिनपतिके पुष्प चढावत नेरे॥ नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ जगतजीवकुल
नल जावत एक क्षुधाके भेरो ता अरजी तन उत्तम चरु लै पूजत जिनपद तेरो॥ नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ ज्ञानप्र
काश विना जगमाही जीव सहै दुखभारी॥ ताकी प्रापतिकाज जिनेश्वर पद तर दीपक धारी॥ नंदी॰॥६॥ ॐ ह्रीं दी
पं॥ याविधि वसन रपतिय पशुदो वेथावर में सुर॥ कैसा विधि दहन धूपायन श्री जिन चरन चढावे॥ नंदी॰॥७॥ ॐ
ह्रीं धूपं॥ सर्वोत्तम अविनाशी सुखकर मुक्ति महाफल जानौ॥ ताके काज भव्य जिनवरके पद तर सुफल च
नंदी॰॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल आठौं द्रव्य मिलाकर अर्घ बनावो भाई॥ अष्टकर्मके नाशन कारन पूजों श्री जि
नराई॥ नंदी॰॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ शक्रचाप धर वज्रधर विद्याधर नरवीर॥ वीतराग पद तर
निजमस्तक धरि धीर॥१॥ पद्धडी छंद॥ जय जय जिनराज दयानिधान॥ भव कानन नहान नदव महान॥ ज
य कमल गण अमल भान॥ जय संतचकोर चंद्र जान॥ जय दुखदवाग्निको मेघरूप॥ जय खिपतिमेघ

कोंपवनरूप॥जय अघपर्वतकौं वज्रधार॥जय भ्रमतमकों रविकिरणसार॥५॥जय कामसर्पकों गरुडरूप॥जय
कोधजहरकौं अमृतकूप॥जय मानमहागजकौं मृगेंद्र॥जय चरणकमल पूजैं सुरेंद्र॥६॥जय मायातरवरकौं
कुठार॥जय लोभजहरकौं सुधाधार॥जय मिथ्यामदगदमेघराज॥जय भवजलतारनकौं जहाज॥७॥जय भ
विजनकौं सुरतरु समान॥जय चिंतामणि तुम ही प्रमान॥जय कालचक्रकौं कालरूप॥जय देवनकौं शिरदेव
भूप॥८॥जय च्यारघातिया कर्मनाशि॥जय केवलज्ञान भयो प्रकाश॥जय भविजीवनहितकाजसार॥जय
आरजमैं कीनों विहार॥९॥जय दियो धर्मउपदेश देव॥जय मुनिश्रावक करो भाँति भेव॥जय सकलव्रती मुनि
राजधर्म॥जय देशव्रती है गृही धर्म॥१०॥जय परिग्रहत्यागी नगनकाय॥जय निस्नेही गुरु कहे भाय॥वसुवी
समूलगुणधार सोय॥जय धर्मगुरू जानोंजु लोय॥११॥जय गृही धर्म ग्यारह प्रकार॥सम्यक्तविना सब विफ
लसार॥जय समकित दरजा प्रथम जान॥इस विना कियें सब व्यर्थ मान॥१२॥इत्यादि बहुत उपदेश देय॥शिव
धाम विषैं प्रभु वास लेय॥भत्तय अनंत थिर रहे सार॥सो सिद्ध करो भवसिंधुपार॥१३॥जब तक जगमैं मम रहैवा
स॥जब तक अरिकर्म करैं प्रकाश॥जब तक तुम हो हु सहाय देव॥कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥१४॥दोहा॥जब त
क रवि शशि गगनमैं मेरु रहै भू माहि॥तब तक वर्तौ धर्म जिन जयवंतो जगमांहि॥१५॥ॐ ह्रीं अर्घं॥सोरठा॥देह
खेह सम जानि नेहतजो यातैं सुधी॥हित अपनो पहिचान सेवों जिनवर धर्मकों॥१६॥इत्याशीर्वादः॥इति॥४६

बांवनपू॰
॥७२॥
= गीता छंद

नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशषष्टमरतिकरपूजामाह॥ चालजोगीरासा॥ नंदीश्वरकी उत्तरदिशमें
रसोहैतापरश्रीजिनभवनअकृत्रिमसुरसुरपतिमनमोहै॥ भावभक्तिकरिशक्तिहीनमैंतुमप
॥याहीभक्तिभावसौंनिश्चैमनवांछितफलपाऊं॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपषष्ठमरतिकरजिनं
॥ जलं॥ गंधं॥ अक्षतं॥ पुष्पं॥ अर्घ्यादिकं॥ गीताछंद॥ चहुंगतिभ्रमतदुखबहुतपायोकहूंथिरनरह्योई
दुखदवाग्निसमूलकारणजिनचरणलखाईयो॥ शुभदीपअष्टमइंद्रदिशमेंषष्टमोरतिकरजहां
भवनसुरपतिनितजजैअतिहर्षउरधारेजहां॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपषष्टमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ ज
॥ जगमाहिबहुतशरीरधारेभवातापसह्योघनो॥ तिहिशमनकारनपरमचंदनजिनचरनपूजाभनो॥
पद॥२॥ ॐह्रीं चंदनं॥ तिहुकालविननिजरूपजानोजगतमेंविपताभरी॥ तिहिभ्रमनिवारन
तलायजिनपूजाकरी॥ शुभदीपअ॥३॥ ॐह्रीं अक्षतं॥ मनकल्पनाकेजालमाहीफसेबहुविधिदु
चाहदाहविनाशकारनपुष्पपूजनजिनकह्यो॥ शुभदीप॥४॥ ॐह्रीं पुष्पं॥ सुरअसुरअहिनाह
याकेवशपरेजिहक्षुधानाशनहेतचरुलेजिनचरनआगेधरो॥ शुभदीप॥५॥ ॐह्रीं नैवेद्यं॥ जिहतमविषै
भ्रिसूरभरमैंजीवनिजनलखावही॥ तिंहभ्रममहातमनाशकारनदीपपूजनलावही॥ शुभअष्ट
दीपं॥ दशांगंधमिश्रितधूपकीजेभव्यभक्तिवढायकै॥ वसुविधिजलावनहेतजिनपूजेसु ॥७५॥

यकोशुभ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ जगसुफलफलदायकअनूपमधर्मजिनवरकोकहौ॥ नसुमाषिकारण
भव्यउत्तमसुफलजिनवरपदजजौ॥ शुभ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलगंधअक्षतपुष्पचरुवरदीपधूपवना
डी॥ फललायअर्घवनायजिनवरचरनमाहिचढाई॥ शुभ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ तिहु
जगचंदजिनेशकेवरननशीशनवाय॥१॥ जिनमालासहीसुनौंसुधीचितलाय॥ पद्धडी छंद॥२
जगवीतरागसर्वज्ञदेव॥ शतइंद्रआपकोकरतसेव॥ जयतुमसर्वज्ञकहेपुरान॥ जिनकेप्रगटौकेव
वलसुज्ञान॥३॥ जयसकलवस्तुज्ञायकसरूप॥ त्रयलोकवर्त्तित्रयकालरूप॥ जयसबकौंजानैएक
भाव॥ जयज्ञानशक्तिऐसीअपार॥४॥ जयसुखअनंतदायकसरूप॥ जयतैसोहीबलहैअनूप॥
तवदर्शअनंतानंतधार॥ जयजातिनंतरजंतसार॥५॥ अनपदायकलब्धिअनंतरूप॥ गुणअक्षयधा
रेनिजअनूप॥ जयनिराहारतनजोतिवंत॥ जिहआगेबहुरविशशिलजंत॥६॥ जयप्रभाचक्रअतिज
गमगात॥ भविदेखतभवभवसातसात॥ जयतीनछत्रशिरपरसुहात॥ तिनकीमुकतामणिलजलज
जात॥७॥ मनुतीनरूपधरिकेअनूप॥ पदजजतनखतनखतरूप॥ जयचौसठिचामरढुरतसोय
दुंदुभीशब्दअतिमधुरहोय॥८॥ जयतरुअशोकसबहरैशोक॥ जिहदेखतभागैपापथोक॥ जयन
भसेवरसेफूलसार॥ मनुअनतुभजोहथियारजार॥९॥ जयजिनधुनिवरसेसुधाधार॥ भविचातकचा

हत है अपार॥ जय धर्म तनौं उपदेश सार॥ हित रूप सदा आनंद कार॥७॥ जय सिंहासन पै अंतरीक्ष॥ चतुरानन पद्मासन प्रतक्ष॥ जिनवर रवि राजै अतुल जोति॥ जिन के प्रताप निशि नाहि होत॥८॥ इत्यादि अतुल लक्ष्मी निवास॥ जिनराज विराजित सुरभि खास॥ जय शत योजन चउ दिशमैं डार॥ नहि पडहि काल अविरज अपार॥९॥ नहि होय जीव वध जिन प्रभाव॥ जय जाति विरोधी मित्र भाव॥ नय जय जिनराज दया निधान॥ भवि जीवन कौं हितकर महान॥१०॥ जय मम उर माहि वसो जिनेश॥ जय ज्ञान जोति विकसो अशेष॥ जय भव भामरि निरवार देव॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥११॥ दोहा॥ अकृत्तिम जिन चैत्य गृह वन्दौ मन वच काय॥ बुधि वारिधि वर्द्धित करौ मेरी करो सहाय॥१२॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ सोरठा॥ करौ कृपा महाराज निज विद्या बल दीजिये॥ वडे गरीव निवाज इतनौ यश प्रभु लीजिये॥१४॥ इत्याशीर्वादः॥ ॥५॥ अथ नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिशा सप्तम रतिकर पूजा माह॥ चाल अडिल॥ नंदीश्वर वर द्वीप आठमौं जानिये॥ इंद्र दिशा में सप्तम रतिकर मानिये॥ ता पर श्री जिन भवन जजै सुर आयकैं॥ हम जिनकौं शिर नाय नमैं मन लायकैं॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सप्तम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्प॥ जोगीरासा व्याल मैं॥ भवि श्री जिनवर के पाय सु कारन पूजत है भाई॥ टेक॥ पद्म द्रह को उज्जल जल लेरत्न कटोरी धारौं॥ धार देत श्री जिनवर आगे जन्म जरा निरवारौ॥ नंदीश्वर सप्तम उत्तर गिरि रतिकर जिन गृह जानौं॥ सर्व सुरासुर पूज रचावे सफल देव पर मानौं॥ सु०॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सप्तम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ बावन

चंदनदाहनिकंदनके शरसंगघसावो॥ जन्मरोगभवरोगनिवारनजिनपद अग्रचढावो॥ सुखनंदी॥२॥ ॐह्रीं चंदनं
तंदुल स्वच्छ सरल सित शुचि अति कंचनथाल भरायो॥ अक्षयपद पावन जिनपदमैं अक्षतचरनचढायो॥ सुखनं॥३॥
ॐह्रीं अक्षतं॥ हेमरतनके रंगविरंगे पुष्प सुरासुर लावै॥ कामअगनिके शमनकरनकों श्री जिनचरनचढावै॥ सुखनं॥४॥
ॐह्रीं पुष्पं॥ सूपकार कृत व्यंजन ताजे शुभ थाल भर लावै॥ क्षुधारोगदुखदूरकरनकों जिनवर चरनचढावै॥ सुखनं॥
ॐह्रीं चरुं॥ नाना विधिके दीप मनोहर शक्ति समान वनावो॥ भ्रमतमहरनकरन आतमहित श्री जिनचरनचढावो॥
सुखनंदी॥६॥ ॐह्रीं दीपं॥ धूप सुगंध दशों दिशि फैली अलि समूह चलि आवै॥ दुष्टकर्म जारनके कारन श्री जिन भव्य च
ढावै॥ सुखनंदी॥७॥ ॐह्रीं धूपं॥ बहुविधि मिष्ट सिष्ट फल लेकर सुवरन थाल भरावो॥ मुक्ति महाफलकों जशवीपति जि
नपद अग्र चढावो॥ सुखनंदी॥८॥ ॐह्रीं फलं॥ जलफल अर्घ वनाय गाय गुण सुरसमूह चलि आवै॥ तीर्थेश्वरके चरनन
मैं सुरपति आय चढावै॥ सुखनंदी॥९॥ ॐह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ त्रेसठि प्रकृति खिपायकैं पायो केवलज्ञान
जिनपद चरन सरोजकौं नमों सदा हितदान॥१॥ पद्धरी छंद॥ जय केवलज्ञानधनी जिनेश॥ जय चारण ऋषि मुनिज
पत शेष॥ जय त्रेसठि प्रकृति दई खिपाय॥ जय तिनके नाम कहौं सुभाय॥२॥ जय ज्ञानावरणी पंच भेद॥ नव भेद दर्श
नावरण खेद॥ वसु वीश मोहनी प्रकृति चूर॥ पण अंतरायके करे दूर॥३॥ जय सोलह प्रकृति अघाति हानि पायो
जिनराज महान ज्ञान॥ शत इंद्र चरणकौं शीश नाय॥ तुमकों नवकार करै जिनाय॥४॥ जय भुवनपती दश भेद देव

प्रतिभेदपुरंदरचारएव॥इसभांतिभुवनचालीसइंद्र॥बत्तीसइसीविधिव्यंतरेंद्र॥चौवीसकल्पवासीसु
शशिसूरदोयद्युतिवरमहेश॥चक्रीनरेशपशुसिंहजान॥शतइंद्रइसीविधिमध्यमान॥इकसुरप
विभवसार॥भविजानौजिनआगमदुवार॥सबकीसेनाहैसातभांति॥बहुभांतिविक्रियाधरैंभ्रांति॥च
राजपंचकल्याणसार॥पूजनकौंआवैसुरअपार॥लौकांतिकतपकल्याणएव॥पूजनकौंआवैयहीटे
व॥अहमिंद्रनछोडैनिजसुथान॥जयऐसीवस्तुस्वभावजान॥निजथलसैंविनयकरैसुरेश॥प्रतिमंद
॥८॥जिनराजदियोउपदेशएव॥हमकरतसदाजिनचरनसेव॥जयभवतारकतुमजिनेश॥जग
हिआपतुमहीअशेष॥९॥जयतुमपदरजममशिरमझार॥अनिवाररहोयहअरजसार॥सुनिलेहुजि
श्वरसेवएव॥करकृपायहीजगतारदेव॥१०॥दोहा॥नंदीश्वरउत्तरदिशासप्तमरतिकरभाल॥जिनमंदिर
भईपूरनयहजयमाल॥११॥अर्घं॥सोरठा॥दीनबंधुमहाराज॥अरजसुनैंममदीनकी॥तारनतरनजि
न भवजलपारउतारिये॥इत्याशीर्वादः॥५९॥ ॥अथनंदीश्वरद्वीपअष्टमरतिकरमाह॥कुसुमलताछंद
नंदीश्वरउत्तरअंजनगिरताकीउत्तरवापीजान॥दूजैकौनआठमौंरतिकरजिनमंदिरसोहैशिरथान॥चित्र
चित्ररत्नमयप्रतिमाइकशतआठशास्वतीजान॥सुरखुरपतिपूजननितआवैमैंतिनकौंपूजौंधरि॥
न॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशअष्टमरतिकरगिरपरजिनमंदिरेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥

जोगीरासा॥ ज्ञानावरणी कर्म उदयसें ज्ञान न शक्ती पावै॥ ता अरि नाश करनकों भविजन जिनपद नीर चढावै॥
नंदीश्वर उत्तर रतिकर गिर अष्टम जिनगृह जानों॥ सुरसुरपति नित पूज रचावै पावै सुख अधिको नों॥१॥ ॐ ह्रीं नं
दीश्वरद्वीप अष्टम रतिकरगिर पर जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ दूजो कर्म दर्शनावरणी दर्शन गुणकों रोकै जिन
वरपद पूजे चंदन सों याते विधि अरि सोखै॥ नंदी॰॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तीजो कर्म वेदनी जगमों निज कारजको घाती
जजत जिनेश्वर पद अक्षत सों यातैं निज निधि पाती॥ नंदी॰॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ मोहकर्म बलवान जगतमें इंद्रादि
क वश कीने फूल चढाय जिनेश्वर आगें मोह काम कसिली जे॥ नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ आयुकर्म को बंधन भा
री जीव जगत कसि राखै नेवज सों जिनपूज जगतजन निज अनुभो रस चाखै॥ नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ नामकर्म
वशा जीव जगतमें नाना देह धरै है दीपक सों जिनपद पूजो भविजन अविचल करै है॥ नंदी॰॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ गोत्रक
र्म के उदय जीव यह ऊंच नीच कुल पावै धूप दहन खेवत जिन आगें जिनपद कों भवि पावै॥ नं॰॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ अंत
राय दुखदायक बडो जग यातैं भय हरि मनमों श्री जिन चरन चढाय महाफल भविया विधि कों मानै॥ नं॰॥८॥ ॐ ह्रीं
फलं॥ जल फल द्रव्य मिलाय मनोहर अर्घ करो भरथारी श्री जिन सन्मुख पुंज करत भवि सर्व विपति परिह
री॥ नंदी॰॥९॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ अष्टम द्वीप सुहावनो ताकी उत्तर ओर अष्टम रतिकर
जिनभवन नमों सदा कर जोर॥१॥ पद्धडी छंद॥ जय नंदीश्वरवर द्वीप जान॥ जय ताकी उत्तर दिशा महान॥ जय अ

जनपर्वतस्यामरंग जयताकीउत्तरदिशअभंग ॥ अपराजितवापी शोभमान तिंहद्वितियकोंनकोंमध्यजान
यरतिकरपर्वतहेमरूप ताऊपरजिनगृहश्रविअनूप ॥ जयशतयोजनआयामजान लंबे
नामचहत्तरयोजनहैउतंग बावनजिनमंदिरइसीढंग ॥ समवसमवशरनरचनामहान जिंहदेखतभविजनपा
न ॥ जयजयजिनबिंबविराजमान शतआठअधिकशोभासमान ॥ जयउच्चधनुषशतपंचदेखपद्मासन
राजेगतसनेह ॥ जयदीपिवंतअतिरूपवंत जयवोलतहैमानूंहैसंत ॥ जयजिनसरूपलखिदेवराजअ
हर्षितउरपूजासमाज ॥ जिनशचीसाथवहुभक्तिभाव जिनवरपदपूजेसहितचाव ॥ अतिउज्वलजल
मफार अरुगंधसहितचंदनअपार ॥ जिनचरनकमलतलधारदेत मानोंबांधैभवसिंधुसेत ॥ जयमुक्ता
अक्षतअनूप जिनपतिपूजेसुरगभूप ॥ जयकल्पवृक्षकेफूलसार जयशक्रधरैजिनपदअगार ॥ जय
वहुविधिस्वादरूप सुरपतिजिनचरनजजेअनूप ॥ जयरतनअमोलिकदीपसार आखंडलपूजेजिनागार ॥
जयस्वर्गधूपअतिगंधसार अमरेशचढावैजिनागार ॥ जयउत्तमफलजिनपदमफार जयशक्रचढावैहर्षधार ॥
करिथुतिनुतिहरिजिनवरअगार मघुसुंदरितचढावैअर्घधार ॥ जयकरुनानिधिजिनदेवदेव हमशरनागत
येसुएव ॥ शिवशर्मकितुमहोजिनाय भवभवमोकूंहूजोसहाय ॥ करकूपायहीजगवारदेव करजोरिजि
तसेव ॥ २ ॥ दोहा ॥ नंदीश्वरउत्तरदिशा जहाँहोयजिनभूप तिनसबकोंपूजौंसदा अर्घचढाय अनूप ॥ ३ ॥ नंदी

खरदीपके बावन जिन आगार॥ वंदौं मन वच काय के वांछितार्थ दातार॥४॥ ॐ ह्रीं॥ सोरठा॥ तुम प्रभु दीनदया
ल मैं अति दीन —— सुनौं॥ मेरी अरज कृपाल॥ करो पार संसार सें॥५॥ कुसुमलता छंद॥ ढाई दीप एक सो सत्तरि
क्षेत्र मध्यवर्ती जिनराय॥ अथवा सर्व सिद्ध परमेश्वर॥ आचारज पाठक मुनिराय॥ भूत भविष्यत वर्त्तमान के पांचौं
परमेष्ठी हितसाज॥ जन्म जन्म मम रहो सहायक॥ अर्ज जिनेश्वर की सुखसाज॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपत्रिकालवर्ती
पंचपरमेष्ठी भ्यो नमः॥ अर्घं॥ इतिसंपूर्णम्॥ ॥५१॥ ॥छप्पय॥ श्रीमन्माधवसिंहसवाई जैपुरस्वामी॥ मम
देवी को जन्म कह्यो उमरगढ नामी॥ जहां वास मम खास जिनेश्वर नाम कहाये॥ भक्तिभाव उछाय जिनेश्वर
को गुण गाये॥१॥ छंद॥ श्रावक उत्तम जात है पद्मावत पुरवार॥ निज पर हित के हितय ह॥ कियो पाठ सुखकार
॥२॥ देश ढुंढार मझार ग्राम राणोली जानौं॥ अन्नोदिक के जोग कछूक दिन वहां रहानौं॥ सतसंगत परभाव दाव
यह उत्तम आयो॥ रचि नंदीश्वर पाठ सफल नरभव कर पायो॥ छंद॥ शब्द रु अर्थ अनादि है मम कृत मति
जानियो॥ कर जोरि जिनेश्वर इम कहै पढौ सुबुधि उरआनियो॥२॥ दोहा॥ चित्रसाल सिंहदेव जू मंजापा
ल महाराज॥ जिनकी छाया में प्रजा सुखी रहै हितसाज॥१॥ अपने धर्म कों पालें इष्ट महान॥ दुर्जन दुष्ट न
करि सकै॥ कभी किसी की हान॥२॥ शत उनीश अरु साठ मित संवत महिना माह॥ सुदि ग्यारस संध्या समें
पूरण कियो निबाह॥३॥ सुखी रहो राजा प्रजा सुखी रहो सब जीव॥ सुखदायक जिनधर्म यह जग में रहो

सदी वध ॥ अंतमंगल ॥ रंतज्यानकी ॥ श्री जगतपती महाराज अरजसुणलीजो प्रभु भवसागर सों पारमो
हि करदीज्यो ॥ महाराज यहीमें आस लगाईजी ॥ करुणानिधि जगतारक हावो शरणसहाईजी ॥ टेर ॥
या भवसागर के माहि बहुत दुख पायो ॥ तिच्यार चौरासी लाख जोनि फिर आयो ॥ महाराज कहीं थि
र नाहि रहायो जी ॥ सुख ही दुख भरपूर सुक्ख को अंश न पायो जी ॥ चिरकाल नर्क पशु जोनि विपति
बहु भोगी ॥ अरु मानुष गति के माहि भयो तन रोगी महाराज कभी सुरपद पायो जी ॥ तहां देख कर विभ
व पराई दुख अधिकाई जी ॥ टेर ॥ सेर ॥ या कर्म अरि के वश परो मैं नेसहे दुख घोर है सो नाहि तुम से छि
पे प्रभु जी करै अरज हूं जोर है ॥ तुमको अधम उधार स्वामी ध्यो जस चहुं ओर है ॥ हे देव कर्म विजयी पर
वह दिश सोर है ॥ चौपाई रूपक ॥ सब जग के प्रति पालक हावो ॥ विन हित परम दयाल कहावो ॥ ऐसो विरद
जगत में छायो ॥ सुनकर के शरनै अब आयो ॥ जयवंत जिनेश्वर विरद आपलख लीज्यो ॥ निज अरहय
निधि भंडार मो हि दीज्यो ॥ महाराज तुम्ही पति बंधु भाईजी ॥ करुणानिधि जगतारक हावो शरणसहा
ईजी ॥ ९६ ॥ इतिश्री नंदीश्वर द्वीप बांवन पूजा समाप्तं ॥ श्री संवत १९ ८९ कार्तिक सुक्ल ११ भौमवासरे ॥ लिखि
तमिदं भजमनालाल शर्मणा ॥ लेखक पाठका चिरंजीयात ॥ श्री शुभम ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री ॥

श्लोक २६७५

बाँवनपू.
॥२६॥

री विविधि सुरसुक्तिमग के॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि ततीयुद्धिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥१
लं॥ असतोतोयाजगमाही दवानलसें अधिक तापी॥ उरखुरवशकीने नतोभीयों हृदयधापी॥ इसके
रवारनवरनकेजिनकेस्वहितपूजो॥ मतावंदन लेके स्वहितकरपूरघसिदूजो॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अमी
में भारीचतुरगति मैंनसुखपायो॥ महारसहितकारीकुबुधिवसतैंनकरआयो॥ शुभोदयसें भा
अर्हन्तरुचिआई॥ जजोजिनराजअक्षतसों इसीविधिसें खनिधिपाई॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुरासुरस
जीते प्रबलअशरीरविधिवेरी॥ रहैनाइस आगैंप्रबलनरकूपसुजहरी॥ करोवशमेंयाकोंकुसुमः
ण जिनकेजजोनिजहितकाजैंसनिधिआवैसहीतिनिकें॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ सुनोंस्वामीमेरी
रातजगतमाही॥ इसीसें दुखपावैजगतकेजीवसुखनाही॥ महाचरुसुविधारीसुजिन आ
सुधाकेदुखभारी॥ इसीविधिसें सर्वहरिसो॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ महाभ्रमतमछायोकुबुधिमिथ्या
सेती॥ नहीं सतमगसूझैंस्वपरस्वसुराखविधजती॥ स्वपरदीपकलेकैंचरणजिनराज जो॥ २
होकेसुखीभविजीवनितहूजो॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ सुगंधीवनिवाजेरुचिरदशधाधूपअ
रेभक्तीभरकें जिनपूजविधिअधिकी॥ सही शिवसुखपावैनआवैजगतवनमें अहीअ
लो सही सुखदा सुखीमनमें॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ सफलदरामनगमो...

नपतिपद आगे सुबुधि धारी ।७। शिववरलै यहीवसुविधिपूजाजिनागममें बताई है। कहश्री
जिनवरनैं परमगुरुसों सुनाई है ।८। ॐ ह्रीं फलं ॥ जलादिकसबलैवै दरबवसुधा मिलाकरके अ
रघ यह भरिथारी चढावै चरण जिनवर के। सही शिवसुखपावै न फिर आवै वही जगमें क हीयह
जिनवरनैं गही भविजी शिवमगमें ।९। ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ कल्याणकनायकनमूं सर्व
सिद्धिदातार ॥ मम अरजी सुनिली जियै करुं कर्म निवारण ॥१॥ पद्धडी छंद ॥ जैजै जिनराज दया
निधान ॥ भवसागरतारणपोत जान ॥ जैजै करुणानिधि देव ईश ॥ नयवार नमों मैं नायशीश ॥२॥
जयधन्यदेव अवतार सार ॥ भवपार करे भविजन अपार ॥ जे दियो धर्म उपदेश सोय ॥ जिह धारत
भविभवपार होय ॥३॥ वह धर्म सदा वर्ती महान ॥ जय दी शिवसुखदायक प्रमान ॥ जे सम्यक्दर्शन मू
लसार ॥ डारह ला ज्ञानजानो अधार ॥४॥ बहुविधि चारित तरु पात फूल ॥ दिव शिवसुख जिहिके रहे
फूल ॥ जो भविजन सेवै मन लगाय ॥ जिह सैं तिहिके सब दुख पलाय ॥५॥ दो भेद धर्म के जग प्रसिद्ध
मुनिवर अरु श्रावक स्वयंसिद्ध ॥ श्रावक के ग्यारह भेद जान ॥ दर्शन प्रतिमा पहिली प्रमाण ॥६॥ जय
दूजी व्रत प्रतिमा अनूप ॥ बारह व्रत धारण तिह सरूप ॥ जय सामायक तीजी महान ॥ प्रोषध चतुर्थ
गुणखान जान ॥७॥ जय सचित त्याग पंचम सुजान ॥ दिन ब्रह्मचर्य षष्ठम महान ॥ सप्तम है पूरण अ

चर्य॥ आरंभत्याग अष्टमसुवर्य॥ ७॥ जय परिग्रहत्यागीनवमजान॥ अनुमतत्यागीदशमें
नो उद्दिष्टत्यागग्यारमपवित्र॥ यह उत्तमश्रावकजानिमित्र॥ ५॥ जब पहिलीप्रतिमापूर्णहोय
दूजीकोतवआरंभहोय॥ जब दूजीपूरणसधैसोय॥ तवतीजीकोआरंभहोय॥ ६॥
तिमाभेदजान॥ पूरवसाधैउत्तमप्रमाण॥ पहलीप्रतिमाविननाहिकोय॥ वाहेलपसीमुनिकों
नहोय॥ ७॥ यहजानिसुधीहिरदैविचारि॥ पहलेसमकितकोहृदयधारि॥ समकितविनको
हि॥ समकितविनशुभगतिपरनाहि॥ ८॥ यहजिनवरआज्ञामानवी॥ हिरदैविचाररुषधारि ९
कदेखकरउरविचार॥ जिनवरकीआज्ञाहृदयधार॥ ९॥ जगधन्यदेवअरहंतसेव॥ जिहिसेभ
वैसर्वभेव॥ ममउरमैंनिवसोदेवसार॥ द्योस्ववलवुद्धिअहमेवसार॥ १०॥ हेदेवअरजममवारवार
रुनाकरभवदधितारतार॥ अवविघ्नभयंकरजारजार॥ निजस्वहितऋद्धिकरलारलार॥ ११॥ देहा
र्थकरत्रिभुवनधनी॥ तुमगुणअगमअपार॥ कृपाकरोमुजदीनपेकरोभवोदधिपार॥ १२॥ अ
ठा॥ सिद्धशिरोमणिसार॥ सिद्धकरोपुरुषार्थकी॥ मेरीवुद्धिविस्तार॥ सिद्धकरोसतस्वारथी॥ १
त्याशीर्वाद॥ ॥७॥ ॥ अथनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाउत्तरदधिमुखजिनालय
॥ चालजोगीरासा॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशामाहीअंजनपर्वतसोहै॥ वापीवीचशोकावापीमेंदो

गिरमनमोहे।तापरश्रीजिनभवनअकृत्रिमसुरपपूजनआवे॥शक्तिहीनहमनिजगृहमाहीजि
नपदकोंशिरनावे॥२॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणादिशाचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥
अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥सोरठा॥पद्मद्रहजलसार।कंचनभाजनमेंभरों॥जिनपदतरत्रयवार।धा
रदेयसबदुखहरों॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणादिशचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१
केशरचंदनसार।कर्पूरादिमिलाई॥जिनवरपदसुखकार।पूजतभविसातालहे॥२॥ॐह्रींचंदनं
देवजीरसुखदास॥अक्षतस्वच्छसुहावने॥पूजतशिवपदवास।मुक्तिवासनिश्चैलहैं॥३॥ॐह्रींअक्ष
तं॥पारिजातमंदारसुंदरकुसुमअनूपले॥भक्तिभावउरधार।जिनपदपूजतशिवलहे॥४॥ॐह्रीं
पुष्पं॥नानाविधपकवान।ताजेशुद्धसुहावने॥जोपूजतभगवान।क्षुधादोषसोसबहरे॥५॥ॐह्रीं
चरुं॥दीपकजोतिप्रकाश।शुद्धवस्तुसंजोगसें॥पूजूंजिनसुखराशि।ज्ञानजोतिप्रगटैसही॥६॥
ॐह्रींदीपं॥कृष्णागरकरपूर।चंदनधूपवनाईये॥भक्तिभावभरपूर।जिनवरचरनचढाईये॥७॥ॐ
ह्रींधूपं॥एलाकेलाआदिफल।उत्तमवहुरसभरे॥करकेमनअहलाद।जिनवरकीपूजाकरो॥८॥ॐह्रींफ
जलफलवस्तुमिलाय।अर्घबनावेभव्यजन॥पूजोंश्रीजिनपाय।मुक्तिमहलनिश्चैमिलै॥९॥ॐह्रींअ
र्घं॥जयमाला॥दोहा॥तुमस्वामीत्रैलोकके।अशरनशरनअधार॥इसअसारसंसारमें।मेरीसुनोपुकार

॥ पद्धडीछंद ॥ जैजैजिनराजदयानिधान भवदुखमेटनसमरथमहान जेजेमैंयासंसारमां
दुखसहेवहुतसोछिपेनाहि ॥ वहुकालनिगोदकुवासकीन इकश्वासअठजन्मइकसासलीन
जीवअठारहसासमार ॥ अरुजन्ममरणइकसातधार ॥ क्रमक्रमसेतासैनिकसदेव ॥ थावरग
तिपाईपंचभेव ॥ तहांकालअसंख्यविनाशहोय ॥ वहुवारजन्ममरणादिहोय ॥ ३ ॥ व्यइंद्रिय
कविकलदेहाधरिसहेदुक्खताकोनथ्रहाय्यहांलकसन्मूर्छनलहीदेह ॥ मनविनातदपितनसे
धापचइंद्रीतनदोभेदसार ॥ मनरहितजीवनाहिंगर्भधार ॥ मनसहितगर्भमेंवसेआय ॥ बाहरनि
कलपायाभूल्योंजतीतारकरवुनार ॥ यौंजीवगर्भमेंहोयपार ॥ नवजन्मसमयअतिदुक्ख
नवरजानेकैसहेसोय ॥ इमपशुजोनिमहादुखवानिजानि ॥ हिमउसक्षुधाअरुतृषावान ॥
रधारफिरपरैमार ॥ पशुगतिकेदुखकीकहासम्हार ॥ असंक्लेशभावसेंनर्कजाय ॥ तहांती
णदुखपावेअघाय ॥ फिरनिकसितहांतेंवहुभ्रमंत ॥ ताकोंनहिपावेकहीअंत ॥ ७ ॥ कोईपुण्यउ
रदेहपायतहांविषयलोलपीहुएजाय ॥ विनधर्मध्यानआपूगमाय ॥ [illegible] रथाकरत फि
चिंतमणिसममनुषदेहलाभतवुधिऊंचकुलधर्मनेहअतिदुर्लभपावेजगतवीचातणन्त
ऊपररहेमीच ॥ ९ ॥ हेदेवजोगयहमिलोसार ॥ यातेंप्रभुसुनियेममपुकार ॥ प्रभुदेहुहमेंनिजरू ॥२८॥

ना॥ अरु प्रगट करो उर सत्यज्ञान॥१३॥ मम द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव॥ नासम दीजे चारित्र भाव॥ यह रत्नत्रय
शिवमग उपाव॥ ताके साधक गुरु देव भाव॥१४॥ भव भव में मिलियो जो गए वा॥ भव भव में मिलियो तुम
चरण सेवा॥ भव भव गुरु मिलियो अनागार॥ भव भव सत धर्म रहो प्रचार॥१५॥ यह अरज हमारी सुनो
देवा॥ हतनौ वर देउ प्रभु सुयश लेवा॥ प्रभु तुम सब लायक कहे देवा॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेवा॥१६॥ रो
ला॥ जब तक रवि शशि गगन में॥ तब तक थिर गिरराज॥ तब तक या संसार में धर्म रहो जिनराज
१५॥ अथ दोहा॥ शिववासी प्रभु शिवसुखी सुखदायक भरपूर॥ मेरे हिरदे में बसो तुम जयवंत
जूर॥१६॥ इत्याशीर्वादः॥ ॥६॥ ॥ अथ श्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनाल
य पूजा प्रा॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिर अरजा पूरव वापी॥ ताके बाहिर कोन प्रथम में
रतिकर गिर आलापी॥ एक सहस्र योजन को ऊंचो गोल ढोल सम सोहे॥ ता पर श्री जिन गेह अकृतिम
सुरनर के मन मोहे॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र मम॥ सं
पुष्पं॥ चौपाई॥ रूपके देव दीर्घ को उज्जल लीजे॥ वीतराग की पूजन कीजे॥ या तें जन्म जरा नशि जावे॥ क
म क्रम सों शिवमंदिर पावे॥ नंदीश्वर दक्षिण दिश जानो॥ अरजा वापी के परमानो॥ रतिकर गिर जिन गृह
सुखदाई॥ सर्व सुरासुर पूजत आई॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाप्रथमरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥

जलं॥ शशिसमसीतसुगंधअपारा॥ बावनचंदनअरु घनसारा॥ जिनवरचरणजजंतहितकारा॥ शां
तिसुधाप्रगटैतिहिवारा॥ नंदी॰॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षतस्वक्षसरलशुचिसारा॥ भरिकरलेसुवरणके
थारा॥ पूजतजिनवरभक्तिसुधारा॥ सोपावअक्षयपदसारा॥ नंदी॰॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ पावनफूलसुगं
धअनूपा॥ अथवासुवरणकेशुचिरूपा॥ तिनसौंजिनवरपदभविपूजे॥ कामदाहदहिशीतलहूजे
नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ षटरसमयचरुसद्यबनाई॥ घ्राणनैनमनकोंसुखदाई॥ लेकरश्रीजिनमंदिर
जावे॥ जिनपदचरननभेटचढावे॥ नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ कनकरतनमयजोतिसुहतनी॥ शुचिकरपूरसु
रभिघृतवाती॥ दीपककरजिनवरपदपूजे॥ केवलपायअमरपदहूजे॥ नंदी॰॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कर्पूरादि
सुगंधअपारा॥ द्रव्यमिलायधूपशुचिसारा॥ जिनवरचरणजजैमनलाई॥ तिननेंनितशिवसंपतिपाई॥ नं
दी॰॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ फलउत्कृष्टअनेकप्रकारा॥ लावतभविजनहर्षअपारा॥ जिनवरचरणजजतभवि
प्राणी॥ तेपावैंदिवशिवसुखदानी॥ नंदी॰॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलद्रव्यमिलायबनावे॥ अर्घकनकमय
थारभरावे॥ जोभविश्रीजिनचरणचढावे॥ सोनिश्चैउत्तमगतिपावे॥ नंदी॰॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दो
हा॥ देवरूपीसुरपतिसबै॥ जिसेनवावैंशीश॥ जिनकेचरणसरोजरज॥ रहोसदाममशीश॥१॥ पद्धडी
छंद॥ जयश्रीधरश्रीकरश्रीजिनेश॥ जयब्रह्मा॥ शिवशंकरमहेश॥ जयचतुराननसर्वज्ञदेव॥ तुमचरण

सुरासुरकरतसेवा॥ नयमुनिमहंततुमध्यानधार॥ तेहोयअगमभवसिंधुपार॥ प्रभुतुमगुणमहिमा
अतिअपार॥ गणधरसुरेशनहिलहैपार॥ तौअल्पमतीनरऔरकौन॥ प्रभुवर्णसकैगुणरतनभौन
प्रभुतुमगुणनिर्मलगगनमाहि॥ मुनिविद्यानिधिनहिपारजाहि॥ तौहमसमाननरकीटसोय
किहिविधिगुणअंवरपारहोय॥ पैभक्तिभावहमशक्तिहीन॥ तुमगुणवर्णनआरंभकीन॥५॥ ज्यौंनिजसु
तपालनहिरणआप॥ हरिसन्मुखजायकरैकलाप॥ ज्यौंबालकशशिप्रतिबिंबदेखि॥ तिहिग्रहणकरै
पौरुषविशेष॥ त्यौंतुमगुणकथनमझारसार॥ मुनिईशकहतयाहीप्रकार॥ प्रभुहमकछुजानत
नाहिदेव॥ क्याकहिकैंप्रभुपदकरैंसेव॥ प्रभुतुमसवकेरक्षपालहोय॥ जगमाहिसुनेबहुवारसोय
तातैयहनिश्चयउरमधार॥ हमरोभीवेडाकरोपार॥७॥ ज्यौंन्यायवंतभूपतिमहान॥ इकग्रामतणे
शिरदारजान॥ बहुभीनिर्वलकौंदयाआनि॥ प्रतिपालकरैसुनियेसुजान॥ तौआपदेवत्रैलोक्यनाथ
सुरईशनवावैतुमैंमाथ॥ ऋषिमुनिमहंतसवकरैंआश॥ प्रभुदेहुतिन्हैंनिजऋद्धिवास॥८॥ क्यौंमेरीवा
रअवारकीन॥ मोकूंजानूंअत्यंतदीन॥ तुमपदतरमेरोसदावास॥ यहमेरीपूरणकरोआस॥ बहुकू
रकरूरपशुअनेक॥ तिनकौराखीप्रभुतुमहिटेक॥ नरअधमबहुतनिस्तारदीन॥ षटहृदयसुबुधि
विस्तारकीन॥१०॥ ज्यौंखड्गकुसुमकीकरीमाल॥ ज्यौंबालभुजंगिनफूलमाल॥ ज्यौंसेवविपतिसव

करी दूर॥ त्यों मेरो संकट करो दूर॥२॥ ज्यों विकट अग्नि प्रज्वल भयो नीर॥ असमान वढ्यो ज्यों सती चीर॥
ज्यों जहर सुधासम कियो देव॥ त्यों मेरो संकट हरो देव॥३॥ काहू कौं स्वर्ग विमान देहु॥ काहू कौं ऋद्धि
निधान देहु॥ काहू कौं छत्रपती करेहु॥ मम पास वास द्यौ सुयश लेहु॥४॥ निज सुत के तुतले वचन ये
उर हर्ष करें माता विशेष॥ तुम तात मातसें अधिक देव॥ मेरे सुनि वचन कृपा करेव॥५॥ नय
तो जगमें तुम दया जु अनयवंतो तुम नामी विशाल॥ जे वंतो तुम मग चलन हार॥ प्रभु मो हि करो
सार पार॥६॥ दोहा॥ तुम स्वामी शिवमहल के वासी सुखी अनूप॥ करो जिनेश्वर कों प्रभू उसी
पने रूप॥७॥ अर्घं॥ सोरठा॥ दुस्तर पारावार खारनीर संसार है॥ प्रभु तुम अधम उधार मोकूं पा
रिये॥८॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥१८॥ ॥अथ नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिश द्वितीय पूजा भा
षा॥ नंदीश्वर की दक्षिण दिशमें अंजन गिर है भारी॥ ताके पूरव अरजा वापी॥ ताके कोन
दूजो रतिकर पर्वत सो है कंचन वर्ण विशाल॥ ता पर जिनगृह कौं नित पूजौ मन वच का
काला॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा द्वितीय रतिकरेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पु
लघो पाई रूपक॥ निर्मल गुणधारक जगनामी॥ परम पूज्य तीर्थंकर स्वामी॥ तिन गुण पा
रण सोय जिन पद जल सों जजि भवि लोय॥ अष्टम द्वीप दिशा दखणाई॥ अंजन गिर के पूर

मा॥ अरतिकर द्वितिय जिनालय सोहै। सकल सुरासुर के मन मोहै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप दक्षिण
दिश द्वितीय रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ दुष्ट कषाय ताप दुखकारी। तातें रहित सर्व सि
तकारी॥ श्री अर्हंत परम पद को जे। चंदन सों पूजौं जिनराजे॥ अष्टम॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षय पद मैं
आप विराजे। सिद्ध सरूप अनूपम छाजे॥ तिहि पद ज्ञापति काज सुरेशा। अक्षत सों जिन जजतब
गेशा॥ अष्टम रति॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ काम दारु जग में दुखकारी। जिनजी तो तिन की बलिहारी॥ ब्रह्म
स्वभाव ज्ञान बल धारी। पुष्प चढाय करूं नवकारी॥ अष्ट॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ भूख प्यास आदिक दुख
कारी। दोष अंग रहे जिन परिहारी॥ जिनपद मैं नैवेद्य चढाऊं। भक्ति भाव सें जिनगुण गाऊं॥ अष्ट
५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ प्रभु अनंत गुण धाम विकाशी। ज्ञान जोति अनुपम परकाशी॥ तिन के चरण कम
ल नित ध्याऊं। भक्ति सहित नित दीप चढाऊं॥ अष्टम॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ कर्म रहित भगवंत कृपाला।
अनुपम ज्ञान दरश गुणमाला॥ अक्षय ज्ञान दर्श बल काजे। जजत धूप सों श्री जिनराजे॥ अष्टम॥
७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ परम सुगुन फल संपति भारी। जो भवि जन ता के अधिकारी॥ सो जिनवर पद को
चित ल्यावे। ते उत्तम फल ले पूज रचावे॥ अष्टम॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल आठों दरब मिलावे।
भक्ति सहित जिन मंदिर जावे॥ श्री जिनवर को पूज रचावे। सो दिवलोक संपदा पावे॥ अष्टम॥९॥

॥ॐह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ दू जो रतिकर जिनभवन पूजा सुखदातार॥ भक्ति सहित जो नर करे
ते पावै भव पार॥१॥ पद्धडी छंद॥ जे द्वीप आठमो है प्रधान नंदीश्वर ताको नाम जान॥ ये सत म
समुद्र के औरपास गोलाकृति सो है अति उजास॥ इक शतक तरेसठि कोरि जान॥ अरु ला
ख चोरासी अधिक मान॥ इतने योजन सरस्वेत जान प्रति दिशा मै चौडाई प्रमान॥ रतनाकीद
ण दिश कही सार॥ अंजनगिरि अंजन वर्णधार॥ अरजा वापी तिह पूर्व जान॥ तसु कोन वीच र
कर महान॥ तिहि पर जिनमंदिर शोभमान॥ शत आठ अधिक प्रतिमा प्रमाण॥ सव धनुष पां
से तुंग जान॥ पद्मासन छवि विवरी पुराण॥ जिन दंत वज्र मणिमय मफार॥ अर अधर पद्म
ण लाल या रह्गकंज अरुण सित स्याम सार॥ सुर सुरी थकित जिन छवि निहार॥ भू लता
र शिर केश स्याम परण ये रत्न पुंज सुधाम॥ नख लाल मनो उत्तम प्रवाल॥ मुनि पद्म कमल की
कली वाल॥ ध्वजा की शरीर की द्युति अपार॥ ना ये सुवर्ण समछ्वि निहार॥ तुल साय मानअ
जवंत॥ लखि सुर सुरेश अति हर्षवंत॥ वैराग्य भाव फल के अपार॥ निरखत बिना वस वन शे सार
सुर सम्यक दर्शन लहें सो य॥ धनि जन्म तिन्हे तुम दर्श होय॥ हम पुण्यहीन पहुंचो न जाय॥ वस भ
क्ति यहां वसु मोद लाय॥ शुभ चरण कमल को शीश नाय॥ उर ध्यान धरें शिव सुख उपाय॥ ८

तनीवकुद्रव्य लायासुरपूजनहेतुमचरणजाय॥ हमशक्तिहीनउरभक्तिलायतुमचरणजजैजिन
भवनजाय॥ यहभक्तिहमैभवन्नसहाय॥ ३ जोयहअरजसुनोजिनाय॥ संसारखारदुखकारसोय
यामेंदूजोनहिशरणकोय॥ ४ यातेंयहअरजीवारवार॥ हमकरतसुनोजगपतिउदार॥ तुमदर्श
आजपायोअनूप॥ सबश्रेयआज आयोअनूप॥ ५ ममविघ्नमूलनिरवारदेव॥ निधिदेहुहमैंनि
वकारदेव॥ यहअरजहमारीसुनोदेव॥ करजोरिजिनेश्वरकरतसेव॥ ६॥ दोहा॥ रतिकरगिरजिनभ
वनकीपूरणयहजयमाल॥ जोवांचेसतभावसोंताकेभागविशाल॥ ७॥ अर्घ॥ सोरठा॥ दीनबंधुम
हाराजदीनजानकरुणाकरो॥ वेगरीवनवाजतुम्हीसुनेसंसारमें॥ ८॥ ॥इत्याशीर्वादः॥ २०॥
अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशतृतीयरतिकरजिनालयपूजाप्रारंभ॥ ॥जोगीरासा॥ अष्टमद्वी
पदिशादक्षिणमेंअंजनवापीसोहे॥ ताकेवीचकोनरतिकरगिरकनकवर्णमनमोहे॥ तापरश्रीजिन
भवनअकृत्तिमसुरपतिपूजनआवे॥ हमतिनकीआह्वाननकरकेअपनेघरगुणगावें॥ ॐह्रींदक्षिण
दिशतृतीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ दोहा॥ जन्ममरणकेदुखसहेहजि
नेशजगमांहि॥ हिमकरसमजललायकैंचरचूंपूजजिनपांहि॥ नंदीश्वरदक्षिणदिशारतिकरतृतिय
महान॥ जिनगृहसुरपतिजजतहैंनमूंतिन्हैंधरिध्यान॥ १॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणादिशारतिकर

करजिनालये ओनमः॥जलं॥१॥कर्मतापनापितफिरौं ज्यों रोगतिके मारि॥शीतल जिनपद शीतलचंदनल्या॥नंदी॥२॥ॐह्रीं चंदनं॥विनाशीकजगसंपदा॥मिलीअनेकनवारा॥अक्षदातारपदपूजौं अक्षतधार॥नंदी॥३॥ॐह्रीं अक्षतं॥मीनकेतुदुखदेतहै॥ताकेनाशनहेतु॥प्रभुमनविजयीजजौं लेप्रसूनकरसेत॥नंदी॥४॥ॐह्रीं पुष्पं॥क्षुधाहरणनिजबलकरण॥चरुवणति॥भक्तिभावउरलायकै॥जजौ क्षुधाहरदेव॥नंदी॥५॥ॐह्रीं चरुं॥कनकरतनमयदीनवरपरसुखदाय॥पूजौं भविजनभावसौं ज्यों निजनिधिदातार॥नंदी॥६॥ॐह्रीं दीपं॥कर्मकेकारणो॥कर्मदहनपतिदेव॥धूपअनूपवणायकै॥पूजौं जिनअरुमेव॥नंदी॥७॥ॐह्रीं धूपं॥नेकपरकारके॥पक्कसरसशुचिरूप॥दिवशिवफलकेकारणे॥जजौं जिनेश्वरभूप॥नंदी॥८॥ॐह्रीं फलं॥जलफलआठोंद्रव्यलो॥अर्घबनावैसार॥मुक्तिरमाकेकारणे॥पूजौं जिनअविकार॥नंदी॥९॥अर्घं॥जयमाला॥घत्ता॥जयजयहितकारी संपतिसारी॥जोकोतरतुमपाईहै॥सबकोंसुखगिरातुमारी रूषिमुनिवरसबगाईहै॥१॥पद्धडीछंद॥जेजेअसहायमहानवीरा॥पुरुषागुणगहीरा॥जेमोहवलीजगमैंविख्यात॥ताकोतुमकीनौंप्रथमघात॥२॥दर्शनत्रयमरुमिथ्यातमिश्रसम्यकसुजान॥इनकोतुमकीनोंमूलनाश॥क्षायकसम्यक्तकियाप्रकाश॥३॥

रित्रमोहवारहमैंथानमसुनाशकियोपहिलेंमहान॥ फिरज्ञानदर्शनावरणहोय॥ अरुअंतरायत्रय
घातहोय॥३॥ इमच्यारघातियाकर्महान॥ प्रगटोकेवलप्रभुज्ञानभान॥ जयजयनवक्षायकलब्धि
पाया बहुसुखीभयेत्रैलोकराय॥४॥ जेक्षायकसम्यकगुणप्रथमजान॥ क्षायकचारितदूजोमहा
न॥ जयतीजोक्षायकदर्शहोय॥ अरुचौथोक्षायकज्ञानसोय॥५॥ भोगोपभोगक्षायकजुदोय
अरुदानलाभक्षायकजुहोय॥ बलनंतक्षायकीनवमिलब्धि॥ एसीनवलब्धिअनंतऋद्धि॥६॥ नि
जआत्मरमणयहभोगजान॥ अविभिन्नवृत्तिउपभोगमान॥ परवस्तुत्यागयहदानधीर॥ वीरुष
उपदेशीवननवीर॥७॥ निजगुणपापतियहलाभजान॥ बलनंतप्रगटवीरजमहान॥ सर्ववस्तुत्रि
कालिकलखनहार॥ सोकेवलदर्शनहैउदार॥ त्रयकालद्रव्यपर्यायसर्व॥ इनकोंयुगपतजानोंजुस
र्व॥ सोकेवलज्ञानकह्योजिनेश॥ अक्षयअनंतउद्योतवेश॥९॥ इत्यादिअतुलसंपतिमहान॥ स्वाधीन
अंतरंगीसुजान॥ अरुसमवशरणरचनाअपार॥ नाहिंजलधिनीकोनहिंपार॥१०॥ जिहिंदेखतहरि
अचिरजकरंत॥ शिरनायध्यानहिरदेधरंत॥ हेरूपासिंधुप्रभुवीतराग॥ तुमदर्शभयोममजग्योभाग
॥११॥ ममजन्मसफलअवभयोसार॥ जबदेखप्रभुतुमनयनद्वार॥ करिकृपादेवममवासखास॥ उर
यहीजिनेश्वरकरतआस॥१२॥ दोहा॥ जयजयजगतारीशिवमगचारीअर्जहमारीसुनिलीजोनि

जनिधिहितकारी संपतिसारी ॥ धर्मप्रचारी प्रभुदीजे ॥ २३ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ दानेश्वर महाराज ज्ञानदा
न ममदीजिये ॥ निजपरहितव्रतसाज ॥ शिवमगदेयशलीजिये ॥ २४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ ॥ २१ ॥
अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशचतुर्थरतिकरपूजामाह ॥ जोगीरासा ॥ नंदीश्वरकेदक्षिण
अंजनपर्वतसोहै ॥ ताकेदक्षिणविरजावापीसुरपतिकेमनमोहै ॥ ताकेकोनविषैंशुभराजेचौथोरति
करभाई ॥ तापरश्रीजिनमंदिरजानौंसुरपतिपूजरचाई ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाचतुर्थरति
करजिनालयेभ्योनमः ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ पुष्पं ॥ सोरठा ॥ हिमशितसमशुचिसार ॥ हेमाचं
रले ॥ जन्मत्रिदोषनिवार ॥ जिनपदकीपूजाकरो ॥ दक्षिणदिशासुखकार ॥ नंदीश्वरकीजानियेर
ग्रहसार ॥ सुरपतिजिनपूजाकरो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशसुखकार नंदीश्वरकीजा
तिकरजिनालयेभ्योनमः ॥ जलं ॥ चंदनगंधमिलाय ॥ होतसुवासदशोंदिशा ॥ पूजोंजिन
भवातापयासोंमिटै ॥ दक्षिण ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ निर्मलशालिअनूप ॥ शशिकरसमअक्षतमहा ॥ पूजों
जगभूप ॥ अक्षयपदयासोंमिलै ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ कुसुमसुगंधितसार ॥ सुवरणथालविषैंभ
पूजोंभवदधितार ॥ भवबाधायातेंमिटै ॥ दक्षिण ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ नेवजजातिअनूप ॥ शुचिसुगंधष
पूजोंषटपतिभूप ॥ यातेंशिवसुखपाईये ॥ दक्षिण ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ दीपकविविधिप्रकारमय

थायोगसुचिलीजिये॥भावभक्तिउरधार॥जिनवरकीपूजाकरो॥दक्षिण॥६॥ॐह्रींदीपं॥कृष्णागरकरपू
र॥औरसुगंधितद्रव्यले॥शुचिवंदनकोंचूर॥धूपखेयजिनपदजजों॥दक्षिण॥७॥ॐह्रींधूपं॥पिस्ताऔर
छिदामलोंगछुहारेआदिले॥स्वहितजिनेश्वरधाम॥जिनवरकीपूजाकरोंदक्षिण॥८॥ॐह्रींफलं॥ज
लफलद्रव्यमिलाय॥अर्घकरोंअतिचावसों॥पूजोंश्रीजिनराय॥विनयसहितवहुभावसों॥दक्षिण॥९॥
ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दोहा॥तीनलोकपतितुमधनी॥मूलब्रह्मपुराण॥परमब्रह्मपरकारलो॥धरेंमह
मुनिध्यान॥१॥सुरपतितिनितप्रतिथुतिकरें॥धरेहृदयमेंध्यान॥ऐसेश्रीअरहंतपद॥जजोंसदागुणखान
॥२॥पद्धरीछंद॥जयद्वीपआठमेंमध्यजान॥दक्षिणदिशअंजनगिरमहान॥तिहगिरकीदक्षिणदि
शिविचार॥विरजावापीगंभीरसार॥१॥योजनइकलाखवनोंप्रमाण॥चोडीलांवीइकसारजान॥म
णिरत्नजडितजानोंसिवान॥जलसहसएकयोजनप्रमान॥२॥चहुंओरवेदिकाद्वारसोय॥आगेंवन
च्यारोंदिशाजोय॥योजनपच्चाससंसार॥वहुवनकीचोडाईनिहार॥३॥लंवेवापीसमजानवीर॥मणिमईको
टिगोपुरगहीर॥तिसमाहिमहलवहुशोभमान॥सुरव्यंतरभवनरहेसुजान॥४॥तिहवापीवीचकह्यो
जिनेश॥दधिमुखगिरजानोंस्वेतभेष॥ऊंचोहैयोजनदशहजार॥चहुंफेरदोलसमगोलसार॥५॥ताव
पीकेवाहिरीकोन॥रतिकरगिरतापरजैनभौन॥सवसमवशरणरचनामहान॥जाकेदेखतसवपापहा

नाचत हैं शक्र शची मिलि भक्तिभाव। बहु नृत्य करैं आनंद चाव॥ सब साज वाज अद्भुत अपार। कवि न लहै ताको जु पार॥७॥ अरहंत विंव जहां सब राइ शा। अरु नृत्य करैं सुरनाय शीश॥ जहां देवन कृत शुभ गा होय। अरु देव दुंदुभी वजे सोय॥८॥ सब नृत्य भेद नवरस प्रचार। सुर सुरी दिखावै भक्ति पार॥ यह वर्ण न कि मुख करै कोय। जो लखे तिसैं धन जन्म होय॥९॥ जे जे जिनराज दया निधान। प्रभु पुण्य रूप जग मैं प्रधान॥ जय तीर्थंकर पद पाय देव। तप धरौ स्वपर सुखदाय देव॥१०॥ लहि केवल रूप उपसार। दीनौं भवसागर करन पार॥ जय अतुल कीर्त्ति जग रही छाय। नहि गणधर पावै कहत पार॥११॥ तुम अशरन शरन सहाय देव। तुम सब जग को सुखदाय देव॥ निज ऋद्धि देहु वरदाय देव। कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥१२॥ ॥दोहा॥ वार न तरन जिनराज है। या भवसागर माहि॥ मो को पार करो सही। संशय नाहि॥१३॥ अर्घं॥ सोरठा॥ कर्म कलंक निवार। भये शुद्ध परमातमा॥ सो प्रभु हम को तार। या संसार असार सैं॥१४॥ ॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२३॥ ॥अथ श्रीनंदीश्वरद्वीप दक्षिण दिशा पूजा माह॥ जोगी रासा॥ नंदीश्वर के दक्षिण दिश मैं अंजनगिरि है भाई। ताके पश्चिम नाम अशोका वापी नीरसु हाई॥ ताके प्रथम कोन मैं सोहै पंचम रतिकर जानौं। ताके ऊपर श्रीजिन मंदिर रत्नमय दानौं॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप दक्षिण दिश पंचम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ मन्त्र॥ मन्त्र॥ मन्त्र॥ पु

थं॥गीताछंद॥पंचमपयोनिधिनीरतासमरतनभाजनमेंभरौंजलसोंजिनेश्वरपदकमलकीभ
क्तियुतपूजाकरौंवरदीपअष्टमदिशादक्षिणपंचमोंरतिकरजहां॥जिनराजग्रहसुरअसुरमि
लिकेजिनचरणपूजततहां॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशापंचमरतिकरजिनालयेभ्योनमःज
लं॥१॥शुचिगंधकदलीकरमलियागिरिसुचंदनलाईये॥भवदाहदाहनकाजश्रीजिनचरणअ
ग्रचढाईये॥वर०॥२॥ॐह्रींचंदनं॥चोखेअनोखेसरलधोखेस्वच्छअक्षतलीजिये॥अक्षयमहानिधि
पतिजिनेश्वरअग्रपुंजसुदीजिये॥वर०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥वरकुसुमशुभसुगंधरंगितअतननंदनद
रनकोंमनलायभक्तिचढायभविजनजजोंजिनवरचरणकों॥वर०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥शुचिशाधनायसु
गंधताजेसुरभिघृतकेसोहने॥अतिमिष्टरसनैवेद्यलेकरपदजजोंजिनवरतने॥वर०॥५॥ॐह्रींचरुं॥
वातीकपूरसुधारउज्जलजोतिजगमगहोतहै॥तसुदीपसोंजिनचरणपूजोंज्ञानजोतिउद्योतहै॥
वर०॥६॥ॐह्रींदीपं॥घनसारकृष्णागरतगरचंदनसुगंधअपारहै॥तिहधूपसेंजिनचरणपूजोंयही
पुण्यप्रचारहै॥वर०॥७॥ॐह्रींधूपं॥फलसारबहुविधिथालभरकरभक्तिभावबढायकें॥पूजाकरों
जिनराजपदकीभविजिनालयजायकें॥वर०॥८॥ॐह्रींफलं॥जलगंधअक्षतपुष्पचरुवरदीपधूप
फलावलीकरिअर्घजिनवरचरणपूजोपारहोउभवावली॥वर०॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाला॥दोहा॥

हिमकरमुक्ताहारुसमुरु चंद्र कांतिवउधार इनसवसैं शीतलप्रभु तुमवचनामृतसारा॥ भुज
दाहदुखहरनकों औरकोनहेउपाय॥ सुधाधारतुमवचहिये तसो तृषानशाय॥२॥ भुजंगप्र
यातछंद॥ जयोदेवजगमेंतुम्हीहोविधाता॥ जयोदेवजगमेंतुम्हीहोविख्याता॥ वताईतु
सवधर्मनीती॥ जताईतुम्हीनेंशुभाशुभप्रतीती॥१॥ महापापकेभेदजगत्यागरूपा॥ तुम्ही
ताये जिन्होंकेसरूपा॥ प्रथमपापहिंसा महापापघातो॥ इसेंजोगिनेंजोपुण्यसोपत्तपा
चनमूठवोलेयहीपापदूजो॥ नमूटेमनुष्यकूकभीपापसूजो॥ महापापचोरीगिनोतीस
इसीकीवजेसेंजीवनकेंपरोहो॥ महापापचौथोपरदारसेवा॥ लरेंदुक्खभारीकरेजोपरेवा
सीजन्ममेंराजकोदंडपावो॥ कुधीआपअरवापकोकुललजावो॥ महाव्याधिलश्रापरि
धावो॥ यहीपंचमोपापश्रीगुरुवतावो॥ महालोभकेजोरमेंघोरधूमे॥ हाहोयगाफिलदिनरा
भूमे॥ महादुष्टइंद्रीविषयभोगभारो॥ वडेदुक्खदातामनोंनागकारो॥ इन्हीकीवजे
सारो॥ वोपुरुषनामीनर्कमेंसिधारो॥६॥ इंद्रीपापकोंतजेसत्यज्ञानी॥ व्रतीवोकहावेकही
नी॥ तजेपापकिंचित्अणुव्रतकहावो॥ सवीपापत्यागोमहाव्रतलहावो॥७॥ अहिंसाविषैं
तगनामी॥ व्रतीसत्यधनदेवनामी॥ अकामी॥ अचौर्यव्रतीमेंकुमरवारिसेणा॥ महाशीलमेंनी

लीप्रवीणा॥ अपरिग्रह प्रमाणी वडो नाम धारी॥ भयो है जगत माहि जय भूप भारी॥ ईकी प्रशंसा गु
ण देव कीनी॥ कही श्रावकाचार में देख लीनी॥ ७॥ व्रतोंकी वजहसें गृहीकों आगारी॥ न में देव आके
करै भेट भारी॥ महा घोर उपसर्ग में सेव चावे॥ यती जीव के चरण कों शीश नावे॥ ८॥ महा स्वर्ग अप
वर्ग के सुक्ख सारे॥ सबी जीव पावे व्रतों के सहारे॥ अहो वीर स्वामी तुम्ही सुक्ख दाता॥ सुधर्मोपदे
शी तुम्ही हो विख्याता॥ ९॥ प्रभू जी तुम्हारे चरण है चंद्र रेखा॥ वसे उर उसी नें स्वपर भेद देखा॥ प्रभू ए
क मेरी यही अर्ज मानो॥ स्वपर भेद विज्ञान दीजो प्रमाणो॥ १२॥ दोहा॥ निज पर ज्ञायक भावना॥ ज
यवंतो त्रयकाल॥ या प्रसाद संसार में भवि पावे शिवबाल॥ १३॥ अर्घं॥ सोरठा॥ सत्प्रतीति अरु ज्ञा
ना सत् आचरन तिय सूल त्रय दीजे श्री भगवान॥ तुम दानी जग में बडे॥ १४॥ इत्याशीर्वाद॥ ॥२३॥
अथ षष्टम रतिकर जिनालय पूजा माह॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वर वर द्वीप आठमों ता के दक्षिण भागे॥
षष्टम रतिकर पर्वत सोहै जिन मंदिर तिहिं जागे॥ शक्र शची मिलि पूज रचावे हिरदै हर्ष अपारा॥
अकृत्यम जिन बिंब जिन्हों कों बारबार नमकार॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्टम रतिकर जि
नालयेभ्यो नमः॥ अत्र अवतर अवतर॥ पुष्पं॥ सुंदरी छंद॥ सुरनदी जल उज्जल लाईये॥ जिन पदांबु
ज माहि चढाईये॥ असत कर्म उदै दुख नाशिये॥ सहज शांत स्वरूप प्रकाशिये॥ दीप नंदीश्वर दक्षि

णदिशा गिरि सु षष्टम रतिकर तहां लसा॥ तास पर जिन भवन सुहावनो करत पूजा सुरा
॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप षष्टम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ २ मलयचंदन कुंकु
मं घसि कपूर कदलीदल आश्रितं जिनपदांबुज पूजन कीजिये मनुष जन्म तनौ फल ली
दीप॰॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तीरहीर रजत सम जानिये सितसरल अक्षत शुचि आनिये
चंद्र जिनेश के सजत भविसु खलहत सुरेश के॥ दीप॰॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं कमल आदि अनूपम
कुसुम चारु चरण चितदीजिये॥ जिन पदांबुज पूज रचाईये अतन मारि अभय पद पाईये
पु॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ सरस षट रस मिश्रित व्यंजनं बहु बनाय सुधी मनरंजनं चरण श्री
मुकति मारग संमल कौ सजो॥ दीप॰॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ तम निवार क दीप महान हो जग
विवान हो जिन पदांबुज अग्र चढाईये परम ज्ञान महानिधि पाईये॥ दीप॰॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥
कारसुगंध अनूप हो मलयचंदन की बहु धूप हो करत पूजन श्री जिनराज की हरत मू
वसाज की॥ दीप॰॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ बहु फलावलि पावन लाईये चरन श्री जिनराज चढाईये
रमापति संपति लहन कौं यह उपाव सुधी मविगहन कौं॥ दीप॰॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफला
द्रव्य मिलाईये अरघ ले जिनमंदिर जाईये करत पूजन भक्ति बढाय के लहत सुक्ख शिवा॰

जायकोदीप ॥८॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ करुनानिधि त्रिभुवनधनी ॥ अशरनशरनअधा
रा करुनाविधि करमुरु दीनपे ॥ दीनबंधुगुणधार ॥१॥ तोटक छंद ॥ जय श्रीधरश्रीकरश्रीपतिहो
अघघायकदायकसंपतिहो ॥ वरकेवलज्ञानप्रकाशकियो ॥ भविजीवनकोभ्रममेटदियो ॥२॥ स
वजीव अजीव अभावतजो ॥ गुणपर्ययरूपप्रभेदमनो ॥ जहां जीवसुतत्वसुभावमहा ॥ पण भेद
सुजीवप्रभावकहा ॥३॥ पहलोउपशमकितभावकह्यो ॥ दृगचारितरूपदुभेदलह्यो ॥ पुनिक्षायकभा
वदुतीयगिनौं ॥ तिहिकेनवभेदसुपेमभनो ॥३॥ शुचिसम्यकचारितज्ञानमहा ॥ अरकेवलदर्शनदा
नकहा ॥ उपभोग शुभोग अनेकवली ॥ अरुलाभनवीर्यमलब्धिवली ॥४॥ तियोगनिभावक्षयोप
शमं ॥ तिहिभेदअठारहजानिगमं ॥ वउज्ञानकुज्ञानकुदर्शत्रयं ॥ पणिलब्धिसुपंद्रहभेदअयं ॥५॥
अरुसम्यकचारितभावयुगं ॥ इकसंयमासंयमभावभहं ॥ इमभेदअठारहजानिसबै ॥ उदईकअकी
समुनौंजोअबै ॥६॥ गतिचारकषायजुचारकही ॥ त्रयलिंगछलेस्यविभावयही ॥ कुदृष्टिअज्ञानअ
संजमहै ॥ असिद्धमिलैइकईशयहै ॥७॥ परिनामकपंचमभावकह्यो ॥ भविजीवअभव्यत्रिभेदल
ह्यो ॥ पणभावतरेपनभेदभयो ॥ सवश्रीजिनआगममाहिकह्यो ॥८॥ इनमेंकोईत्यागनजोगगिने
केईआदरयोगजिनेशभने ॥ कोईश्रीअरहंतभयेप्रगटे ॥ तिहिमापविकोंगणराजरटे ॥९॥ वहश्रीगु

रुमोउरवासकरो॥हितकाजसवैउरग्रासभरो॥मनसंनमसंपतिसिद्धकरो॥निजस्वाश्रितश्रीपतिध्रु
ध्रुभरो॥२०॥जवलोंजगमेंममवासरहे॥जवलोंअरिकोउरत्रासरहे॥तवलोंतुमदेवसहायकरो॥
धिवंडअरीदुखदाहहरो॥२१॥जगमाहिगरीवनवाजतुम्ही॥शिवदायकहोशिववासतुम्ही॥प
अर्जसुनोजिनराजतुम्ही॥सुधिरिद्धिकरोप्रभुसाजतुम्ही॥२२॥दोहा॥जगतारणकारणप्रवलएक
नेश्वरदेव॥यातेंमनवचकायकेकरूंसदामैंसेव॥२३॥अर्घं॥सोरठा॥उरमेंधीरजधार॥श्रीजिन
रपदजोजजे॥सोहोवैभवपार॥यहजिनवरवचनप्रमाणहै॥२४॥ ॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२५॥
॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशअसमरतिकरपूजाभाष॥जोगीरासा॥अष्टमद्वीपतणीदक्षिणदिश
रतिकरसोहै॥वापीभीतरशोकाकेपाहलेंकोनविषेमनमोहै॥तापरश्रीजिनमंदिरसोहै॥अकृ
री॥तिहमेंश्रीजिनविंवविराजेजिनपदधोकहमारी॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशअस
मरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥अथाष्टकं॥चाल ॥दयानिधि
जगवंधुदयानिधिहो॥टेर॥चंद्रकिरणसमशीतलसार॥उज्जलनीरभरोभंगार॥दया॰॥भक्ति
हितजिनचरनचढाय॥जन्मजरातनोदुखजाय॥दया॰॥नंदीश्वरदक्षिणदिशजान॥असमरतिकर
सुखदान॥दया॰॥तापरश्रीजिनमंदिरसार॥शक्रशचीपूजेहितधार॥दया॰॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीप

दक्षिणदिशासमसमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनकेसरगंधअनूप॥शीतलसुखका
रणशुचिरूप॥दया॥पूजौंजिनवरचरणविशाल॥भवआतापमिटैततकाल॥दया॥२॥ॐह्रींचंदनं॥
अमलअखंडिततंदुलसार॥देवआदिकजीरहितकार॥दया॥शुचिअक्षतलेजिनगृहजाय॥पूजौं
जिनवरपदहरषाय॥दया॥नंदी॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥पावनपुष्पसुगंधअपार॥कंचनथालभरोहितका
र॥दया॥कुसुमायुधअरिजीतनकाज॥पूजौंचरणकमलजिनराज॥दया॥नंदी॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥ने
वजसद्यपवित्रअनूप॥घ्राणनैनमनमोहनरूप॥दया॥पूजौंश्रीजिनचरणमहान॥परमशांतिदायक
कल्यान॥दया॥नंदी॥५॥ॐह्रींचरुं॥उज्ज्वलदीपकस्वच्छबनाय॥मोहमहातमहरनउपाय॥दया॥ज्ञा
नजोतिपरकाशनकाज॥पूजौंचरणजगतशिरताज॥दया॥नंदी॥६॥ॐह्रींदीपं॥कृस्नागरचंदनकर्पूर
धूपसुगंधीकरवरचूर॥दया॥आठोंकरमजलावनकाज॥पूजौंश्रीजिनवरहितसाज॥दया॥नंदी॥७॥ॐ
ह्रींधूपं॥लौंगलाइचीश्रीरवदाम॥पिस्ताश्रीसेफलअभिराम॥दया॥नंदी॥मुक्तिमहाफलदायकदेव
पूजौंश्रीजिनवरकरसेव॥दया॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलआठोंद्रव्यमिलाय॥उत्तमआठोंद्रव्यमि
लाय॥दया॥श्रीजिनरायचरणसुखदाय॥पूजतजन्मजराज्वरजाय॥दया॥नंदी॥९॥ॐह्रींअर्घं॥१०
जयमाला॥दोहा॥भवभंजनभगवानभजि॥सजिसाहससिवरूप॥कहूंया॥एणगहिध्यानकीमालसो

चौवनपू॰
॥३५॥

हदुखरूप॥२॥ भुजंगप्रयातछंद॥ जयोस्वेंद्रश्रीदेवस्वामी॥ महामोहजीतेवडेवीरनामी॥ वनायो विजे
वानैअकंपा॥ तिसें देखकैंमोहचहुंओरकंपा॥ बलीवीरगजराजतपकीसवारी॥ धरोंशीशपेसंज
पभारी॥ महावीतरागीकवचदेहधारी॥ प्रभूआपनोआपपोरुषसम्हारो॥ सुचारित्रनामी
त्रिपुरको॥ वहीभूमिजानोंप्रभूकेसमरकी॥ नहीध्यानतलवारतीक्षणप्रहारी॥ दयोमोहकेशीश
भारी॥ गिरोमोहवैरीतबैकर्म्मघाती॥ हनेशीघतीनोंफिरपसपातीनजेजीवकेदेवबाजा
भयोसारत्रैलोकमेंघोररूपा॥ सबीदेवआयेमहाभक्तिधारी॥ चहूंओरनभमेंजेजेपुकारे
थमाथेवहुनम्ररूपा॥ करैदेवकीवंदनाविप्रभूपा॥ महाभक्तिसेंमिष्टवायकउचारे
हीसहायकहमारेजयोदेवतुमएकत्रैलोकस्वामी॥ निशानीमहाशीशत्रयछत्रना
हसुलक्ष्मीपतिहोतुमीएकदेवा॥ त्रलोकीकलक्ष्मीकरेआपसेवा॥ वलीवीरजगमेंतु
मधानी॥ विनाशस्त्रधारेहत्योमोहनामी॥ तुमीहोसुखीएकस्वाधीनस्वामी॥ हत्योदुःखको
हिप्रकामी॥ तुम्हीश्रेष्टस्वामीजगमेंवतायो॥ सुध्यावेतुम्हेंश्रेष्टवहभीकहायो॥ तुमीइष्टदा
प्रभूइष्टरूपा॥ महाइष्टकल्यानकेआपभूपा॥ तुम्हेजोहृदेमांहिनिश्चित्यध्यावे॥ वहीस्वर्ग
केसुक्खपावे॥ सबीदेवइंद्रखगेंद्रामुनीशा॥ तुम्हारेचरणकोंजजैनायशीशा॥ करैंआशप्र ॥३८॥

महारुद्धिधारी॥इसीसैंप्रभूएकअरजीहमारी॥१८॥महात्राससंसारकेवासमाही॥यहांतोकिसीकौंक
भीसुकखनाही॥हेमुरेआपकेवासकोवासदीजे॥प्रभूजीमुजसेयहएककीजे॥१९॥नहीऔरचिंता
हरयमाहिमेरौ॥नहीऔरईछासुनोदेवमेरौ॥यहीएकचिंतासुइछायहीहे॥जिनेश्वरकृपाआज
कीजेसहीहे॥२२॥दोहा॥जिनवरदीनदयालतुमशरनागतप्रतिपाल॥दीनवंधुमोपरप्रभूकीजे
कृपाकृपाल॥२३॥अर्घ॥सोरठा॥याभवकेवनमाहिइकलोजियभरमतफिरे॥यहनिश्चैमन
माहि॥अन्यशरनकोईनही॥२४॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२५॥ ॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपद
क्षिणादिशअष्टमरतिकरजिनालयपूजामाह॥चौपाई॥नंदीश्वरकीदक्षिणदिशमैंअंजनगि
रवरनीको॥ताकीउत्तरदिशमैराजैरतिकरएहजिनजीको॥देवदनुजनितपूजरचावैगावैजिनगु
णभारी॥ऐसेश्रीजिनकेचरननकौंनितप्रतिधोकहमारी॥१॥ॐह्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणादिशअष्टमरति
करजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥चालछंद॥इहपद्मसमानसुजानौ॥अतिनिर्मल
नीरप्रमानौ॥जिनवरपदपूजाकीजै॥निजजन्मसफलकरलीजे॥सुभद्वीपनंदीश्वरजानौ॥दक्षिण
दिशमैंपहिचानौ॥अष्टमरतिकरगिरसोहै॥जिनमंदिरतहांमनमोहै॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणादिश
अष्टमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥२॥चंदनकरपूरमिलावै॥तामेंकेशरघसिलावै॥भवतापवि

नाशनकाजे॥ पद पूजैं श्री जिनराजे॥ सुभ०॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥२॥ सुखदास कमोद अनूप॥ शशि
सम मखत स रूप॥ पावन अक्षत भर थारी॥ जिन चरन जजों सुखकारी॥ सुभ०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतां॥
ना विधि वर्ण सरूपा॥ अरु सार सुगंध अनूपा॥ ऐसे वर कुसुम मगावै॥ जिनवर [illegible] सुख
पूजर चावै॥ सुभ०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ नेवज मन मोहन हारा॥ शुचि भर कंचन का थारा॥ जिनवर के
ण चढावै॥ सब दोष क्षुधा नशि जावै॥ सुभ०॥५॥ ॐ ह्रीं चरु॥ तम हर द्युति उज्जल सोहे॥
जिनवर पद आगे जोवै॥ निज ज्ञान प्रतीभ विहोवै॥ सुभ०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशगंध अनूप मि
अति पावन धूप बनावै॥ वसु कर्म जलावन काजे॥ पूजों पद श्री जिनराजे॥ सुभ०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥
वर ऋतु के फल शुचि सारा॥ पिस्ता बादाम अपारा॥ निज लक्ष्मी पापति काजे॥ पूजों पद श्री जिन
सुभ०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल वसु द्रव्य मिलावै॥ सुवरण के थाल भरावै॥ श्री जिनवर चर
सो भवि शिव लक्ष्मी पावै॥ सुभ०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ हे जिनेंद्र जयवंत जग॥ जाहर
अपार॥ सुरपा राजे खि सुरपती॥ लहै न तुम गुण पार॥१॥ तो अब कों नर कहि सकै॥ तुम गुण अग
एमैं तुम भक्ति प्रभाव कर॥ करत लहत भवपार॥२॥ छंद मोतियादाम॥ जयो जिनदेव दयासु
जयो तुम सेवक है सुर आन॥ जयो तुम ध्यान धरे रिषिराज॥ जयो भवसागर माहि जिहाज

वलीश्रुतपारगइंद्रमहानवलीवुधधारिमुनीश्वरजान प्रभूतुमरेगुणकोंनहिपारलहेकवहूं
हकालमझार २ अनोपमरूपपतीमहाराज सदासवकोंसुखदायकसाज प्रभूहस्थ्यासनपै
अनिवार विराजतहेपद्मासनसार ३ फिरैशिरछत्रसुतीनअनूपमनोंशशिआपभयेत्रयरू
प महामुक्ताफलझालरसार मनोशशिसूरजजोतिअपार ४ मनोहरचौसठिचामरदेवसुढा
रतनित्यकरैसुरसेव दशोंदिशिदुंदुभिकोवहुसार करैउंभक्तिभरेसुरजोर ५ सदावरसावतहैसु
रसारसुकल्पतरोवरफूलअपार करैचहुंओरहिसंजयकार धरैवहुभक्तिहदैअनिवार ६ करै
वहुवृष्टिसुगंधितनीर महासुरमेघकुमारगहीर चलावतगंधसुगंधप्रचार धरैउरभक्तिसुवात
कुमार ७ वडेदिवइंद्रजहांदरवान नलेवलरूपपतीगुणखान तहांभुवनत्रिककोंनमहान
रहेपशुमानुषजोतिहथान ८ प्रभूतनदिव्यप्रभाअनिवार अनोपमचक्रसमाननिहारलखेभ
विजीवभवांतरसात प्रभूअतिसेयहजानिविख्यात ९ तहांवटरुक्षअशोकदिपंतप्रभाजिहिं
कीशशिसूरछिपंतहरेभविजीवनकेसवशोक धरैगुणयेहिविख्यातअशोक १० अनंतचतुष्ट
यमंडितदेवप्रभूत्रयलोकपतीस्वयमेव करोसवकोंउपदेशअनूपकरोंमविकोंसुखश्रेयसरू
प ११ प्रसिद्धयहीसुनकेतुमनामलयोशरनोंमुनियेगुणधाम भयोहमरेउरसत्यविचारतुम्हीं

गमैंहितदायकसार॥२२॥करोहमरोमनवांछितकाज॥हरोहमरोदुखसाजसमाज॥भरौमनुजी
शअनूप॥धरोयहअर्जहदैजगभूप॥२३॥दोहा॥प्रभूपतितपावनतुम्ही॥मैंअतिपतितअपा
वलदीजियेसम्यकज्ञानमहान॥२४॥अर्घं॥सोरठा॥करुनानिधिमहाराजसरनस
भवजलमाहिजिहाज॥मोकौंपारकरोसही॥२५॥इत्याशीर्वाद॥ ॥२६॥ ॥
प्रथम कार्घं॥नंदीश्वरदक्षिणविषैंजोप्रतिमातिहथान॥तिनसबकौत्रययोगकरिपूजोनिज
दान॥१॥ ॥इतिनं॰ दक्षि॰ पूर्णार्घं॥ ॥इतिदक्षिणदिशसंबंधीपूजासंपूर्णम्॥
अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाअंजनगिरजिनालयपूजामाह॥गीताछंद॥वरदीपअष्टमदिशापश्चि
मछविगिरढोलहैं॥तसुनामअंजनतासऊपरजिनागारअमोलहैं॥तहांएकशतवसुप्र
नविंवमहानहै॥तिनकेचरनमनलायपूजोदेतशिवकल्यानहै॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिम
अंजनगिरपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पम्॥चालद्यानतरायजीकृतपू
की॥समभावमहाशुचिनीरमानभंगभरो॥अरहंतचरनधरिधीरपूजनध्यानधरो॥नंदीश्वरद्वी
तानपश्चिमदिशसोहै॥तापरजिनमंदिरजानसुरपतिमनमोहै॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपप
अंजनगिरिपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥वसुकर्मविनाशनहारपरनतिआतमकी॥म

दन गंध अपार । शिव पद पूजन की । नंदी० ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ अति निर्मल सुद्ध स्वभाव अक्षत स्वच्छ
कहा । श्री सिद्ध चरन चित लाय । पूजत सुक्ख लहा । नंदी० ॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ शुचि अमल स्वभाव सुगंध
कुसुमावलि जानो । पूजत जिन चरन अमंद । निर्भय पद पानो । नंदी० ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ निज ज्ञान दे
वल धार । परनति चरु सोहै । शत इंद्र पूज्य पद सार । पूजत शिव मोहै । नंदी० ॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ सत ज्ञान जो
ति अविकार । दीपक तेज करो । धरि ध्यान स्वरूप विचार । प्रभु पद पूज करो । नंदी० ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ सित
ध्यान दहन सहचार । आतम भाव महा । यह धूप सुगंध अपार । पूजत सुक्ख लहा । नंदी० ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं
विधि भंजन भाव अनूप । उत्तम फल सोहै । पूजत भवि सित चिद्रूप । सो शिवपति होवै । नंदी० ॥८॥ ॐ
ह्रीं फलं ॥ वसु कर्म विनाशक वीर । वसु गुण धारक है । वसु द्रव्य लाय भवि धीर । पूजत सुक्ख लहै ॥९॥ ॐ
ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ नंदीश्वर पश्चिम दिशा । अंजनगिरि सु विशाल । ता पर जिन गृह पूजिये । अ
ब वरनूं जयमाल ॥१॥ पद्धडी छंद ॥ जय नंदीश्वर वर द्वीप जान । ताकी पश्चिम दिश में महान । तहां अंज
नगिरि वर स्याम रंग । चौफेर गोल सम ढोल रंग ॥२॥ योजन चौरासी सहस जान । उन्नत चौगिरद शशे
भमान । चारों दिश वापी चार जान । वर्गाकृति लख योजन प्रमान ॥३॥ जल जो न नग हरा इक हजार प्र
ति निर्मल टंकोत्कीर्ण नाम । तिहि बीच परो दधि मुख पहार । अति श्वेत वर्ण महिमा अपार ॥४॥ युग

कोनमाहि रतिकरलसंत ॥ तिनसबपरजिनगृहदीपिवंत ॥ अब अंजनगिरकोसुनिवखान ॥ ऊपर जि
नमंदिरशोभमान ॥ ५ ॥ सबसमवशरनरचनाअनूप ॥ तिहिमध्यविराजेजिनसरूप ॥ पद्मासनछवि
वीनजायसुरसुराधीशनितनमेंआय ॥ ६ ॥ अतिभक्तिभरेपूजारचाय ॥ बहुनृत्यकरेंबाजेबजाय
तहांदेवीदेवनकेजुसंग ॥ नवरसपरकाशकरेंअभंग ॥ ७ ॥ बहुवजेंदुंदुभीगगनजोर ॥ दिशछायरहीजै
यशब्दसोर ॥ जैजैजिनसागरजगजिहाज ॥ जैजैजिनसुखदायकसमाज ॥ ७ ॥ आनंदजलधिकोशशि
प भविमनकमलनकोंरविसरूप ॥ जयजन्मरोगकोंसुधाधार ॥ जयक्लेशदहनकोंमेघधार ॥ ८ ॥
सर्पकोंवैनतेय ॥ जयमोहजहरकोंअमीपेय ॥ जयअंतककोंअंतकसमान ॥ जयविषयवनी
दवमहान ॥ ९ ॥ जयज्ञानसंपदाकेअधीश ॥ तातइंद्रनमेंनितनायशीश ॥ प्रभुध्यानद्वारममहृदय
निकरवास ॥ औरकछुचाहनाहि ॥ १० ॥ यहकरोकृपासर्वज्ञदेव ॥ करतारआपयहविरदलेव ॥ निजनि
लत्रयपरमदेव ॥ करजोरिजिनेश्वरकरतसेव ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तुमदातासाताजगतमेंसुखसाताकर
दाताममऊपरकरोकृपासहितहितकार ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ सोरठा ॥ केवलज्ञानप्रकाशस्वपरस
ज्ञायकसराबहतजिनेश्वरदासआसभरोसेवकतनी ॥ १३ ॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥२७॥ ॥
प्रथमश्रीनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशप्रथमदधिमुखपूजामाह ॥ कुसुमलताछंद ॥ नंदीश्वरकीपश्चिम

दिशामेंस्यामवरनअंजनगिरजान॥ताकेपूरववीचवापिका॥स्वेतवरनदधिमुखगिरमान॥दशहजा
रयोजनउन्नतअरुढोलसमानगोलअभिराम॥ताकेऊपरजिनगृहप्रतिमाअकृत्तिमसोहैगुणधाम
॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाप्रथमदधिमुखपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥
वालहेलीकी॥जजोंजिनवरसुखदाई॥मुनिहोभविभाईजजो॰॥टेर॥पद्मद्रहकोउज्जलजललेकं
चनभृंगभराई॥मनवचकायलगायविनयसूंपूजोंश्रीजिनराई॥जन्मत्रिदोषनशाई॥मुनियोभविभाई
जजोंजिनपदसुखदाई॥नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकेपूरवभाई॥दधिमुखगिरपरजिनगृहसोहे
पूजतसुरपतिआई॥देववहुभक्तिवढाई॥जजो॰॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाप्रथमदधिमुखजि
नालयेभ्योनमः॥जलं॥केशरअगरकपूरसंगमेंचंदनगंधमिलाई॥त्रिभुवनपतिपदपूजरचायोभव
आतापनशाई॥लहोनिजशीतलताई॥जजो॰॥२॥ॐह्रींचंदनं॥मुक्ताफलकेपुंजमनोहरसुरपतिचरण
वढावे॥हमनिजशक्तिसमानशालिले॥जिनजजिपुण्यवढावे॥सहीमनवांछितपावे॥नंदी॰ज
जो॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥वरनवरनकेपुष्पसुगंधितकंचनथालभराई॥कामकरूरगरूरहननकोंचर
णजजोंजिनराई॥सहीजयसंपतिपाई॥मुनिहो॰नंदी॰जजों॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥फेनीगोंजामोदकखा
जेमातेतुरतवनाई॥रोषक्षुधादुखदूरकरनकोंवरननरेतचढाई॥जिनेश्वरभक्तिवढाई॥मुनिहो॰

नंदी०॥जजों॥४॥ॐह्रीं चरुं॥परमागमअनुकूल दीपले श्रीजिनमंदिर जाई॥चरण जजत
को मोहतिमर विनशाई॥लहै त्रिभुवनप्रभुताई॥सुनिहो०॥नंदी०॥जजों॥६॥ॐह्रीं दीपं॥दश वि
द्रव्य शुचि लेके॥उत्तम धूप बनाई॥पूजत श्री अरहंत चरणको॥वसु विधि कर्म नशाई॥वरै शिवनारि सु
हाई॥सुनिहो०॥नंदी०॥जजों॥७॥ॐह्रीं धूपं॥एला लौंग बदाम छुहारे॥पिस्ता आदि मिलाई॥शिवफ
लदायक देव जिनेश्वर॥पूजत सुफल लहाई॥यही उर निश्चलताई॥सुनिहो०॥नंदी०॥जजों॥८॥ॐह्रीं फलं॥
जल चंदन अक्षत प्रसून ले॥नेवज सद्य बनाई॥दीप धूप फल द्रव्य मिलाकर॥अर्घ बनावे भाई॥
श्वर चरन चढाई॥सुनिहो०॥नंदी०॥जजों॥९॥ॐह्रीं अर्घं॥जयमाल॥दोहा॥शतमुख शत सेवै
शारदशी ज्ञानदाय॥शारद जनक जिनेशपद॥वंदौं मनवचकाय॥१॥पद्धरी छंद॥जयदीप अ
नाकी पश्चिम दिशा॥शोभमान॥तहां अंजनगिरि पर्वत उतंग॥अतिगोल ढोल स
मनाकी पूरव दिशमें सुजान॥दधिमुखगिर वापी बीच जान॥योजन हजार दश है उतंग॥अ
ल गोल लई धरै जु रंग॥ताऊपर जिनवर गेह जान॥सो योजन जानो लंबमान॥
ऊंचो पचहत्तर उर विचार॥७॥तिहिवीच नीरचना अनूप॥सब समवशरण शोभास्वरूप॥
आठविंब अतिशोभमान॥वसु प्रातिहार्य शोभासमान॥४॥पद्मासन छवि वरणी न जाय॥

करैसुरशीशनाय॥हरिशचीसहितपूजारचाय॥बहुभक्तिसहितजिनगुणसुगाय॥५॥निजजन
न्मसफलसुरकरैसोय॥तुमचरणजजतग्रतिमुदितहोय॥धनिजीवनजिनकोजगमझार
जोप्रभुकोदेखतनयनद्वार॥६॥तुमधन्यदेवग्रद्भुतसरूप॥छविनिरखततृप्तिनत्रिदशभूप
तवहरिनेकीनीसहसग्रांख॥करजीभसहसवचविनयभाख॥७॥बहुस्तुतीकरीनिजशीशना
य॥जानोनिजकोंधनिदेवराय॥निजभक्तिसहितजिनजपेनाम॥सोनिश्चैपावैसुकलधाम॥८॥प्र
भुवीतरागछविनिरविकार॥ग्रनटप्रगटग्रचेतनग्रंगसार॥तोभीभविजनकोंसहजरूपदाय
कदिवशिवसंपतिग्रनूप॥९॥जिमचिंतामणिनररतनपायसार॥निर्जीववस्तुजगकेमझार॥म
नकल्पितसुखदातारसोय॥त्योंसुखदायकजिनबिंबहोय॥१०॥यहग्रागमवचनप्रमाणजान॥भ
विजीवलख्योपारसपुराण॥यहनिर्णयतहांकीनोमुनीश॥हमतिनकोंनमतनमायशीश॥११॥
वहसुगुरुवचनजिनछविग्रनूप॥वरदातासाधकतानरूप॥भवभवमेरीकीज्योसहाय॥ज्योंसु
खीजिनेश्वरनितरहाय॥१२॥दोहा॥दधिमुखजिनमंदिरतनीपूरनयहजयमाल॥जोबांचैमन
लायकैताकेभागविशाल॥१३॥ॐह्रींग्रर्घ॥सोरठा॥जन्मरोगग्रनिवारताकोदूरकरोप्रभूग्रा
योतुमदरबार॥तुमसहायसबजगविषै॥१४॥इत्याशीर्वादः॥ ॥२३॥ ॥ग्रथश्रीनंदी

श्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयरतिकरपूजा माहा॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वरपश्चिम अंजनगिरताकी
दिशामेंजान॥ वापीबीचविराजेंदधिमुखमेंदधिमुखगिरशुभगोलमहान॥ ताकेऊपरश्री
मंदिररत्नमईअकृतिमपान॥ श्रीजिनविंबअठोत्तरइकसोमनवचक्रमवंदोंसुखदान॥१॥ ॐह्रीं नंदी
श्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयरतिकरदधिमुखजिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥
त्रिभंगीछंद॥ शुचिसागरक्षीरंसीतगहीरंनिर्मलनीरंसुरल्यावें॥ भरिकंचनझारीतृषानिवारी
रनाके नंदीश्वरपश्चिम अंजनगिरकेदक्षिणदधिमुखगिरसोहै॥ तापरजिनमंदिर
मंतपुरंदरजिनप्रतिमा अतिमनमोहै॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयदधिमुखप
जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ मलियागिरचंदनदाहनिकंदनकदलीनंदनसहितघसौं॥ भवताप
वारनशिवसुखकारनजिनपदजजिजिनपासबसौं॥ नंदी०॥२॥ ॐह्रीं चंदनं॥ शशिकिरणसमा
तमहानामुक्ताफलसुरल्यावत हो॥ हमशक्तिसमाना शालिप्रधाना अक्षतपुंजचढाव
अक्षतं॥ दृगमनकोप्यारेगंधपसारेसुवरनवारेपुष्पमहा॥ जिनचरनचढावेंभक्तिबढा
चावेसुक्खगहा॥ नंदी०॥४॥ ॐह्रीं पुष्पं॥ कंचनकीथारीभरिसुखकारीविविधप्रकारीचरूलावें॥
एचढावें [illegible] बढावेंप्रभुगुणगावेंशिवपावें नंदी०॥५॥ ॐह्रीं चरुं॥ वहुउज्जलजोतंतमछ्य

नंदीपकसोंजिनपदपूजै॥ अरिमोहनशावैजिनदरसावैकेवलज्ञानंयतीहूजे॥नंदी०॥६॥ॐह्रीं दीपं
कृस्नागरधूपंगंधअनूपंतिहुंजगभूपंपूजकरौं॥वसुकर्मजलावैजिनपदपावैज्ञानजोतिशिवना
रिवरो॥नंदी॥७॥ॐह्रीं धूपं॥फलसरसनवीनेपावनलीनेत्रिभुवनपतिपदभेटकरौ॥उत्कृतिनशि
जावैपुण्यवढावैक्रमक्रमसौंशिवनारिवरो॥नंदी॥८॥ॐह्रीं फलं॥वसुद्रव्यमिलावैजिनगुणगावै
अर्घवनावैभरिथारी॥जिनचरणचढावैभक्तिवढावैदिवसुखपावैभविभारी॥नंदी॥९॥ॐह्रीं अर्घं॥
जयमाल॥दोहा॥मुनिमहंतऋषिराजसवैध्यानधरैमनलाय॥सुरपतिनरपतिनागपतिचरण
जजैमनल्याय॥१॥सर्वआसपूरणकरो भरोसर्वहितसाज॥हरोहमारीवेदनावीतरागमहाराज
२॥त्रोटकछंद॥जयवंततुम्हीशिवलायकहो॥सतसंतनकौंशिवदायकहो॥अघकर्मअरीगणघाय
कहो॥निजसंपतिदायकदायकहो॥१॥विषयादिकमेंनहिरागभयो॥भरजोवनमांहिविरागलयो॥प्रभु
अंतरजोतिप्रकाशरही॥तजिनेहदिगंवरवृत्तिगही॥२॥षट्खंडरमाछिणमेंतजिकै॥निर्ग्रंथदशावनमें
सजिकै॥निजरूपसुधीमनमेंभजिकै॥अरिमोहहनौरनमेंपजिकै॥३॥त्रिकघातिमरैछिनमेंलजि
कै॥प्रभुजीतलहीतवहीसजिकै॥नभमेंसुरवाहनआवतहैं॥वहुदुंदुभिघोरवजावतहैं॥४॥जय
कारनकीधुनिछायरही॥रजीतधुजाफहरायरही॥दशहूंदिशसेंसुरआवतहैं॥वहुदूरहितें

चौंवनपू॰ ॥५४॥

रनावतहैं॥५॥उरहर्षभरेगुणगावतहैं॥सुरकामिनिनी नवजावतहैं॥नवहूरसभावदिखा
सुनिभक्तिप्रचारसिखावतहैं॥६॥सुरहेकशची मिलनत्यकरैं॥सवसाजसजावतनृत्यभरैं॥
मानहिंजातकहीतिनकी॥अनिमेषलखैंछबिश्री जिनकी॥७॥फिरकीजवलेतमहाछवि
पमानहिंजायकहीकविसों॥नलयाकृतिकीडअभादरशैं॥अनुदामिनिगोलमहापरसैं॥८॥
एसूक्ष्मरूपमहानधरैं॥तणथूलशरीरप्रकाशभरैं॥तण मैंगतिमंदप्रकाशकरैं॥त
लप्रकाशकरैं॥९॥हरिअद्भुतनाटकआपकरैं॥जिनकीमहिमाकहिनाहिपरैं॥ यवन्त
रदेवसही॥जिनकीमहिमानहिंजायकही॥१०॥प्रभुमोउरमाहिवसोनितही॥
सोनितही॥ममविघ्नसमूहनशोनितही॥उरसम्यकज्ञानलसोनितही॥११॥सवसेंनिस्नेह
तहो॥नवरागविरोधनलावतहो॥सवकोसुनिर्मानरहावतहो॥नदिरीनदयाउकहावतहो॥१२॥
यहअद्भुतवातवडीप्रभुजी॥जसवेलत्रिलोकवडीप्रभुजी॥भविकेउरभक्तिवडीप्रभुजी॥सुख
कजडीप्रभुजी॥१३॥यहभक्तिमहानिधिदेहुहमें॥सतज्ञानदयानिधिदेहुहमें॥जग
देवतुम्ही॥भवपारउतारनदेवतुम्ही॥१४॥दोहा॥करुनाकरजिनराजजी॥अशरन
सहाय॥परजजिनेश्वरकीसुनों॥तुमत्रिभुवनकेराय॥१५॥अर्घं॥सोरठा॥देहुस्वरू

नूपायहीरूपाप्रभुकीजिये॥फिरनपरूंभवकूपसाम्राज्यअवदीजिये॥८६॥ॐह्रीं॰अर्घं॥इत्या
शीर्वादः॥ ॥२८॥ ॥अथश्रीनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशातृतीयदधिमुखपूजामाह॥ ॥
कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरपश्चिमदिशराजेश्यामवरनअंजनगिरनाम॥ताकेपश्चिमदधिमुखसे
तवापीवीचखेतअभिराम॥ताकेऊपरश्रीजिनमंदिरप्रतिमाइकशतआठललाम॥जिनकेचरण
कमलसुरपूजै॥हमपूजतनिजघरवसनाम॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशातृतीयदधिमुख
पर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰अत्र॰अत्र॰॥पुष्पं॥चालहोलीकी॥सुधीजिनपूजरचावे
यातैंनिजसंपतिपावै॥टेर॥कंचनझारीमेंजलउत्तमभरिजिनमंदिरजावे॥जन्मजरादुखदूरक
रनकौंश्रीजिनचरनचढावे॥हर्षअतिहिरदेलावै॥यातें॰॥नंदीश्वरकीपश्चिमदिशमेंअंजनगि
रसुभराजे॥ताकेपश्चिमदधिमुखगिरपरजिनमंदिरछविछाजे॥तहांनिजभावलखावे॥यातै॰
ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशातृतीयदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनअगरुकपूर
मिलाकैंकेशरसंगघसावे॥जिनवरचरनजजतभविजनजोभवआतापनशावै॥यहीनिश्च
यउरल्यावो॥यातैं॰॥नंदी॰॥२॥ॐह्रीं॰चंदनं॥देवजीरसुखदासकमोदकअक्षतधोयवनावे
त्रिभुवनतिलकदिगंबरप्रभुकेचरननपुंजचढावैं॥हृदयमेंजिनगुणगावैं॥यातैं॰॥नंदी॰॥३॥ॐ

ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ वरनवरनकेपुष्पमनोहरशुद्धसुगंधसुहावै ॥ कामदाहनिरवारनकारन ॥ श्रीजि
णचढावै ॥ भक्तिमयनृत्यकरावै ॥ यातें० ॥ नंदी० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ फैनीगुंजामोदकखाजे ताजेतुर
वै ॥ क्षुधारोगनिरवारनकारन ॥ श्रीजिनचरनचढावो ॥ सहीनिश्चयपदपावो ॥ यातें० ॥ नंदी०
॥ कंचनमणिमयदीप अनोपम ॥ सुरसुरपतिवहुलावै ॥ हमनिजशक्तिसमानदीप
जिनपूजरचावै ॥ स्वहितकरगुणगावै ॥ यातें ॥ नंदी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ दशविधिधूपसुगंधवना
यकुवादित्रवजावो ॥ कर्मदहनके काजदहनमें जिनपदधूपचढावो ॥ आठविधिकर्मनशावै
या ॥ नंदी ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ लोंगवदामछुहारापिस्ताएलाआदिमगावो ॥ शिवफलका
क्ति भावसों ॥ फलजिनचरनचढावो ॥ मुक्तिफलकमसेंपावो ॥ यातें ॥ नंदी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
द्रव्यमिलायगायगुणउत्तम अर्घवनावो ॥ मुक्तिमहाअभिरामधामकोकारणवरण
सदाथिररूपरहावो ॥ यातें ॥ नंदी ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ घातिकर्मघाताप्रभूपायो
लज्ञान ॥ जिनकेचरणसरोजरजहृदयवसोदिनरात ॥ पूजनकरजिनराजकी ॥ उरमेंभक्ति
विशाल ॥ वारहनिकसेसिद्धमिस ॥ कहुंसुनियेजयमाल ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ जयश्रीजिनराजविरा
जितहो ॥ समवसृतमेंछविछाजतहो ॥ हरिविष्टररत्नजड़ावमहा ॥ सुरपूजतश्रीजिनराजकहा ॥ १ ॥

रऊपरश्रीजिनपग्रधरे प्रभुराजतचोसठचमरढरे शिरछत्रफिरेत्रयजोतिमहा शशिसूरजजो
तिछिपावलहा रनभमेंसुरदुंदुभिघोरवजे वरसेवहुपुष्पसुगंधफवे धुनिदिव्यअनहरणाजर
ही जिहिकीउपमानहिजायकही ७ सवजीवअजीवअभेदगनों अरुधर्मअधर्मसरूपभनों
सवकालअकालप्रकाशकियो षटद्रव्यइहांभविजानिलियो ४ जीवअकाशत्रिलोकतनो अ
रुधर्मअधर्मजुद्रव्यगनो इनिचारनिकेपरदेशसही सममध्यअसंखप्रदेशसही ५ नभसर्व
अनंतपरेदशकियो अरुपुद्गलद्रव्यत्रिभेदभयो महसंखअसंख्यअनंतकहा भविजीवन
नेंसतभावगहा ६ पुनिकालअणूसवभिन्नकही तिसतेंइसकोंनहिकायकही सवजानिअ
संख्यप्रमाणअणू यहनिश्चयकालजिनंदभनों ७ व्यवहारत्रिकालअनंतप्रभा वरतावभवि
ष्यतओरगना षटद्रव्यपसारत्रिलोकविषे यहुवर्णनआपजिनंदअखे ८ दशहूदिशओर
अलोकसही नहिदूसरद्रव्यजिनेशकही इनकीसरधाभविजीवकरे दृढसम्यकसोउरमा
हिधरे ९ जिनराजकृपालकृपाकरिये दुखजन्मजरामरणोहरिये जयवंतजिनेश्वरधर्मसदा
उरमाहिरहेसतमर्मसदा १० दोहा अशरनशरनसहायतुम शरनागतसुखदाय दीनजानि
कीजेदयातुमदयालजिनराय ११ अर्घ्यं दोहा हरोसर्वअघसाज करोरहुनिजभावकी

सरोहमारोकाज॥यहविनतीसुनिलीजिये॥१२॥इत्याशीर्वाद॥ ॥३०॥ ॥अथनंदीश्वरद्वी
पपश्चिमदिशचतुर्थदधिमुखपर्वतपरजिनालयपूजाप्राह॥ ॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरकीपश्चि
दिशमेंअंजनगिरअतिस्यामसरूप॥ताकीउत्तरदिशमेंराजेदधिमुखदधिसमस्वेतसरूप॥दशहज
रयोजनकोऊंचोगोलडोलसमशोभअनूप॥तापरअकृत्तिमजिनमंदिरजजतसुरासुरतिहुंज
॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशचतुर्थरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पां
चालछंद॥जलउज्ज्वलशीतललीजे॥जिनवरकेचरणजजीजे॥सबजन्मजरादुखनाशे॥निजशांतसु
नपरकाशे॥नंदीश्वरपश्चिमजानो॥अंजनकीउत्तरमानो॥दधिमुखपरजिनगृहसोहै॥सुरअसुर
वैमनमोहै॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशचतुर्थदधिमुखजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥चंदन
लियागरसार॥घनसारसुगंधअपार॥भवातापविनाशनकाजे॥पूजोभविजनजिनराजे॥नंदी०॥२॥
ॐह्रींचंदनं॥सिततंदुलधोयधरीजे॥अतिउत्तमथालभरीजे॥अक्षतसोजिनपदपूजो॥अक्षयपदको
पतिहूजे॥नंदी०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥अशरीरअरीदुखकारी॥त्रयलोककियेवशभारी॥तिहिअरिके
जीतनकाजे॥फूलनसोंजजोजिनराजे॥नंदी०॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥यहकर्मअसाताभारी॥सबजीवनको
दुखकारी॥ताकेनिरवारनकाजे॥चरुसोंजजिहोंजिनराजे॥नंदी०॥५॥ॐह्रींचरुं॥यहमोहमहातमभारी

जगमाहि छयो अनिवारी ॥ तिहि दूर करण के काजे दीपक सों जि जिनराजे नंदी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ ५
कर्म वडे दुखकारी ॥ सब जीव करै भयभारी ॥ विधि गर्व जलावन काजे धरि धूप जजौं जिनराजे नंदी ॥ ७
ॐ ह्रीं धूपं ॥ फल उत्तम जे जगसारी ॥ भरि सुवरण भाजन मांही ॥ जिनवर के चरण चढावे ॥ सो भव्य महा
फल पावे नंदी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जल फल वसु द्रव्य मिलावै ॥ करि अर्घ प्रभू गुण गावे ॥ जिनवर पद
पूज रचावे ॥ याते पंचम गति पावे ॥ नंदी ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ नंत चतुष्टय धारि जिन पर
मोदारिक देह ॥ जिनके पद पंकज जजे ॥ उरमैं धारि सनेह ॥ १ ॥ दोहा ॥ नंदीश्वर उत्तर दिशा ॥ दधिमुख गि
रके भाल ॥ जिन मंदिर पूजा भई ॥ अब वरनों जयमाल ॥ २ ॥ जयो जगमैं जिनराज महान ॥ जयो प्रगटो
जब केवलज्ञान ॥ जयो सब इंद्र सुरासुर संग ॥ जयो जयकार करंत अभंग ॥ २ ॥ वजै बहु दुंदुभि जोर अका
शा ॥ दशों दिश छाय रह्यो बहु सोर ॥ अनेक सुवाजिन को बहु सोर ॥ तथा जयकार महा चहुं ओर ॥ ३ ॥ सु
चारित रूप मही रनरंग मभू ॥ असहाय अरी बहु संग महा ॥ महा अरि च्यार हने वल जोर ॥ उसी जयश्री
पति को यरु शोर ॥ ३ ॥ सभा दश दोय विषैं जिनराज ॥ करै उपदेश महा रष काज ॥ सबो जग जंतू के हि
त काज ॥ खिरै जिनकी धुनि दिव्य अवाज ॥ ४ ॥ सुनै भवि जीव लहै सत ज्ञान ॥ जगे उरमांहि सुभेद विज्ञान
धरै रूप भाव सुधी लघु भेष ॥ करै व्रत संजम वृत्ति विशेष ॥ भजै भवि जीव परिग्रह भार ॥ सजै जिनरूप

करावैमन अनंदी॥ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ कल्पवृक्षकेउत्तमफललेउत्तमपूजरचावै॥ नवरसभावप्रगट
करकेसुरपतिनृत्यकरावै॥ ह देवकुभक्तिवढावैमन अनंदी॥ ८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलद्रव्यमि
लायभावसोंपूजनमैंमनलावैसुरसुरपतिजिनपतिपदपूजैदुंदुभिदेववजावैकुसुमवरषा
रषावैमन॰ नंदी॥ ९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ सुरपतिनरपतिनागपतिखगपतिपुरुषप्र
णपूजैजिनवरचरणकोंनिजहितआनंदमान॥ १॥ पद्धडीछंद॥ जयजयजिनराजदयानिधा
॥ भवसागरतारणपोतजान॥ जयआपतरैभविजीवतार॥ यौतारणतरणजिनेशसार॥ २॥
जीवनकोंकल्याणरूप॥ शिवमगकोंवतलायोअनूप॥ याहीसैंकरुनानिधिजिनेश॥ जिनकेपद
नमुरसुरेश॥ ३॥ भवकूपपडेजेजगतजीव॥ दुखसहितकालवीत्योअतीव॥ तिनकोसु
शेषायोंपतितउधारकर्म॥ जिनेश॥ आयादुखदायकभवसिंधुमाहि॥ जियकोंकोईनशरन
से॥ अशरनकोंशरनरूप॥ तुमहीसहायहोजगतभूप॥ ४॥ अतिदीनरंकजेजगतमाहि॥ ति
नकोकोईशरननाहि॥ तिनकेविनकारनसुखदभ्रात॥ प्रभुदीनवंधुतुमहीविख्यात॥ ५॥ ज
प्ररिकर्मवेशकंपैतिहिमैंसुरअसुरशोषा॥ सोतुमनेंजीत्योहेजिनेश॥ यातैंहोअतुलवली
॥ हदुखहेतुअसाताअंतराय॥ तिनकोसहचारकमोहराय॥ तिनसवकोजीत्योतुमकृपाल॥ यों

खअनंतभोग्योविशाल॥७॥सवद्रव्यनकीपरजायसार॥होगईतथाजोहोनहार॥तिनसवकोंजानों
समयमाहि॥यौंज्ञानअनंतोतुम्हीमाहि॥८॥त्रयकालतनेसवद्रव्यरूप॥इकसमयमाहिदेखोअनू
प॥योंदर्शनदेवअनंतधार॥जिनकेपदवंदौंवारवार॥९॥सवजीवनकेगुणदर्शज्ञान॥क्रमवर्तीप्रगटै
सत्यज्ञान॥तुमयुगपतजानोंलखोसार॥यहलोकोत्तरमहिमाअपार॥१०॥प्रभुतुमगुणमहिमाअ
गमसोय॥हमपरकैसेंनिरवाहहोय॥यौंकरुतवडेरूषिराजदेव॥भविजनकोंसुखदेवेंखमेव॥११॥जो
वडेवीरनदिलहैपार॥तोरंकजीवकीक्यासम्हार॥पैतुमसमरथदातादयाल॥सवकोंफलद्योंतिहिं
योंगहाल॥१२॥तुमपदसरोजकीसेवदेव॥भविजनकोंसुखदेवेंखमेव॥यरुअद्भुतशक्तिअनंतरूप॥
तुमविननहिंअंतलहैंअनूप॥१३॥तुमपदकोंवंदोंवारवार॥संसारजलधिसेंकरोपार॥तुमसवदे
वनकेदेवदेव॥करजोरिजिनेश्वरकरतसेव॥१४॥दोहा॥सुरपतिनरपतिनागपति॥तुमसवकेपति
देव॥अरजजिनेश्वरकीसुनोंदेहुसुगुनसवभेव॥१५॥अर्घं॥सोरठा॥तुमभवजलधिजहाज॥तारनत
रनसहीप्रभू॥अरजसुनोंमहाराज॥मोकूंभवदधितारिये॥१६॥इत्याशीर्वाद॥ ॥३॥ ॥अथ
श्रीनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाद्वितीयरतिकरपूजाप्रारंभ॥कुसुमलताछंद॥अष्टमदीपदिशापश्चि
ममेंअंजनगिरकेपूरवसार॥दूजेकोंनवापिकामाहीरतिकरपर्वततनआकार॥ढोलसमानगोल

तरफंजो जनमहसऊर्द्धतासारतापरश्री जिनमंदिरसोहैजजतसुरासुरअष्टप्रकार॥ॐह्रींनं
दीपपश्चिमदिशद्वितीयरतिकरपर्वतपरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॰अत्र॰अत्र॰॥पुष्पं॥गीता
॥शुचिगंधमिष्टमहानउज्जलनीरमनिकारीभरो॥सुरलोकपतिअरुअसुरपतिजिनराजके
यनपरो॥वरद्वीपअष्टमदिशापश्चिमद्वितियरतिकरराजही॥जिनभवनतापरदेवपूजे
जही॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥घनशालक
लीशालमिश्रितदशोंदिशमहकावही॥भवतापनाशनहेतसुरपतिजजतजिनसुखपावही॥वर॰
॥ॐह्रींचंदनं॥सुखदासअरुकमोदतंदुलसरसउज्जलधोइये॥जिनचरनपूजनकाजअक्षत
लसजोईये॥वर॰॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥सुरलोककेशुचिगंधपूरितकुसुमसुरपतिलावही॥त्रैलो
विजयीपंचसरसूंकरतपूजसुखावही॥वर॰॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥पकवाननानाभांतिताजेमोदकादिब
ईये॥दुखक्षुधानाशकसुरअसुरनितचरनमाहिचढाईये॥वर॰॥५॥ॐह्रींचरुं॥वरदीपमणिमयु
विनाशकसुरअसुरनितलावही॥त्रैलोकपतिश्रीअरहंतप्रभुकेचरनमाहिचढावही॥वर॰॥ॐ
पं॥६॥दशगंधसारसुगंधदशदिशहोयधूपमहानहै॥जिनचरनपूजितअसुरसुरपति
खहितदानहै॥वर॰॥७॥ॐह्रींधूपं॥फलसारमिष्टविशालशुचिहीत्यादिशमिष्टसुल्यावही॥ ॥५६॥

रवानकारणभव्यजनजिनराजचरणचढावही॥वरं॥८॥ॐ ह्रीं फलं॥ जलगंधअक्षतपुष्पनेव
जदीपधूपफलावली॥जिनराजचरणचढायपाके भव्यजिनगुणआवली॥अर्घ॥९॥ॐ ह्रीं अर्घं॥ज
यमाल॥दोहा॥ अंतरबाहरकेसबे जाहरशत्रुअनेक॥ तिनसबमैंजिनराजजीराखोनिजहित
टेक॥१॥पासवासकीआसउवासयहीअरदास॥परमजिनेश्वरदेवतुमामैंहूंजिनवरदास॥२॥
पद्धडीछंद॥ जयजयअरहंतमहंतदेव॥जयचरननकीसुरकरतसेव॥तुमनामजपतसुरलोकथा
म॥अविवेकीपशुभीलहेनाम॥१॥तोभक्तिवंतनभव्यजीव॥क्योंनहीलहेशिवसुखअतीव॥अर्ह
तनामकोअर्थसार॥याकेविवरणसुखदायसार॥२॥इसअर्हधातुकोपूज्यअर्थ॥याकेअर्हंत
पदनहीव्यर्थ॥जगपूज्यपुरुषकीविनयसेव॥सुखदायकसेवककोस्वमेव॥३॥अंतरअरिहरि
करिलईऋद्धि॥अरहंतनामयातैंप्रसिद्ध॥निश्चयसुदृष्टिकरिकर्मरव॥परमागममैंयहकियोभेव
॥४॥ज्योहोयआपशिवसुखसरूप॥औरनकोंदेवशिवसुखअनूप॥तुमसर्वसुखीसुखदेवदान॥
यातैंतुमसुखदायकप्रमाण॥५॥जोआपयाचनाकरैकाय॥सोऔरनकोंक्यादेयसोय॥तुमअजा
चीकपथपति अनूप॥याहीतैंतुमदाताअनूप॥६॥लोकीकसंपदानशेसोय॥ताकोननिरंतरदान
होय॥प्रभुतुमसेपतिअत्तयअनंत॥याहीतैंतुमदानीमहंत॥७॥लोकीकराजसबविनशिजाय॥या

बांवनपू.
॥५०॥

जीवकौंईअघायतुमअलोकीकराजाधिराजजगमाहिंधन्यप्रभुउत्तमसमाज॥८॥बहिरंगर
कौंनहीपार॥तोअंतरंगकोकहैसार॥तिसपरभीतुमप्रभुनिरविकार॥जगधन्यवीतरागीअपार
॥९॥विनक्रोधमोहअरिलयोमार॥विनलोभसंपदाग्रहीसार॥विनद्वेषदुष्टनरकंडार॥विनरागउ
देयतार॥१०॥यहअद्भुतमहिमाअकथदेव॥कहिकोनसकैजगमाहिभेव॥इत्यादि
नप्रभुपरउपगारीवचप्रमाण॥११॥जिनराजहतिनरसुखदतार॥जिहधारिभव्यजनभयेपार॥
आगेंभीभविधरैसोय॥सोसवनिश्चैभवपारहोय॥१२॥यातेंमैंआयोराजद्वार॥हेकृपासिंधुसं
रतार॥मनवचनकायसूंकरूंसेव॥भवपारजिनेश्वरदेहुदेव॥१३॥दोहा॥वसुविधि
सुविधिभविजनकाज॥वसुविधिविजयीदेवको॥चरनजजूंहितसाज॥१४॥अर्घं॥सोरठा॥वीतरा
गमहाराज॥वीतरागताकाजमैं॥शिवसुखपावनआज॥पूजूंपदमनलायकें॥१५॥पुष्पं॥ ॥३३॥
अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशतृतीयरतिकरपूजाप्रारंभ॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरवरद्वीपअपा
ताकीपश्चिमदिशमेंजान॥अंजनगिरपर्वतहैताकीदक्षिणवापीकौंनप्रमाण॥सुरसुरेशतवहां
चावेंहमनिजगृहपूजैंहितदान॥रतिकरगिरकेऊपरजिनगृहजिनवरबिंवअकृत्तिमजान॥१
ह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशतृतीयरतिकरगिरपर्वतपरशिवकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥अत्र॥

व॥ अथ॥ पुष्पं॥ चालछंद गीता॥ जिनंद तेरे पूजवा सुरेश आवते॥ असंख्य देव भक्ति भरे शीश नावते॥ दे
व॥ जलउज्जल सुरलोकको मणिमय भाजन धार॥ जिनपद आगें धार दे तापर जिनमंदिर जजें दायक शि
वकल्यान नंदीश्वर पश्चिम दिशा रतिकर तृतिय महान तापर जिनमंदिर जजें दायक शिवकल्यानजी
जिनंद॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा रतीकर तृतिय जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ चंदनगंध दशों
दिशा केलि रहे भरपूर॥ तासों जिनवर पद जजें सुरगण रहत जरूर जी॥ जि०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ मोती नि
र्मल लोकको सुरलावै भरि थार॥ जिनवर पद पूजा करो वकुरि नवावै भाल जी॥ जि०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ पा
रिजात मंदार के पुष्प सुगंध अपार॥ कामदहन के कारणे पूजों जिनपर सार जी॥ जि०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥
सुरयादवके चरु महा षटरस पूरित सार॥ देव जिनेश्वर चरनको पूजे हर्ष अपार जी॥ जि०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥
जोतिवंत मणिदीपले करें आरती देव मोह महातम हननकों जजें जिनेश्वर देवजी॥ जि०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ अ
तिसुगंधन भवि स्तरी दशों दिशा प्रति धाय॥ पूजे देव जिनेशकों ऐसी धूप चढाय जी॥ जि०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥
उत्तमफल सुरवृक्षके मिष्ट महारसपूर देव चढावे भक्तिसों जिनवर चरन हजूर जी॥ जि० नंदी०॥
ॐ ह्रीं फलं॥ जलफल आठों द्रव्य ले अर्घ बनाय अनूप॥ चरन जिनेश्वर के जजें सर्वे असुर सुर भूप॥ जि०
नंदी०॥८॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ विद्याधर असि चक्रधर अरु त्रिशूलधर देव॥ सर्वस्वगणधर देव

की करे सुरासुर सेव ॥१॥ पद्धड़ी छंद ॥ जयवीर धीर जयवंत देव । विधि अरि कराल को काल एव ॥ जय सं
तम हतन कौं रूपाल । जय दुष्ट मोह कौं हनन काल ॥२॥ जय चारित की रण धरा बीच । सन्मुख देखो
रि मोह नीच ॥ ततकाल वीर वर भेष धार । जिहि देखत मोहे मुक्ति नार ॥३॥ तन धार दिगंबर कवच सार । अ
रु वीतरागता मुकट धार ॥ सत संजम चाप अनूप जान । संवर चित पूरण संवर महान ॥४॥ कर ध्यान रूपा
ण अरोक धार । अथ गुप्ति रूप तिरशूल धार ॥ अरु उपशम रूप अनी कराल । विधि उद
नन भाल ॥५॥ दश धर्म चक्र की धार देख । सब कर्म शत्रु भागे विशेष ॥ नय रत्न शक्ति सरु माल शोय
रु तप गज पर ह्व सवार होय ॥६॥ असहाय आप अरि गण मझार । अरि मोह वली लीनौं हकार ॥७॥ दु अ
रि समूह के मध्य सार । लीनौं तुम नें अरि मोह मार ॥ फिर दूजा रण में लगा तार । असि शुक्ल ध्यान को
र मतार ॥ अरि तीन घातिया लये वीन । नव भोर कर्म भागे अधीन ॥८॥ जय पाय जिनेश्वर देव सोय । त्रैलो
पतीन पए वहीं होय ॥ सब चतुरनिकाई देव आय । तुम पद कौं पूजै शीश नाय ॥९॥ प्रभु समोश
सार चतुरानन आसन पद्म धार ॥ मणि सिंहपीठ पर अंतरीक्ष । राजे सुर मुनि कंपति तिक्ष ॥१०॥ त्रय छत्र
श अति तेजवंत । दिश सूर प्रभा कोटि कलजंत ॥ अरु शोक हनां त्यारों प्रसंग । सुर दुंदुभि नभ में जोर
होय ॥ अरु कुसुम वृष्टि उर करै सोय ॥१२॥ जिनकी धुनि दिव्य खिरै अगाध । सब तत्व प्रकाश

× अरु चौसठ चामर दिव्य सार । सुर ढारत हर्ष हरे अपार ॥ ११ जहां रत्न अशोक दिपै उतंग ॥ ×

धा जिनराजशरीरप्रभाअनूप॥ प्रतिचक्राकारदिपेसरूप॥१॥ इत्यादिअतुलसंपतिमहान॥ जिंहदेख
तभविजनपापहान॥ तुमपदसरोजकौंवारवार॥ हमनमतशीशकरधारधार॥२॥ विधिविघ्नमूलतरु
जारजार॥ चिरसंचितविधिवलटारटार॥ उरअजेजिनेश्वरधारधार॥ दुखकारवभोदधितारतार॥३॥ अदे
हा॥ इसअसारसंसारमेंशरनतुमारीदेव॥ सोप्रभुहमकौंदीजियेकरोकृपायहदेव॥४॥ ॐह्रीं अर्घं
सोरठा॥ तुमअनाथकेनाथमेंअनाथचिरकालतेंरुलितनमाऊंनाथममउरआसभरोप्रभू॥१॥ पुष्प
इति॥ ॥३४॥ ॥अथपश्चिमदिशाचतुर्थरतिकरपूजामाह॥ कुसुमलताछंद॥ अष्टमद्वीपदि
शापश्चिममेंअंजनगिरकेदक्षिणभाग॥ वापीक्षितियकौनमेंचौथोरतिकरपर्वतअतुलसुभाग
सुवरणवर्णसहसयोजनकोंउन्नतगोलढोलसमलाग॥ तापरश्रीजिनमंदिरप्रतिमापूजतहु
रसुरेशावडभाग॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाचतुर्थरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरे
भ्योनमः॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ अत्र॰॥ पुष्पं॥ जोगीरासा॥ गंगाजलसमनीरअनोपमकंचनझारीभरि
येजन्मजरादुखहितजिनेश्वरपदतरधाराकरिये॥ अष्टमद्वीपदिशापश्चिममेंचौथोरतिकर
माई॥ तापरश्रीजिनभवनअकृत्रिमसुरपतिपूजतआई॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाचतुर्थ
रतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥ जलं॥ मलियागिरघनसारसुचंदनकेशररंगमि

बांवन पू.
॥५२॥

लावे॥भवआतापरहितजिनवरकेचरननपूजरचावे॥अष्टम॥२॥ॐह्रींगंधं॥देवजीरसुखदा
कमोदकअक्षतस्वक्षतकरीजे॥अक्षयपदकेईशाजिनेश्वरचरननपुंजधरीजे॥अ०॥३॥ॐह्रींअक्षतं
रनभांकेफूलमनोहरनिरदोषसुरलावै॥कामदाहदाहकजिनवरकेचरणपूजगुणगावे॥अ०
॥ॐह्रींपुष्पं॥फेनीगोंजामोदकखाजेलाडूआदिवनावो॥दोषअठारहरहितप्रभूकेचरनन
प्रग्रचढावे॥अष्ट॥५॥ॐह्रींचरूं॥तमहरजोतिप्रकाशीदीपकरत्नमईसुरलावोकेवलज्ञानध
जिनपतिकेचरणपूजहर्षावे॥अष्ट॥६॥ॐह्रींदीपं॥दशविधिधूपसुगंधमईकरलेजिनमंदि
आवे॥परमशुक्लध्यानीजिनवरकेचरननमांहिचढावे॥अष्टम॥७॥ॐह्रींधूपं॥लोंगलायची
स्ताकिसमिसखारिकलावे॥मुक्तिमहाफलदायकप्रभुकेचरणपूजिगुणगावे॥अष्ट॥८॥ॐह्रीं
फलं॥जलचंदनअक्षतकुसुमावलिनेवजदीपकसारे॥धूपफलावलिअर्घवनाकरजिनवरपद
तरधारो॥अष्टम॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दोहा॥अरिरजरहसिनिवारिकेभहसिलियोनिज
थान॥भ्रमउरवासकरोप्रभूवरदायकभगवान॥१॥पद्धडीछंद॥जयकेवलज्ञानधनीजिनेशतु
रणकमलसेवैंसुरेश॥जयसमवशरणकेमध्यसार॥उपदेशदियोवृषसुधाधार॥२॥जयजी
अजीवसुनित्यभेद॥परसायोचउसवअनुयोगवेद॥जयपुरुषशलाकासाठतीनधतिनकोसवभेद

॥५२॥

दश चक्रवर्ती दूजे महान प्रति हरि बलि हरि नव प्रमाण स
ह्योप्रवीन ॥ चौवीश तीर्थंकर प्रथम जान ॥७॥ दश चक्रवर्त्ती दूजे महान प्रति हरि बलि हरि नव प्रमाण स
व्वेसठ पुरुष कहे पुरान ॥ इक सौ उनहत्तर जीव सोय ॥ सो मुक्ति पात्र जग माहि होय ॥ जिन मात तात
अरु कामदेव ॥ हर कुलकरनारद जो डिएव ॥ ये सर्व मुक्ति के पात्र जान ॥ कछु तद्भव कछु भव धरम
हान ॥ मैं मुक्ति रूप वंदों त्रिकाल ॥ प्रभु मेरो काटो जगत जाल ॥ ५॥ दिव दत्ति गाइं दश चौ महान ॥ तिन लो
कपाल लोकांत जान ॥ अरु सरवारथ सिद्ध देव सार ॥ एकाभवतारी उर विचार ॥६॥ जिन मात तात जिन
राज आय ॥ हलि हरि चक्री पूरन प्रताप ॥ अरु भोग भूमिया जीव जान ॥ इन के मल मूत्र नहीं प्रमान ॥७
जय शंकर जिन तप करैं सार ॥ दश पूर्व इकादश अंग धार ॥ लखि अवलोगण कौ भेद होय ॥ चिरका
ल भ्रमण जग करैं सोय ॥ वा नवनारद ब्रह्मचारी अपार ॥ उर क्रोध मान माया सुसार ॥ शंकर नारद के मा
त तात ॥ इन की उरध गति जग दिखात ॥ अचक्री नर ऊरध अधो लोक ॥ निज कृति अनुसार फल है जु
योक ॥ इत्यादि बहुत वर्णन अनूप ॥ उपदेश कियो त्रैलोक भूप ॥ ११॥ सो मन में तिष्ठो सदा काल ॥ जव लौं
न लहों त्रैलोक पाल ॥ मन वचन काय कर करूं सेव ॥ यह लाभ जिनेश्वर देव देय ॥ १२ ॥ दोहा ॥ चौथार
ति कर गिर तनी ॥ पूरन यह जयमाल ॥ जो नर वांचै भाव सौं ॥ ता के भाग विशाल ॥ १३ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥
जिनवर बिंब महान ॥ कृत्तिम अकृत्तिम सबै ॥ देहु मैं कल्यान ॥ वंदूं मन वच काय कैं ॥ १४ ॥ इति ॥ ३४

...हरि प्रतिहरि नारद महादेव पहुंचाय अधोगति नियम एह बलि अतन जुगुलकुल मात तात ×

बाँवनपू०
॥५३॥

अथ नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिश पंचम रतिकर पूजा मा ह॥ कुसुमलता छंद॥ नंदीश्वर वर द्वीप आठमों॥ प
श्चिम दिश अंजन गिर जान॥ ताके पश्चिम वापी राजे ताके प्रथम कौन में मान॥ रतिकर गिर पंचम कंचनम
य ऊंचो योजन सहस प्रमाण॥ ता पर जिनमंदिर जिनप्रतिमा अर्घ चढाय करूं मैं ध्यान॥१॥ ॐ ह्रीं नंदी
श्वरद्वीप पश्चिम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ सुंदरी छंद॥ सुरनदी जल नि
र्मल लायकै॥ कनक भृंग अनूप भरायकै॥ जनम दाह निवारन देत हो॥ धार जिनपद अग्र सुदेत हो॥ सरस
अष्टम द्वीप सुहावनो॥ तास पश्चिम दिश मन भावनो॥ सरस॥ [illegible] ॥ गिर सु पंचम
रसोद्दही॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिश पंचम रतिकर पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ जलं
मलय चंदन केसर डारिकै॥ भक्ति भाव त्रियोग सम्हारिकै॥ कर्मबंध निवारन काज जी॥ भव्य पूजत प
जिनराज जी॥ सरस०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ कठिन शुचि सम स्वेत सुहावनो॥ अमल अक्षत स्वच्छ सभावनो॥
सुर पुण्य बढावन हेत हो॥ जिन चरन ढिग सु देत हो॥ सरस०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ सुरमही सुहकी कुसुमाव
लि हि सुगंध भ्रमै भ्रमरावली॥ जिन चरन लखि दृग हरषात है॥ जनत मन्मथ जर जर जात है॥४॥ ॐ ह्रीं
पुष्पं॥ सरस मोदिक आदि बनाइए॥ घेवरु कनक मय थाल भराइए॥ जाय जिन गृह जिनवर पूजिये
भगतिवंत मुदित उर हू जिये॥ सरस०॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं॥ कनकमणिमय सुंदर जोइये॥ दीप अति दुति

पुंजसु

॥५३॥

वंतसुजोईये॥विकटमोहमहातमनाशने॥पूजिजिनपदज्ञानप्रकाशने॥सर॥६॥ॐह्रींदीपं॥ग्रति
सुगंधसुधूपवनाईये॥मुदितमनजिनमंदिरजाईये॥चरणपूजितभविजिनराजके॥हृदयभक्तिभरेसु
रसाजके॥सरस॥७॥ॐह्रींधूपं॥परमपावनफलभरिथारहो॥ग्रमरपतिसुरसंगग्रपारहो॥चरणपूज
तश्रीजिनराजके॥तरणभवदधिसाजसमाजके॥सरस॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलादिकद्रव्यमिलाइ
कें॥रतनसुवरनथालभरायके॥ग्रतिशचीपतिभक्तिवढायके॥जजतजिनपदग्रर्घचढायके॥सरस॥९॥
ॐह्रींग्रर्घं॥जयमाल॥दोहा॥विधिग्ररिभंजनपरमविधिविविधप्रकारवताय॥सोजिनराजजयोस
दा॥ममउरवसियोग्राय॥१॥छंदमोतियादाम॥जयोजगमेंजिनदेवमहान॥जयोजिनकोउपगारम
हान॥शचीपतिपांयपरेनितग्राय॥सदाप्रभुजीममहोहुसहाय॥२॥दयोसतधर्मदयाउपदेश॥जयोजग
जीवसुथानविशेष॥चतुर्दशभेदकहेजिनभूप॥कहोतिनकोसवभेदग्रनूप॥३॥मिथ्यातससादनमिश्रन
तीय॥सुग्रवतसम्यगद्रष्टितुरीय॥इकादशव्रतिकश्रावकरीति॥सुऊपरहैमुनिधर्मग्रतीति॥४॥प्रमत्तछ
ठोगुणथानग्रनूप॥सुसप्तमहैग्रप्रमत्तसरूप॥ग्रपूरवकर्नसुग्रष्टमजान॥तथाग्रनिवृत्तिनवोंपरि
चान॥५॥सुहेदशमोगुणसूक्षमलोभ॥इकादशमोउपशांतग्रछोभ॥सुछीनकषायदुवादशभावय
हांतकतोछ्दमस्थप्रवाह॥६॥सुतेरमजानसुजोगजिनेश॥यहांतकजोगतथासितलेश॥ग्रजोगचतुर्दशमें

गुणथान॥महीभवकारणकीसबहान॥२॥मिथ्यातविषैंगतिइंद्रियकाय॥सबैजिनराजदईसुबताय॥स
मूरातिएक॥सुकायकहीत्रसएकविशेष॥३॥सशारदनआदिसुजोगभजंत॥सबैमनत्रस
चतुर्थकऊगतिमैंगुणथान॥सुपंचमहैपसुमानुषमान॥४॥प्रमत्तहितैंसबहीगुणथान॥
सुजवान॥त्रतीयदुवादशतेरमथान॥कहोमरनोंनहिंश्रीभगवान॥५॥मिथ्यातमरैगतिचारकुजा
ननर्कविनात्रयभायसुपूरवआयुबंधैजिजिजीव॥चतुर्थचऊगतिजायसदीव॥६॥सुपंचम
ताल्हैगतिएकसुदेवमहन्त॥भजोगजिनेश्वरमुक्तिलहाय॥कहोयहवर्णनश्रीजिनराय॥७॥
जगदीश्वरज्ञानमवाहवराचरवस्तुप्रत्यक्षलखाय॥त्रिलोकत्रिकालस्वभावविभाव॥सबैरु
भाव॥८॥सुनोंप्रभुजीइसबारपुकारकरोहमकोंभवसागरपार॥करोयहएकबडोउपगा
ईदुखभार॥९॥दोहा॥जिनवरज्ञाताजगबडेविपतिनिवारनहार॥इसअसारसंसारसैंकरोमो
र॥१०॥अर्घं॥सोरठा॥दीनबंधुभगवान॥करौकृपामुझदीनपैंकरुणानिधिगुणजान॥आयोतुमदरबा
र॥११॥इति॥ ॥२६॥ ॥अथनंदीश्वरद्वीपपश्चिमरतिकरजिनपूजामाह॥कुसुमलताछंद॥नंदी
श्वरपश्चिमअंजनगिरितार्कीपश्चिमदिशमैंजान॥वापीकोनदूसरेमाहीरतिकरकंचनवर्णमहान॥ताके
श्रीजिनमंदिरअकर्त्रमसोहैअमलान॥तामेंश्रीजिनप्रतिमाराजेतिनकौंवंदोउरधरिध्यान॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्यो नमः॥ अर्घं०॥ अर्घं०॥ अर्घं०॥ पुष्पं॥ जोगी
रासा॥ गंगाजलसमउज्ज्वलजललेसुवरणभृंगभरावे॥ जन्मजरादुखदूरकरणकोंश्रीजिनचरणचढा
वे॥ नंदीश्वरपश्चिमअंजनगिरताकेपश्चिमसोहेरतिकरऊपरश्रीजिनमंदिर॥ निरखिशचीपति
मोहे॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरपश्चिमदिशअञ्जनपश्चिमरतिकरजिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥१॥ केशरअरुकरपूरमिला
के चंदनसंगघसीजे॥ परमपूज्यअरहंतदेवकेचरणनपूजकरीजे॥ नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ मुक्ताफल
समउज्ज्वलअक्षतसुंदरधोयबनावे॥ अक्षयपदकेपावनकारणश्रीजिनचरनचढावो॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं
अक्षतं॥ सुरतरुकेवरफूलमनोहरहर्षसहितसुरलावै॥ समरशूलनिर्मूलकरनकोंश्रीजिनचरन
चढावै॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ लाडूघेवरमोदकखाजेताजेसरसबनावो॥ दोषक्षुधादुखदूरकरन
कोंश्रीजिनचरनचढावो॥ नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ मणिमयदीपप्रजालमनोहररतनरकेवीधारे॥ मोहतम
हातमनाशनकारणश्रीजिनपरतरवारो॥ नंदी०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ दशविधिगंधमनोहरलेकेश्रीजिन
मंदिरआवे॥ भव्यजीवभवतापविनाशनश्रीजिनचरणचढावै॥ नंदी०॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ पिस्तालोंग
सुपारीएलाआदिकफलसुखकारी॥ भव्यजीवशिवफलकेकारण॥ जिनवरपूजप्रचारो॥ नंदी०॥८॥
ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलअर्घबनायगायगुणभक्तिसहितशिरनावे॥ सुरसुरेशसबश्रीजिनवरकेअर

कमलकोंध्यावोनंदी॥८॥ॐह्रीं अर्घं॥जयमाल॥दोहा॥जगदीश्वरमहाराजको॥वरननशीशन
मरण॥जयमाला अवै॥प्रभुजी हो तुम सहाय॥१॥छंद मोतियादाम॥जयोजगमेंजिनराजमहा
॥मुनिराजधरैतुमध्यान॥रटैसुरशेषमहेश अशेष॥कटैसवकर्मप्रबंधविशेष॥२॥सुजन्मतदेव
वै भवि आय॥करै प्रभुसेवसुमस्तकनाय॥गयंदहिरापतपै असवार॥सुगोदलियेंहरि श्रीजगतार
सुरछत्रईशानसुरेश॥सुचामरढारतरायसुरेश॥करैजयकारसवीसुरशेष॥सुभक्तिवढा
य॥अमहागिरिपांडुककाननवीच॥सनानशिलामनुचंद्रमरीच॥तहांतरविष्टररत्न
नरेव हकोंनरहेउरभूप॥धा॥सुआसनपद्मविराजितदेव॥सवैविधिन्होनकरैहरिसेव॥सुपेद
हि आठप्रमान॥भरैजलक्षीरहिसागर आन॥भ॥प्रभू असनानकरैंहरि आप॥सुधन्यजिने
पुण्यप्रताप॥सुरासुरसर्वकरैंजयकार॥बजेवहुसाजसमाज अपार॥वसुरीवहुनृत्यक
किसमेतनवोंरसभाव॥सुआनंदनाटकहोतअनूप॥सुजन्मकल्याणकपुण्यसरूप॥१०॥भरा
श्वरसाधिनियोग॥गयेसुरआपनेथानमनोग॥सुभूरहवासविषैंकरराज॥धरोफिरभेष
साज॥हनेचउघातिलयोवरज्ञान॥चराचरवस्तुप्रकाशकभान॥करैंउपदेशमहासुखदान
दधितारकपोतमहान॥थे॥जयोजगमेंवहदेवअनूप॥हनेवसुकर्मभयेशिवभूप॥सवीसु

पतिदायकअनूप॥ करोहमकोंप्रभुआपसरूप॥१०॥ दोहा॥ वृषभरुषभकेदाताप्रभू॥ रुषभेश्वरप्रभुदेव
करोकृपाममदीनपै॥ तुमशिवदायकदेव॥११॥ अर्घं॥ सोरठा॥ भवदधितारनहार॥ कारणतुमय
जगतमैं॥ औरनदूजोसार॥ निमितवलीइसलोकमैं॥१२॥ इति॥ ॥२७॥ ॥ अथपश्चिम
दिशासमरतिकरपूजाभाष॥ कुसुमलताछंद॥ अष्टमद्वीपदिशापश्चिममैं॥ अंजनगिरकेउत्त
रसार॥ वापीप्रथमकोनमैसोहै॥ रतिकरपर्वतगोलाकार॥ तापरश्रीजिनमंदिरसोहैं॥ जाकीमहि
माआगमअपार॥ ताकीआह्वाननविधिकरिकैं॥ पुष्पचढावतहमत्रयवार॥१॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वी
पपश्चिमदिशासमरतिकरेभ्योनमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ चालछंद॥ जलसारसुधासम
लीजे॥ सुवरनकेभृंगभरीजे॥ जिनअग्रधारत्रयदीजे॥ बहुपुण्यभंडारभरीजे॥ नंदीश्वरपश्चिमदि
शाओरा॥ ससमरतिकरगिरजोरा॥ तापरजिनगृहसुखकारी॥ सुरपूजतभक्तिसुधारी॥२॥ ॐह्रींनंदी
श्वरद्वीपपश्चिमदिशासमरतिकरजिनमंदिरेभ्योनमः॥ जलं॥१॥ वरबांवनचंदनलावो॥ केशरकेसं
गघसावो॥ भवदाहनिवारणकाजे॥ भविपूजतश्रीजिनराजे॥ नंदी॥३॥ ॐह्रींचंदनं॥ सुखदासप्रमोदम
हाना॥ तंदुलसितउत्तमलाना॥ जिनवरपदअग्रचढाना॥ निश्चयअक्षयपदपाना॥ नंदी॥४॥ ॐह्री
अक्षतं॥ मंदारनमेरुअनूपा॥ इत्यादिकुसुमबहुरूपा॥ जिनवरपदअग्रचढावो॥ सबकामव्यथानशि

वो नंदी॰॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ षटरसपकवान नवीने ॥ तुरत हिके पावन कीने ॥ जिनवरपद माहि चढा
दुखदोष छुधान शिजावो नंदी॰॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ दशहूं दिश जोति प्रकाशे ॥ एसें दीपक तमनाशे
जिनवरपद अग्र चढावो भवि केवललछमी पावो नंदी॰॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ वरधूप दशांग बनावो ॥ तसु
गन आवे सो धूप धनंजय खेवो ॥ विधिना शिनि जान मवेवो नंदी॰॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ फल उत्तम बहु
धल्यावो ॥ जिनवर के चरण चढावो ॥ भवि विधि अरि बंधन शावो ॥ निश्चय शिवलछमी पावो नंदी॰॥८॥
ह्रीं फलं ॥ वसु द्रव्य मिलाय बनावो ॥ कनथार विषें भरवावो ॥ जिनवरपद अग्र चढावो ॥ सो भवि दिव
सुख पावो नंदी॰॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाल ॥ दोहा ॥ आठों द्रव्य मिलाय के ॥ आठों अंग नवाय ॥ जिनवर
कहूं जयमाला सुखदाय ॥१॥ छंद मोतियादाम ॥ जयो जिनराज भवार्णव तार ॥ जयो जिनराज शि
पधार ॥ जयो जिनराज सुधर्म जिहाज ॥ नमो जिनराज लियो शिवसाज ॥ सुनों भवकानन माहि जिनेश
नों हम नें दुख घोर कलेश ॥ न अंत लह्यो अजहू नहि देव ॥ करूं तुम री इहकारण सेव ॥ अहरो वि
सव फंद अभरो सुखसंपति आनंदकंद ॥ हरो हमरो यह काज जिनंद ॥ करो करुनाकर नावुधि चंद ॥ अस
नें दुख घोर करूर ॥ रहे नित ही शिवसंपति दूर ॥ रह्यो अब तो तुम चर्णन रूर ॥ नहे सुख द्यो अमु जीभ
एध्या न भूतु मरूप अनूप अपार ॥ रवी शशि कोटि लजंत अगार ॥ विचारत ही भविकी सु

केसुखकोंकहिकोपा॥प्र॥अनंतवलीअरुवज्रशरीर॥महाछविसुंदरगंधसमीर॥अखेदअस्वेदनहीम
लकोय॥महावचअम्रतकोमलहोय॥६॥भूत्रयज्ञानविराजितएव॥सुजन्मतहीअतिशेजिनदेव॥लहे
नवकेवलज्ञानमहान॥लहेअतिशेदशऔरसुजान॥७॥अनंतचतुष्टयचारिवखानि॥धरेगुणछ्यालि
सश्रीभगवान॥८॥समोसृतमध्यविराजितदेव॥सुरासुरसर्वकरेप्रभुसेव॥महाधुनिदिव्यखिरंतअगाध
अनक्षरसर्वप्रकाशअबाध॥९॥चतुर्दशमार्गणागुणथान॥छेद्रव्यसवेगुणपर्ययवान॥सुतत्वकहेप्रभु
सातप्रकार॥प्रतीतिभवार्णवतारगहार॥१०॥कहोसतज्ञानप्रमाणसरूप॥नयानवभेदअभेदअनूप॥
कह्योशुभचारितशुद्धपयोग॥यहीरत्नत्रयजानिप्रयोग॥११॥तथादशलक्षणधर्मप॥द्वादशभावनसत्य
सरूप॥कहेप्रभुषोडशकारनसार॥सुतीर्थपतीपदकेकरतार॥१२॥इत्यादिअनेककियेउपदेश॥वसोहम
रेउरमांहिहमेश॥करोहमरीवुधिवृद्धिविशाल॥भरोप्रभुजीशिवसंपतिहाल॥१३॥दोहा॥जन्ममरण
दुखनाशिकै॥करोज्ञानपरकाश॥अरजजिनेश्वरकीसुनौं॥तुमदातागुणराश॥१४॥अर्घं॥सोरठा॥जग
मेंशरणसहाय॥मामआपकोमैंसुन्यो॥करोकृपाजिनराज॥निपटअधममनजानिकै॥१५॥इति॥३०
अथनंदीश्वरद्वीपअष्टमरतिकरपूजामाह॥कुसुमलताछंद॥नंदीश्वरपश्चिमअष्टमगिर॥रतिकरकंच
नवर्णसुहाग॥एकसहस्रयोजनकोऊंचो॥द्रहदिशावापीवहिभाग॥द्वितियकोंनमेंपर्वतराजैगोलाकार

ढोलसमलाग॥ताकेऊपरश्रीजिनमंदिर पूजतसुरपतिकरअनुराग॥१॥ ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदि
श्रष्टमरतिकरपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥ अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥ चालदोहा॥ पूजनकरले
जिनवरदेवकीजोकोई दिवशिवसुखदातार॥टेर॥ गंगाजलसमनीरलेजीकोई भरसुवरणभंगा
जिनवरपदतरभावसोंजीकोईकरधारात्रयधार॥पूज॰॥नंदीश्वरपश्चिमदिशाजीकोई अष्टम
तिकरसार॥सुरसुरेशपूजेंसदाजी॥मापरजिनआगार॥पूज॰॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाअष्टम
तिकरजिनमंदिरेभ्योनमः॥जलं॥१॥केशरसंगघसायकेजी॥चंदनगंधअनूप॥भक्तिभावउरलायकै
जी॥पूजूंजिनवरभूप॥पूज॰॥नंदी॰॥२॥ॐह्रींचंदनं॥ अक्षतनमरससुहावनेजी॥देवजीरसुखदास॥अक्षयपद
कारणेजी॥पुंजकरोजिनपास॥पूज॰॥नंदी॰॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥सुरतरुकेवहुफूललेजी॥मरकैगंधअपार
मदहनकेकारणेजी॥पूजोंजिनआगार॥पू॰॥नंदी॰॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥मिष्टसरसनेवजमहाजी॥शुद्धतरुतव
वाय॥क्षुधाहरनकेकारणेजी॥जिनवरभेदकहाय॥पू॰॥नंदी॰॥५॥ॐह्रींचरुं॥कनकरतनमयदीपलेजग
जोतिप्रकाश॥मोहतिमरकेनाशनेजी॥करहुआरतीपास॥पू॰॥नंदी॰॥६॥ॐह्रींदीपं॥दशविधिगंध
गायकैजी॥धूपकरोभविजीव॥जिनवरपदकूंपूजिकैजी॥पावोसोख्यअतीव॥पू॰॥नंदी॰॥७॥ॐह्रींधूपं॥
तमफलसुरलोककेजी॥लावतसुरपतिआय॥करपूजनजिनराजकीजी॥नाशतभवसंताप॥पू॰॥नंदी॰॥८

ॐ ह्रीं फलं॥ जलफलअर्घबनायकेजी॥ अर्घकरोगुणगाय॥ अष्टकरमकेनाशनेजी॥ पूजोंजिनवरपायपू
नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाल॥ दोहा॥ त्रेसठिप्रकृतिखिपायकै॥ पायोकेवलज्ञान॥ तिनपदवंदोंभावसों
दायकशिवकल्यान॥१॥ छंदमोतियादाम॥ जयोजगमेंजिनचंद्रजिनेश॥ हनेजिननेचउघातिअशेष
लह्योपहिलैंविधिमोहपछार॥ तदंतरतीनकरैविधिछार॥ हनेपहिलेंअरिसातकरूर॥ चतुर्थसथान
लयोगुणभूर॥ नमेंगुणथानअरीछत्तीस॥ दशेगुणमेंअरिलोभगरीश॥२॥ दुवादशमेंगुणथानसुअं
ता॥ अशेषअरीक्षणमाहिनशंत॥ तहांगुरुदेवदिगंबररूप॥ कहावतसर्वप्रकारअनूप॥३॥ सुकेवलज्ञान
धनीजिनराज॥ सुतेरमथानसमोश्रतसाज॥ करेउपदेशमहाभविकाज॥ भवोदधितारनपरमजहाज॥
॥४॥ असंख्यसुरासुरच्यारप्रकार॥ तथापशुजातिअनेकप्रकार॥ महामुनिराजतथानरराज॥ चतुर्विधिस
घसुनेजिनराज॥५॥ कईभविसम्यकवंतसुजीव॥ धरेव्रतसंजमभावअतीव॥ करेव्रतदेशधरेदृढभेष॥ करे
उरचाहदिगंबरभेष॥६॥ कईभविसम्यकदर्शनपाय॥ मिथ्यातवमेंअतिहीदुखदाय॥ कईजिनपूजनको
व्रतधार॥ करेजिनभक्तिअनेकप्रकार॥७॥ कईवरदानपणोंव्रतलेय॥ कईनिशभोजनत्यागकरेय॥ कईव्रत
ब्रह्मधरेदृढसार॥ सवेदुभावतजेदुखकूप॥ धरेव्रतभावसुशक्तिसमान॥ करेवृषमेंपुरुषारथध्यान॥ क
रेविधिपूरवसंचितकूर॥ धरेपगमुक्तिसुमारगभूर॥८॥ तुम्हीप्रभुजीभवतारनहार॥ तुम्हीप्रभुजीकरुनानि

रा तुम्ही प्रभुजी जगमैं सुखकार॥ जिनेश्वरकों भवसागरतार॥१०॥ दोहा॥ कर्मबंधकों नाशकर
सै मुक्ति आगार॥ सो प्रभु मेरे उर बसो करो भवोदधि पार॥११॥ अर्घं॥ सोरठा॥ अशरन शरन सहाय
असार संसार मैं॥ जो सदा सहाय तुम दाता जगमें बडे॥१२॥ इति॥ ॥७४॥ ॥कुसुमलता॥
॥नंदीश्वर पश्चिम दिशमाही जिनमंदिर तो सुनौं अधिकार॥ जहां जहां जिनप्रतिमा राजै अतु
मई सुखकार॥ तहां तहां वहु भक्ति भाव कर पूजों जिनवर बिंब विचार॥ सर्वसिद्धिदायक अघघा
रोस हाय अनेक प्रकार॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिश संबंधी त्रयो सर्गत रचना विषै
जिनबिंबेभ्यो नमः॥ अर्घं॥ पश्चिम दिश वर्ती व्यंतर भवनपती सुरसार॥ अथवा ज्योतिषदेव
जे तिन के चरण कमल कों वहुविधि अर्घ चढाय जपूं नवकार॥ इति॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वी
दिशसंबंधी व्यंतर भवनवासी ज्योतिषी देवों के जिनमंदिर जिनबिंबेभ्यो अर्घं॥ पश्चिम दिशा पूर्णं॥
थ उत्तर दिशा संबंधी पूजा माहा॥७५॥ अथ नंदीश्वरद्वीप उत्तर दिशा संबंधी अंजनगिरि जिन
र पूजा माहा॥ जोगीरासा॥ नंदीश्वर की उत्तर दिशमै अंजनगिरवर सोहै॥ जोजन सहस चो
ऊंचो स्यामवरन मन मोहै॥ ढोल समान गोल तहां ऊपर श्री जिनमंदिर जानो॥ आठ अधिक इक
जिनप्रतिमा पूजत सुख अधिकानौ॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप उत्तर दिशा अंजनगिर जिनमं

नमः ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ अत्र ॥ पुष्पांजलिं ॥ चाल होली ॥ जिनपद की पूज रचाऊं हां दे तिनके गुण गाऊं ॥ टेर ॥ नि
र्मल नीर कनक की झारी भर जिन मंदिर जाऊं श्री अरहंत चरण के आगे धार देय शिर नाऊं नंदीश्व
र उत्तर दिशा सो है अंजन गिर गुरु ध्याऊं मन वच काय लगाय गाय गुण जिनपद शीश नवाऊं हां दे ॥१॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशा अंजन गिरके शिखर जिनमंदिरेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ चंदन केशर गंध मिला
कर रतन कटोरी धारे सुर सुरपति जिनराज चरण की पूजा विधि विस्तारे हां दे ॥ नंदी० ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं
उज्वल अक्षत धोय मनोहर कंचन थाल भरावे भव्य जीव बहु भाव भक्ति सो जिनवर चरन चढावे
हां दे ॥ नंदी ॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ पारिजात मंदार आदिके पुष्प विविध गुण लावे श्री जिन मंदिर जाय
शचीपति जिनपद अग्र चढावे यह ही मैं शीश नवाऊं हां दे० ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ षटरसमय पकवान ब
ना कर हर्ष सहित सुर लावे श्री जिन चरण पूज कर सुरगण पुण्य प्रकृति उपजावे यह ही मैं निश दि
न चाऊं हां दे ॥ नंदी ॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ वरन वरन के रतन मनोहर सुर सुरपति मिल लावे श्री अरहंत देव की
पूजा करत ज्ञान निधि पावे यह ही मैं आस लगाऊं हां दे ॥ नंदी ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ कृष्णागरु वर धूप दशां
गी भव्य मनोहर लावे वसु विधि कर्म दहन के कारण श्री जिन चरन चढावे तक्षण मैं भी पाऊं हां दे०
नंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ षट ऋतु के फल उत्तम लेकै श्री जिन पूज रचावे भव्य जीव अति हर्षित मन मैं ज

सफलकरयावै॥यहीमैंमनमैंचाहूं हृदै॰॥नंदी॥७॥ॐह्रीं फलं॥जलफलअर्घबनायगायगु
ण॥जिनचरणाचितल्याअ॥श्रीसर्वज्ञजिनेश्वरआगेअर्घअनूपचढाअ॥कर्मविधिवंधमिटाऊं
देअनंदी॥८॥ॐह्रीं अर्घं॥जयमाल॥दोहा॥सुरपतिनरपतिनागपतिखगपतिपूजतपाय॥निसे
निर्ग्रंथमुनिजितेभीवंदैआय॥१॥ऐसाहीअरहंतपदपरमदिगंबरदेव॥जिनगुणचरणसरोजकीकरत
दामैंसेव॥२॥चालविदेहकी॥समवशरणकेवीचमैंजगसारहो॥जेश्रीजिनराज॥सुरनरखग
सराज॥करनमैंशिरनाय॥सिरनायचतुरनिकायसुरखगनरपशुसेवाकरैं॥मनलायश्रवनन
नेखगज्येदेशआनंदविस्तरो॥त्रयकालजिनधुनिसदावरषैत्रपतिभविचातकभये॥भवदाहकोदुख
विनश्योसहितसुखसहजैलये॥श्रीअरहंतमताप्रसेंजग॥जातिविरोधनशाय॥अतिशय
जिनराजका॥जग॥जयवंतोहितदाय॥हितलायसिंहनिमृगचुखावैगायनाहरखेलको॥अहि
खाजकपोतखेलैसहितकागमरालको॥उंदरविलावकलापकरकरमतङ्करहरविषैगजरा
अरुमृगराजमिलकरनेहआपसमैंलखें॥जिनवरकीवानीविरैसुधाधारधरराज॥भविजन
तीफलेजग॥शुभअंकूरसमाज॥अवसाजसुखकोलहैभविजनहृदयअतिसंतोषिया॥म
जनदरिद्रअधीशसोकरलषितअमृतरसपिया॥बहुभक्तिकारिसुरभक्तनाचैमालदेतसुहावनी॥सव

साजवाजसमाज ॥ अहुलधन्यजनत्रिभुवनधनी ॥ गणधरपारनपावही ॥ जग० ॥ इंद्र हैशिरनायमुनि
जनध्यानधरैसदा ॥ जग० ॥ तुमत्रिभुवनकेराय ॥ जगरायजगहितरायतुमगुणवेलकीरतिविस्तरी
त्रैलोक्यमंडपसर्वछायो ॥ शीशपरसुखफलफरी ॥ वहफलअनोपमअविछिन्नअरोकअमितस्वभाय
हो ॥ दीजेजिनेश्वरदेवहमकोंवहसुफलसुखरूपहो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तातमातभ्राता तुम्ही मालिकपरमदया
लायहनिश्चयमनजानिकोंलीनी आसरुपाल ॥ ८ ॥ अर्घं ॥ सोरठा ॥ वडोगरीवनिवाजमैंगरीवजगमेवड
दीजोसर्वसमाज ॥ जोजैसोजहांचाहिए ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ॥ अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदि
शामेंचौथीपूर्वदिशाप्रथमदधिमुखपूजामाह ॥ दोहा ॥ दधिसमदधिमुखस्वेतछवियोजनदशहजार
उन्नततापरजिनभवनपूजेसुरपतिसार ॥ ताकीबहुविधिभक्तिकरिआह्वाननविधिसार ॥ अपनेघ
रपूजनकरोवांछितार्थदातार ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकू
टजिनमंदिरेभ्योनमः ॥ अत्र० ॥ अत्र० ॥ अत्र० ॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि ॥ पद्मद्रहजलउजललीजे ॥ जिनचरणां
वुजधारसुदीजे ॥ जन्मजरादुखदाहनिवारै ॥ भव्यजीवसमकितउरधारै ॥ नंदीश्वरउत्तरदिशजानों ॥ अंजन
गिरकीपूरबमानों ॥ दधिमुखगृहपरजिनगृहसोहे ॥ सुरनरपूजितसबमनमोहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप
उत्तरदिशप्रथमदधिमुखजिनालयेभ्योनमः ॥ जलं ॥ १ ॥ केशरअरुकरपूरमिलायवावनचंदन

बावनपू॰
॥८६॥

गधसाय॥जिनपदपूजितभक्तिपचारी॥भवआतापमिटावतभारी॥नंदी॥२॥ॐ ह्रीं चंदनं॥उज्जलअ
तधोयधरीजे॥उज्जलसुवरनथालभरीजे॥उज्जलजिनपदपूजरचावे॥उज्जलभावभविकफल
३॥ॐ ह्रीं अक्षतं॥कुसुमअनेकप्रकारमगावो॥कुसुमायुधविजयीगुणगावो॥कुसुमजिनेश्वर
चढावो॥कुसुमवाणवाधाविनशावो॥नंदी॥४॥ॐ ह्रीं पुष्पं॥उत्तमनेवजविविधवनावो॥उत्तमभाज
मैंधरिलावो॥उत्तमभावभविकउरलावो॥उत्तमदेवपूजिसुखपावो॥नंदी॥५॥ॐ ह्रीं चरुं॥जो
तदीपकशुचिलीजे॥जोतिवंतजिनपदपूजीजे॥जोतिज्ञानहरतमकोनाशे॥जोतिवंतनिजभावप्र
शे॥नंदी॥६॥ॐ ह्रीं दीपं॥दहनकर्मअरिधूपवनावो॥दहनशुक्लध्यानीपदध्यावो॥दहनमाहिम
पजरावो॥दहनकर्मतनिशिवपुरपावो॥नंदी॥७॥ॐ ह्रीं धूपं॥सुफलअनेकप्रकारथालभरीजे॥सु
कामनामनमेंकीजे॥सुफलदाताजीपदपूजो॥सुफलपायमुक्तिपतिहूजो॥नंदी॥८॥ॐ ह्रीं
उदरवमयअर्घवनावो॥आठोंअंगनायगुणगावो॥अष्टमक्षितिपतिपूजरचावो॥अ
पतिकहलावो॥नंदी॥९॥ॐ ह्रीं अर्घं॥जयमाला॥दोहा॥नंदीश्वरजिनधाम॥उत्तमदधिमुखप
मुनिमुनिकरूंप्रणाम॥गाऊंगुणमालाअवे॥१॥पद्धडीछंद॥जयनंदीश्वरवरद्वीपजान॥
जयताकीउत्तरदिशमहान॥जयअंजनगिरसोहैउतंग॥जयगोलढोलसमस्यामरंग॥

॥८६॥

रासीसहससार ऊंचो तिहि ऊपर जिनागार॥ जयता की पूरव दिशमझार॥ जयसजलवापिकाभरीसा
रा॥ तिहि बीच जानि दधिमुखपहार॥ उन्नत है योजन दशहजार॥ अतिस्वेतवरन दधिसम अनूप॥ न
हुं और ढोलसमगोलरूप॥ अति हिं ऊपर श्री जिनभवनसार॥ सब समवशरणशोभा अपार॥ जिन अंत
री त्रराजे सदीव॥ नित पूज करत तहां भव्य जीव॥ शत पंच धनुष जिन तन प्रमान॥ पद्मासन सोहै दी
प्तिवान॥ वसु प्रातिहार्य मंगल सुदर्व इत्यादि और महिमा जु सर्व॥ जिन छवि निरखत मन मुदि
त होय॥ चिरकाल पापमलपुंज धोय॥ कोई आपति सम कित रतन सार॥ संसार खार तें करो पार॥ द्यु
अति तेजवंत जिन दिव्य रूप॥ जे परम वीतरागी सरूप॥ मनु सुवरन माहि सुगंध सार॥ अरु शशिकल
मिलि प्रगटी अपार॥ अजगकरम दाह करि दुखित जीव॥ तिनकौं सुखदायक सकु सदीव॥ सुर असुर
वे बहु भक्ति लाय॥ तुम चरन कमल सेवैं बनाय॥ ऋषि मुनि महंत तुम ध्यान धार॥ संसार उदधि ते हो
य पार॥ मैं शरणागत आयो अवार॥ हे करुणानिधि भव उदधि तार॥ जगजीति कर्म अरि करो चू
र॥ बहु जीवन कौं दुख करो दूर॥ सुनि अर्ज जिनेश्वर की हजूर॥ निज सुख संपति दीजे जरूर॥२॥ दोहा
करुनानिधि जिनराज तुम तारण तरण महेश॥ तुम पद पंकज कौं नमों सकल सुरासुर शेष॥१॥ अ
र्घं॥ सोरठा॥ नमों अगवसु आठ भक्ति भाव हिरदे धरूं॥ भव भव भ्रमण नशाय अरज सुनो प्रभु दीन की॥

१२॥पुष्पं॥ ॥४१॥ ॥अथ श्रीनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूट
जिनमंदिरपूजा भाह॥ ॥दोहा॥ ॥नंदीश्वरउत्तरदिशा॥अंजनगिरवरजोर॥ताकीदक्षिण
पिका॥शोभनीकजलधार॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजि
दिरेभ्योनमः॥अत्र०अत्र०अत्र०॥पुष्पं॥कुसुमलताछंद॥पुंडरीकद्रहसमउज्जलजलजलेज
धमिश्रितसुखकार॥धारदेतश्रीजिनवरआगेजन्मजरादुखनाशनहार॥नंदीश्वरदक्षिणअंजन
रताकीदक्षिणवापीसार॥ताकेबीचविराजेदधिमुखतापरवरजिनआगार॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीप
णदिशाद्वितीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥जलं॥[illegible]॥अक्षतं॥पुष्पं॥
[illegible]बावनचंदनकदलीनंदनसारनिकंदनहेसुखदाय॥पूजतश्री
लभविभवातापदुखदेतनशाय॥नंदी॥२॥ॐह्रींगंधं॥श्रीसुखदासकमोदवासमतिसरलश
विविधप्रकार॥अक्षतपुंजजिनेश्वरआगेकरतभव्यपावैभवपार॥नंदी॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥श्रीगु
दकेतकीबेलाकमलचमेलीलाय॥कामदाहनिरवारनकारनजिनचरणांबुजदेतचढाय॥
पुष्पं॥लाडूघेवरमोदकफैनीषटरसव्यंजनतुरतबनाय॥क्षुधारोगकेदूरकरनकोजिनवरपद
भविआय॥नंदी॥५॥ॐह्रींचरुं॥दीपरतनमयसुरपतिलावेभक्तिभावहिरदेउमगाय॥केवलज्ञा ॥६१॥

निधानप्राप्तिकेहेतजिनेश्वरपूजेंआयानंदी॥६॥ॐह्रींदीपं॥चंदनअगरतगरकृस्नागरधूपसुगंध
मईखेवायाभविजनकर्मदहनकेकाजेजिनपदकमलजजेंमनलायानंदी॥७॥ॐह्रींधूपं॥लौंगलाय
चीपिस्ताकिसमिसएलाकेलादाखमगायाश्रीफलआदिमुक्तिफलकारणभविजनपूजतजिनवर
पायानंदी॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलद्रव्यमिलायगायगुणअर्घबनायभक्तिउरलाया॥असमत्रिवि
पतिपदपावनकोंसुरपतिजिनपतिपूजनआयानंदी॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाला॥गीताछंद॥संसा
रकाननअतिभयानकाविषयविषधरजोरहों॥अतिप्रबलचारकषायतस्करत्रासतिनकीघोरहों॥ज
गजीवपथिकभ्रमैंनिरंतरदुःखबहुविधिपावही॥मैंचरणपूजूंदेवजिनकेसुमगजोदरशावही॥१॥पद्ध
डीछंद॥जयजयजिनराजस्यानिधान॥दरशायोजगमैंमगमहान॥जयसमवशरणकेमध्यसारउप
देशदियोआनंदकार॥१॥सवतत्वप्रकाशकियोअशेष॥आस्रवकोवर्णनयहविशेष॥आस्रवसत्ता
वनभेदसार॥तिनमूलभेदजानौंजुचार॥२॥मिथ्याअव्रतजुकषाययोग॥इनहीवससुखदुखसर्वभोग
मिथ्यातभेदहैंपंचजान॥अविरतकेबारहभेदमान॥३॥पच्चीसकषायकहीजिनेश॥अरुजोगजानपं
दहविशेष॥इनसबकोंजोडेंहोयसर्व॥सत्तावनआस्रवभेदपर्व॥४॥मिथ्यातविषैंपचपनवखान॥अ
हारादिकबिनसर्वमान॥पच्चासदूसरेथानजान॥मिथ्यातपांचविनयहप्रमाण॥५॥अरुतीजेचौथेकेमझार

बांवनपू
॥८२॥

त्यालीस अरु छ्यालीस धार॥गुणपंचममेसेंवीसभेद॥चौबीसकरे षष्टम अवेद॥ जयसप्तम अ
गुणमझार॥वावीसभेद आश्रवउदार॥जयनवमथानकेसातभाग॥प्रतिभागएकइकतानिलाभ॥अ
तह प्रथमभागसोलहप्रमाण॥अरु अंतभागदशभेदजान॥मंद्रहसैएकादशप्रजंत॥जयमध्यभा
गपांचोलसंत॥जयदशमेंदशगुणभेदजान॥ग्यारमवारमनोनोप्रमाण॥जयतेरमगुणमेंसा
ग॥चौदसस्वामीजिनहेअजोग॥ये यह आश्रवभेदकह्योजिनेश॥मोहीसिद्धांतचक्रीविशेषगोमट
सारमेंकह्योदेव॥आश्रवअधिकारविषैंजुभेव॥भवतत्वभेददर्शीजिनेश॥अतज्ञानदानदायक
हमेश॥हेरुपासिंधुकरहुपासार॥संसारखारतैंकरोपार॥२१॥दोहा॥तुमपदतरनिजशीशधारकर
विनयसुरराय॥सोजगपतियाजगतमेंभवभवहोहुसहाय॥२२॥अर्घ॥सोरठा॥तुमदेवनकेदेव
णधरादिसेवैचरन॥छिपोनकोईभेव॥ममसनसापूरीकरो॥२३॥इति॥ ॥८२॥ ॥अथउत्त
दिशात्रतीयदधिमुखपूजा॥अडिल्लछंद॥नंदीश्वरवरद्वीपआठमोंजानिये॥ताकीदिशागिरउत्तरअं
जनमानिये॥ताकेपश्चिमवापीमध्यविराजही॥दधिमुखगिरजिनभवनमहाछविछाज
हीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशात्रतीयदधिमुखपर्वतपरसिद्धकूटजिनमंदिरेभ्योनमः॥अत्र०॥अत्र॥
न०॥पुष्पं॥जोगीरासा॥चारोंगतिकेजीवजगतमेंजन्ममरणदुखपावैं॥तिहिदुखदूरकरणकोंजि

८२

लेश्री जिनचरनचढावै नंदीश्वर उत्तर अंजनगिर ताकी पश्चिम सोहे दधिमुखगिरपर श्री जिन
सुरसुरपतिमनमोहे ॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर उत्तर दिशा तृतीय दधिमुख पर्वतोपरि सिद्ध कूटे [illegible] जिनमंः ॥ जलं ॥ चं
दन हद दाहै जीवनकों विधिवश मिलतन चायो ॥ तिहि दुखदूर करणकों जिनपति चं
नंदी ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ सुरपति नरपति खगपति चक्री सब पद अथिर बतायो ॥ अक्षयपद पाव
जन अक्षत चरन चढायो ॥ नंदी ॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ ब्रह्मा हरिहर शक्र चक्रपति जीते काम सवी नैं ॥ पुष्पच
य जिनेश्वर आगें भव्य मदन शर जीते ॥ नंदी ॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ दानव देव मनुष विद्याधर सूर सवी वश जाके ॥
ता दुख दोष क्षुधा हर प्रभुके चरन जजत चरु जाके ॥ नंदी ॥५॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥ शंकर सूर शशी हरब्र
जाल मैं आये ता अरि मोह महातम नाशन जिनपद दीप चढाये ॥ नंदी ॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ ज्ञान दर्श आव
रा महा अरि इनके दाहन काजे भविजन धूप दहन तैं खेवैं सन्मुख श्री महाराजे ॥ नंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
तराय दुखदाय जगत मैं या सम दूजो नाही ॥ ताहि निवारण काज सुफल ले भविजन भेट करा
नंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय मनोहर सुरपद भक्ति बढाके सुरपद सुफल
सुरनायक जिनपद अर्घ चढाके ॥ नंदी ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ सुर नर पशु नारक विषै
न धारैय जीव ॥ देह रहित सिध्दानिकों तिन पद नमूं सदीव ॥१॥ पद्धड़ी छंद ॥ जय श्रीपति श्री अ

वांवनपू॰
॥८३॥

॥जयलखतचराचरवस्तुभेव॥जयचारघातियाकर्महनि॥जैकेवलज्ञानलयोमहान॥२॥सर्वज्ञसर्वद
श्रीजिनेश॥जयब्रह्माविस्नुतुम्हीमहेश॥जैसमवशरणकेमध्यसार॥चतुराननराजैनिराधार॥३॥जैस
तत्वषटद्रव्यसार॥सववर्णनकीनोसवप्रकार॥तहांजीवदेहकेभेदमाहि॥तनभेदकह्योमैकहूं
हि॥३॥औदारिकवैक्रियदेहधार॥आहारकतैजसकर्मधार॥यहपांचप्रकारशरीरजान॥नर
पशुकोंऔदारिकप्रमाण॥४॥वैक्रियिकदेहनारकशरीर॥सुरअवआहारकविधिसुनोंवीर॥मुनिदशम
रसैंप्रगटहोय॥आहारशरीरकह्योजुसोय॥आगमप्रमाणमयअर्थकोय॥काहूमुनिकेसंदेह
य॥५॥सितफटिकवरणइकहस्तमान॥नहिचक्षुगम्यनहिधातुजानि॥केवलिनिकटआपफि
आपसुगुरुतनमेंसमाय॥६॥केवलिजिनकोहैतनअनूप॥सोपरमउदारिकदिव्यरूप॥नहिरहै
तुउपधातुकोय॥दधिफटिकसमानशरीरहोय॥७॥जैतैजसदोयप्रकारजान॥शुभअशुभभेदसु
नो॥कार्माणवर्गणाबंधरूप॥कार्माणदेहकापोतस्वरूप॥८॥तैजसकार्माणअनादिसंगइक
मयहोयजिनचारअंग॥जयविग्रहगतिविनसर्वकाल॥तनतीनतथाच्यारोविशाल॥९॥इकवि
हगतिमेंदोयदेह॥तैजसकार्माणकहीसुगेह॥जैवैक्रियिकआहारकवताय॥यहपंचेंद्रियकेत
काय॥१०॥औदारिकएकेंद्रियलगाय॥पंचेंद्रियतकजानूंसुभाय॥इत्यादिअनेकशरीरभेदवर्ण

॥८३॥

कीनौं जिनवर अखेदा॥१९॥ सो जगदीश्वर मम उर मफा॥ंक रवार वार संसार पाणय हु अरज जिनेश्व
देवसा॥ सुनिले हु जिनेश्वर की पुकार॥१२॥ दोहा॥ जगतारी जगदीश जिन॥ जै वंतो त्र यकाल॥ जे
त्मी ममदी जिये॥ अरिसमूह मैं ताल॥१३॥ अर्घं॥ सोरठा॥ सुनो स्व पर हित कारण वच वादी प्रतिचं
समा वचन सुधाउन हारा मम उर वास करो प्रभू॥१४॥ इति॥ ॥ ॥ ॥ अथ उत्तर दि
शंधी चतुर्थ दधिमुख पूजा माह॥ चाल जोगीरासा॥ नंदीश्वर वर द्वीप दिशा उत्तर कही चौथे दधि
खगिर पर जिन गृह मणि मई॥ सकल सुरासुर आय भक्ति मन लायके॥ पूजत जिनवर चरण
ईशि रनायकै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशि चतुर्थ दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र
मन॥ पुष्प॥ गीताछंद॥ सुरनदी को जल अनूपम मिष्ट शीतल लीजिये॥ भव तृषा दोष निकंद कारन
र जिनपद दीजिये॥ वर द्वीप नंदीश्वर मनोहर तास उत्तर सज हो॥ दधिमुख चतुर्थ महान तापर
न भवन सुरजजत हैं॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुख जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं
सीर और कपूर केशर गंध द्रव्य सुहावनी॥ भव ताप नाशन हेत भवि जिनराज चरन चढावनी
र॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ सुखदास और कमोद तंदुल स्वेत वर्ण सुहावने॥ जिनराज चरण अगार भवि जन
ज धारत पावने॥ वर॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ मंदार सुंदर पारिजात न मेरु कुसुम समूह लै॥ जिनराज अग्र च

बांवनपू॰ ॥६५॥

ढायभविजनमीनकेतमसादलै॥वर॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥मनमोदकारनमोदकादिकविविधनेवज
जही॥जिनपदचढावतभव्यजनकेक्षुधादुखसबभाजही॥वर॥५॥ॐह्रींनैवेद्यं॥दुतिवंतरत्नस्व
पलेकरदेवनंदीश्वरविषैं॥जिनराजचरणचढायदीपकलहततनिजसंपतिअवै॥वर॥६॥ॐह्रीं
दीपं॥घनसारकृष्णागरसुगंधितद्रव्यउत्तमलाईयो॥वसुविधिदहनजिनचरनआगैभक्तिसहि
ईयो॥वर॥७॥ॐह्रींधूपं॥फलललितमिष्टमहंतमनहरकनकथालभरायकै॥वरमुक्तिफलभ
जनलहैजिनराजचरनचढायकै॥वर॥८॥ॐह्रींफलं॥जलगंधअक्षतपुष्पचरुवरदीपधूपफला
ली॥यहअर्घलायचढायजिनपदसुखलहैविबुधावली॥वर॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाला॥दोहा॥दश
विधिधर्मसम्हारिके॥दशविधिबंधविदार॥वसेजायशिवमहलमें॥सोप्रभुहमकोंतार॥१॥पद्धडीछंद
जयश्रीसर्वज्ञमहंतदेव॥भयचतुरनिकाईकरतसेव॥जिनसप्ततत्वकीमेंप्रकाश॥दरशायोशिवपद
खास॥२॥संसारतत्वमेंबंधभेद॥दरशायोश्रीजिनवरअखेद॥जहांबंधचारपरकारजान॥थिति
तिप्रदेशअनुभागमानि॥३॥जहांप्रकृतिकर्मकोनामजान॥योंज्ञानावरणादिकपिछान॥पुद्गलगि
जानौंप्रदेशयहदोयबंध॥हैजोगलेश॥४॥जबतकविधिसंगरहैजुसोय॥थितिबंधतासकोनामहोय॥
जैसेंसुखदुखमैंफलविशाल॥अनुभागबंधवहकह्योहाल॥५॥चारोंकेचउचउभेदमानि॥उत्कृष्टअ ॥६५॥

यरुसोलहनीचउचउअमा
शीपिछान॥अवधन्यजघन्यचतुर्थभेद॥इमसोलहभेदवखानौं अवेदा॥
रण॥सादिअनादिध्रुवअध्रुवजानि॥इनसवकेगुणलक्षणमहान॥गोमटसारतैलेहुजान॥६॥अववंध
तत्वफिरदशप्रकार॥तिनकोवर्णनजानौंअपार॥संक्षेपनामकछुकहूंसोय॥गुरुपरमदिगंवरकह्योजो
य॥७॥जयवंधउदयअरुउदीरणाय॥अरुसत्ताउत्कर्षणकहाय॥अपकर्षणसंजमउपशमेय॥नवनि
धितहांछेमहिनासुनेय॥८॥विधिजीवमिलेवत्वंधजानि॥ताकोफलउदयकियोपुरान॥विनकालउ
दय आवेजुसोय॥उदीरनजानेभव्यलोय॥९॥विधिद्रव्यरहैसोसत्वसार॥उत्कर्षणतिथिवढनीविचार॥थि
तिवढनेकोंअपकर्षनाम॥जोश्रेणिकभीनर्कायुधाम॥१०॥पररूपसंक्रमणनानसार॥उपशमजिनकालउ
दयप्रचार॥संक्रमउदयाविननिधितजान॥चउविननिकाछितवंधमान॥११॥संक्रमणविनानवकरणध
रएकआयुकर्मकेहोयसार॥ताकीसातौंविधिकेमझार॥दशकरणहोयययहउदयसार॥१२॥इनआदि
अनेकविधानजान॥सववंधभेदवरनौंपुरान॥सोदेवजिनेश्वरजगमझार॥
१३॥दोहा॥दशविधिवंधविदारिकै॥वसेमुक्तिमैंजाय॥सोसिद्धेशाहमेशमम॥हूजोशरनसहाय॥१४॥अ
द्धं॥सोरठा॥कर्मपरिहारधारिस्वगुणममउरविषे॥हेप्रभुजगतैतार॥तुमस्वामीत्रैलोक्यके॥१५॥इति
॥अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशामध्यमरतिकरपर्वतपूजाभाषा॥गीताछंद॥शुभदीपनंदीश्वरमनो

जैवंतरहोकीरतिअपार

करो

हरतासउत्तरमेंसही॥अतिस्यामअंजननामपर्वतखासपूरबदिशकही॥जलसहितवापीजासपहिली
मेंरतिकरकहा॥तापरजिनेश्वरभवन जिसकोंसुरअसुरपूजैमहा॥ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपप्रथमरतिकर
जिनेंद्रेभ्योनमः॥अत्र॰॥अत्र॰॥अत्र॰॥पुष्पं॥दोहा॥जलउत्तमभृंगारभरिकरउज्जलनिजभाव॥जोभवि
नवरपदजजैसोनिजरूपलखाव॥नंदीश्वरउत्तरदिशापहिलेरतिकरएव॥तापरजिनगृहजजतसोसु
पतिवसुभेवा॥ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशप्रथमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनचंदसरी
समसीतलगुणकरतार॥जिनवरपदभविपूजिकैपावतहैभवपार॥नंदी॰॥ॐह्रीं चंदनं॥हीरनीरनी
जशशीतासमअक्षतस्वेत॥पुंजदेयजिनअग्रभवि॥अजरअमरपद॰॥नंदी॰॥३॥ॐह्रीं अक्षतं॥दृगमन
कोंकरोमोहितसुमनअनूप॥जिनवरचरनचढायभविहोतब्रह्मपदभूप॥नंदी॰॥४॥ॐह्रीं पुष्पं॥नेवज
षटप्रकारके कंचनथालभराय॥क्षुधादोषनिरवारकैभविजिनचरनचढाय॥नंदी॰॥५॥ॐह्रीं चरुं॥तमहरजो
जगायकैहर्षहृदयमेंधार॥सुरसुरपतिजिनचरनकोंपूजतखहितविचार॥नंदी॰॥६॥ॐह्रीं दीपं॥दशविधि
मिलायकैधूपबनावेखेय॥कर्मदहनकेकारणैपूजोंश्रीजिनदेव॥नंदी॰॥७॥ॐह्रीं धूपं॥उत्तमफलसुचि
पूजोंश्रीजिनराय॥भक्तिभावउरमेंधरोपावोनिजपदराज॥नंदी॰॥८॥ॐह्रीं फलं॥जलफलद्रव्यमि
यकैअर्घबनावोएव॥शिवसंपतिकेलाभकोपूजोंश्रीजिनदेव॥नंदी॰॥९॥ॐह्रीं अर्घं॥जयमाल॥अडिल॥

सकलसुरासुरपूजितजिनवरचरनकों ॥ ऋषिमुनिनितप्रतिध्यावैमवदधितरनकों ॥ चक्रपतीमहाराज
जजे अघहरनकों ॥ जिनकोंमेंनितजजौंसुमंगलकरनकों ॥४॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ जयोदेवदेवेंद्रतुमचरन
ध्यावै ॥ जयोदेवनागेंद्रनितशीशनावै ॥ जयोदेवइंद्रादिसेवकरहावै ॥ जयोदेवतारेंद्रपूजारचावै ॥१॥ जयोदे
वनागेंद्रचक्रीखगेशा ॥ जयोदेवतुमचर्णपूजैमहेशा ॥ जयोदेवतुमचर्णपूजैमृगेंद्रा ॥ जयोदेवतुमशर्णआवै
मृगेंद्रा ॥२॥ जयोदेवजगमेंतुम्हीसुक्खकारी ॥ जयोदेवतुमहीसुधर्माधिकारी ॥ जयोदेवतुमसर्वआनंदकर्त्ता
जयोदेवतुमहीमहामोहहर्त्ता ॥३॥ जयोदेवतुमएकचिद्रूपधारी ॥ जयोदेवदृगज्ञानगुणदायभारी ॥ जयोदे
वत्रयरत्नकेआपस्वामी ॥ जयोदेवतुमनंतगुणचारयामी ॥४॥ जयोदेवतुमपंचकल्याणईशा ॥ जयोदेव
षट्खंडचक्रीमहीशा ॥ जयोदेवतुमसप्ततत्वप्रकाशी ॥ जयोदेवतुमअष्टमीक्षितिनिवासी ॥५॥ जयोदेवतु
म्हीवसुकर्मनाशी ॥ जयोदेवतुमअष्टऋद्धिप्रकाशी ॥ जयोदेवनवलब्धिकेआपस्वामी ॥ जयोदेवदशधर्म
धारोप्रकामी ॥६॥ जयोदेवमहिमातुमारीअनंता ॥ नहीचारज्ञानीलहेंनहीतासअंता ॥ जयोदेवजगमेंतु
म्हीहोसहाई ॥ प्रभूसत्यमैंनेयहीजानियाई ॥७॥ अनेकोंसतीकातुमसत्तवचाया ॥ अनेकोंदुखीकोंदिया
चित्तचाया ॥ अनेकोंअधमजीवतुमनेउवारे ॥ करेकोनशंकागणीआपहारे ॥ प्रभूमेंतुमारेचर्णकोसुचेरो
महामोहनेकर्मचिरकालघेरो ॥ सुदृढचित्तहमनेंलखोशर्नतेरो ॥ तुम्हीदेवन्यायीकरोन्यावमेरो ॥ मनमेंनै

कछूकाजविधिकोविगारो॥नमैंनैंकछूराजइनकोविगारो॥विनाकाजमोकौंदियेदुःखभारी॥कृपासिंधु
मेरीसुनौंयहपुकारी॥१०॥जिसेंजासकोदोषसोताहिदीजे॥तुम्हीन्यायस्वामीतुम्हीन्यायकीजे॥हमेंतो
प्रभूएकआसातुम्हारी॥सुनोदेवयहएकअर्जीहमारी॥११॥दोहा॥निधिपतिनिजनिधिदीजिए॥कीजे
विरदनिवाह॥आसजिनेश्वरकीभरो॥तुमहोत्रिभुवनराय॥१२॥अर्घं॥सोरठा॥करौकृपाजिनराजआ
जकाजयहकीजिये॥दीजेमुक्तिसमाज॥आयेकोयशलीजिये॥१३॥इत्याशीर्वादः॥७५॥अथनंदीश्वर
द्वीपउत्तरदिशद्वितीयरतिकरजिनपूजामाह॥जोगीरासा॥नंदीश्वरवरद्वीपआठमोंताकीउत्तरजानौं
अंजनगिरताकीपूरवदिशवापीकोंनमैंमानौं॥तामेंदूजोरतिकरपर्वततापरजिनगृहमानौं॥सकलसु
रासुरताहिजजतहैभक्तिभावअधिकानौं॥१॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशद्वितीयरतिकरपर्वतेभ्योन
मः॥अत्र०॥अत्र०॥अत्र०॥पुष्पं॥सोरठा॥उज्जलनीरअनूपकंचनझारीमेंभरो॥पूजोंश्रीजिनभूपजन्म
जरादुखकौंहरो॥नंदीश्वरजिनधामउत्तरअंजनपूर्वदिशदूजोरतिकरनामसुरसुरेशपूजेसदा॥१॥ॐ
ह्रींनंदीश्वरउत्तरपूर्वदिशद्वितीयरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥जलं॥१॥बावनचंदनसारकेशरगंधमि
लायकेजजिजिनपदहितकारअविनाशीपदपाईये॥नंदी०॥२॥ॐह्रींचंदनं॥स्वच्छसुगंधितस्वेतअ
क्षतकंचनथालभरिपूजोंजिननिजहेतभविजनअक्षयपदमिलै॥नंदी०॥३॥ॐह्रींअक्षतं॥सुवरनवर

नअनेकपुष्पमनोहरलीजिये॥जिनपूजाकीटेकहरैअतनवलसनकमैं॥नंदी॥४॥ॐह्रींपुष्पं॥नेव
जविविधप्रकार॥षटरसमयमनमोहनें॥पूजोंजिनपदसार॥क्षुधारोगउरभागही॥नंदी॥५॥ॐ
ह्रींचरुं॥दीपकजोतिप्रकाश॥तमहरउज्जलचंद्रसम॥पूजौंजिनपदसार॥वासलहोशिवमह
लको॥नंदी॥६॥ॐह्रींदीपं॥कृष्णागरकरपूरचंदनधूपसुगंधहै॥दुखदकर्म्मदेदूर॥पूजोंश्री
जिनचरनकों॥नंदी॥७॥ॐह्रींधूपं॥ श्रीफललौंगबदामपिस्ताकिसमिसआदिले॥पूजौंजिन
अभिराम॥मनवांछितयातेमिलै॥नंदी॥८॥ॐह्रींफलं॥जलफलद्रव्यमिलायअर्घबनावोंभाव
सों॥पूजोंश्रीजिनराज॥कर्मबंधदुखदामिटै॥नंदी॥९॥ॐह्रींअर्घं॥जयमाल॥दोहा॥कर्मबंधकोंनाशि
कै॥भयेशुद्धनिजरूप॥सोपरमातमसिद्धप्रभु॥मोकोंकरशिवभूप॥१॥पद्धडीछंद॥जेशुद्धद्रव्यअ
नमसरूप॥जेवीतरागत्रैलोक्यभूप॥त्रैलोक्यशिखरपरविद्यमान॥कछुदीरघसवनिजगुणस
मान॥२॥जेचिनमूरतिचैतन्यरूप॥जेनिराकारआकृतिअनूप॥जेअमलअचलअक्षयअनंत॥जे
अविनाशीसुखमयमहंत॥जेअवगाहनउत्कृष्टसार॥शतपंचधनुषपच्चीससार॥जेधन्यधन्य
करअर्घतीनमध्यमतिनमांहि॥अनेकचिन्ह॥अखडगासनआसनपद्मधार॥अथवाअनेकआस
नप्रकार॥सवजलथलढाईद्वीपमांहि॥तिहिऊपरसिद्धसदारहांहि॥सवबंधरहितप्रभुनिर्विकार

ज

अशरनशरनांग निराधार त्रैलोक्यशिखरके अंतमाहि तनवातवलयमें थिर रहाहि॥४॥ जे सम्य
क्दर्शनज्ञानसारवलवीरजसुक्खअनंतधार जे जन्ममरणकरिरहितदेव जे सर्वगुणाकरसहित
देव॥५॥ जे कायविवर्जितनिस्कषाय जे क्रोधमानविनलोभमाय निर्विषयसर्वज्ञायकमहेश ऋषि
मुनिजनध्यानधरैंहमेश॥६॥ तुमचरणकमलकोंशीशनाय सुरअसुरध्यानधारैंबनाय जे नरपति
खगपतिनागईश पदभक्तिकरवनिततनायशीश॥७॥ जे जे त्रिकालत्रैलोक्यमाहि जो वस्तुचराचरलखै
ताहिप्रभुपूरणआपसरूपदेव हमशीशनायनितकरतसेव॥८॥ हे सर्वशिरोमणिसिद्धदेव तुमतकनहि
मुवैशब्दभेव नदिभक्तिभावफलदायसोय भवभवकेमाहिसहायहोय॥९॥ यातेंमेंअर्जकरूंपुका
र हेकृपासिंधुसंसारतार हमअर्जजिनेश्वरकेरैदेव जैशिवफलदेकरसुयशलेव॥१०॥ दोहा॥ नंदीश्व
रउत्तरदिशा जिनगृहरतिकरमाल मनवचकायलगायके वरनीयहजयमाल॥११॥ अर्घं॥ सोरठा॥ म
नवकायलगाय वंदोंसिद्धमहेशकों जिनपदहिरदेध्याय चाहैंसिद्धशिवथानकों॥१२॥ इति॥ ५८॥
अथ नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशातृतीयरतिकरपूजा॥ ५९॥ गीताछंद॥ वरदीपअष्टमदिशाउत्तरतृति
रतिकरराजही तिहिशीशजिनवरभवनसोहैवहुरतनमयछाजही जिनराजविंवअकृत्यसोहैंको
विशभिलाजही इकवरसमेंत्रयवारसुरपतितहांपूजरचावही॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदि

तृतीयरतिकरेभ्योनमः॥ अत्र॰ अत्र॰ अत्र॰॥ पुष्पं॥ गीताछंद॥ मुनिराजमनसमनीरनिर्मलरतनभृंगाभ
राईए॥ जिनराजचरणसरोज आगैभविकनीरचढाईए॥ वरदीप अष्टमइंद्रदिशामैंतृतियरतिकरगिरक
ह्यो॥ तापरजिनेश्वरभवनसुरपतिजजतभविजनशिरदह्यो॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशातृतियरति
करजिनालयेभ्योनमः॥ जलं॥ गोशीरपावनगंधपावनमरुकदशादिशमैंभरी॥ जिनराजपदतरधारदेक
रउमता विधिकृतहरी॥ वर॰२॥ ॐह्रीं चंदनं॥ अतिसरलशीतसुचिसारअक्षतथालभरकरलीजिये॥ जिन
राजचरनचढायभविजनअखयपदकौंलीजिये॥ वर॰३॥ ॐह्रीं अक्षतं॥ बहुवरनसुवरनगंधपूरितकुसुम
वरकरलेयकै॥ भविअतनशरकीविपतिनाशैपुंजजिनपददेयकै॥ वर॰४॥ ॐह्रीं पुष्पं॥ पकवाननाना
विधिवनाकरकनकथालसजाइये॥ जिनराजचरनचढायभविजनक्षुधारोगनशाईए॥ वर॰५॥ ॐह्रीं चरुं॥
वरदीपजोतिप्रकाशतमहररतनसुवरनकेकरो॥ भविजीवभ्रमतमहरनकारणजिनचरणआगेधरो॥ व
र॰६॥ ॐह्रीं दीपं॥ दशगंधप्रसरितदशादिशामेंधूपउत्तमलीजिये॥ जिनराजचरनचढायभविजनविघ
नकर्मदहीजिये॥ वर॰७॥ ॐह्रीं धूपं॥ श्रीफलसुपारीलोंगपिस्तादाखखारिकलीजिये॥ भविजनमहाफ
लमुक्तिकारनभेटजिनवरकीजिये॥ वर॰८॥ ॐह्रीं फलं॥ जलआदिफलपर्यंतवसुविधिद्रव्यअर्घवनाइ
ये॥ वसुकर्मनाशकशिवनिवाशिकदेवचरनचढाईए॥ वर॰९॥ ॐह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ श्रीअरहंतजि

वीवनपू॰
॥६८॥

नेशके॥ वरनन शीश नवाय॥ जिन जयमाला वरनहूं॥ जो शास सहाय॥१॥ पद्धडी छंद॥ जे वीतराग
ज्ञान ईश॥ जे निज लक्ष्मी निधि दान ईश॥ जे अनुपम उज्जल ध्यान ईश॥ जे तुम जगमाहि महान ईश॥२॥ वि
क्रोध लोभ अरि लियो मार॥ विन मान अजाचिक वृत्ति धार॥ विन माया माया सर्व डार॥ विन लोभ गही
पति अपार॥३॥ विन द्वेष दुष्ट को दुख अपार॥ विन राग संतजन हिये नार॥ अवृत्ति अलौकिक देखि देव॥ सुर
सुर करें तुम चरण सेव॥४॥ जय निज संपति निक्रिरौं दान॥ जय परसंपति को नहीं ध्यान॥ जे तो भी सब कों
वसमान॥ जे देहु धन्य दातार राज॥५॥ जे जाचक तुम दरबार आय॥ नहि लेय कछू इच्छा पलाय॥ ज
तुम्ही दातार देव॥ शिरनाय जिनेश्वर करत सेव॥६॥ जे जाचक आवें तुम अगार॥ सब युग फल मागें
गातार॥ सब इच्छित फल पावें अनूप॥ धनि तुम लक्ष्मी अक्षय स्वरूप॥७॥ जे इंद्र जाचना करें सोय मु
रूषि भी जाचक रूप होय॥ तुम चरण कमल की भक्ति सार॥ मागें अद्भुत महिमा अपार॥८॥ जय वाहि जल
अति अघाय॥ जो अंतरंग को करें साप॥ जे नंमिलें तरसना पवित्र॥ सुर ध्यावत हे प्रभु एक चित्त॥
शरन शरन सहाय देव॥ तुम विन कारन सुखदाय देव॥ तुम भवसागर सें पार देव॥ हम करत सदा तुम चरन से
॥ जे जवतक मेरो जगत वास॥ जे जवतक दैवै कर्म नाश॥ जे जवतक तुम पद कमल आस॥ मम हृदय
आय वास॥१०॥ दोहा॥ भवनाशन भगवान के चरणन शीश नवाय॥ अरज करत हूं एक मैं भव भव होहु

या॥११॥ अर्घं॥ सोरठा॥ तारण तरण जिनेश यह अरजी सुनि लीजिये॥ काटो सर्व कलेश॥ मम इच्छा पूरी करो॥१२॥ इति॥ ॥५७॥ ॥अथ नंदीश्वरद्वीप उत्तरदिश चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः पूजा॥ चौपाई॥ नंदीश्वर उत्तर दिश जानों॥ चौथो रतिकर जिनगृह मानों॥ सुरपति नित प्रति पूजा चावै॥ जिनपद को हम पुष्प चढावै॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप उत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ अत्र०॥ अत्र०॥ अत्र०॥ पुष्पं॥ पद्मद्रहजल उज्ज्वल लाये॥ सुरपति जिनपद अग्र चढाये॥ भक्ति सहित प्रभु के गुण गावै॥ जन्म मरण दुख मूल नशावै॥ नंदीश्वर उत्तर दिश जानो॥ चौथो रतिकर गिर तहां मानो॥ तापर जिन मंदिर सुखदाई॥ पूजत सुरनै न हरषाई॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप उत्तर दिश चतुर्थ रतिकर जिनालयेभ्यो नमः॥ जलं॥ मलियागर चंदन घसि लीजे॥ तामधि केशर गंध धरीजे॥ भक्ति सहित जिनवर पद पूजो॥ भव आताप रहित भवि हूजो॥ नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ अक्षत कंचन थाल भरावो॥ जिनवर चरनन पुंज चढावो॥ मोद सहित जिनके गुण गावो॥ इह विधि अक्षय पद को पावो॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ दश दिश गंध रही महकाय॥ ऐसे फूल सुगंधित लाय॥ मकरध्वज भंजन के काज॥ भव्य जीव पूजे जिनराज॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ फेनी गोंजा मोदक खाजे॥ शुद्ध सरस बनवावत ताजे॥ दोष क्षुधा निरवारन काजे॥ चरन जजत भवि श्री जिनराजे॥ नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवे०॥ उत्तम दीपक ना करलीजे॥ जिनपद को भवि पूजन कीजे॥ यातै मोह महा तम भागे॥ ज्ञान प्रकाश अनोपम जागे॥

दी॥६॥ॐ ह्रीं दीपं॥ गंध अनूप दशों दिश सोहे भवि जीवन के मन कों मोहे ऐसा धूप धनंजय खे
दी॥७॥ॐ ह्रीं धूपं॥ श्री फल लौंग विदाम छुहारे नारियेल पिस्ता अधिकारे श्री जिनवर के भेट
॥ भव्य जीव शिव फल कौं पावै नंदी॥८॥ॐ ह्रीं फलं॥ जल फल अर्घ बनाय चढावै जिन पद भ
के हृदै मैं लावै सो निश्चै निज पुण्य बढावै क्रम क्रम सों शिव मंदिर जावै नंदी॥९॥ अर्घं॥ जयमा
ला॥ श्री जिन चरण प्रणाम कर धरि सिद्धन को ध्यान जयमाला वर्णन करूं जिन आज्ञा पर
१॥ छंद॥ जय दीनबंधु करुणानिधान जय अशरन शरन सहाय मान जय भवजल तारन तर
ण जय जय कर सुरपति करत सेव॥२॥ जय प्रथम दिगंबर धर्म धार जय जीते दूजे घाति चार जय
य धर्म उपदेश देन जय जय जय विधि इम भनेय॥३॥ जय परपदार्थ सब त्याग दीन जय आतम स्वार्थ
रि मन कीन जय पुरुषारथ करि सिद्ध चार जय जय जय त्रय विधि इम उचार॥४॥ जय
प्रथम धार जय फिर लीनो चारित्र सार जय प्रगटो केवल ज्ञान भान जय जय त्रय विधि इम महान॥५॥
कि जीव सुख लहै सार जय दुष्ट अविनयी दुख पसार जय परम वीतरागी अनूप जय ज्ञम
य जगत भूप॥६॥ जय नाम जपे सो सुख लहंत जय ध्यान धरै सो दिव वसंत जय निस्पृही निर्वाण
य ऊर्ध्व मध्य पाताल वास जय तुम चरणांबुज जपे खास ते लोक

चौवनपू.
॥६९॥

तुमहीजिनेश॥८॥जयजयजयत्रयवारवेश॥७॥जयतिहुंकालमेंएकरूप॥जयश्रुतनयार्पितवचसरूप
॥जयउत्पात॥जयउत्पातव्ययध्रोव्यरूप॥ऐसेभीजयजयत्रयअनूप॥८॥जयतुमजिनेशनिर्मलमहान
॥जोसमलरहेसोकूरजान॥जोदृगरोगीलखिशंखलेत॥पीतादिकहैसोनरअचेत॥९॥प्रभुतुमशरीरकी
ज्योतिपाय॥प्राकाररत्नमयभयोआय॥प्रभुतुमस्वभावप्रतिस्वच्छजान॥प्राकारभयोस्फाटिकसमा
न॥१०॥जय२तुममहिमाअगमसार॥गणपतिनाहिंपावेकहनपार॥जयतुमप्रभावसेंमानथंभ॥जगमा
नहरैअद्भुतअचंभ॥११॥जयजयजिनराजदयानिधान॥करदयाजिनेश्वरऐमहान॥संसारखारतैंकरोपार
॥जगवंधवयेसुनियेपुकार॥१२॥दोहा॥दयाधुरंधरदेवतुम॥गुणसागरभरपूर॥करोजिनेश्वरऐकृपा॥हिर
देवसोहजूर॥१३॥अर्घं॥सोरठा॥याजगविपतमझारविनहितवंधवतुमसुने॥मेरीसुनोपुकार॥वारतारअर
जीकरूं॥१४॥इति॥ ॥इति॥ ॥५॥ ॥अथनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशापंचमरतिकरपूजाप्रारंभ॥
गीताछंद॥वरदीपअष्टमइंद्रदिशमेंपांचमोरतिकरकह्यो॥तापरअकृत्तिमश्रीजिनालयसुरअसुरदर्श
नलह्यो॥तहांविंवजिनवरकेअनूपमसुरासुरमनमोहिया॥उरदेवसमसर्वज्ञजिनकोंरत्नमयछविसोहि
यां॥ॐह्रींनंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशामेंपंचमेरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥अत्र॥अत्र॥अत्र॥पुष्पं॥जोगी
रासा॥अंतरदाहदहेजगप्राणीगतिगतिमेंदुखपावे॥तादुखदूरकरणकोंकारणजलजिनचरणचढावे

बाँवनपू.
॥७०॥

नंदीश्वरकी उत्तरदिशमें पंचमरतिकरसोहै। तापरश्रीजिनभवन अकृत्रिमसकलसुरासुरमोहै॥ ॐ
नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशायां पंचमरतिकरजिनालयेभ्यो नमः। जलं॥१॥ जन्ममरणदुखतापतपैनर भववनमेंदु
खे। शांतसुधासुखपावन भविजन चंदनचरनचढावै॥ नंदी०॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तनननधरतभरतविपता अतिज
गमैंथिर न रहावो॥ अक्षयपदकेकाज चतुरनर अक्षत चरन चढावो॥ नंदी०॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ नरनारी
इवेदके खेद सहे बहु तेरे। तादुखहरन चरन जिनपतिके पुष्प चढावत नेरे॥ नंदी०॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ जगतजीवकुल
तलजावत एकक्षुधाके घेरे। ता अरजीतन उत्तमचरु लै पूजत जिनपद तेरे॥ नंदी०॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ ज्ञानप्र
काश विना जगमाही जीवसबै दुखभारी॥ ताकी प्रापतिकाज जिनेश्वरपद तर दीपक धारी॥ नंदी०॥६॥ ॐ ह्रीं दी
पं॥ याविधि वसनरपतिपशुदोवेथावरमेंसुर कैसा विधि दूरन धूप अयन श्रीजिनचरनचढावो॥ नंदी०॥७॥ ॐ
ह्रीं धूपं॥ सर्वोत्तम अविनाशी सुखकर मुक्ति महाफल जानों॥ ताके काज भव्य जिनवरके पद तर सुफल च
नंदी०॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलफल आठौं द्रव्य मिलाकर अर्घ बनावो भाई। अष्टकर्मके नाशनकारन पूजों श्रीजि
नराई॥ नंदी०॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ शक्रचापधर वज्रधर विद्याधर नर वीर॥ वीतरागपदतर
निजमस्तक धरि धीर॥१॥ पद्धरी छंद॥ जयजय जिनराज दयानिधान॥ भवकानन दाहन दव महान॥ ज
व्यकमलगण अमलभान॥ जय संतचकोर न चंद जान॥ जय दुखदवाग्निको मेघरूप॥ जय विपतिमेघ

श्री

कोंपवनरूप॥ जय अघपर्वतकों वज्रधार॥ जय भ्रमतमकों रविकिरणसार॥ ३॥ जय कामसर्पकों गरुडरूप॥ जय
क्रोधजहरकौं अमृतकूप॥ जय मानमहागजकौं मृगेंद्र॥ जय चरणकमलपूजैसुरेंद्र॥ ४॥ जय मायातरवरकौं
कुठार॥ जय लोभजहरकौं सुधाधार॥ जय मिथ्यामदगदमेघराज॥ जय भवजलतारनकौं जहाज॥ ५॥ जय भ
विजनकौं सुरतरुसमान॥ जय चिंतामणितुमहीप्रमान॥ जय कालचक्रकौं कालरूप॥ जय देवनकौ शिर देव
भूप॥ ६॥ जय च्यारघातियाकर्मनाशि॥ जय केवलज्ञानभयोप्रकाश॥ जय भविजीवनहितकाजसार॥ जय ध
आरजमैं कीनौं विहार॥ ७॥ जय दियो धर्मउपदेश देव॥ जय मुनिश्रावक करो भांतिभेव॥ जय सकलव्रती मुनि
राजधर्म॥ जय देशव्रती है गृहीधर्म॥ ८॥ जय परिग्रहत्यागी नगनकाय॥ जय निस्नेही गुरु कहे भाय॥ जय वसुवी
समूलगुणधारसोय॥ जय धर्मगुरु जानोंजु लोय॥ ९॥ जय गृहीधर्म ग्यारहप्रकार॥ सम्यकविना सब विफ
लसार॥ जय समकित दरजा प्रथम जान॥ इस विना किये सब व्यर्थमान॥ १०॥ इत्यादिक उपदेश देय॥ शिव
धामविषें प्रभु वास लेय॥ अस्तय अनंत थिर रहे सार॥ सो सिद्ध करो भवसिंधुपार॥ ११॥ जबतक जगमें मम रहैवा
स॥ जबतक अरि कर्म करै प्रकाश॥ जबतक तुम होहु सहाय देव॥ कर जोरि जिनेश्वर करत सेव॥ १२॥ दोहा॥ जबत
क रवि शशि गगनमें मेरु रहै भूमाहि॥ तबतक वर्तो धर्म जिन जयवंतो जगमांहि॥ १३॥ ॐ ह्रीं अर्घ्यं॥ सोरठा॥ देह
खेह सम जानि नेह तजो यातें सुधी॥ हित अपनो पहिचान सेवो जिनवर धर्मकों॥ १४॥ इत्याशीर्वादः॥ इति॥ ७६

नंदीश्वरद्वीपउत्तरदिशषष्टमरतिकरपूजामाह॥ चालजोगीरासा॥ नंदीश्वरकीउत्तरदिशमें
रसोहैतापरश्रीजिनभवनअकृत्रिमसुरसुरपतिमनमोहै॥ भावभक्तिकरिशक्तिहीनमैंतुमप
॥याहीभक्तिभावसौंनिश्चैमनवांछितफलपाऊं॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपषष्ठमरतिकरजिनें

= गीताछंद ॥ जल॥ चंदन॥ अक्षत॥ पुष्पं॥ अर्घास्त्रकं॥ गीताछंद॥ चहुंगतिभ्रमतदुखबहुतपायोकहूंथिरनरहाईयो॥
दुखदवाग्निसमूलकारणजिनचरणललचाईयो॥ शुभदीपअष्टमइंद्रदिशमेंषष्टमोरतिकरजहां॥
भवनसुरपतिनितजजैअतिहर्षउरधारेजहां॥१॥ ॐह्रीं नंदीश्वरद्वीपषष्टमरतिकरजिनालयेभ्योनमः॥ ज
॥ जगमाहिबहुतशरीरधारेभवातापसह्योघनों॥ तिहिशमनकारनपरमचंदनजिनचरनपूजाभनो॥
२ प॰॥२॥ ॐह्रीं चंदनं॥ तिहुकालविननिजरूपजानेजगतमेंविपताभरी॥ तिहिभ्रमनिवारन
तलायजिनपूजाकरी॥ शुभदीप॰॥३॥ ॐह्रीं अक्षतं॥ मनकल्पनाकेजालमाहीफसेबहुविधिदु
चाहदाहविनाशकारनपुष्पपूजनजिनकह्यो॥ शुभदी॰॥४॥ ॐह्रीं पुष्पं॥ सुरअसुरअहलाह
याकेवशपरेजिहक्षुधानाशनहेतचरुलेजिनचरनआगेंधरें॥ शुभ॰॥५॥ ॐह्रीं नैवेद्यं॥ जिहतमविषै
भ्रिसूरभरमैंजीवनिजनलखावहीं॥ तिहभ्रममहातमनाशकारनदीपपूजनलावहीं॥ शुभअष्ट
दीपं॥ दशगंधमिश्रितधूपकीजेभव्यभक्तिबढायकैं॥ वसुविधिजलावनहेतजिनपूजेसु

यको सुभ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ जगसुफलफलदायक अनूपमधर्मजिनवरकोकहो॥ नसुमाषिकारए
भव्य उत्तमसुफलजिनवरपदजजो॥ सुभ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं॥ जलगंध अक्षतपुष्पचरुवरदीपधूपवना
ई॥ फललाय अर्घबनाय जिनवरचरनमाहि चढाई॥ सुभ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥ जयमाला॥ दोहा॥ तिसु
जगचंद जिनेश केवरनन शीशनवाय॥१॥ ऊं जिनमाला सही सुनों सुधी चितलाय॥ पद्धडी छंद॥२
जगवीतरागसर्वज्ञदेव॥ शतइंद्र आपकोकरतसेव॥ जयतुमसर्वज्ञकहे पुरान॥ जिनके प्रगटो के
वलसुज्ञान॥३॥ जयसकलवस्तुज्ञायकसरूप॥ त्रयलोक्यवर्त्तित्रयकालरूप॥ जयसबकों जानैएक
भाव॥ जयज्ञानशक्ति ऐसी अपार॥४॥ जयसुख अनंतदायकसरूप॥ जयतैसोही बलहै अनूप॥
तवदर्श अनंतानंतधार॥ जयजातिनंतराजंतसार॥५॥ नपदायकलब्धि अनंतरूप॥ गुण अत्रयधा
रेनिज अनूप॥ जयनिराहारतनजोतिवंत॥ जिह आगेबहुरविशशिलजंत॥६॥ जयप्रभाचक्रअतिज
गमगात॥ भविदेखतभवभवसातसात॥ जयतीनछत्रशिरपरसुहात॥ तिनकी मुकटामणिलजलज
जात॥७॥ मनुतीनरूपधारिकरि अनूप॥ पदजजतनखतमुतनखतरूप॥ जयचौसठिचामरढुरतसोय
दुंदुभीशब्दअतिमधुरहोय॥८॥ जयतरुअशोकसबहरेशोक॥ जिह देखत भागेपापथोक॥ जयन
भसेवरसेफूलसार॥ मनुअनतुभजोहथियारडार॥९॥ जयजिनधुनिवरसेसुधाधार॥ भविचातकचा

हत है अपार ॥ जय धर्म तनों उपदेश सार ॥ हित रूप सदा आनंद कार ॥ ७॥ जय सिंहासन पै अंतरीक्ष ॥ चतुरानन पद्मा
सन प्रतक्ष ॥ जिनवर विराजै अतुल जोति ॥ जिनके प्रताप निशि नाहि होत ॥ ८॥ इत्यादि अतुल लक्ष्मी निवास
जिनराज विराजित सुरभि खास ॥ जय शत योजन चउ दिशमैं ढार ॥ नहिं पडहि काल अचिरज अपार ॥ ९॥ नहि
होय जीव वध जिन प्रभाव ॥ जय जाति विरोधी मित्र भाव ॥ जय जय जिनराज दयानिधान ॥ भविजीवन कों हि
तकर महान ॥ १०॥ जय मम उर माहि वसो जिनेश ॥ जय ज्ञान जोति विकसो अशेष ॥ जय भव भ्रमरि निरवार देव
कर जोरि जिनेश्वर करत सेव ॥ ११॥ दोहा ॥ अकृतिम जिन चैत्य गृह वन्दों मन वच काय ॥ बुधि वारिधि वर्द्धित करो मे
री करो सहाय ॥ १२॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ सोरठा ॥ करो कृपा महाराज ॥ निज विद्या वल दीजिये ॥ वडे गरीव निवाज ॥ इतनो य
श प्रभु लीजिये ॥ १३॥ इत्याशीर्वाद ॥ ॥ ४८॥ अथ नंदीश्वर द्वीप उत्तर दिशा सप्तम रतिकर पूजा माह ॥ चाल अडिल ॥
नंदीश्वर वर द्वीप आठमो जानिये ॥ इंद्र दिशा मैं सप्तम रतिकर मानिये ॥ ता पर श्री जिन भवन जजै सुर आय कें ॥ हम
जिन कों शिर नाय नमैं मन लाय कैं ॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सप्तम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः ॥ अत्र ३ अत्र २ अत्र १ पु
ष्प ॥ जोगीरासा व चाल मैं ॥ भवि श्री जिनवर के पाय सु कारन पूजत है भाई ॥ टेक ॥ पद्म द्रह को उज्जल जल ले रत्न क
टोरी धारौं ॥ धार देत श्री जिनवर आगे जन्म जरा निरवारौ ॥ नंदीश्वर सप्तम उत्तर गिरि रतिकर जिनगृह जानों ॥ सर्व सु
रासुर पूज रचावें सफल देव पर मानों ॥ सु ॥ १॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सप्तम रतिकर जिनालयेभ्यो नमः ॥ जलं १॥ बावन

चंदन दाह निकंदन के शर संग घसावो ॥ जन्म रोग भव रोग निवारन जिन पद अग्र चढावो ॥ सुखानंदी ॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं
तंदुल स्वच्छ सरल सित शुचि अति कंचन थाल भरायो ॥ अक्षय पद पावन जिन पद में अक्षत वरन चढायो ॥ सुखानं ॥३
ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ हेम रतन के रंग विरंगे पुष्प सुरासुर लावै ॥ काम अगनि के शमन करन कौं श्री जिन चरन चढावै सुखानं ॥
ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ सूपकार कृत व्यंजन ताजे शुभ थाल भर लावै ॥ क्षुधा रोग दुख दूर करन कौं जिनवर चरन चढावै सुखानं-
ॐ ह्रीं चरुं ॥ नाना विधि के दीप मनोहर शक्ति समान बनावो ॥ भ्रम तम हरन करन आतम हित श्री जिन चरन चढावो
सुखानंदी ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ धूप सुगंध दशौं दिशा फैली अलि समूह चलि आवै ॥ दुष्ट कर्म जारन के कारन श्री जिन भव्य च
ढावै सुखानंदी ॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ बहु विध मिष्ट सिष्ट फल लेकर सुवरन थाल भरावो ॥ मुक्ति महाफल कौं जश्रावी पति जि
नपद अग्र चढावो सुखानंदी ॥८॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ जल फल अर्घ बनाय गाय गुण सुर समूह चलि आवै ॥ तीर्थंकर के चरनन आ
गें सुरपति आय चढावै सुखानंदी ॥९॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥ जयमाला ॥ दोहा ॥ त्रेसठि प्रकृति खिपाय कै पायो केवल ज्ञान
जिन पद चरन सरोज कौं नमों सदा हित दान ॥१॥ पद्धड़ी छंद ॥ जय केवल ज्ञान धनी जिनेश ॥ जय चारण ऋषि मुनि ज
पत शेष ॥ जय त्रेसठि प्रकृति दई खिपाय ॥ जय तिनके नाम कहौं सुभाय ॥२॥ जय ज्ञानावरणी पंच भेद ॥ नव भेद दर्श
नावरण खेद ॥ अवसुवीश मोहनी प्रकृति चूरन ॥ पण अंतराय के करे दूर ॥४॥ जय सोलह प्रकृति अघातिहा निमायो
जिनराज महान ज्ञान ॥ शत इंद्र चरण कौं शीश नाय ॥ तुम कौं नवकार करै जिनाय ॥६॥ जय भुवनपती दश भेद देव

बावनपू.
७३

प्रति भेद पुरंदर चार एव॥ इस भाँति भुवन चालीस इंद्र॥ बत्तीस इसी विधि व्यंतरेंद्र॥ चौवीस कल्पवासीसु
र शशि सूर दोय दुति वर महेश॥ चक्री नरेश पशु सिंह जान॥ शत इंद्र इसी विधि भव्यमान॥ इक सुरप
विभव सार॥ भविजानौं जिन आगम दुवार॥ सबकी सेना है सात भाँति॥ बहु भाँति विक्रिया धरें भ्रांति॥ घ
राज पंचकल्याण सार॥ पूजन कौं आवें सुर अपार॥ लौकांतिक तप कल्याण एव॥ पूजन कौं आवें यही टे
व॥ अहमिंद्र न छोड़ें निज सुथान॥ जय ऐसी वस्तु स्वभाव जान॥ निज थल सें विनय करें सुरेश॥ प्रति मंद
॥ जिनराज दियो उपदेश एव॥ हम करत सदा जिन चरन सेव॥ जय भवतारक तुम जिनेश॥ जग
हित आप तुम ही अशेष॥ जय तुम पद रज मम शिर मझार॥ अनिवार रहो यह अरज सार॥ मुनि लेहु जि
श्वर सेव एव॥ कर कृपा यही जग तार देव॥२०॥ दोहा॥ नंदीश्वर उत्तर दिशा सप्तम रतिकर भाल॥ जिन मंदिर
॥ भई पूरन पर जयमाल॥२१॥ अर्घं॥ सोरठा॥ दीनबंधु महाराज॥ अरज सुनो मम दीन की॥ तारन तरन जि
न भवजल पार उतारिये॥ इत्याशीर्वाद॥ ५९॥ ॥ अथ नंदीश्वरद्वीप अष्टम रतिकर माह॥ कुसुमलता छंद॥
नंदीश्वर उत्तर अंजनगिर ताकी उत्तर वापी जान॥ दूजे कौन आठ मौं रतिकर जिन मंदिर सोहै शिरथान॥ चित्र
चित्र रत्नमय प्रतिमा इक शत आठ शास्वती जान॥ सुर खुर पति पूजन नित आवें मैं तिनकौं पूजौं धरि ध्या
न॥१॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप उत्तरदिशा अष्टम रतिकर गिरपर जिनमंदिरेभ्यो नमः॥ अत्र॥ अत्र॥ अत्र॥ पुष्पं॥ ॥७३॥

जोगीरासा॥ ज्ञानावरणीकर्मउदयसें ज्ञाननशक्तीपावे॥ ताअरिनाशकरनकों भविजन जिनपदनीरचढावे॥
नंदीश्वरउत्तर रतिकरगिरअष्टमजिनगृहजानों॥ सुरसुरपतिनितपूजरचावेंपावेसुखअधिकानों॥१॥ ॐ ह्रीं नं
दीश्वरद्वीपअष्टमरतिकरगिरपरजिनमंदिरेभ्यानमः॥ जलं॥१॥ दूजोकर्मदर्शनावरणीदर्शनगुणकोंरोके॥ जिन
वरपदपूजेचंदनसों॥ यातेंविधिअरिसोखे॥ नंदी॥२॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥ तीजोकर्मवेदनीजगमोंनिजकारजकोघाती॥
जजतजिनेश्वरपदअक्षतसोंयातेंनिजनिधिपाती॥ नंदी॥३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥ मोहकर्मवलवानजगतमेंइन्द्रादि
कवशकीने॥ फूलचढाय जिनेश्वरआगेंमोहकामकसिलीजे॥ नंदी॥४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥ आयुकर्मकोवंधनभा
रीजीवजगतकसिराखे॥ नेवजसोंजिनपूजजगतजननिजअनुभोरसचाखे॥ नंदी॥५॥ ॐ ह्रीं नेवेद्यं॥ नामकर्म
वशाजीवजगतमेंनानादेहधरेहें॥ दीपकसोंजिनपदपूजोभविजनअविचलकरेहें॥ नंदी॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥ गोत्रक
र्मकेउदयजीवयहऊंचनीचकुलपावे॥ धूपदहनखेवतजिनआगेंजिनपदकोंभविपावें॥ नंदी॥७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥ अंत
रायदुखदायवडोजगयातेंभयहरिमनमों॥ श्रीजिनचरनचढायमहाफलभवियाविधिकोंमानें॥ नं॥८॥ ॐ ह्रीं
फलं॥ जलफलद्रव्यमिलायमनोहरअर्घकरोभरथारी॥ श्रीजिनसन्मुखपुंजकरतभविसर्वविपतिपरिहा
री॥ नंदी॥९॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपअर्घ्यं॥ जयमाला॥ दोहा॥ अष्टमद्वीपसुहावनो ताकीउत्तरवोरअष्टमरतिकर
जिनभवन नमोंसदाकरजोर॥१॥ पद्धडीछंद॥ जयनंदीश्वरवरद्वीपजान॥ जयताकीउत्तरदिशामहान॥ जयअ

जनपर्वतस्यामरंग जयताकी उत्तरदिशि अभंग ॥ अपराजितवापी शोभमान ॥ तिंह द्वितियकोनकोंमध्यजान
यरतिकरपर्वत हेमरूप ताऊपर जिनगृह छवि अनूप ॥ जय शत योजन आयाम जान ॥ लंबे
नामच ह्लरयोजन है उतंग ॥ बावनजिनमंदिर इसीढंग ॥ समवसमवशरनरचनामहान ॥ जिंह देखत भविजनपा
न ॥ जय जय जिनबिंबविराजमान ॥ शतआठ अधिक शोभासमान ॥ जय उच्चधनुषशतपंचदेह ॥ पद्मासन
राजे गतसनेह ॥ जय दीप्तिवंत अतिरूपवंत ॥ जय बोलत है मानू हँसंत ॥ जय जिनसरूप लखि देवराज ॥ अ
हर्षित उर पूजा समाज ॥ जिनआवी साय बहु भक्तिभाव ॥ जिनवरपद पूजे सहितचाव ॥ ॥ अतिउज्वल जल
भराय ॥ अरु गंधसहित चंदन अपार ॥ जिनचरनकमलतलधारदेत ॥ मानों बांधे भवसिंधुसेत ॥ जयमुक्ता
अक्षत अनूप ॥ जिनपति पूजे सुरगभूप ॥ जयकल्पवृक्ष के फूलसार ॥ जयशक्र धरे जिनपद अगार ॥ जय
बहुविधि स्वाद रूप ॥ सुरपति जिनचरनजजे अनूप ॥ जय रतन अमोलिक दीपसार ॥ आखंडल पूजे जिनागार ॥
जय स्वर्ग धूप अतिगंधसार ॥ अमरेश चढावै जिनागार ॥ जय उत्तम फल जिनपद मझार ॥ जय शक्र चढावै हर्षधार ॥
करि थुति नुति हरि जिनवर अगार ॥ फुनि मुदितचढावै अर्घधार ॥ जय करुनानिधि जिनदेवदेव ॥ हम शरनागत
ये सुएव ॥ ॥ देवेशमहित तुम हे जिनाय ॥ भवभवमें कूं हूजे सहाय ॥ कर रूपा यही जगवार देव ॥ कर जोरि जि
नसेव ॥ २ ॥ दोहा ॥ नंदीश्वर उत्तरदिशा ॥ जहाँ होय जिनभूप ॥ तिन सबकों पूजों सदा ॥ अर्घ चढाय अनूप ॥ २४ ॥ नंदी

खरदीपके बाँवन जिन आगार॥ बंदौं मन वच काय के वांछित अर्थ दातार॥४॥ अर्घ्यं॥ सोरठा॥ तुम प्रभु दीनदया
ल मैं अति दीन —— सुनौं॥ मेरी अरज कृपाल॥ करो पार संसार सें॥५॥ कुसुमलता छंद॥ ढाई दीप एकसो सत्तरि
क्षेत्र मध्यवर्ती जिनराय॥ अथवा सर्व सिद्ध परमेश्वर॥ आचारज पाठक मुनिराय॥ भूत भविष्यत वर्तमान के पाँचौं
परमेष्ठी हितसाज॥ जन्म जन्म मम रहो सहायक॥ अर्ज जिनेश्वर की सुखसाज॥६॥ ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपत्रिकालवर्ती
पंचपरमेष्ठी भ्यो नमः॥ अर्घ्यं॥ इति संपूर्णम्॥ ॥५२॥ ॥छप्पय॥ श्रीमन्माधवसिंह सवाई जैपुर स्वामी॥ मरु
देवी को जन्म कह्यो उम्मरगढ नामी॥ तहाँ वास मम खास जिनेश्वर नाम कहाये॥ भक्ति भाव उरलाय जिनेश्वर
को गुण गाये॥१॥ छंद॥ श्रावक उत्तम जात है पद्मावत पुरवार॥ निज पर हित के हित यह॥ कियो पाठ सुखकार
॥ देश ढुंढार मझार ग्राम राणोली जानौं॥ अन्नोदिक के जोग कछूक दिन वहाँ रहानौं॥ सत संगत परभाव दाव
यह उत आयो॥ रचि नंदीश्वर पाठ सफल नरभव कर पायो॥ छंद॥ शब्द रु अर्थ अनादि है मम कर्ता मति
जानियो॥ कर जोरि जिनेश्वर इम कहै पढी सुबुधि उर आनियो॥२॥ दोहा॥ चित्रसालसिंह देवजू मजा पा
ल महाराज॥ जिनकी छाया में प्रजा सुखी रहै हित साज॥३॥ अपने धर्म को पाले इष्ट महान॥ दुर्जन दुष्ट न
करि सके॥ कभी किसी की हान॥४॥ शतउनीश अरु साठ मित संवत महिना माह॥ सुदि ग्यारस संध्या समै
पूरण कियो निवाह॥५॥ सुखी रहो राजा प्रजा सुखी रहो सब जीव॥ सुखदायक जिनधर्म यह॥ जग में रहो

सदीवध ॥ अंतमंगल ॥ रंग ज्यानकी ॥ श्रीजगतपतीमहाराज अरजसुणलीजो प्रभुभवसागरसोंपारमो
हिकरदीज्यो ॥ महाराजयहीमें आसलगाईजी ॥ करुणानिधिजगतारकहावो शरणसहाईजी ॥ टेर ॥
याभवसागरकेमाहिंवहुतदुखपायो ॥ तिच्यारचौरासीलाखजोनिफिरआयो ॥ महाराजकहींथि
रनाहिंरहायोजी ॥ सुखहीदुखभरपूरसुक्खकोअंशनपायोजी ॥ चिरकालनर्कपशुजोनिविपति
वहुभोगी ॥ अरुमानुषगतिकेमाहिंभयोतनरोगी महाराजकभीसुरपदपायोजी ॥ तहांदेखकरविभ
वपराईदुखअधिकाईजी ॥ टेर ॥ सेर ॥ याकर्मअरिकेवशपरोमेंनेसहेदुखघोरहैं ॥ सोनाहिंतुमसेछि
पेप्रभुजीकरैंअजहूजोरहैं ॥ तुमकोंअधमउधारस्वामीध्येयाजसबहुं ओरहै ॥ देवकर्मविजयीपर
वहूदिशसोरहै ॥ चोपाईरूपक ॥ सबजगकेप्रतिपालकहावो ॥ विनहितपरमदयालकहावो ॥ ऐसोविरद
जगतमेंछायो ॥ सुनकरकेंशरनेंअबआयो ॥ जयवंतजिनेश्वरविरदआपलखलीज्यो ॥ निजअक्षय
निधिभंडारमोहिदीज्यो ॥ महाराजतुम्हीपतिबंधुभाईजी ॥ करुणानिधिजगतारकहावोशरणसहा
ईजी ॥ १६ ॥ इतिश्रीनंदीश्वरद्वीपबांवनपूजासमाप्तं ॥ श्रीसंवत १९ ८९ कार्तिकशुक्ल ११ भौमवासरे ॥ लिखि
तमिदंभजमनालाल शर्मणा ॥ लेखक पाठकाचिरंजीयात ॥ श्रीशुभम ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः

श्लोक २६७५